Niamat Singh Jain Tract Series No. 5

ॐ

सती

कमलश्री नाटक

—:-(❀)-:—

जिसमें

नेकी व बदी का फ़ोटो तथा सती कमलश्री व सती तिलका सुन्दरी व धर्मवीर भविषदत्त का चरित्र व गृहस्थ नीति भली प्रकार नाटक रूप में दिखाये गये हैं ॥

———:(❀):———

जिसको

न्यामत सिंह जैन रिटायर्ड सैक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, हिसार ने सर्व साधारण के हितार्थ रचा ।

सन् १९६० ई०

आर० डी० सिंघल, एम०ए०, साहित्य रत्न–प्रोप्राइटर विद्यार्थी प्रकाशन मेरठ, के प्रबन्ध द्वारा छपवाया ।

द्वितीय बार ११००] —— [मूल्य ≈)

योगेन्द्र कुमार गुप्ता द्वारा महेश प्रिन्टिंग प्रेस, शाहपीरगेट, मेरठ में मुद्रित

❀ स्व० श्री न्यामत सिंह जैन, हिसार ❀

❀ नोटिस ❀

न्यामत सिंह रचित जैन ग्रन्थ माला के निम्नलिखित अंक छपकर तय्यार हैं— अन्य शेप भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं ॥

अंक	नाम पुस्तक	हिन्दी	उर्दू
१	जिनेन्द्र भजन माला — — — —	।)	
२	जैन भजन रत्नावली — — — —	।)	
३	मूर्ति मंडल प्रकाश — — — —	।)	
४	जैन भजन तरंगनी — — — —	।)	
५	कमलश्री नाटक (सम्पूर्ण वढ़िया काग़ज़ मोटे अक्षर सजिल्द दूसरा एडीशन)	८)	
६	भविषदत्त तिलकासुन्दरी नाटक (स्टोक में नहीं है)	३)	
७	जैन भजन मुक्तावली — — — —	।)	
८	राजल भजन एकादशी — — — —	)	
९	स्त्री गान जैन भजन पचीसी — — —	=)	
१०	कलियुगलीला भजनावली — — — —	=)	=)
११	कुन्ती नाटक — — — —	≡)	
१२	चिदानन्द शिव सुन्दरी नाटक — — —	।≡)	।=)
१३	अनाथ रुदन — — —	)	
१४	चंदन वाला नाटक — — —	१)	
१५	सती विजया सुन्दरी नाटक — — —	४)	
१६	प्रहलाद नाटक — — —	।)	
१७	महावीर चांदन गांव नाटक — — —	॥)	
१८	जैन भजन शतक — — —	।=)	
१९	थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी — — —	≡)	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक (सम्पूर्ण वढ़िया कागज मोटे अक्षर — सजिल्द नवमी एडिशन) —	६।	
२१	महावीर चांदन गांव चारित्र — — —	≡)	
२२	पद्मपुरी चारित्र — — —	।)	
२३	जैन समाज दिग्दर्शन — — —	)	
२४	स्वाभिमान रक्षा (वज्र भान अर्जुन युद्ध) — —	)	
२५	नमोकार मंत्र — — —	।)	

पुस्तक मिलने का पता :—

राजकंवार जैन मैनेजर

न्यामत जैन पुस्तकालय-हिसार

Distt. HISSAR (Punjab) मु० हिसार (पंजाब)

न्यामत जैन पुस्तकालय हिसार के नियम ।

---:o:---

१ | चिट्ठी में पता साफ़ नागरी या उर्दू या अंग्रेजी में लिखना चाहिये ।
२ | यदि किसी चिट्ठी का जवाब दस दिन तक न पहोंचे तो दूसरी चिट्ठी अपने साफ़ पते की देनी चाहिये ।
३ | ५) से कम पर कोई कमीशन नहीं मिलेगा—५) या ५) से अधिक पर १२॥) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा । बुकसेलर्स को २५% कमीशन दिया जायेगा ।
४ | कोई भाई वी० पी० वापिस न करें वरना डाकखर्च उनके ज़िम्मे होगा ।
५ | कुल डाक खर्च खरीदार के ज़िम्मे होगा ।

Address :—
Raj Kunwar Jain Manager
Niamat Jain Pustakalaya,
Distt. HISSAR (Punjab)

कमलश्री नाटक का आधार व ऐतिहासिक

परिचय !

——:o:——

१—यह नाटक श्री भविष्यदत्त चरित्र जैन शास्त्र के अनुसार रचा गया है।

२—श्री भविष्यदत्त चरित्र प्रथम पंडित धनपाल जी ने संस्कृत में रचा था। तदनुसार पंडित बनवारीलाल जी जैन माखनपुर (खातौली जिला मुजफ्फर नगर) निवासी ने इसको विक्रम सम्वत् १६६६ में भाषा में छन्द रूप बनाया था। इसी भाषा रूप चरित्र को हमने कई प्रतियों से मिलान करके और शुद्ध करके श्रीवीर निर्वाण सम्वत् २४४५ में छपवा कर प्रकाशित किया था जिसका मूल्य १॥) है।

३—इस चरित्र में प्रायः प्राकृत शब्दों का विशेष प्रयोग किया हुवा है। छपे हुवे चरित्र में कठिन प्राकृत शब्दों का अर्थ भी सरल भाषा में कर दिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में प्राकृत भाषा का भारत वर्ष में बहुत प्रचार था।

४—इस नाटक का सम्बन्ध श्री हस्तनागपुर नगर से है। जैन शास्त्रों से पता चलता है कि प्राचीन समय में यह नगर बहुत बड़ा शहर था और इसको गजपुर व नाग नगर व नागपुर व हस्तनागपुर भी कहते थे। यह भारत वर्ष में सबसे अधिक ऐतिहासिक स्थान है इसका विस्तार उस समय ४८×३६ कोस था।

५—यद्यपि इस समय यह हस्तनागपुर एक बिलकुल वीरान जगह नजर आती है मगर यह जैनियों का बहुत प्राचीन तीर्थ है और यहां कई प्राचीन जैन मंदिर भी बने हुवे हैं।

६—जैन शास्त्रों से पता चलता है कि प्राचीन समय में राजा मेघरथ (जिस को मेघेश्वर भी कहते थे) जैन राजा यहां राज करते थे जिनका चकचा वैन नामी महा जोधा सेनापति था।

७— यह भी पता चलता है कि बाद में महाराज श्रीयांस जैन राजा ने इसी

नगर को अपनी राजधानी बनाया। इस राजा ने वैसाख शुदी तीज को भगवान श्री ऋषभदेव जी (प्रथम जैन. तीर्थंकर अवतार) को यहां ईख रस का आहार दिया था। जिस समय भगवान ने आहार लेकर "अक्षय ऋद्ध" का वचन कहा था उस समय देवताओं ने रत्नों और पुष्पों की वर्षा की थी और उस समय से यह दिन मुबारक अर्थात शुभ समझा जाने लगा। चुनांचे आज कल भी यह शुभ दिन "आखातीज" के नाम से मशहूर है और प्राय: "विश्नोई" आदि ज़मींदार इस दिन विना महूरत शादियां करते हैं।

८—यह भी पता चलता है कि जैन मत के तीन तीर्थंकरों (श्री शांतनाथ जी व श्री कुन्थनाथ जी व श्री अरहनाथ जी) का जन्म भी यहां ही हुवा था। चुनांचे अब तक उनकी निशियां जी अर्थात् चर्णपादिका यहां पर बनी हुई हैं।

९—बाद में भगवान मथान महाराज तीर्थंकर और श्रीकृष्ण जी महाराज (नारायणावतार) के समय में कौरव और पांडव वंश के राजाओं ने भी इसी नगर में अपनी राजधानी क़ायम की। जिस समय कौरव और पांडवों में अनबन हुई तो कौरव यहां ही राज्य करते रहे और पांडवों ने अनुमान ५० मील की दूरी पर इन्द्रप्रस्थ नाम का दूसरा नगर बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। इन दोनो राजाओं में एक समय बड़ा भारी युद्ध भी इसी हस्तनापुर के कुरुक्षेत्र नामी मैदान (रण भूमि) में हुवा था जो महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। हस्तनापुर में पुराने किले के निशानात अब तक पाये जाते हैं। यह स्थान मेरठ से अनुमान बीस मील की दूरी पर है।

१०—यहां पर प्राचीन समय से हर साल कार्तिक के अन्त में आठ दिन तक जैनियों का बड़ा भारी रथ यात्रा आदि का मेला लगता है और जैन सभा आदि के जल्से भी होते हैं। दूर दूर से हज़ारों जैनी इस मेले में तीर्थयात्रा करने के लिये आते हैं।

११—जिस समय का इन नाटक में वर्णन है उस समय इसी हस्तनागपुर में राजा भूपाल (पहुपाल) राज करते थे। धनदेव (धनदे) यहां पर

बहुत बड़ा क्रोड़पति सेठ था और हरीबल एक जैन महाजन भी यहां ही रहता था जिसकी स्त्री का नाम लक्ष्मी देवी था हरीबल के कमलश्री नाम की एक सुन्दर रूपवाली गुणवान पुत्री थी जो हमारे नाटक की हीरोइन अर्थात् नायिका हैं । कमलश्री की शादी सेठ धनदेव से हुई थी और उसके श्री भविषदत्त एक पुत्र हुवा जो हमारे नाटक के हीरो अर्थात् नायक हैं ।

१२—इन्द्रप्रस्थ शहर आज कल देहली के नाम से मशहूर है जहां पर हमारे राष्ट्रपति, प्रधान मंत्रि व मंत्रि इत्यादि रहते हैं इस समय यह शहर भारतवर्ष की राजधानी है ।

१३—पोदनापुर के युगराज नामी राजा को महराज भविषदत्त ने युद्ध में प्राजय किया था । आदि पुराण व भविषदत्त चरित्र आदि जैन शास्त्रों से ऐसा प्रतीत होता है कि यह पोदनापुर नगर अफ़ग़ानिस्तान व कंधार आदि देशों की तरफ था ।

न्यामत सिंह जैन
हिसार

(तारीख ६ जून सन् १६२७)
(दूसरा एडीशन १६६०)

विशेष सूचना ।

—:※:—

१—यह कमलश्री नाटक मार्च १६२५ में बनाना प्रारम्भ किया था। ६ जून सन् १६२७ को समाप्त होने पर छपवा कर सर्व भाइयों के हितार्थ प्रकाशित किया गया था। अब इसका यह दूसरा एडीशन है।

२—यह कमलश्री नाटक सर्व साधारण के पढ़ने योग्य है और विशेष कर स्त्रियों के लिये अत्यन्त लाभदायक है। इसमें मौके मौके पर धर्म की शिक्षा और गृहस्थ नीति की शिक्षा कविता रूप में अच्छे प्रकार से दर्शाई गई है जिसकी आज कल बड़ी आवश्यकता है। इस नाटक में इस बात को भी अच्छी तरह विस्तार पूर्वक दिखलाया गया है कि पहले समय में श्री भविषदत्त जैसे वैश्य पुत्र कैसे बलवान और गुणवान होते थे जो अपनी बुद्धि और भुजबल से राजाओं तक को युद्ध में पराज्य करके और उनकी कन्याओं से शादी करके स्वयं राज्य किया करते थे। और द्वीपान्तरों में जाकर वणज व व्योपार करके सुखसे जीवन व्यतीत किया करते थे। आज कल के वैश्यों की तरह न तो वह विद्याहीन और बलहीन होते थे और न निरुद्यमी होकर हीन दशा को प्राप्त होते थे।

३—इस नाटक में इस बात को भी विस्तार पूर्वक दिखलाया गया है कि सती कमलश्री और श्री भविषदत्त ने किस प्रकार योग्य रीति से घरका और राज्य का प्रबन्ध किया था।

४—इस नाटन में निम्नलिखित तेरह बातों का दृश्य अच्छी तरह से दिखलाया गया है अतः इस नाटक से इन बातों की सब स्त्री व पुरुषों को शिक्षा लेनी चाहिये।

(१) अपने से बढ़कर धनवान से सम्बन्ध करने में हानि।
(२) एक से अधिक शादी कराने में हानि।
(३) व्यर्थ व्यय का बुरा परिणाम।
(४) स्त्रियों को दुख देने का बुरा परिणाम।
(५) धन प्राप्ति के लिये उद्यम करना।
(६) अपनी सन्तान को बुरी शिक्षा देने का बुरा परिणाम।
(७) भाई से द्वेष करने का बुरा परिणाम।
(८) पर स्त्री की इच्छा का बुरा परिणाम।

(९) अपने स्वामी से द्वेष करके शत्रुओं से मिलने का बुरा परिणाम।
(१०) दूत आदि की बातों में आकर बिना विचारे युद्ध करने का बुरा परिणाम।
(११) धर्म पर चलने और सन्तोष करने का अच्छा परिणाम।
(१२) भाई से बदी के बदले नेकी करने का अच्छा परिणाम।
(१३) परस्पर परोपकारता करने का अच्छा परिणाम।

५—इस नाटक को क़िस्सा या कहानी समझ कर इसकी अविनय नहीं करनी चाहिये बल्कि जैन शास्त्र जानकर इसको विनय पूर्वक पढ़ना चाहिये क्योंकि इसमें श्री जैन शास्त्र का रहस्य दिखाया गया है।

६—यह नाटक श्री मन्दिरजी में तथा अपने घरों में सब स्त्री व पुरुषों को पढ़ना चाहिये। यदि नाटक पात्र भिन्न भिन्न हों तो इसका प्रभाव जियादा अच्छा पड़ेगा।

७—इस नाटक के वास्ते हार्मोनियम बाजा और तबला अवश्य होना चाहिये। चूंकि इस नाटक में आज कलके प्रचलित राग व रागनी व थ्येट्रीकलट्यून व क़वाली रूप गायन मौके मौके पर दिये गए हैं इस लिए पढ़ने वालों को इन सब रागों से वाक़िफ़ होना चाहिये।

८—चूंकि यह एक धार्मिक नाटक है इस लिये इसके पढ़ते या सुनते समय किसी प्रकार की अविनय या अनुचित हंसी मसख़री नहीं होनी चाहिये।

९—चूंकि इस नाटक में प्रायः सती कमलश्री के शील व सन्तोष आदि धार्मिक भाव और उसकी गृहस्थ नीति का विशेष वर्णन है इस लिये इसका नाम सती कमलश्री नाटक रक्खा गया है इस नाटक में सती कमलश्री नायिका (हीरोएन) और श्री भविषदत्त नायक (हीरो) हैं।

१०—इस नाटक में समस्त कविताएं पिंगल व इल्मे अरूज़ से जांच कर रची गई हैं और सब राग रागनियों को संगीत विद्या से भी जांच लिया गया है।

११—श्री भविषदत्त महाराज व सती कमलश्री आदि के वैराग व भावान्तरों का कथन शास्त्रानुसार इस नाटक के अन्त में दो नोटों की शकल में दिखला दिया गया। है

न्यामत सिंह जैन
हिसार

दूसरा एडीशन सन् (१९६०)

श्रीजिनेन्द्रायनमः

१--नाटक पात्र पुरुषों के नाम ॥

१	धनदेव	हस्तनागपुर का नगर सेठ
२	भविषदत्त	कमलश्री का पुत्र (नायक हीरो)
३	वधुदत्त	सरूपा का पुत्र
४	हरीवल	कमलश्री का पिता
५	धनदत्त	सरूपा का पिता
६	भूपाल	हस्तनागपुर का राजा
७	मानभद्र	तिलकपुर पट्टन का रक्षक (विद्याधर)
८	इन्द्र	एक देवता (भविषदत्त के पिछले जन्म का मित्र)
९	युगराज	पोदनापुर का राजा
१०	चित्रांग	युगराज का दूत
११	लोहजंग	भूपाल राजा का सेनापति
१२	कच्छ	कच्छ देश का राजा

२--नाटक पात्र स्त्रियों के नाम ॥

१	कमलश्री	धनदेव सेठ की पहिली रानी (नायिका हीरोइन)
२	सरूपा	धनदेव सेठ की दूसरी रानी
३	तिलकासुन्दरी	भविषदत्त की पटरानी
४	सुमता	भविषदत्त की दूसरी रानी
५	लक्ष्मीदेवी	कमलश्री की माता
६	चन्द्रावली	धनदेव की बांदी और कमलश्री की सखी
७	रत्नावली	कमलश्री की बांदी
८	चपला	कमलश्री की बांदी
९	विमला	कमलश्री की बांदी
१०	चम्पा	हस्तनागपुर की एक स्त्री
११	चमेली	हस्तनागपुर की एक स्त्री
१२	चंद्ररेखा	दूती
१३	लच्छी	दूती
१४	प्रियसुन्दरी	राजा भूपाल की रानी और सुमता की माता
१५	कनकमाला	कमलश्री की सखी

❀ श्रीजिनेन्द्रायनमः ❀

सती

कमलश्री नाटक

—:—(❀)—:—

पहिला अंक

दृश्य	विषय
१	परियों का भगवान की स्तुति करना।
२	कमलश्री का बाग में अपनी शुभ भावना प्रगट करना।
३	धनदेव का कमलश्री पर मोहित होना।
४	धनदेव व कमलश्री के विवाह की बाबत बात चीत।
५	कमलश्रीं व धनदेव के विवाह का विधान।
६	कमलश्री व धनदेव व भविपदत्त का बाग में सैर करना।
७	धनदेव का सरूपा पर आसक्त होना।

श्रीजिनेन्द्रायनमः
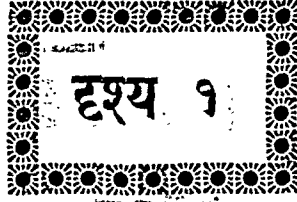
(रंगभूमि का परदा)

१

परियों का मिलकर भगवान महावीर की स्तुति करना ॥
चाल नाटक—चलती चपला चंचल चाल सुन्दरिया अलबेला ॥

जय जय ज्ञाता दृष्टा सार जग जीवन हितकारी ॥
तूने सत पथ दर्शाया—मिथ्या तम दूर हटाया ॥
तू निज आनन्द बिहारी ॥ जय० ॥ टेक ॥
(दोहा) परम शान्त आनन्दमय, बीत राग गुणधार ॥
इन्द्र भूप चर्णन नमें, महिमा अगम अपार ॥
हे जग भूषन अविकारी—चिन मूरत आनन्द कारी ॥
है भारत शरण तिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥
(दोहा) परम ज्योति परमात्मा, परम शक्ति पर्वीन ॥
विघन हरण मंगल करन, घट घट अंतर लीन ॥
हां हां हां सब सुखकारी—ओ हो हो जग दुखहारी ॥
न्यामत जाए बलिहारी ॥ जय० ॥ २ ॥

दृश्य २
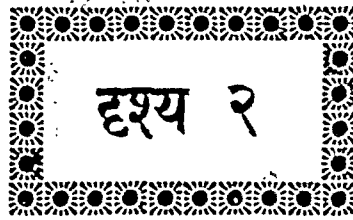
(बाग़ का परदा)

२

नोट:—(१) चौथे काल (सतयुग) के लगभग भारतवर्ष में श्री हस्तिनापुर एक बहुत बड़ा शहर था जहां महाराज भूपाल नरेश राज करते थे।

(२) इस नगर में एक धनदेव नामी साहुकार जादा था जिसकी युवा अवस्था थी और विद्या ग्रहण कर चुका था। यह धनदेव करोड़पति कहलाता था : और उसकी शादी केलिये जगह जगहसे पैग़ाम आए मगर उसने किसी को मंजूर नहीं किया।

(३) इसी नगर में हरीवल नामी एक जैन महाजन भी था जिसकी धर्म पत्नि का नाम लक्ष्मी देवी था जो बड़ी चतुर थी और गृहस्तनीति को भले प्रकार जानती थी। इसके कमलश्री नाम की एक सुन्दर रूपवति लड़की थी जो बड़ी गुणवान और शीलवान थी और जैन सिद्धांत की पंडिता भी थी।

३

कमलश्री का बाग में भगवान की स्तुति करते हुये और अपनी शुभ भावना प्रकट करते हुवे नज़र आना।

(चाल) मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे ॥

स्वामी चर्णों का तेरे सहारा मुझे।
केवल तेरा ही शर्णा गवारा मुझे॥ टेक ॥
१. तू न रागी है न द्वेषी है कि अविनाशी है तू॥
विश्व का ज्ञाता दृष्टा जग हितोपदेशी है तू॥
अपने दर्शन का देना नज़ारा मुझे॥

२. वीर पारस हर हरि ब्रह्मा कि बुद्ध अर्हन्त राम ॥
या तुझे स्वाधीन कह दूं हैं हज़ारों तेरे नाम ॥
जिन में हर इक है प्यारे से प्यारा मुझे ॥
३. जिनको विषयों की न आशा है न दिल में राग है ॥
स्वार्थ माया लोभ कोप अभिमान का भी त्याग है ॥
ऐसे ऋषियों का सेवा प्यारा मुझे ॥
४. झूठ चोरी ईर्षा हिंसा से हूँ हर वक्त दूर ॥
शील सन्तोष और समता का रहे दिल में ज़हूर ॥
माया लालच से होवे किनारा मुझे ॥
५. मैत्री प्रमोद करुणा धीरता गंभीरता ॥
देश की जिनधर्म की प्रीति रहे मन में सदा ॥
होवे तत्त्वों का राज़ आशकारा मुझे ॥
६. ऐब जोई और किसी के भूलना अहसान को ॥
यह न हों मुझमें कि पर उपकारता का ध्यान हो ॥
सतपे क़ायम रहूं यह हो यारा मुझे ॥
७. मैं न फूलूं सुखमें और दुख में न घबराऊं कभी ॥
दिल न हो कायर कभी हिम्मत रहे मेरी बढ़ी ॥
रहे दिल में भरोसा तुम्हारा मुझे ॥
८. खुश रहें जगजीव सारे खाने जंगी छोड़कर ॥
सब बनें धर्मात्मा पापी से रिश्ता तोड़कर ॥
सुख में आए नज़र जग यह सारा मुझे ॥
९. खुश रहे पर्जा कि राजा धर्म पर क़ायम रहे ॥

वक्त पर बारिश हो जग में शांति दायम रहे ॥
बहती आए नज़र प्रेम धारा मुझे ॥

१० ईत भीत और रोग और दुर्भिक्ष आलम में न हो ॥
बद जुबानी बुग्ज़ कीना और हसद हम में न हो ॥
आवे नज़रों न शर का शरारा मुझे ॥

११ योग्यता से मैं गृहस्ती धर्म का पालन करूं ॥
वीर की भक्ति से बनकर वीर कर्मों को हनूं ॥
आना दुनिया में हो ना दुबारा मुझे ॥

(कमल श्री का चला जाना)
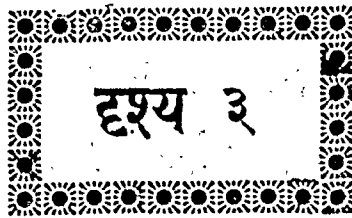
(धनदेव के महल का परदा)

४

धनदेव का अपने महल में बैठे हुवे नजर आना—कमलश्री का बाग से वापिस आते हुवे सामने से गुजरना धनदेव का कमल श्री को देख कर मोहित हो जाना और उससे शादी करनेका विचार करते हुवे नजर आना।

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं।

१ कौन यह सुन्दरी जी देख मतवाला हुवा ॥
मोहनी मूरत वदन सांचे में था ढाला हुवा ॥

२ देख चेहरे की चमक दिल में हुवा ऐसा खयाल ॥
क्या अंधेरी रात में सूरज का उजियाला हुवा ॥

३. शील लज्जा और शरम भी हो रहे थे आशकार ॥
सादगी और भोलेपन से हुस्न दोबाला हुवा ॥
४. इस बिना घरबार धन जोबन मेरे किस काम का ॥
क्या हुवा गर मैं नगर का सेठ धनवाला हुवा ॥
५. देखिये क्योंकर मिले यह रूप की देवी मुझे ॥
यह मिले जिसको तो समझो शुभकरम वाला हुवा ॥

५

धनदेव की बांदी चन्द्रावली का आना और बात चीत करना ॥

चं०—कहिये महाराज आज किस सोच में हो ॥
ध०—कुछ न पूछो दिल बेचैन है ॥
चं०—आखिर क्या बात है ॥
ध०—क्या तुम जानती हो यह कौन सुन्दर कुमारी थी जो अभी यहां से गई है ॥
चं०—भला इसे कौन नहीं जानता ॥ (शैर)
इसके धर्म और शील का और इसके सुन्दर रूपका ॥
सारी नगरी भर में चर्चा हो रहा है जा बजा ॥
ध०—आखिर है कौन ?
चं०—महाराज यह श्रीमती लक्ष्मीदेवीकी पुत्रीकमलश्री है।
ध०—कौन लक्ष्मी देवी ?
चं०—हरीवल जैन महाजन की धर्म पत्नि ॥

ध०-अभी इसका कहीं सम्बन्ध तो नहीं हुवा है ?

चं०-क्यों आप का क्या मतलब ॥

ध०-इसकी सादी चाल ढाल और मन मोहनी सूरत ने मेरे हृदय पर अधिकार जमा लिया है ॥

(शैर) गर कंवारी हो तो बस इस ही से मैं शादी करूं ॥
और चाहे लाख सुन्दर हो नहीं हरगिज़ वरूं ॥

६

चन्द्रावली का जवाब ॥

चाल-विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१ सती शीलवंती यह चातुर बड़ी है ॥
गुरुकुल में जा करके विद्या पढ़ी है ॥
२ करम न्याय नीति को पढ़ पढ़के बसों ॥
बड़ी पंडिता जैन मतकी बनी है ॥
३ यह है बेगुमां आपके घरके लायक़ ॥
कि नज़रों में सबके रतन स्त्री है ॥
४ यह है घरका शृन्गार महलों की शोभा ॥
कि अपने ज़माने की यह रुकमणी है ॥
५ पतिब्रता के चिन्ह अयाँ हो रहे हैं ॥
सरापा यह ज्ञान और गुण से भरी है ॥

७

धनदेव और चन्द्रावली की फिर बात चीत ॥

ध०-चंद्रावली क्या तुम इस कार्य में हमारी सहायतों करोगी ॥

चं०—क्यों नहीं-महाराज जो मेरे हाथ की बात है उस के करने में मुझे क्या इन्कार हो सकता है ॥

ध०—अच्छा तो तुम लक्ष्मी देवी के पास जाओ और समझा बुझाकर इस काम को बना लाओ ॥

चं०—(ज़रा सोच कर) यह काम तो बंदी के बश का नहीं ॥

ध०—क्यों नहीं ॥

चं०—लक्ष्मी देवी बड़ी चतुर और गृहस्त नीतिकी ज्ञाता है। उसको मनाना कोई आसान बात नहीं ॥

ध०—चंद्रावली तुम भी तो बड़ी होशियार और जोड़तोड़ मिलाने वाली हो—डरने की क्या बात है ज़रा हिम्मत से काम लो ॥

चं०—महाराज लक्ष्मी देवी के सामने बात बनाना कोई गुड़ियों का खेल नहीं ॥

ध०—तुम जरा साहस करके जाओ तो सही—हमारी तरफ से संदेशा पहोंचादो तुम को इस में क्या डर है—हमें पूर्ण आशा है वह ज़रूर हमारी बात को स्वीकार कर लेगी ॥

८

चन्द्रावली का जवाब ॥

चाल—विपत में सनम के संभाला कमलिया ॥

१. है मंजूर मुझको सब आज्ञा तुम्हारी ॥

मगर लक्षमी का भी खटका है भारी ॥
२ वह जिन धर्म नीति पे है चलने वाली ॥
नहीं लोभ में आने वाली वह नारी ॥
३ अगर उसने हां करली पैग़ाम सुनके ॥
तो बन जाएगी बात बेशक हमारी ॥
४ जो नीति को वह सोच बैठी तो मांदे ॥
है दुशवार फिर बेल चढ़नी तुम्हारी ॥

९

धनदेव का जवाब ॥ (शैर)

१ अय मेरी चंद्रावली तू भी है पुतली अक्ल की ॥
तुझ से चतुराई में कुछ बढ़ कर नहीं है लक्षमी ॥
२ लक्षमी को क्या तू युक्ति से मना सकती नहीं ॥
उसके आगे चाल क्या अपनी चला सकती नहीं ॥

१०

चन्द्रावली का जवाब ॥
चाल—तोहींद् काडंका आलम में बजवा दिया कमली वाले ने ॥

१ वहाँचाल चलाना नामुमकिन वह उल्टीमुझे चलादेगी ॥
लेडालेगी लत्ते मेरे घरलेना कठिन बना देगी ॥
२ वह एक बातके बदलेमें बस सौ सौ बात सुनादेगी ॥
वहमेरी बातको काट छांटकर घरकी राह दिखादेगी ॥
३ उसकी भेमर्जी गरकुछ भीमैं बोली तोफिर आफ़तहै ॥

वह देगी बेर वखेर तेरे नाते का मजा चखादेगी ॥
४ गरसुनकर मेरी युक्ति कोवह बिगड़गई तोमुशकिलहै ॥
लेने के देने पड़ जांए कारज बदमज़ा बनादेगी ॥
५ वह गृह नीतिकी बेता है और सद रीति की नेता है ॥
मेरा तो कितना बोता है चुटकी में मुझे उड़ादेगी ॥
६ कब बात में आने वाली नहीं धोका खाने वाली है ॥
हर भेद को पाने वाली है मुझे चालमें ला ऊलझादेगी ॥
७ पल में सौ युक्ति दे डाले दिल में आए सो कहडाले ॥
पानी को आग बना डाले दिन में तारे दिखलादेगी ॥

११

धनदेवऔर चंद्रावली की फिर बात चीत ॥

ध०—तो फिर तुम्हारी राय में क्या करना चाहिये।
चं०—महाराज मेरी समझ में तो आप को स्वयं ही हरि-
वल जी से इस बात का फैसला करना चाहिये ॥
(शैर)१ नरम दिल है और आँखों में भी है उसके हया ॥
आपकी वह मान लेगा शक नहीं इसमें ज़रा ॥
२ धर्म पत्नि को भी अपनी वह मना लेगा जरूर ॥
आपके कहने से बाहर वह नहीं होगा हजूर ॥
ध० देखो चन्द्रावली हमारा जाना ठीक नहीं— अगर हरि
वल ने जरा इन्कार कर दिया तो बस हमारी इज्जत
में बट्टा लग जाएगा नगर में बदनामी हो जायगी।

वेहतर है तुम ही हरीवल के पास हमारा संदेशा लेजाओ ॥

च०—महाराज आप तो बहुओं के हाथ चौर मरवाते हो—भला जहां आपको प्रभाव पड़ सकता है वहां मेरा क्या असर हो सकता है ॥

ध०—चन्द्रावली इसमें वड़ा फर्क है। अगर हरीवलने तुमसे इन्कार करदिया तो तुम्हारा कुछ नहीं विगड़ सकता बल्कि तुम तो मेरी तरफ़ से वकालत करके उसको गर्मी या नर्मी भी दिखा सकती हो ॥

च०—बहुत अच्छा महाराज जैसी आप की आज्ञा ॥

(शैर) आप ने मुझको अडंगे में तो डाला है मगर ॥
खैर लो जाती हूँ मैं ही अब हरीवल जी के घर ॥
जैसी कुछ मुझसे वनेगी मैं वनाऊंगी जरूर ॥
कुछ न छोड़ूं कस आगे आपकी किस्मत हजूर ॥

ध०—शावाश ! चन्द्रावली यदि तुम यह काम वना लाई तो हम तुम को भी खुश कर देंगे मगर देखना आना जरा जल्दी ॥

१२

चन्द्रावली का जवाव देकर चला जाना ॥ (वार्तालाप)
जल्दी की भी आपने एक ही कही—भला यह कोई गुड़ियों का खेल है या नील का माट—यहां तो हरीवल के दिल को क़ाबू में लाना है— और लक्ष्मीदेवी पर अपना नक़्शा जमाना है ॥

(चाल—विपत में सनम के संभाली कमलिया)

१. मुझे गर्मी नर्मी दिखानी पड़ेगी ॥
मनेगी वह जैसे मनानी पड़ेगी ॥
२. मुझे झूट सच सौ बनानी पड़ेगी ॥
हथेली पे सर्सों जमानी पड़ेगी ॥
३. तेरी शानो शौकत दिखानी पड़ेगी ॥
नई चाल हिकमत चलानी पड़ेगी ॥
४. जमी बात उसकी हिलानी पड़ेगी ॥
लगन उसके दिलमें लगानी पड़ेगी ॥
५. न वहां कोई जल्दी दिखानी पड़ेगी ॥
तसल्ली की चौसर बिछानी पड़ेगी ॥
६. गरम नर्म सुननी सुनानी पड़ेगी ॥
पड़ेगी जो आफ़त उठानी पड़ेगी ॥
७. करेगी वह हट तो हटानी पड़ेगी ॥
ख़फ़ा गर हुई तो हंसानी पड़ेगी ॥
८. ग़रज़ जान अपनी लड़ानी पड़ेगी ॥
तेरी बेल मांढे चढ़ानी पड़ेगी ॥

(चन्द्रावली का जाना)

दृश्य ४

(हरीवल के मकान का परदा)

१२
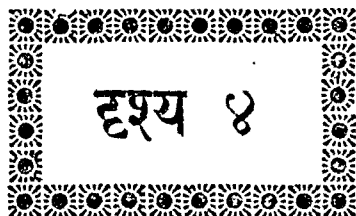
हरीवल का अपने मकान में बैठे हुवे नज़र आना—चन्द्रावली का पहोंचना और धनदेव का संदेशा हरीबल को सुनाना और दोनों की बातचीत।

चं०—लाला हरीबल जी जय जिनेन्द्र ॥

ह०—जय जिनेन्द्र—आओ चंन्द्रावली आज कैसे आना हुवा ॥

चं०—लालाजी सेठ धनदेव ने मुझे आपकी सेवा में भेजा है और आपकी पुत्री कमल श्री के लिये प्रार्थना की है ॥

ह०—(देर तक सोच कर) अच्छा ज़रा ठैरो—सोच कर जवाब देंगे ॥

चं०— (शैर) चेहरेपे क्यों बताइये फ़िक्र आशकार है ॥
इस नेक काम में भी क्यों इतना विचार है ॥

ह०—देखो चन्द्रावली सम्बन्ध का मुआमला बड़ा नाज़ुक होता है इसमें मशवरे की भी ज़रूरत होती है—जल्दी न करना चाहिये बल्कि हर पहलू पर विचार करना चाहिये ॥

चं०—(शैर) इसमें न और मशवरा कुछ काम आएगा ॥
देरी में जानलो कि विगड़ काम जाएगा ॥

ह०—वह क्यों ?

चं०—(शैर) कई धनवान तुमसे भी बड़े होशियार बैठे हैं ॥
कि धनवे से जो नाता करने को तय्यार बैठे हैं ॥
निकल जाएगी यह सोने की चिड़िया हाथ से तेरे ॥
बिछाए जाल अपना सेठ साहूकार बैठे हैं ॥

ह०--भला ऐसी जल्दी कहीं कुल्हिया में गुड़ फूटता है--और नहीं तो घरवालों से मशवरा ज़रूर करना ही पड़ेगा--बिना सोचे समझे सम्बन्ध करने में कोई न कोई नुक्स निकल आता है आख़िर पछताना पड़ता है ॥

१४

चन्द्रावली का जवाब ॥
चाल नाटक—मुझे जाने दो भाई क्या डर है ॥

सुनो लालाजी इसमें क्या डर है ॥
तुम्हें काहेका इतना फ़िकर है ॥ टेक ॥

१. धनदेव जो धनवाला है, सब सेठों में आला है ॥
सुख पावे जश गावे, अड़ी भीड़ में काम आवे ॥
तुझपे महर की नज़र है ॥ तुम्हें काहे का० ॥

२. कमला भी सुख पाएगी, इज़्ज़त भी बढ़ जाएगी ॥

काम बना नाम बढ़ा, मत अपने जी को भर्मा ॥
कहने में सारा नगर है ॥ तुम्हें काहे का० ॥
३. वह क्रोड़पती कहलावे; पुन्य से ऐसा वर पावे ॥
भ्रम न कर नाता कर, शुभ कारज में देर न कर ॥
देरी में पूरा ख़तर है ॥ तुम्हें काहे का० ॥

१५

चन्द्रावली व हरीवल की फिर वात चीत

ह०--अच्छा चंद्रावली मैं आकी बात को स्वीकार करता हूँ, परन्तु कमसे कम अपनी धर्मपत्नि की तो सलाह लेलूं ॥

चं०—हां हां ज़रूर-- आप उसको भी बुलालें ॥
१. मगर याद रक्खो वह बाचाल है ॥
निकाले हर इक बाल की खाल है ॥
२. लगाएगी नीति के झगड़े अनेक ॥
कि पेचीदा बात उसकी होगी हरएक ॥
३. कहीं उसकी बातों में आ करके तुम ॥
न कर बैठना मुआमला सारा गुम ॥

ह०—नहीं नहीं-- मैं उसको सब बातें ठीक ठीक समझा दूंगा—तुम्हारी इच्छानुसार इसका फैसला करा दूंगा ॥

चं०—अच्छा लो मैंही बुलालाती हूँ- आप यहाँ ही बिराजें॥

(चन्द्रावली का चला जाना)

१६

लक्ष्मी देवी का चन्द्रावली के साथ आना और हरीवल का बात चीत करना ॥

ल०—कहिये प्राणनाथ आज क्या बात है ?

ह०—देखो प्रिये आज धनदेव सेठ ने अपनी बांदी चंद्रावली को हमारे पास भेजा है और कमलश्री के लिये प्रार्थना की है। कहिये ! इसमें आपकी क्या राय है॥

ल०—भला आपने क्या बिचार किया है ?

ह०—हमारी समझ में तो ऐसे बड़े घरका नाता बड़े भाग से मिलता है—शीघ्र स्वीकार कर लेना चाहिये—इस में सब बातों का लाभ ही नज़र आता है ॥

ल०—(ज़रा सोच कर) महाराज मैं तो आपसे इस बात में सहमत नहीं होती ॥

ह०—वह किस लिये ?

ल०—इस लिये कि यह कार्य गृहस्त नीति के विरुद्ध है॥

(शैर) जो नीति के बरअक्स होता है कार ॥
निकलता है दुख उसमें फिर वार वार ॥

ह०—किस तरह ?

ल०—सुनिये—

१७

लक्ष्मी देवी का जवाव ॥

चाल—खुदा या कैसी मुसीबतों में यह ताजवाले पड़े हुवे हैं ॥

१. धरमपे नीतिपे सब ऋषि जन यह ज्ञान वाले खड़े हुवे हैं ॥

सुखी वही हैं धरम के ऊपर जो धर्म वाने अड़े हुवे हैं ॥
२. मुसीबतों में वही पड़े हैं जिन्होंने नीति धरमको छोड़ा ॥
हुवे हैं लाखों ही घरसे बेघर घरों के ताले जड़े हुवे हैं ॥
३. गृहस्त नीतिको जिसनेखोया वड़ोंसे भिड़जिसने धन डबोया
वह ख्वारखस्ता फिरें भटकते चरणमें छाले पड़े हुवे हैं ॥

१८

हरिवल और लक्ष्मी देवी की फिर वात चीत ॥

ह० देखोप्रिय आपकी नीति हमारी समझमें नहीं आती ॥
ल० हां आपकी समझ में क्यों आएगी– आप को तो चंद्रावली ने ऐसी पट्टी पढ़ाई है कि दूसरों की वात आपके खयाल में आही नहीं सकती ॥ (शैर)
१. तुम्हारे दिलपे इसने रंग वह पुख्ता जमाया है ॥
कि जिस पर दूसरा कोई चढ़ाना रंग मुशकिल है ॥
२. सरासर आगए हैं आप धोके और लालच में ॥
है लालच मूल पापों का हटाना इसका मुशकिल है ॥
ह० नहीं– यह वात नहीं है बल्कि तुमने केवल अपनी नीति को ही अपने सामने रखा हुवा है ज़रा आपने लाभ की तरफ़ ध्यान नहीं किया—
ल० महाराज चाहे आप ज़ाहिरा हजार झूटे लाभ दिखाएं परन्तु नीति शास्त्र कदापि झूटा नहीं हो सकता—
ह० भला नीति शास्त्र को कौन झूटा कहता है—मगर

जो सांसारिक लाभ प्रत्यक्ष नज़र आते हैं क्या उन पर विचार करना भी पाप है या नीति के खिलाफ है-

ल०—हरगिज नहीं- मैं यह कब कहती हूं कि विचार करना पाप है ।। (शैर)

मुख्य अंग नीति का है हर काम में करना विचार ।।
आपने जो लाभ सोचे हैं वह कीजे आशकार ।।

१९

हरिवल का पहला लाभ जिताना ।।

चाल शैर– अजब नहीं तासीर तुम्हारी ।।

१. ऊंचों से नाता सुनले प्यारी छोटोंको बरतर करदे ।।
वर्तमान मेरी इज्जत को बढ़ा बढ़ा बहतर करदे ।।
२. इस नाते में हर पहलू से लाभ नज़र आते मुझको ।।
सेठों में हो नाम मेरा नीचे से उठा ऊपर करदे ।।

२०

लक्ष्मी देवी का जवाब ।।

चाल– अजब नहीं तासीर तुम्हारी ।।

१. बढ़ जाएगी इज्जत स्वामी यह खयाल तो झूठा है ।।
रही सही इज्जत जाएगी गर खुदको बेजर करदे ।।
२. किसी बात में चूक पड़ी तो ताने लोग सुनायेंगे ।।
कहो कौन है जो दुनिया की बंदजुबाँ आकर करदे ।।

३. बेढब हैं नगरी की औरत बात ज़रासी ले करके ॥
बदनामी का गुडा बांधकर खड़ा वहीं सरपर करदे ॥
४. नीती कहती है अपने सम घर लखकर नाता करदे ॥
धनी देख लालच में आकर मत खुदको बेपर करदे ॥

२१

हरीबल का दूसरा लाभ दिखाना ॥
चाल शेर-अजब नहीं तासीर तुम्हारी ॥

१. एकही कमला बेटी है कोई और नहीं दोचार नहीं ॥
गांव दुकां घर जेवर सब शादी केआज नजर करदूं ॥
२. ऐसा ब्याह करूं कमला का जिसको नित जोगी गावें ॥
चूक न पड़ने दूं शादीकी धूम बड़ी घर घर करदूं ॥
४. चंगा ब्याह किया तो बस नगरी भरमें हो नाम मेरा ॥
नामकी खातिर सब मरते मैंभी अर्पण सबज़र करदूं ॥

२३

लक्ष्मी देवी का जवाब ॥
चाल- अजब नहीं तासीर तुम्हारी ॥

१. फजूल खर्ची बुरी बला है जोहर को पत्थर करदे ॥
धाक बड़ों की सही न जागी बरतर से बदतर करदे ॥
२. बड़ोंसे भिड़ निजबलसे बढ़कर अगर कोईधन खरच करे ॥
अजब नहीं यह रसम उसे कंगाल बना बेघर करदे ॥

३. मुशकिल से मिलता है धन जब लहू पसीना एककरे ॥
मूरख है जो धनको यूं शेखी के पेशे नज़र करदे ॥
४. जब तक धन है तबतक तो सारे आदर सन्मान करें ॥
कोई नहीं पूछे निर्धन को बल्के वे आदर करदे ॥
५. है नीति का वाक्य जो रिश्ता बैर प्रीति करनी हो ॥
सदा बराबर वाले से आगा पीछा लखकर करदे ॥
६. क्यों कर होगी बराबरी तू सहस्रपति वह क्रोड़पति ॥
नहीं नाक नीचे आए चहे ईंट का मिट्टी घर करदे ॥
७. कौड़ी से सबकाम चलें कौड़ी से नाम और इज्जतहै ॥
बिन कौड़ी के नादारी कौड़ी के तीन बशर करदे ॥

२३

हरिचल का तीसरा लाभ जितलाना ॥ (शैर)

१. है धनी धनदेव और सरताज ज़रदारों में है ॥
है नगर का सेठ नामी और हितकारों में है ॥
२. एक दिन बिपता में हो बेशक सहाई आनकर ॥
वह वफ़ादारों में है बल्के मददगारों में है ॥

२४

लक्ष्मीदेवी का जवाब ॥

चाल— कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. मैं ने यह माना कि धनवे आज ज़रदारों में है ॥

पर नहीं मैं मानती वह कौमि हितकारों में हैं ॥

२. कौन कहता है धनी करते हैं सेवा क़ौमकी ॥
खुदग़रज हैं और ग़रीबों के दिलाज़ारों में हैं ॥

३. जाल फैला करके धनका ताक में बैठे रहें ॥
निर्धनों की लड़कियों के यह खरीदारों में हैं ॥

४. चाल में आकरके फंस जाते हैं बेचारे ग़रीब ।
जो बड़े नादान भोले ना समझदारों में हैं ॥

५. एक क्या दो चार तक भी लड़कियां लेके रहें ।
दूसरों का हक उड़ाने से सितमगारों में हैं ॥

६. कौम की इमदाद का आता नहीं उनको ख़याल ॥
अपने मतलब के लिये हरवक्त हाशियारों में हैं ॥

७. कौम गर मरजाय भी इनकी नजर के सामने ॥
आंख उठा कर भी न देखें क्या वफादारों में हैं ॥

८. आप हामी हैं धनी दानी बड़े हमदर्द हैं ॥
मैं कहूँगी बे मरव्वत और नाकारों में हैं ॥

९. यह नहीं करते जरा परवा गरीबों की कभी ॥
आप हैं धोके में और ना तजरुबेकारों में हैं ॥

२५

हरीवल का चौथा लाभ दिखाना ॥ (शैर)

१. मेल से पुनवान के अपना भी पुन बढ़ जायगा ॥
कुछ नहीं तुझको खबर तू ना खबरदारों में हैं ॥

२. मेल सेठों से करे धनवान की जो ले शरण ॥
लोग कहते हैं वही दुनिया के होशियारों में है ॥

२६

लक्ष्मी देवी का जवाब ॥

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. अपना ही पुन काम आता है नहीं ग़ैरों का पुन ॥
खुद हैं हम अपनी शरण अपने मददगारों में हैं
२. मानते गर तुम नहीं तो करके नाता देखलो ॥
यह धनी जन खुद गरज़ हैं या कि दातारों में हैं ॥

२७

हरीवल का पांचवां लाभ जितलाना ॥ (शैर)

१. फ़रज करलो कि दुख निकलेगा इस नातेसे हमको तो ॥
कमल तो राज भोगेगी सदा आराम पाएगी ॥
२. कहावत है सुखी बेटी हो जिसकी वह सुखी जगमें ॥
सुता अपनी बड़े घरमें बड़ा आराम पाएगी ॥

२८

लक्ष्मी देवी का जवाब

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

१. मुझे तो इसमें भी शक है सुता आराम पाएगी ॥
नज़र आता है दुख मुझको वह क्या आराम पाएगी ॥

२. बड़े घरमें नहीं होता कभी भी मान छोटों का ॥
इसे दबना पड़ेगा—क्या भला आराम पाएगी ॥
३. जिठानी देवरानी सब सदा छोटी सी बातों पर ॥
सुनादेंगी इसे ताने यह क्या आराम पाएगी ॥
४. यह बेचारी विवश रो रो करेगी आंख तर अपनी ॥
सुनेगी गालियां निशदिन वह क्या आराम पाएगी ॥

२९

हरीवल का लक्ष्मी देवी की युक्तियों से तंग आना और छटा लाभ जितलाना ॥
चाल—मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ॥

तेरी नीति न देवेगी जीने मुझे ॥
कीना कैसा पसीने पसीने मुझे ॥ (टेक)
१. (शैर) मैं न समझा था करेगी इस क़दर तकरार तू ॥
वाद करके यूं बनादेगी मुझे लाचार तू ॥
ऐसी युक्ति न दीनी किसी ने मुझे ॥ तेरी० ॥
२. (शैर) आप ही मांगी है कमला उसने चांदी भेजकर ॥
प्यार की इसपर पति हरवक्त रक्खेगा नज़र ॥
पूरी दी है तसल्ली इसीने मुझे ॥ तेरी० ॥

३०

लक्ष्मी देवी का जवाब ॥
चाल—मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ॥

तेरे भाते न झूटे क़रीने मुझे ॥

कैसी बातें सुनाई पति ने मुझे ॥ टेक ॥

१. (शैर) प्यार रक्खेगा सदा यूंही मैं कह सकती नहीं ॥
मालदारों को बिगड़ते देर कुछ लगती नहीं ॥
दी ना ऐसी तसल्ली किसी ने मुझे ॥ तेरे० ॥

२. (शैर) सुख सदा रहता महोब्बत शान्ति के भाव में ॥
है नहीं हीरे जवाहर पत्थरों के चाव में ॥
यह ही राज़ बताए मुनी ने मुझे ॥ तेरे० ॥

३. (शैर) हो अगर नाराज दी उसने कभी घरसे निकाल ।
आपका मेरा न कमला का करेगो कुछ ख़याल ॥
वह दुख देगा समझलो न जीने मुझे ॥ तेरे० ॥

३१

हरीबल का लाचार होना और ज़रा नाराज़गी से लक्षमी देवी से अर्ज़ करना ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

१. सखी चन्द्रावली से कर चुका हूं हां मैं थोड़ीसी ॥
इनायत की नजर तेरी है यूं दरकार थोड़ीसी ॥
२. हमारी बात रह जाएगी और रह जाएगी इज्जत ॥
तू मेरी बातको करले अगर स्वीकार थोड़ीसी ॥
३. मैं हारा और तुमही जीतीं चलो जाने दो झगड़ेको ॥
मेरे कहने से देदे सम्मति इस बार थोड़ीसी ॥
४. मुझे अच्छा नहीं लगता तेरा जिद करना मेरे से ॥
जो कहता हूं उसे मानो तजो तकरार थोड़ीसी ॥

३२

लक्ष्मी देवी का नाराज़ होकर और जवाब देकर चला जाना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१. ज़रा करके इनायत छोड़ दो तकरार थोड़ीसी ॥
ठहरकर अर्ज़ मेरी भी सुनो सरकार थोड़ीसी ॥
२. भरम मिटजाए दिलका सब अभी ज़िद दूर होजाए ॥
अगर इन्साफ़ से सुनलो मेरी गुफ़्तार थोड़ीसी ॥
३. न कहियेगा कि मैं कुछ आपसे तकरार करती हूँ ॥
फ़क़त नीति पै चलने को कीथी तकरार थोड़ीसी ॥
४. धर्म की बात मानूंगी मगर नीति विरुद्ध बातें ॥
दबाने से करूंगी मैं नहीं स्वीकार थोड़ी सी ॥
५. तुम्हारी झूंठी बातें मेरे दिल पर जम नहीं सकतीं ॥
कही सच मानलो बालम मेरी इस बार थोड़ीसी ॥
६. मेरा नीति बताना काम था सो कर दिया मैंने ॥
सो करलो महरबानी से इसे स्वीकार थोड़ीसी ॥
७. ख़फ़ा क्यों होते हो मेरे से क्यों इतना बिगड़ते हो ॥
धरम के वास्ते मैंने थी की गुफ़्तार थोड़ीसी ॥
८. नहीं मानों तो जी चाहे करो सो आपकी मर्ज़ी ॥
हमारी सम्मति लेकिन नहीं जिनहार थोड़ीसी ॥
९. बदो नेक आपके जिम्मे बनूंगी मैं नहीं हरगिज़ ॥
बुराई या भलाई की तो जिम्मेदार थोड़ीसी ॥

१०. मैं जाती हूं अगर अपने ही दिलकी तुमको करनी है ॥
बुलाया क्यों मुझे गर मैं न थी दर्कार थोड़ीसी ॥

(चला जाना)

३३

हरीवल और चन्द्रावली की बातचीत ॥

ह०—चंद्रावली ! अगर लक्ष्मी देवी सहमत नहीं होती तो खैर तुम जाओ सेठजी से कहदो कि हमारी तरफ़ से नाता पक्का है ॥

चं०—बहुत अच्छा—पर लालाजी एक बात और आपकी सेवा में निवेदन करनी है —

ह०—अब और क्या बात रह गई ?

चं०—अजी सेठजीने यह भी प्रार्थना की है कि यदि शादी जल्दी कर दी जाय तो आपकी बड़ी कृपा होगी—

ह०—अच्छा यहभी मंजूरहै मैं आजही प्रबन्ध करना प्रारम्भ कर देता हूं—सेठ जी से कह देना कि वहभी जल्दी अपना इन्तेजाम करले —

चं०—बहुत अच्छा—जय जिनेन्द्र—

ह०—जय जिनेन्द्र—

चन्द्रावली का जाना

दृश्य ५

(कमलश्री के व्याह के मंडप का परदा)

३४

नोट—चन्द्रावली ने धनदेव को सम्बन्ध स्वीकार हो जाने की खबर दी और दोनों तरफ़ से विवाह की तैयारियां होनें लगीं—और विवाह का विधान करने के लिये एक बहुत सुन्दर मंडप तय्यार किया गया ॥

३५

लाला हरीचंद, लक्ष्मीदेवी, कमलश्री सेठ धनदेव, गृहस्ताचार्य और अन्य मंत्री आदि का मंडप में बैठे हुये नज़र आना और विवाह का विधान प्रारम्भ होना—प्रथम गृहस्ताचार्य का विवाह का मुख्य उद्देश्य अर्थात् समाज संगठन की उन्नति का वर्णन करना ॥ (वार्तालाप)

संसार में सुखमय जीवन बनाने के लिए चार पुरुषार्थ अर्थात धर्म अर्थ काम व मोक्षका पालन करना प्रत्येक मनुष्य के लिये जरूरी है--इन चारों पुरुषार्थोंके पूरा करनेको चारही आश्रम बनाये गए हैं अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्ताश्रम वाण-प्रस्थाश्रम और मुनिआश्रम मगर चूंकि बिना बलवान और योग्य समाज के कोई भी पुरुषार्थ या आश्रम पूरा नहीं हो सकता—इसलिये समाज बनाने और उसकी संगठन शक्ति बढ़ाने के लिये शादी करके योग्य सन्तान पैदा करने की

अत्यंत आवश्यक्ता है—बस यही विवाह कराने का मुख्य उद्द`श्य है ॥

३६

गृहस्ताचार्य का समाज सङ्गठन की शक्ति को दिखलाना ॥

समाज सङ्गठन में अपूर्व शक्ति है—इसके बिना कोई संसार में सुख से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता ॥

(शैर)—(चाल—सखी सावन बहार आई)

१. उदू बदबीं का झुक जाता है सर इक दम ज़मानेमें ॥
नज़र जब दूसरों के संगठन पर आके पड़ती है ॥
२. मधु मक्खियोंके छत्त को कोई भी छू नहीं सकता ॥
है उनमें संगठन हर एक मिलकर काम करती है ॥
३. ज़रासी चींटियां मिल सांप को भी मार देती हैं
है जिसमें संगठन जाति वही आराम करती है ॥
४. जो मिलकर सूत के धागे करें रस्से का बल धारन ॥
तो मस्त हाथीकी भी शक्तिनहीं कुछ काम करतीहै ॥
५. हर एक बरबादकर देताहै देखो आम मक्खियों को ॥
न उनमें मेल है नादां यूं ही गिर पड़के मरती है ॥
६. गरीबों पर सितम का हौंसला ज़ालिम को होता है ॥
वह कौमें नष्ट होती हैं नहीं जो मेल करती है ॥
७. बहुत हैं मछलियां छोटी समूह शक्ति नहीं लेकिन ॥
इसी कारण बड़ी मछली उन्हें संधार करती हैं ॥

८. बिना संगठन के जिन्दा क़ौम कोई रह नहीं सकती ॥
वही रहती हैं जिन्दा जो परस्पर मेल करती हैं ॥

३७

गृहस्ताचार्य का समाज सङ्गठन से लाभ दिखलाना ॥

जिस क़दर सांसारिक सुख और लाभ हैं वह सब समाज संगठन से ही मिल सकते हैं ॥ (शैर)

१. जमीं ताबे है उसके आसमां भी यार होता है ॥
कि जिसके संगठन का दिलमें जोश और प्यार होता है ॥
२. है जीवन युद्ध और युद्धक्षेत्र इस संसार को समझो ॥
हर एक इस युद्ध में लड़ने को बस तय्यार होता है ॥
३. जो निर्बल है या रक्षा के लिये जिस के नहीं कोई ॥
वही निर्धन दुखी बेकार खस्ता ख्वार होता है ॥
४. सितमगारों का झुक जाता है सर लख संगठन का बल ॥
कि बलहीनों का भी महफ़ूज़ घर और बार होता है ॥
५. बिना संगठन के पुरुषारथ हमारा हो नहीं सकता ॥
बिना संगठन किसी का भी गुजारा हो नहीं सकता ॥
६. बिना संगठन के कोई आश्रम कायम नहीं रहता ॥
बिना संगठन किसी को भी सहारा हो नहीं सकता ॥
७. बिना संगठन ग़रीबों की न रक्षा हो न पालन हो ॥
बिना संगठन किसी जाती का चारा हो नहीं सकता ॥
८. भली संतान पैदा कर करो बलवान जाती को ॥

बिना संगठन तरक्की का इशारा हो नहीं सकता ॥

३८

गृहस्ताचार्य का समाज संगठन की जरूरत दिखलाता ॥

समाज संगठन की हरएक जाति को ज़रूरत है और उसकी शक्ति बढ़ाने के लिये योग्य संतान पैदा करने की ज़रूरत है ॥ (शेर)

१. घड़ी के वास्ते चक्कर चलाने की जरूरत है ॥
फ़नर को इसकी खातिर फिर घुमाने की ज़रूरत है
२. समय पर ध्यान से चाबी लगाने की ज़रूरत है ॥
मगर इन्सां को हाथ अपना हिलाने की ज़रूरत है ॥
३. रणों में जिस तरह सेना बनाने की ज़रूरत है ॥
सभा में यूं सभासद के बढ़ाने की ज़रूरत है ॥
४. फ़क़त संख्या बढ़ाने से नहीं कुछ संगठन होता ॥
प्राण उद्देश सबका इक बनाने की ज़रूरत है ॥
५. समझलो इसतरह दुनियामें खुश और सुखसे रहनेको ॥
सभा हर एक जाति में बनाने की ज़रुरत है ॥
६. कुटम्बों से समाज और यूं घरों से खानदां होंगे ॥
घरों में योग्य बच्चों के बनाने की ज़रूरत है ॥
७. भली संतान बिन पुरुष स्त्री पैदा नहीं होती ॥
इसी कारण तो शादी के रचाने की ज़रूरत है ॥
८. यही उद्देश शादी का है पर इतना समझ लीजे ॥

पुरुष और स्त्री का दिल मिलाने की ज़रूरत है ॥

३९

गृहस्ताचार्य का विवाह का दूसरा उद्देश्य वर्णन करना ॥

विवाह करने का दूसरा उद्देश यह भी है कि मनुष्य गृहस्ताश्रम में अपने विषय और कषायों को आहिस्ता आहिस्ता कम करके अन्त में मुनिपद धारण करके मोक्षपद प्राप्त करे ॥ (शैर)

१. है अगरचे सुख मुकम्मिल मोक्ष में वैराग में ॥
और कषायों के विषय भोगों के बिल्कुल त्याग में ।
२. पर हर इक इन्सान में इतनी भला शक्ति कहां ॥
सारे कर्मों का जो दे चेलिंज आ वैराग में ॥
३. गृहस्त नीति पर चलें बस है सुगम रस्ता यही ॥
धीरे धीरे कम करे कर्मों को घर के राग में ॥
४. त्याग फिर संसार को मुनिपद धरें शिवपद लहें ॥
सारे कर्मों को जलादें ध्यान तप की आग में ॥
५. आप खुद करके दिखाया था ऋषभ जिनराज ने ॥
किस तरह इन्साँ चले इस गृहस्त में वैराग में ॥

४०

गृहस्ताचार्य का विवाह कराने के लिये स्त्री व पुरुषों की योग्यता को दिखलाना ॥

विवाह कराने के लिये दोनों पुरुष और स्त्री योग्य

होने चाहियें यदि उनमें योग्यता न होगी तो वह पूर्णरीति से गृहस्त का सुख नहीं भोग सकेंगे और उनसे संतान भी नालायक ही पैदा होगी जो समाज संगठन को भी हानी पहोंचाएगी ॥ दोनों को प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम का भले प्रकार साधन करके अपने शरीर का संगठन और विद्या ग्रहण कर लेना चाहिये अर्थात् पूर्ण बलवान और विद्वान् बन कर विवाह का विचार करना चाहिये ॥ (शैर)

१. ब्याह का करना भी गर्चे एक शुभकारों में है ॥
पर नहीं उसको जरूरी जो कि नाकारों में है ॥
२. क्या जरूरत ब्याह की चित में अगर बैराग है ॥
या कि जो बलहीन विद्याहीन नाकारों में है ॥
३. ब्याह करने की वही नर स्त्री इच्छा करे ॥
जो गुणी बलवान चातुर और ज़रदारों में है ॥
४. जिसमें हिम्मत हो कि ब्याह उद्देश्य को पूरा करे ॥
बस वही शादी कराने के हाँ हकदारों में है ॥
५. हों उमर पच्चीस सोला के पुरुष और स्त्री ॥
बस यही मर्यादा गृह नीति के व्यवहारों में है ॥
६. करके पूरा ब्रह्मचर्य आश्रम बलवान हो ॥
और विद्या पढ़के जो गुणवान होशियारों में है ॥

४१

हरीबल व धनदेव व कमलश्री का बात चीत करना ॥

ह० श्रीमान् धनदेव ! मैं आपकी इच्छानुसार अपनी

बेटी कमलश्री का सम्बन्ध आप से करता हूँ आप स्वीकार करें—और सदा इसका धर्म नीति से पालन करते रहें----

ध०—लाला हरीबल जी मैं आपकी पुत्री कमलश्री को प्रेम पूर्वक स्वीकार करता हूँ और आपको धन्य-वाद देता हूं--मैं आपकी पुत्री का सदा धर्म अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थों द्वारा भले प्रकार पालन करता रहूँगा---

ध०-(कमलश्री से) सुमुखे कमलश्री ! मैंने अपनी बाँदी चंद्रावली को आप के पिता जी की सेवा में भेज कर आपके लिये स्वयं प्रार्थना की थी--चुनाचे आपके पिताजी ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया है क्या आपभी इस सम्बन्ध को स्वीकार करती हैं--

क़०—हां मुझे भी कुछ इन्कार नहीं—

ध०-हे सुलोचने ! यदि आपको यह स्वीकार है तो आप सिंहासन पर मेरे बाईं अंग आजाए—

क़०—महाराज गृहस्ताश्रम में क़दम रखना कोई साधारण बात नहीं है—विवाह करने से सदा के लिये स्त्री और पुरुष एक दूसरे के बस में हो जाते हैं और अपनी स्वतंत्रता को खोकर परतंत्र होना पड़ता है—इस लिये प्रथम कुछ शर्तबंदी जरूर होनी चाहिये

यदि आप पहले मेरे सात वचन स्वीकार करें तब मैं आपके बाएं अंग आ सकती हूँ ॥

ध०—अच्छा प्यारी वतलाइये आपके कौन कौन से सात वचन हैं——

४२

कमलश्री का सातों वचन सुनाना ॥
चाल—अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे ॥

१. सुनिये मेरे वचन ध्यान देकर जरा—
उम्र भर इनको दिलसे भुलाना नहीं ॥
रहना इनपे ध्रु की तरह से अटल—
कभी भूलके दिल डिगमगाना नहीं ॥

२. किसी परस्त्री से हंसी मसखरी—
दिल्लगी खेल क्रीड़ा रचाना नहीं ॥
मेरा पहला वचन इसको धारण करो—
इसमें देख अतिचार लगाना नहीं ॥

३. दूसरा है वचन संग गणिका न कर—
कभी वेश्या के घर आप जाना नहीं ॥
चाहे लाख कहे हाव भाव करे—
अपने मनको ज़रा भी लुभाना नहीं ॥

४. सारे पापों का सरताज सट्टा जुवा—
खेल ऐसा कभी भी रचाना नहीं ॥

खेलना तो भला इसका दूर रहा—
भूल कर देखने को भी जाना नहीं ॥
५. कोई बणाज व्योपार गृह कार्य—
मुझसे बिन पूछे करना कराना नहीं ॥
है यह चौथा बचन इसको पालन करो—
कोई धोके की बात बनाना नहीं ॥
६. धर्म स्थान मंदिर या तीरथ विषय—
मेरे जाने में रोक लगाना नहीं ॥
धर्म कारज में मैं नित्य स्वतंत्र रहूँ—
इसमें परतंत्र मुझको बनाना नहीं ॥
७. है छटा यह बचन देख मुझको कभी—
अनुचित दंड देना दिलाना नहीं ॥
मेरी सखियों में मुझको कभी दुर्वचन—
करके अपमान गाली सुनाना नहीं ॥
८. सातवां आखरी यह बचन है मेरा—
कभी भी इसको दिलसे भुलाना नहीं ॥
उम्रभर मुझपे प्रेम का भाव रखो—
धर्म पत्नि से मुझको हटाना नहीं ॥

४३

धनदेव का कमलश्री के सातों वचन स्वीकार करना ॥ (शैर)

१ आपके सातों वचन दिलसे मुझे मंजूर हैं ॥

सब मुझे मंजूर हैं जो कुछ कहो मंजूर हैं ॥
२. जैसे उत्तर में ध्रु इनपर सदा क़ायम रहूं ॥
चाहे मेरू भी चले पर मैं नहीं हरगिज टरुं ॥
३. सात मुझको भी बचन लेने हैं प्यारी आप से ॥
गर तुम्हें मंजूर हों तो पेश करदूं आपसे ॥

४४

कमलश्री का जवाब--(वार्तालाप)

हाँ हाँ पहिले आप अपने सातों बचन प्रकाश करें--मैं देख भी तो लूं कि उनमें कोई बचन धर्म और नीति के विरुद्ध तो नहीं है--

४५

धनदेव का अपने सातों वचन सुनाना--(दोहा)

१. मेरे सब परिवार से रखियो प्रेम अपार ।
विनय और सेवा सदा कीजो मन हितधार ॥
२. योग्य उचित आज्ञा मेरी मानों सदा ज़रूर ।
ऐसी आज्ञा से सुनो होना कभी न दूर ॥
३. सज्जन मित्र और मम हितु जो मेरे घर आय ।
प्रेम करो सेवा करो मनमें हर्ष बढ़ाय ॥
४. कटुक मरम छेदी वचन मुखसे नहीं उचार ।
सत हित मित प्रिये सोचकर बोलो वचन संवार ॥

५. पर घरमें निशि के समय जाओ मन वरनार ।
वचन पांचवां यह मेरा लीजे मन में धार ॥
६. मेला आदि हो जहां बहु मनुष्य समुदाय ।
नहीं अकेली जाइयो छटा वचन मनलाय ॥
७. जहां मद्रा सेवन करें या खोटा अस्थान ।
ऐसी जगह न जाइयो यही सातवीं आन ॥

४६

कमलश्री का सातों वचन स्वीकार करना—(शैर)

१. मंजूर हैं मुझे भी सातों वचन तुम्हारे ।
क़ायम रहूँगी इन पर जैसे ध्रु सितारे ॥
२. टर जाए मेरु धरणी रवि चांद या कि तारे ।
हरगिज़ नहीं टरेंगे लेकिन वचन हमारे ॥

४७

सिंघासन पर वाएं अंग आने के लिये धनदेव का कमलश्री से प्रार्थना करना— (शैर)

१. कौल और इकरार सारे हो चुके ॥
हम तुम्हारे तुम हमारे हो चुके ॥
२. आओ अब बैठो सिंहासन पर मेरे ।
नेग टेहले अबतो सारे हो चुके ॥
३. वाएं अंग आने में अब क्या देर है ॥
दोनों जानिब से इशारे हो चुके ॥

४. पुष्पमाला आओ बाहम डाल दें ॥
है यह बाकी काम सारे हो चुके ॥

४८

कमलश्री का उठ कर गाते हुवे सिंघासन की तरफ़ जाना ॥
चाल—मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ॥

होगा सारी उमर को निभाना मुझे ॥
देखो धोका न देना दिलाना मुझे (टेक)
१. वीच में पंचों के और माता पिता के सामने ॥
हाथ तेरे हाथ देती हूं सभा के सामने ॥
नाहीं तज मंझधार गिराना मुझे ॥ होगा० ॥
२. मर्द में कहते हैं कुछ बूवे वफ़ा होती नहीं ॥
इनको देर आंखें बदलने में ज़रा होती नहीं ॥
देखो ऐसा न करके दिखाना मुझे ॥ होगा० ॥

४९

धनदेव का जवाब ॥ (शैर)

१. वे मुरव्वत होते होंगे मर्द मैं उनमें नहीं ॥
छोड़दें मंझधार में वेदर्द मैं उनमें नहीं ॥
२. धर्म से और अर्थ से और काम से पालन करूं ॥
उम्र भर तुमको निभाऊं प्रण से मैं ना टरूं ॥
३. शक शुवा सब छोड़दे दिलमें न कर ऐसा ख़याल ॥
आ मेरे पहलू में वाएं अंग कर मुझको निहाल ॥

५०

कमलश्री का धनदेव के गले में जयमाला (अर्थात् पुष्पमाला या वरमाला) डालना और धनदेव का कमलश्री के गले में जयमाला डालना—कमलश्री का धनदेव के बाएं अंग सिंघासन पर बैठना और सबका दोनों दूल्हा दूल्हन पर फूलों की वर्षा करना और परियों का मुबारक बाद गाना ॥ (चाल नाटक)

आहा प्यारा दिन है न्यारा—
कमलश्री की शादी का ॥
बन बन गुलशन गुल सब फूले—
दिन है मुबारकबादी का ॥
बना बनि दायम खुश रहें बाहम—
गावें हम झननन झूम ॥
बादे बहारी आके पुकारी—
सन नन नन नन सूम ॥

दृश्य ६
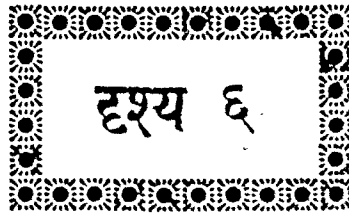
(चम्पा बाग का परदा)

५१

नोट:—(१) धनदेव और कमलश्री आनन्द पूर्वक परस्पर प्रेम से रहने लगे और कमलश्री का तमाम घर और नगर में मान सन्मान होने लगा धनदेव कमलश्री के रूप और उसके चरित्र व हाव भाव को देख देख

कर सदा प्रसन्न रहता था-- इस प्रकार वहुत दिन सुख में व्यतीत हो गये ॥

(२) एक दिन कमलश्री ने अपनी एक सखी को पुत्र खिलाते हुये देखा-- उसी समय उसके चित्त में विचार हुआ कि इतने दिन व्यतीत होने पर भी मेरे कोई पुत्र क्यों नहीं हुआ-- स्त्री का विना पुत्र के मान नहीं होता--- पुत्र हीन स्त्री का जन्म वृथा है और इसके विना सब घर वार और राज पाट भी निष्फल है संसार असार है दुःख का सागर है ऐसा विचार करते करते कमलश्री को वैराग हो गया और दीक्षा लेने के लिये चली गई ॥

(३) एक जगह एक अवध ज्ञानी मुनि महाराज विराजमान थे—कमलश्री प्रणाम करके वैठ गई और श्री मुनि महाराज से दीक्षा की याचना करी—मुनि महाराज ने अवध ज्ञान से विचार कर दीक्षा देने से इन्कार कर दिया और कहा कि वेटी कमलश्री तुम्हारे एक गुणवान और पुण्यवान पुत्र होने वाला है जो गजपुर का राजा वनेगा इस कारण तुमको अभी दीक्षा नहीं मिल सकती तुम्हें अभी गृहस्तधर्म पालन करना चाहिये ।

(४) कमलश्री यह वात सुनकर प्रसन्न चित्त हो गई और नमस्कार करके अपने घर को लौट आई और धर्म ध्यान करने लगी—एक वर्ष पीछे कमलश्री के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम भविपदत्त रक्खा जो हमारे नाटक के हीरो (नायक) हैं धनदेव ने पुत्र के जन्म का वड़ा उत्सव मनाया और वहुत सा धन शुभ कार्यों में दान किया ॥

(५) प्रायः भविपदत्त अपनी माता के संग राज महल में भी जाया करता था और राणियां उसके सुन्दर रूप को देख कर उसको प्यार किया करती थीं और उसको गोद में लेकर खिलाया करती थीं ॥

(६) जव भविपदत्त ६ वर्ष का हो गया तो पिता ने उसको गुरुकुल में विद्या ध्ययन करने को भेज दिया ॥

(७) भविपदत्त के ज्ञानावर्णी कर्म का इतना क्षय उपशम था कि उसने

थोड़े ही दिनों में चौदह विद्या और बहत्तर कलाओं को सीख लिया और शस्त्र विद्या में विशेप अभ्यास किया ॥ भविपदत्त अपने माता पिता और अन्य सब जनों की यथा योग्य विनय और सेवा किया करता था और परिवार और नगर के सभी स्त्री पुरुप भी उसको प्यार करते थे और उसको होनहार समझते थे ॥

५२

एक दिन वसन्त ऋतु में धनदेव व कमलश्री और भविपदत्त का चम्पा बाग़ में सैर को जाना—चन्द्रावली, चपला विमला सखियों का पुष्प वाटिका में कमलश्री की इन्तज़ार करते हुये नज़र आना—धनदेव का सैर करते हुवे चन्द्रावली के पास आना और बात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

ध०--चंदावली ! सेठानी जी कहाँ हैं क्या अभी तक नहीं आई ॥

चं०--महाराज कहीं इधर उधर वसंत की बहार देखती और सैर करती हुई आ रही होंगी--वह हमारी तरह किसी की बंधुवा तो नहीं हैं ॥

च०--अजी वह देखिये वह सामने फूलों की आड़ में कैसे धीरे धीरे गिन गिन कर पाओं रखती आ रही हैं ॥

वि०--आहो कैसी वेफिक्र है मानो इनके लिये दुनिया में कोई काम ही नहीं है ॥

चं०--क्यों न हो--(शैर)

धरम की खूब पूरब भाव करी इसने कमाई है ॥
कि गोया पुन्यका दुनिया भरमें ठेका लेके आई है ॥

च०—सेठजी भी तो इन पर वार वार कर पानी पीते हैं ॥
बि०—इसी ने तो इसके भागको चार चाँद लगा रक्खे हैं।

५३

सखियों का कमलश्री के आने की मुवारकवाद गाना ॥

(चाल पंजावी) अड़गई अड़गई हो हो—जिन्दड़ी अड़गई नाल कृष्न दे ॥

वाद वाहरी आती है—छव न्यारी दिखलाती है ॥ (टेक)

१. कमलश्री प्यारी पटरानी—
प्रेमकली सबको सुखदानी ॥
है सतवन्ती धरम निशानी—आनंदकारी आती है ॥

२. पति मनमानी प्राण प्यारी—
मद भरे नैना जोवनवारी ॥
कोयल वैना भोरी भारी—वह मतवारी आती है ॥

३. चंदर वदनी तारों में चंदर—
शील श्रोमणि धरम धुरन्धर ॥
रूपकी पुतली कमला सुन्दर—सखी हमारी आती है ॥

५४

धनदेव व कमलश्री व सखियों का हंसीरूप वात चीन करना ॥ (वार्तालाप)

ध०—प्राण प्यारी तुमने इतनी देर कहां लगाई—
चं०—क्यों जी आप तो कहतीं थीं तुम चलो मैं आई—
च०—काहे हमारे से घंटों इन्तज़ार कराई—

वि०—अजी क्यों सबके सब हाथ धोकर बेचारी के पीछे पड़े हो—यह क्या किसी की पाबंद हैं इनके जी में जब आई तब आई ॥

ध०—अरी चंद्रावली जाने भी दो—क्यों वकीलों वाली बहस करके बिचारी को तंग करती हो हाँ कमलश्री बताओ तो सही इतनी देर कहाँ अटक गई थी ॥

५५

कमलश्री का जवाब—(वार्तालाप)

महाराज अटकती कहां मैं तो बागकी बहार फूलों का निखार देखती हुई सीधी यहाँ ही आ रही हूं—ज़रा देखो तो सही आज ऋतुराज बसन्त कैसी बहार दिखला रहा है—चारों तरफ बसन्त ही बसन्त नजर आ रहा है—भला ऐसी बहार में कौन अपनी आंख बन्द करके चल सकता है ॥ (शेर)

१. फूल फल हर इक है अपने रंग पर आया हुवा ॥
बाग पर भी आज जोबन खूब है छाया हुवा ॥
२. गुल कली और पत्ता पत्ता मस्त हैं सब डालियां ॥
केतकी जूई चमेली सब बजाएं तालियां ॥
३. इस छटा को देखने को फिर न किसका मन करे ॥
किस तरह अंखियां चुरा कर कोई आगे पग धरे ॥

५६

सखियों का हंसीरूप जवाब ॥ (वार्तालाप)

चं०—अच्छा कमलश्री हमसे भी चाल चलती हो—यूं क्यों

नहीं कहती कि फूलों को अपने जोवन की वहार दिखला रही थी ॥

च०—देखो मूई नर्गिस तो अभी तक अपनी आंखें फाड़ फाड़ कर तुम्हारी ओर देख रही है ॥

वि०—गुलाव भी तो आपके मुख का गुलावी रंग देख कर पानी पानी हो रहा है ॥

५७

सखियों का गाना—

चाल नाटक—चलती चपला चंचल चाल ॥

चलती हमसे भी तू चाल कमलश्री अलवेली ॥
जोवन मदमाती डोले—नयनन अमृत रस घोले ॥
करती फूलन संग अटखेली ॥ चलती० ॥

दोहा—एकतो सुन्दर चाल है दूजे रूप अपार ॥
पुन्य छटा मुख छा रही खिल रहा फूल हजार ॥
हां हां हाँ किसमत वाली—ओ हो हो भोली भाली ॥
नई वेली सी नार नवेली ॥ चलती० ॥

५८

कमलश्री का जवाव ॥ (वार्तालाप)

अरी दीवानियो आज तुम्हें क्या हो रहा है--ज़मीन आस्मान के कुलावे मिला रही हो—व्यर्थ प्रशंसा के पुल वाँध रही हो ॥ (शेर)

१. तन मेरा मिट्टी का पुतला इसमें फिर रक्खा है क्या ॥
रूप रस जो कुछ भी है सब धर्म की जानो कला ॥
२. धर्म ही का जा बजा जल्वा है इस संसार में ॥
पुन्य ही से हो रही शोभा गुलो गुलज़ार में ॥

५९

सखियों का जवाब ॥ (वार्तालाप)

हां हां हम भी तो यही कहती हैं कि आज आपका पुन्य रूपी सितारा चमक रहा है—आपके ही भाग रूपी फूलों से यह तमाम बाग महक रहा है ॥ (शैर)

१. आपके ही पुन्य से गुलशन भी है फूला हुवा ॥
अपनी अपनी डाल पर फल फूल है झूला हुवा ॥
२. झोलियों में ले रही हैं फूल सारी डालियाँ ॥
सब हैं पत्ते तेरी आमद पर बजाते तालियां ॥

६०

कमलश्री और चन्द्रावली की फिर बात चीत ॥

क०—नहीं नहीं तुम भूल करती हो — (शैर)
पुन्य और प्रताप सब कुछ सेठ जी का है यहां ॥
आप मैं सब इनके हैं सबके यही हैं महरबां ॥
चं०—हां हां हम सब तो महाराज के ज़रूर हैं—पर महाराज तो आप के ही प्रेम में मजबूर हैं—कहिये अब

तो मानोगी कि यह सब आपके ही रूप रंग का ज़हूर है ॥

६१

कमलश्री का जवाब ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१. वही सुन्दर है दुनियाँ में जिसे पति प्यार करते हैं ॥
कि जिसका प्राण प्यारे मान और सत्कार करते हैं ॥
२. वही तो खूबसूरत है वही जोबन की मूरत है ॥
भरोसा शील पर जिसके पति हरबार करते हैं ॥
३. सुहागन हैं वही नारी जिन्हें जिनके पति हरदम ॥
समझ कर मंत्री बस मशवरे से कार करते हैं ॥

६२

चंद्रावली का जवाब ॥ (वार्तालाप)

कमलश्री आपके प्रीतम भी तो आपको दिल से प्यार करते हैं और आपकी राय सेही सब कारोबार करते हैं आप तो साक्षात धर्म और पुन्य की देवी हो—कहिये इसे तो मानोगी या इससे भी इन्कार है ॥

६३

देखो कमलश्री चंद्रावली जो कुछ कहती है वह बिल-कुल ठीक और सत्य है ॥ (शैर)

१. मेरे घर और बाग़ की रौनकसितां तू ही तो है ॥
मेरी हमदम और मेरी राज़दां तू ही तो है ॥
२. है निछावर तुझपे तन मन धन मेरा और जान भी ॥
मेरी इस दुनिया में इक आरामजाँ तू ही तो है ॥

६४

कमलश्री का अपने पति की स्तुति करना।

चाल—अपने स्वामी की मैं जोगन बनूंगी ॥

अपने बालम की मैं सेवा करूंगी ॥
सेवा करूंगी—सेवा करूंगी ॥अपने०॥ (टेक)
१. तन मन जोबन सब कुछ वारूं—
नित नित शीस निवाऊं ॥
रहूं पति आज्ञा में निश दिन —
नारी धरम निभाऊं ॥
मैं तो सय्यां का प्रेम रस पान करूंगी ॥ अपने०॥
२. सुख में तो मिलकर सुख भोगूं —
दुख में धीर वंधाऊं ॥
जहाँ प्रीतम का गिरे पसीना—
अपना रक्त बहाऊं ॥
मैं तो हरदम पिया का अपने ध्यान धरूंगी ॥अपने०॥
३. सीता बनकर साथ रहूंगी—
जूं दमयन्ती रानी ॥

पद्मावत बन मदद करूंगी—
सती धर्म सुख दानी ॥
मैं तो मैना की न्याई दुख में पीर हरूंगी ॥अपने०॥

६५

धनदेव का कमलश्री को धन्यवाद देना ॥ (शैर)

१. तुझे धन्यवाद है प्यारी सती गर हो तो ऐसी हो ॥
कि सतवंती कोई नारी किसी घर हो तो ऐसी हो ॥
२. कलेजा मेरा ठंडा है तसल्ली दिलके अन्दर है ॥
तू दीपक मेरे घर का है मेरा घर देव मंदिर है ॥

६६

सखियों का और धनदेव का कमलश्री से फिर विशेष हंसी मसखरी रूप बात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

चं०—सेठानी जी ज़रा मुख पर अंचल डाल लीजिये—
च०—वह क्यों —
चं०—अरी बावली देखती नहीं आज मस्ताने भंवरे कैसे इतराते फिर रहे हैं —
वि०—फिर क्या हुवा —
चं०—अरी कहीं गुलाब का फूल समझ कर हमारी सेठानी जी के गुलाबी चेहरे पे न आ धमकें—
क०—चंद्रावली क्या तूने आज भंग खाई है या तुझको

मस्ती छाई है जो ऐसी बेतुकी मसख़री पर उतर आई है —

ध०—बेशक चंद्रावली सच तो कहती है ॥ (शैर)

१. क़मर चढ़ता है तो पर्वत से चकवे आही जाते हैं ॥
जहां जलता है दीपक वहां पतंगवे आ ही जाते हैं ॥

२. जहां पर बीन बजती है तो काले आही जाते हैं ॥
खिले फूलों पे भंवरे भोले भाले आ ही जाते हैं ॥

क०—(ज़रा बिगड़ कर) क्यों जी यह चंद्रावली तो आज दीवानी हो रही है—क्या आप भी मुझ से दिल्लगी करते हैं ॥

ध०—कमलश्री इसमें दिल्लगी की क्या बात है जो बात सच होती है उसकी दाद तो देनी ही पड़ती है ॥

चं०—महाराज बस अब चुप हो जाइये—सेठानी जीसे और ज़ियादह छेड़ छाड़ न कीजिये—

ध०—क्यों क्या हुवा—

चं०—अजी पुन्य के उदय से इनके कर्मों का भार बिलकुल हल्का है – इसीलिये इनका हृदय इतना कोमल है कि उसके कांटे को बदलते ज़रा देर नहीं लगती–

ध०—क्या मतलब ?

चं०—मतलब यह है कि इनके दिल की परीति का थर्मामेटर बहुत नाजुक है वह हंसी मसख़री की गर्मी

को ज़्यादह वर्दाश्त नहीं कर सकता यदि ज़रा ॥ गर्मी बढ़ गई तो बस एक दम पारा सवासौ डिगरी पर चढ़ जायगा—

ध०—क्या कहती हो यह तो ज़रूरत से जियादह सीधी सादी हैं—मानो शान्ति की पुतली ही हैं ॥

चं०—जी हां टेढ़ी कौन बताता है—मगर जितनी यह सीधी हैं उतनी ही ज़रा तबियत की नाज़ुक और टेढ़ी ज़रूर हैं इनको उलटते पुलटते ज़रा देर नहीं लगती

ध०--भला तुमने कैसे जाना ॥

चं०--अजी एक दिन पुत्र न होने का इनको ज़रा ख़्याल आ गया था बस फिर क्या था उसी दम घर बार को छोड़ दीक्षा लेने के लिये बन में जाने को तय्यार हो गईं ॥

ध०--क्यों कमलश्री क्या चंद्रावली सच कहती है ॥

क०--महाराज रहने भी दो यह तो आज सब ऐसी ही वेतुकी हाँक रही है ॥

चं०--क्यों क्या मैं झूठ कहती हूँ--शर्माती क्यों हो सीधे तौर पर इक़रार क्यों नहीं कर लेती हो ॥

ध०--कमलश्री सच बतलाओ क्या बात है—आप इतनी किस बात पर विगड़ गई थीं ॥

क०—महाराज जीव की पर्णति हर समय बदलती रहती

है कभी राग कभी वैराग–इसमें विगड़ने की क्या बात है ॥ (शैर)

अब इस झगड़े को रहने दो गई बातों को जाने दो ॥
चलो घर को चलो साहब कि शब होने को आई है ॥

ध०–देखो प्यारी इस मुआमले की हक़ीक़त विना सुने आज हम घर नहीं जाएंगे—चाहे कुछ हो अब तो आपको बताना ही पड़ेगा ॥

क०–(शैर) नहीं है बात कुछ भी किस लिये इसरार करतेहो ॥
बता देती हूं सुनलो गर मुझे लोचार करते हो ॥

६७

कमलश्री का दीक्षा लेने के विचार का हाल बताना ॥

चालरसिया—(रियासत भरतपुर व बृज का) अब आ गया कलयुग घोर पाप का जोर हुवा भारी ॥

ऐसा कारण था महाराज हमारे वन में जाने का ॥
वन में जाने का वहीं दीक्षा ले जाने का ॥ (टेक)

१. एक समये सखियन मिल आई—
गोदी पुत्र लिये हर्षाई ॥
आ गया मन में ध्यान हमें भी गोद खिलाने का ॥

२. खाली गोद लखी दुख पायो—
मन वैराग हमारे आयो ॥
चली छोड़ घर करके इरादा दीक्षा पाने का ॥

३. जा मुनि पे हम दीक्षा याची—
अवध धार ऋषि ने यूं भाषी ॥
अभी समय नहीं है बेटी दीक्षा लेजाने का ॥
४. होगा पुत्र बड़ा बलधारी—
राज करे गजपुर मंझधारी ॥
मुझको दे दिया हुकम गृहस्ती धर्म निभाने का ॥
४. हुवा भविषदत्त पुत्र तुम्हारे—
जैसे मुनिवर वचन उचारे ॥
था यही कारण बलम हमारे बन में जाने का ॥

६८

धनदेव का प्रसन्न होना और कमलश्री के धार्मिक भावों की प्रशंसा करना ॥

हे प्रिये कमलश्री आपके पवित्र धार्मिक भावों से अति प्रसन्न हूँ—तुम्हारी संगत से मेरा गृहस्त स्वर्ग के समान बन रहा है—तुम्हारे ही कारण आज मेरा हर जगह सन्मान हो रहा है ॥ (शैर)

बना रखा है जीवन को मेरे आनंदमय तूने ॥
चला रक्खा है घर मेरा भले पर्बंध से तूने ॥

६९

कंवर भविषदत्त का आते हुये नजर आना और सखियों का बात चीत करना ॥

चं०—लो कंवर जी भी आ रहे हैं ॥

वि०—वाह ! वाह !! (शैर)

१. कैसी बांकी और टेढ़ी राजपूती चाल है ॥
   है जवानी आ रही चढ़ता हुवा इक़्बाल है ॥

२. वीरता चेहरे पे है और दिलमें इस्तक़्लाल है ॥
   क्यों न हो आख़िर को तो कमला सतीका लाल है ॥

७०

भविषदत्त का आना और सखियों का मुबारकबाद गाना ॥
चाल नाटक—गावोरी सब मिलके बधैयां ॥

छाएरी सखी शुभके बदरवा ॥
आए हैं भविषदत्त कुमारा—
चुन चुनके फूल बरसावोरी—जश गावोरी—
गुण गावोरी—सखी शुभके बदरवा ॥ छाए० ॥ (टेक)

च०—कैसा है धीर देखो—पूरा गम्भीर देखो ॥
   वीरों में वीर देखो--भुजबल अपार है ॥

वि०--मस्तक विशाल देखो--साहब जमाल देखो ॥
   चेहरा खुशहाल देखो—देता बहार है ॥

च०—हाँ हाँ बलवान कैसा—पूरा गुणवान कैसा ॥
   चातुर ज़ीशान कैसा—बांका कुमार है ॥

वि०—एकदिन महाराज होगा—गजपुर का राज होगा ॥
   सरपे भी ताज होगा—पूरा अवतार है ॥

छाएरी सखी शुभके बदरवा ॥

७१

भविषदत्त का वात चीत करना ॥

भ०-(चर्णों मे मस्तक झुकाकर) माता जी प्रणाम—
क०-चिरंजीव बेटा भविष—
भ०-पिता जी जयजिनेन्द्र—
ध०-जय जिनेन्द्र (छाती से लगाकर) बेटा इतनी देर तक कहां रहे ॥
भ०-पिता जी वसन्त ऋतु की शोभा देखता रहा— बस इसी आनन्द में समय का कुछ ध्यान नहीं रहा—
चं०-कुंवर जी जय जिनेन्द्र—अजी यहाँ तो सब आपका इन्तज़ार कर रहे थे ॥
भ०-चंद्रावली जय जिनेन्द्र—हां आज फूलों की बहार ने मेरे चित्त को आकर्षित कर लिया इसी से कुछ देर हो गई क्षमा करना ॥
ध०-बेटा भविषदत्त अब बहुत देर हो चुकी है घर को चलिये ॥
भ०-अच्छा चलिये पिता जी ॥

७२

सब सखियों का वसन्त ऋतु की मुबारकबाद गाना और सबका जाना और परदा गिरना ॥

चाल पंजाबी—छोटी बड़ी सय्यां वे जालीदा मोरा काढ़ना ॥

प्यारा दिन आजका री — बागों में सबका घूमना ॥

धन ऋतुराज को री–मिलजुलके सबका बठना ॥ (टेक)
१. एक ओर देखो सखी फूलों की क्यारियाँ ॥
प्यारी प्यारी कलियाँ री–भवरों का उन पर झूमना ॥
२. जाई जूई मोतिया चमेली की डालियां ॥
भर भर झोलियां री–फूलों का बरसावना ॥
३. पत्ते हिल मिलके बजा रहे तालियां ॥
प्यारी प्यारी हंस हंस के–आपस में इनका बोलना ॥

(सबका जाना)

दृश्य ७
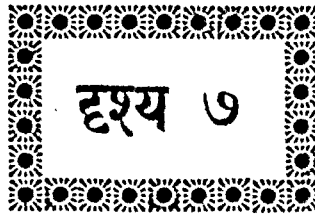
(धनदेव के दरबार का परदा)

७३

नोट—इसी गजपुर में एक धनदत्त नामी सेठ भी रहता था और उस की सरूपा नाम की एक सुन्दर रूपवति युवा पुत्री थी—एक दिन धनदेव ने उसे सामने से जाते हुवे देखा और उसके रूप को देख कर मोहित हो गया और उससे शादी करने का विचार करने लगा ॥

७४

धनदेव का अपने दरबार में बैठे हुवे नजर आना—सरूपा का सामने से गुजरना—धनदेव का उसको देखकर आसक्त हो जाना और उसकी याद में व्याकुल होना ॥

चाल--इन दिनों जोशे जनूं हैं तेरे दीवाने को ॥

१. यक वयक तूने यह क्या जलवा दिखाया मुझको ॥
इक नज़ारे ही में दीवाना बनाया मुझको ॥
२. मोहनी कर्म है बलवान बड़ा दुनिया में ॥
डाल कर जादू परेशान बनाया मुझको ॥
३. मैंने तो यूं ही उठाई थी नज़र ऊपर को ॥
हुस्न के जाल में तूने है फंसाया मुझको ॥
४. अक्ल हैरान है क़ाबू में नहीं दिल मेरे ॥
जलवा क्या नाज़ो अदा का है दिखाया मुझको ॥

७५

धनदेव के मंत्री का आना और बात चीत करना ॥

मं०—कहिये महाराज आज किस ख़याल में हो (शैर)
गुलाबी आपके चेहरे पे क्यों ज़रदी सी छाई है ॥
कहो ग़मगीन किसने आपकी सूरत बनाई है ॥
ध०—(शैर) मैं अजब हैरान हूँ तुम मेरी हालत देखलो ॥
हाल क्या पूछो हो तुम बस मेरी सूरत देखलो ॥
मं०—आख़िर कुछ तो ज़ुबाने मुबारक से फ़र्माईये ॥
ध०—मंत्री जी धनदत्त सेठ कैसा आदमी है ?
मं०—महाराज अच्छा इज्जतदार समझदार आदमी है ॥
ध०—कहीं क्रोधी हठीला और मानी तो नहीं है ॥

मं० हरगिज नहीं— वह तो बड़ा सरल स्वभावी और काम आने वाला है—फ़र्माइये आपका क्या मतलब ?

ध०—उसकी सरूपा नामकी एक सुन्दर युवा पुत्री है ॥

मं०—हां हां— (शैर)

जमाल और हुस्न की शक्ति उसी लड़की ने पाई है ॥
विधाता ने बड़ी फ़ुर्सत में वह सूरत बनाई है ॥

ध०—बस वही रूप की पुतली आज सामने से जाती हुई अपना जलवा दिखा गई अर्थात् हमारे हृदय पे अपना अधिकार जमा गई ॥

म०—(अपने दिल में) हा !!! विषय और मोहनी कर्म की कैसी प्रबल शक्ति है—जिसने आज हमारे महाराज के पवित्र हृदय को भी मलीन और छिन्नभिन्न कर दिया ॥ (प्रगट) महाराज ऐसा अपवित्र और पाप का बिचार सदा दुखदाई होता है ॥ (शैर)

१. विषय भोगों में नहीं दिलका लगाना अच्छा ॥
जान आफत में नहीं मुफ्त फंसाना अच्छा ॥

२. यह तरीका यह चलन बेधर्म अय्यारों का है ॥
काम सेठों का नहीं यह काम बदकारों का है ॥

३. अपनी इज़्ज़त में नहीं धब्बा लगाना चाहिये ॥
देख कर खाई कुंवा पाओं उठाना चाहिये ॥

ध०—देखो मंत्रीजी यह लड़की कंवारी है—अभी तक

इसकी किसी से शादी नहीं हुई है इस लिये परस्त्री नहीं है ॥

मं०—महाराज चाहे कंवारी हो या ब्याही अपनी ब्याहता स्त्री के सिवा और सब छोटी या बड़ी स्त्रियां त्यागने योग्य हैं ॥ (शैर)

अपनी नारी के सिवा हर स्त्री परनार है ॥
बद नज़र परनार जो देखे उसे धिक्कार है ॥

ध०—मंत्रीजी आपने हमारे चित्तके भावों को नहीं समझा-

मं०—अजी महाराज मैं तो खूब समझ गया पर आप ज़रा इसको ग़ौर करके समझ लीजे—पर स्त्री बुरी बला है। इसी ने बड़े बड़े रावन जैसे विद्वानों और बलवानों को भी ख़ाक में मिला दिया पर स्त्री सेवन का फल कभी अच्छा नहीं हो सकता सब शास्त्र यही पुकार पुकार कर कह रहे हैं ज़रा सुनिये ॥

७६

मंत्री का पर स्त्री सेवन का फल दिखलाना ॥
चाल—विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. है मुमकिन हवा जो हिमालय हिलाए ॥
कि पूरब में रुख़ अपना सूरज छुपाए ॥
२. है मुमकिन कि अमृत हो काले के पैदा ॥
तपिस आग अपनी भी या छोड़ जाए ॥

३. है मुमकिन कि सूरज भी बन जाय शीतल ॥
है मुमकिन कि चांद आग बन करके आए ॥
४. मगर यह न होगा कभी देखो मुमकिन ॥
कि परनार सुख का कभी फल दिखाए ॥

७७

मंत्री और धनदेव का फिर बात चीत करना ॥

ध०—मंत्री जी हम परस्त्री सेवन के दोषों को भली प्रकार जानते हैं हमारा मन्शा परस्त्री सेवन का हरगिज़ नहीं है ॥

मं०—तो फिर क्या मन्शा है ॥

ध०—हमारा मन्शा है कि सरूपा से धर्म शास्त्रानुसार शादी की जाए ॥

मं०—(ज़रा सोच कर) मैं तो इस बात में भी सहमत नहीं होता ॥

ध०—वह किस लिये ?

मं०—वह इस लिये कि एक से अधिक शादी करना नीति के विरुद्ध है और इसका फल भी सुख दाई नहीं होता ॥ (शैर)

१. आग में गर्मी न हो और बरफ़ में सरदी न हो ॥
है नहीं मुमकिन कि हल्दी में ज़रा ज़रदी न हो ॥
२. यह नहीं मुमकिन न झगड़ा दूसरी शादी में हो ॥

लुत्फ़ क्या जीने का जब शर खाना आबादी में हो ॥

ध०—मंत्री जी देखो बड़े बड़े साहुकार और राजा महा राजा कई कई शादियां कर लेते हैं यह कोई नई बात तो नहीं है ॥

मं०—महाराज होने को तो दुनिया में अच्छा और बुरा क्या नहीं होता सभी कुछ होता है परन्तु जो काम बुरा है वह बुरा ही है ॥

ध०—इसमें बुराई की कौनसी बात है ॥

मं०—सुनिये मैं बतलाता हूं ॥

७८

मंत्री का एक से अधिक विवाह कराने की खराबी दिखलाना ॥
चाल—विपत में सनम की संभाली कमलिया ॥

१. अधिक शादियों का असर देख लेना ॥
 बिगड़ जायगा सारा घर देख लेना ॥
२. कभी एक ही घर में दो औरतों की ॥
 खुशी से न होगी बसर देख लेना ॥
३. जो बोते हो तुम बीज खुद आफ़तों के ॥
 मुसीबत के इसमें समर देख लेना ॥
४. कुशल्या पे जो केकई लाए जशरथ ॥
 तो जशरथ के बिछड़े पिसर देख लेना ॥
४. सदा रुक्मणी और राधा ने देखो ॥

लड़ाई पे रक्खी नज़र देख लेना ॥
६. इधर देख लेना उधर देख लेना ॥
ख़राबी है चाहे जिधर देख लेना ॥

७६

धनदेव और मंत्री की फिर बात चीत ॥

ध०—मंत्री जी आप इसका ज़रा फ़िक्र न करें—हम सब बातों का पहले ही भले प्रकार प्रबन्ध कर देंगे-किसी तरह का कोई झगड़ा न होगा ॥

मं०—हाँ बेशक आप ऊपर की बातों का प्रबन्ध कर सकते हैं परन्तु किसी का दिली दुख नहीं हटा सकते ॥

ध०--क्या मतलब ?

मं०--महाराज श्रीमती कमलश्री एक सती और धर्मात्मा स्त्री है—जब दूसरी स्त्री बराबर में होगी तो उसको कितना दुख होगा--किसी के जी जलाने का नतीजा कभी अच्छा नहीं होता ॥ (शैर)

है सिया की आह ने रावण नरक डाला हुवा ॥
है जलन से देखलो आतिश का परकाला हुवा ॥

ध०—कमलश्री का मान तौर आदर सब कुछ उसी प्रकार रहेगा जो इस समय है--जब किसी बात में भी फ़र्क़ न आएगा तो फिर उसको दुख क्या हो सकता है ॥

मं०—महाराज यह सब कुछ ठीक है परन्तु स्त्री को सौतन

का बहुत बड़ा दुख होता है--आप इसका कुछ इलाज नहीं कर सकते ॥ (दोहा)

१. छूवा भला न काटका देख बैल की ग्रीव ॥
सौतन भली न चून की आधा माँगे पीव ॥
क़रज़ बराबर ग़म नहीं पड़े न इकदम चैन ॥
सौत बराबर दुख नहीं जले सदा दिन रैन ॥

ध०–मंत्री जी आप किसी बात की चिन्ता न करें—हमको इसमें कोई ख़राबी नज़र नहीं आती–हमारे ख़याल में इस समय तो सब काम ठीक हो जायगा फिर आगे जैसा होगा देखा जायगा ॥

मं०–महाराज ज़रा नीति पर बिचार कीजिये–हर एक कामकी बर्तमान अवस्था को ही न देखना चाहिये बल्कि उसके अन्तिम परिणाम पर भी अवश्य विचार करना चाहिये जो काम बिना सोचे बिचारे किया जाता है अन्त में पिचताना होता है–देखिये नीति क्या कहती है ज़रा ध्यान देकर सुनिये ॥

८०

मंत्री का नीति सुनाना ॥
चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१. किसी के जी जलाने का समर अच्छा नहीं होता ॥
सती के दिल दुखाने का असर अच्छा नहीं होता ॥

२. खुशी से यूं तो चाहे आप सौ शादी रचा लीजे ॥
नतीजा ऐसी बातों का मगर अच्छा नहीं होता ॥
३. सताना जी जलाना देख सतियों का नहीं अच्छा ॥
कि उनके दिल की आहों का इशर अच्छा नहीं होता ॥
४. सितम है जुल्म है औरत का यूं अपमान कर देना ॥
समझलो सेठ जी शर का समर अच्छा नहीं होता ॥

८१

धनदेव का नाराज़ होकर मंत्री को बाहर कर देना और धनदत्त सेठ को बुलाना और स्वयं बात चीत करना ॥

ध०—मंत्री जी बस आप अपनी नीति को रहने दें आप की राय हमारी समझ में नहीं आती—आप ज़रा बाहर चले जाएं—हम स्वयमेव इसका फैसला कर लेते हैं ॥

मं०—बहुत अच्छा मेरा काम नीति मार्ग को दिखाना था सो मैं अपना कर्तव्य पूरा कर चुका अब मैं जाता हूं—आप स्वयं मुख़्तार हैं और भलाई बुराई के आप ही ज़िम्मेदार हैं जो आपकी राय मुबारक में आए कीजिये ॥

(मंत्री का चला जाना)

ध०—(दर्बान से)जाओ लाला धनदत्त जी को बुला लाओ ॥

द०—बहुत अच्छा महाराज ॥

(दर्बान का जाना)

८२

मंत्री का दर्बार से बाहर छुप कर खड़ा होना और मुनीम जी का उधर आ निकलना और आपस में बात चीत करना ॥

मु०—(एक तरफ़ से आकर) कहिये मंत्री जी आज बाहर कैसे खड़े हो और किस सोच में हो ॥

मं०—(शैर) पाप के तूफ़ान से नीति का झंडागिर गया ॥
मेरी सारी युक्तियों पर आज पानी फिर गया ॥

मु०—भाई आख़िर क्या मुआमला है ?

मं०—बस मुआमला क्या है सब कारोबार तीन तेरा होने को है—(शैर)
हमारे सेठ की अफ़सोस अब तकदीर फिरती है ॥
मुसीबत में फ़साने को लिये ज़ंजीर फिरती है ॥

मु०—ज़रा भाई साफ़ साफ़ बतलाओ—मुसीबत और जंजीर का क्या मुआमला है—ताके हमतो चौकन्ने हो जाएं ॥

मं०—अरे मित्र क्या कहें आज हमारे सेठजी धनदत्त सेठ की पुत्री सरूपा पर आसक्त हो गये हैं और उससे अपनी शादी करना चाहते हैं ॥

मु०—अर्थात भरी खाट पर दूसरी स्त्री लाना चाहते हैं ॥

मं०—हां हां —

मु०—अजी नहीं—आप क्या फरमाते हैं—भला ऐसा कैसे

हो सकता है हमारे सेठ जी को सती कमलश्री से अत्यंत प्रेम है क्या उनको अपनी धर्म पत्नि की दिलाज़ारी का कुछ खयाल न आएगा ॥

मं०—अरे तू भी दीवाना है सेठजी की तरफ़ से कमलश्री जाए चूल्हे में—इन्हें तो बस एक सरूपा ही सरूपा नज़र आती है ॥

मु०—हा शोक ! महाशोक !! पर मंत्री जी क्या आपने सेठ जी को समझाया नहीं ॥

मं०—अरे भाई बहुतेरा सर पटका—पर जब आदमी काम के वश अन्धा हो जाता है तो वह कब किसी की सुनता है—हमने तो अनेक नीति दिखला कर उस को समझाया—मगर वहां तो बस वही ढाक के तीन पात—(शैर)

तबीयत सेठ की समझाने से अब तो बिगड़ती है ॥
किसी की कुछ नहीं चलती है जब आ करके पड़ती है ॥

मु०—तो फिर अब आपका क्या विचार है और हमें क्या करना चाहिये ॥

मं०—अरे हमें क्या करना है—हमारा काम समझाने का था समझा दिया—न माने तो वह जाने—जैसा करेगा वैसा भरेगा ॥ (शैर)

जैसी करनी वैसी भरनी निश्चय नहीं कर कर देख ॥
सुरगत भी है दुर्गत भी है नहीं माने तो मर कर देख ॥

चलिये आप अपने घर का रास्ता लें—मैं अपने घरको जाता हूं ॥

(दोनो का चला जाना)

८३

धनदेव का एकांत में विचार करते हुवे नजर आना ॥ (शैर)

१. चाहे कुछ हो बस सरूपा महल में आए ज़रूर ॥
जो मेरे दिल में है पूरी बात हो जाए जरूर ॥
२. गो बदल जाए न क्यों रेखा मेरी तकदीर की ॥
पर न बदलूंगा लगन मैं अपनी इस तदबीर की ॥

८४

धनदत्त का आना और धनदेव का बात चीत करना ॥

धनदत्त—जुहार साहब-कहिये सेठ जी आज कैसे याद फ़रमाया ॥

धनदेव—लाला धनदत्त जी मैंने आपको इसलिये तक-लीफ़ दी हैं कि आपसे कुछ जरूरी अर्ज करना है ॥

धनदत्त—क्या डर है फ़रमाइये मैं जैसा हूँ हाजिर हूँ ॥

धनदेव—हमारा मंसा दूसरी शादी करने का है क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं ?

धनदत्त—पहले आप यह तो बतलाएं कि क्यों आप का ऐसा विचार हुवा है और कहां शादी करने की ठानी है ?

धनदेव--क्या कहूं मुझे आपके सामने इस बात का ज़िकर करते हुये शर्म आती है ॥

धनदत्त—शर्म की कोई बात नहीं है आप अपने मन का भाव प्रकट करें फिर मैं भी जैसी राय होगी ज़ाहिर करूंगा ॥

धनदेव—सच बात तो यह है कि आपकी पुत्री सरूपा से सम्बन्ध करने का ख़याल मेरे दिल में पैदा हो गया है—यदि आप स्वीकार करें तो मैं आपका सदा के लिये कृतज्ञ रहूंगा ॥

धनदत्त—(ज़रा सोचकर) सम्बन्ध करने में तो मुझको कुछ उज़र नहीं परन्तु इसमें एक बात का ज़रूर अंदेशा है ॥

धनदेव—वह क्या ?

धनदत्त—महाराज अपनी अपनी इज्जत का सबको ख़याल रखना पड़ता है (शेर)

१. पहले ही कमला सती घर में तेरे मौजूद है ॥
उसके होते दूसरी शादी तुम्हें बेसूद है ॥
२. पुत्र भी उसका भविपदत्त लायक़ और पुनवान है ॥
जो बड़ा बलवान है ज़ीशान है गुणवान है ॥
३. यूं भरी गर खाट पर दी मैंने लड़की सेट जी ॥
बस हंसेंगे लोग हो जायेंगी रुसवाई मेरी ॥

धनदेव—लाला जी मेरे होते आप की कौन बदनामी कर सकता है ॥

धनदत्त—महाराज बिरादरी और दुनिया का मुआमला बड़ा टेढ़ा होता है कौन किसी की जुबान को पकड़ सकता है अगर मूंह पे नहीं तो पीछे से तो ज़रूर लोग मेरी हंसी उड़ाएंगे - आप इसका क्या इन्तज़ाम कर सकते हैं ॥ (शैर)

ऐसी सूरत में हूं लड़की देने से लाचार मैं ॥
नाता करने के लिये हरगिज़ नहीं तय्यार मैं ॥

धनदेव—(ज़रा सोचकर) अच्छा हम इसका प्रबन्ध कर देंगे—आप तसली रक्खें—आपकी बदनामी कदापि नहीं होने देंगे ॥

धनदत्त—आपने क्या प्रबन्ध सोचा है ॥

धनदेव—हम अपनी वर्तमान स्त्री को दुहाग देकर उसको पीहर में भेज देंगे ॥ (शैर)

इस तरह से जब महल खाली मेरा हो जायगा ॥
कौन फिर नाते के करने से तुम्हें शर्माएगा ॥

धनदत्त—हां ऐसी सूरत में कोई बदनामी तो नहीं हो सकती—परन्तु ॥

धनदेव—परन्तु क्या ?

धनदत्त—अपनी निर्दोष और योग्य धर्म पत्नि को दुहाग

देना और उसके चित्त को दुखाना और अपने फेरों के वचन को तोड़ना उचित मालूम नहीं होता ॥ (शैर)

इससे तो बदनाम हो जाएगा बस नाम आपका ॥
क्योंकि यह दुष्कर्म बन जाएगा कारण पाप का ॥

धनदेव—आप पाप पुन्यके झगड़ेमें क्यों पड़ते हैं ॥ (शैर)

१. पाप जो होगा मैं आप उसका जिम्मेदार हूं ॥
धन बड़ा काफ़ी है मेरे पास साहूकार हूँ ॥
२. किस लिये घबरा रहा है पाप से दिल आपका ॥
दान देके कर दूंगा लेखा बराबर पाप का ॥

धनदत्त—यह आपका बिचार सर्वथा शास्त्र के विरुद्ध है ॥

(शैर)

दुष्कर्म यह दूर हो सकता नहीं है दान से ॥
यह खयाले खाम बाहर है धरम से ज्ञान से ॥

धनदेव—आपको इससे क्या मतलब—इस कार्य में जो कुछ सुख या दुख होगा उसको मैं भोगूंगा ॥

धनदत्त—बहुत अच्छा मुझे तो कुछ उज़र नहीं है—आप अपना नफ़ा टोटा विचारलें ॥

धनदेव—हमने खूब विचार लिया है आप रत्ती भर फिकर न करें ॥

धनदत्त—अच्छा अब तो आज्ञा हो ॥

धनदेव—हाँ आप तशरीफ़ लेजाएं—हम आज ही सब काम

ठीक करके आपके पास ख़बर भेज देंगे—मगर देखना इस बात का किसी से ज़िकर न करना अपने मन में ही रखना ॥

धनदत्त—हरगिज़ नहीं—भला क्या यह बात किसी से कहने की है-आप भी अपने मंत्री आदि से इस बात को गुप्त ही रखना ॥

धनदेव—हां जी बिलकुल गुप्त रक्खा जायगा हमने पहले ही मंत्री आदि सबको यहां से अलग कर दिया था ॥

धनदत्त—बहुत अच्छा—जुहार साहिब ॥

धनदेव—जुहार साहिब ॥

(धनदत्त का जाना)

८५

धनदेव का कमलश्री को दुहाग देने के लिये महल में जाने का इरादा करना और अपने दिल को सख्त बनाकर रवाना होना ॥

चाल—तौहीद का डंका आलम में बजवा दिया कमली वाले ने ॥

१. अय दिल तू बेताब न बन लाताब ध्रु अख्तर बनजा ॥
बस थोड़ी देरकी ख़ातिर तू नर्मीकोतज पत्थरबनजा ॥
२. गो प्रेम कमलका दिलमें है पर दिल आगया सरूपापर ॥
बस मुशकिलमेंहै जानअजब हैरान तूही रहबर बनजा ॥
३. है कमलश्री गर्चे सतवंती दोष नहीं कुछ भी उसमें ॥
पर आज सतीके लिये ज़रामेरे दिल तू खंजर बनजा ॥

४. तोड़ वचन फेरों के अपने दया धरम को छोड़ ज़रा ॥
कमर बांधकर जुलम सितमपर तेज़धार शस्तर बनजा ॥
५. दे दुहाग महलों में चलकर कमलश्री को इकदम से ॥
चाहे मेरा नेक सितारा पाप से बद अख़्तर बनजा ॥

(धनदेव का जाना)

ड्राप सीन
इति न्यामत सिंह रचित सती कमल श्री नाटक का पहिला अंक समाप्तम्

❀ श्रीजिनेन्द्रायनमः ❀

सती

कमलश्री नाटक

—:-(❀)-:—

दूसरा अंक

दृश्य	विषय
८	कमलश्री को दुहाग देना
९	कमलश्री का पीहर में पहोंचना
१०	भविपदत्त का गुरुकुल से पढ़कर आना
११	भविपदत्त का पिता से नाराज होकर ननसाल में जाना
१२	वधुदत्त का प्रदेश में जाने का विचार
१३	भविपदत्त का वधुदत्त के साथ जाने का विचार
१४	वधुदत्त की अपनी माता सरूपा से वात चीन
१५	भविपदत्त व कमलश्री की प्रदेश जाने की वात चीत
१६	भविपदत्त व वधुदत्त का प्रदेश गमन
१७	वधुदत्त का भविपदत्त को मैनागिर पर छोड़ना
१८	भविपदत्त का गुफा में प्रवेश

श्रीजिनेन्द्रायनमः
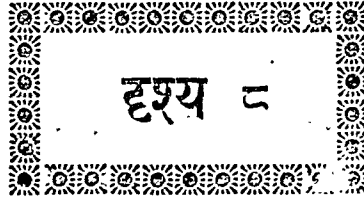
(कमलश्री के महल का परदा)

सती कमलश्री का अपने महल में खुश बैठे हुवे और चन्द्रावली व विमला व चपला व रत्नावली सखियों से बात चीत करते हुवे नज़र आना ॥

चं० कमलश्री इसमें शक नहीं कि आप बड़ी विद्वान हैं। पर हमारे प्रश्नों का यदि आप उत्तर दें तव हम आपको पंडिता समझें ॥

क० (शैर) कौन कहता है कि मैं गुणवान होशियारों में हूं
हां मगर कुछ शास्त्रके तो खबरदारों में हूं

चं० (शैर) मैं कहूं हूँ तू बड़ी चातुर खबरदारों में है ॥
तू बिलाशक पंडिता है और होशियारों में है ॥

क० अच्छा सखी बतलाओ तो सही तुम्हारे क्या क्या प्रश्न हैं ॥

चं० बहुत अच्छा सुनिये ॥

८७

चन्द्रावती व चपला व विमला व रत्नावली सखियों का प्रश्न करना और कमलश्री का जवाब देना ॥

(चाल) अटारियों पे बैठा कबूतर आधी रात ॥

चं०—बताओ सखी क्या है जगत में सार ॥
क०—सुन सुनरी सखी धर्म जगत में सार ॥
नहीं है कोई धर्म बिना री हितकार ॥
चं०—बताओ क्या है विषयों में बड़ा दुखकार ॥
क०—सुन सुनरी सातों विषयों में जूवा सरदार ॥
नहीं है कोई धर्म विना री हितकार ॥
वि०—बताओ क्या है सुन्दर हमारा शृङ्गार ॥
क०—सुन सुनरी सुन्दर नारी का शील शृङ्गार ॥
नहीं है कोई धर्म विना री हितकार ॥
र०—बताओ क्या है कोई पापों में बड़ा दुखकार ॥
क०—सुन सुन री सखी पापों में बुरी परनार ॥
नहीं है कोई धर्म विना री हितकार ॥
चं०—बताओ क्या है दुनिया में प्यारी धनसार ॥
क०—सुन सुनरी सखी विद्या बड़ी है धनसार ॥
नहीं है कोई धर्म विना री हितकार ॥
चं०—बताओ सखी करना कौन शुभकार ॥

क०—सुन सुनरी करना दुनिया में पर उपकार ॥
नहीं है कोई धर्म बिना री हितकार ॥

बि०—(वार्तालाप) भला कमलश्री यह भी तो बताओ वह कौनसी बातें हैं जो मनुष्य को नहीं करनी चाहियें ॥

क०—सुनिये सखी ॥

८८

कमलश्री का जवाब ॥
(चाल) कैसे कटेंगी रतियां हां हां पिया ॥

सुनिये हमारी बतियाँ हाँ हां सखी ॥ (टेक)

१. चोरी झूंठ अरु जारी न करना।
देते नरक गतियां हां हां सखी ॥

२. हंसी न करना निन्दा न करना।
करना ना दुरमतियाँ हाँ हाँ सखी ॥

३. क्रोध लोभ मद कभी न करना।
करना न छल बतियां हां हां सखी ॥

४. होना नहीं आसक्त कभी भी।
भोगों में दिन रतियां हां हां सखी ॥

८९

चन्द्रावली व चपला सखियों का बात चीत करना (वार्तालाप)

चं०—धन्य है सती कमलश्री आप ने हमारे प्रश्नों के

उत्तर बड़ी बुद्धिमानी से दिये जिनको सुन कर हमारे मन के सब संदेह दूर हुये ॥

च०—लो सखी सेठ जी भी आ गये ॥

चं०—वह आये और हम रफ़ू चक्कर ॥

(सब सखियों का चला जाना)

९०

धनदेव सेठजी का रति महल में घबराये हुये प्रवेश करना और चिंता में होकर मनका भाव प्रगट करना ॥ (शैर)

१. मेरे दिल ने अजब जंजाल में मुझको फंसाया है ।
जिगर में बेकली है सर मेरा चक्कर में आया है ॥

२. नहीं मालूम यह आजार क्या २ रंग लायेगा ।
मेरेसे क्या ख़बरकिस किसको यह बदजन बनायेगा ॥

३. नहीं मालूम क्या २ पाप होगा मेरे हाथों से ।
भरेगा जाम मेरा आज बेशक मेरे पापों से ॥

४. दिला तेरे लिये ही आज मेरे से सितम होगा ॥
कि नाहक़ तेरी खातिर बेगुनाहों पर जुलम होगा ॥

९१

कमलश्री का अपने पति की घबराई हुई हालत देखकर हैरान होना और हाल पूछना ॥

(चाल) विपत में,सनम के संभाली कमलिया ॥

१. कहो दिल कहां आपका जा रहा है ।

यह क्यों मुख पे रंज और ग़म छा रहा है ॥
२. परेशानी क्यों दिलपे छाई हुई है ।
ये क्यों तेज मुख को घटा जा रहा है ॥
३. वता दीजे जल्दी कि क्या माजरा है ।
मेरे दिलमें खोफ़ और वहम छा रहा है ॥
४. बहादूंगी अपना लहू मैं जो देखूं ।
पसीना तुम्हारा गिरा जा रहा है ॥

६२

धनदेव और कमलश्री की बात चीत ॥

ध०—कमलश्री आज मैं बड़ी उलझन में पड़ा हुआ हूं ।

(शैर)

इधर देखूं तो मुश्किल है उधरदेखूं तो मुश्किल है ।
समझ में कुछ नहीं आता कि उलझन में मेरा दिल है ॥

क०—महाराज ज़रा फरमाइये तो सही आख़िर क्या मुआमला है—(शैर)

ज़रा मैं भी तो सुन लूं कौनसी वह सख्त मुशकिल है ॥
कि जिसने ऐसी मुशकिल में फंसाया आपका दिल है ॥

ध०—बस मुआमला यही है कि इस मुशकिल को हल करने की कुञ्जी तुम्हारे ही हाथ में है ॥

क०—क्या मतलब ॥

ध०—बस यही कि तुम अपने पीहर को चली जाओ ।

क०—(घबरा कर) कोई कारण ॥

ध०—केवल तुम्हारे पाप कर्म का उदय और कोई नहीं कारण ॥

क०—प्राणनाथ आज मुझ अबला पर ऐसी कड़कती हुई बिजली क्यों गिरी जाती है क्यों आपकी निगाहें मुहब्बत बिन कारण मेरे से फिरी जाती है (शैर)

१. यकायक ख़ता मुझसे क्या होगई ।
कि इकदम ही किसमत मेरी सोगई ॥

२. कहो किस लिये हो गए बदगुमां ।
जो कुछ भेद है मुझसे कीजे अयां ॥

६३

धनदेव का जवाब ॥

१. क्या कहूँ आती नज़र तेरी ख़ता कुछ भी नहीं ।
खेल है तकदीर का असली खता कुछ भी नहीं ॥

२. क्या खता सीता की थी जिस पर निकाला राम ने ।
क्यों गए वन राम लक्ष्मण थी ख़ता कुछ भी नहीं ॥

३. क्या खता श्रीपाल की थी जो समन्दर में गिरा ।
क्यों मिला मैना को वर कुष्टी ख़ता कुछ भी नहीं ॥

४. चीर द्रोपद का उतारा क्यों कहो थी क्या ख़ता ।
क्यों सुदर्शन को मिली शूली खता कुछ भी नहीं ॥

५. थी पवनजय को मुहब्बत अंजना से किस क़दर ।

एक दम दिल फिर गया उसकी खता कुछ भी नहीं ॥
६. बस समझले तेरा गरदिश में सितारा आ गया ।
कर्म की रेखा तेरी पलटी खता कुछ भी नहीं ॥

९४

कमलश्री का जवाब ॥ (शैर)

१. मानलो कुछ देर को मेरी ख़ता कुछ भी नहीं ।
जानलो किसमत मेरी पल्टी ख़ता कुछ भी नहीं ॥
२. फिर भी मैं मानूं हूं वेशक में खतावारों में हूं ।
हो कोई तदवीर मुवाफ़ी मैं गुनहैगारों में हूं ॥

९५

धनदेव का जवाब ॥ (शैर)

१. मैं नहीं कहता कि तेरी इसमें कुछ तक़सीर है ।
किसे लिये पूछे है मुवाफ़ी की कोई तदबीर है ॥
२. तेरा पीहर को चला जाना यही अकसीर है ।
इससे अच्छी और कोई भी नहीं तदबीर है ॥

९६

कमलश्री का जवाब ॥

(चाल) हाय अच्छे पिया वही देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है ॥
प्यारे विनकारण मोहे नेक विचारो क्यों दुर्वचन सुनावत हो
१. यह मैंने माना हुआ शुभ करम तो मुझसे जुदा ।

अशुभ-करम भी तो मेरा नहीं रहेगा सदा ॥
कभी तो आयेगी फ़सले वहार दुनिया में ।
खिज़ां का दौर तो रहता नहीं हमेशा पिया ॥
प्यारे कर्मों की गति कोई नजाने क्योंचित कठिन वनावतहो
२. क्या राजा राम को था फिर न उसका राज मिला ।
क्या द्रोपदी का नहीं था सभा में चीर वढ़ा ॥
क्या अंजना से पवन ने क्षमा नहीं मांगी ।
सिया के आगे न क्या राम शर्मसार हुआ ॥
योंही कभी तो कर्म फिरेंगे हमारे काहे को दुख दर्शावत हो

९७

धनदेव का जवाव ॥ (वार्तालाप)

वेशक ठीक है तेरी कर्म मीमानसा और ठीक है तेरा विचार—पर इस समय मेरे दिलके फ़ैसलेके सामने तेरी सव दलीलें हैं वेकार—

९८

कमलश्री का जवाव (शैर)

१. नाहक हमारे स्वामी तू इतना जुलम न कर ।
मेरी तरफ़ को देख तू ऐसा सितम न कर ॥
२. वह ही कमलश्री हूं नहीं और वन गई ।
फेरों को याद कर मुझे दूर एक दम न कर ॥

९९

धनदेव का जवाब ॥ (शैर)

१. होगी कभी कमलश्री पर अवतो ख़ार है।
आफत वह आ पड़ी है कि दिल बेकरार है॥
२. अब और तू जियादह न इसमें ढील कर ।
पीहर में अपने रहने की जाकर सबील कर ॥

१००

कमलश्री का जितलाना कि फेरों के वक्त जो उमर भर निभाने के वचन दिये थे उन से न फिरो ॥

(चाल रसिया रियासत भरतपुर व वृज का) अब आगया कलजुग घोर पाप का जोर हुआ भारी ॥

देखो मतना फिरो जुवां से वालम करके कौल इकरार।
करके कौल इकरार बीच पंचों के बारमबार। देखो०(टेक)
१. पंच धर्म पावक ध्रु तारे। चारों साक्षि बने हमारे॥
वचन हार के वालम हमको मत छोड़ो मजधार॥
२. पृथ्वीअरुरविचांदसितारे। छहवों द्रव्य सब सत्य आधारे
सतको तजकर मतना वालम लो अपयश सरभार॥
३. धर्म सदा जगमें सुखदाई। पाप करम जानो दुखदाई॥
सत्य तजा था वसु नृप ने पहुँचा नर्क मंझार॥
४. क्यों मुझ कारण दासि पठाई। क्यों मेरेसे प्रीति वढ़ाई॥
क्यों पकड़ा था हाथ बने थे किस मूंह से भरतार॥

५. मैंने तुम पर मांग भराई । सब कुछ तज तेरे घर आई ।
दे दुहाग मत तारो मेरा बना हुआ शृङ्गार ॥

१०१

धनदेव का जवाब ॥

हां मैंने बेशक तुम्हें उमर भर रखने का ज़रूर इक़रार किया था । परन्तु अब मैं लाचार हूं । मेरा दिल मेरे वश में नहीं मुझे मजबूर करना है कि वचन हारी बनूं (शेर)

१. देकर दुहाग आप को पापी बनूंगा मैं ।
इक रोज़ ऐसे कर्म से दुख में पड़ूंगा मैं ॥
२. पर क्या करूं कि आज मैं लाचार हो गया ।
तुझको दुहाग देने को तय्यार हो गया ॥

१०२

कमलश्री का पूछना कि आखिर क्या बात है जो आपको ऐसा करने पर मजबूर करती है ॥

चाल—बर्फ वाले रे बर्फ का घोड़ा थाम ले ॥

बता दीजे जी लाचारी की क्या बात है ॥ (टेक)
१. बगर तेरे वश में । नगर तेरे वश में ।
बता दीजे जी बेज़ारी की क्या बात है ॥
२. दरबार तेरे वश में । घर बार तेरे वश में ।
बता दीजे जी हैरानी की क्या बात है ॥
३. हो वचनों के वश में ! मैं आई तेरे वश में ।

बता दीजे जी परेशानी की क्या बात है॥

१०३

धनदेव का जवाब ॥ (शैर)

१. बढ़ाकर बात को क्यों जी मेरा बेज़ार करती है।
जो दिल ही फिर गया फिर किस लिये इसरार करती है॥
२. इलाज अबतो हमारे से तुम्हारा हो नहीं सकता।
सबर करले तेरे मन का बिचारा हो नहीं सकता॥
३. यही बेहतर है बस अबतो कि पीहर को चली जाओ।
मेरे महलों में अब तेरा गुज़ारा हो नहीं सकता॥

१०४

कमलश्री का जवाब ॥ (शैर)

१. चली जाऊंगी महलों से मगर घर में तो रहने दो।
कि हक़ इतना भी इस घरमें हमारा हो नहीं सकता॥
२. ज़रा करके दया बालम सबब कुछ तो बता दीजे।
कि क्यों इस घरमें भी रहना हमारा हो नहीं सकता॥

१०५

धनदेव और कमलश्री की बात चीत ॥

ध०—(शैर)

१. निपट नादान मुझसे किस लिये इसरार करती हो॥
दलीलों से तुम्हारी कुछ सहारा हों नहीं सकता॥

२. समझ में क्यों नहीं आता है मतलब साफ है बिलकुल ।
कि मेरे घरमें दोनों का गुज़ारा हो नहीं सकता ।

क०—क्या मतलब ॥

ध०—(क्रोध में आकर) मूर्ख मतलब बिलकुल अयां है ज़रा कान देकर सुन ख़याल कहां है । धनदत्त सेठ की लड़की सरूपा पर मेरी तबीयत आई है बस उसी के ख़याल ने तेरे से नफ़रत दिलाई है ॥

(शैर)

समाई दिल में जो सूरत हटाई जा नहीं सकती ।
कि इकजा दूसरी तलवार हरगिज़ आ नहीं सकती ।

१०६

कमलश्री का पति के क्रोध करने और गाली (मूर्ख) देने से दिल में दुख मानना और जवाब देना ॥

(चाल नाटक) दिन रतियां ना छेड़ो सय्यां ॥

रिस करके ना दीजे गारी ।
मैं दुखियारी । अबला नारी । शरण तुम्हारी हां (टेक)
तुम मानो जी साँवरया । मोहे मत भेजो पीहरवा ॥
सखियों में जागी पत मोरी ।
कान घटे पंचों में तोरी ।
मतना कर यों बालम जोरी ।
हटना बना, दुखना दिखा, जियाना जला, मानने कहा
हां हां । हां हां । हां हां । हां । रिस करके ना दीजे ।

१०७

धनदेव का गाली की बावत कमलश्री से क्षमा मांगना और जवाब देना ॥

कमलश्री मैं अपने दुर्वचन के लिये तो आपसे क्षमा मांगता हूं आप मुझको क्षमाकरें । मगर तुम पीहर न जाने के लिये क्यों बार बार ज़िद करती हो । नाहक मुझे हैरान करती हो – (शेर)

१. अब तुम्हारा रोना धोना है सरासर सब फ़ज़ूल ।
बस तुम्हारी बात कोई भी नहीं मुझको कबूल ॥
फैसला जब हो चुका तरदीद की हाजत नहीं ।
जो तुम्हें यहां रख सके समझो कोई ताक़त नहीं ॥

१०८

कमलश्री का फिर धनदेव को समझाना कि आप ज़रा सोच विचार कर काम करें और इस अयोग्य कार्य के अन्तिम परिणाम को भी विचार लें बिन सोचे विचारे जो काम किया जाता है उसमें आखिर को पछताना होता है । जिसने भी बिना विचारे काम किया है उसको दुख उठाना पड़ा है और आखिर को पछताना पड़ा है ।

(चाल रसिया रियासत भरतपुर व बृज का) अब आगया कलजुग घोर पाप का जोर हुआ भारी ॥

मतना कीजे ऐसा जुलम पिया टुक कीजे सोच विचार ।
कीजे सोच विचार नहीं पछताओगे भरतार ॥ (टेक)
१. बिन सोचे रावण अभिमानी ।
बन से हर लाये सिया रानी ॥

राज पाट सब गया,गया खुद भी तो नरक मंझार ।

२. राय युधिष्ठर चौसर हारे ।
अड़ देई द्रोपद बिना विचारे ॥
राज भ्रष्ट हो पाँचो भाई फिरते वन वन ख्वार ।

३. विन सोचे कीचक अघकारी ।
गयो मिलन द्रोपद पर नारी ॥
नारी रूप बनाय भीम ने मारा उसे पछार ।

४. दुःशासन आ सभा मंझारा ।
सती द्रोपद चीर उतारा ॥
नाश हुआ विन सोचे सारा कुरुवंशी दरबार ।

५. भेजे वन केकै अयानी ।
तीनों राम लखन सिया रानी ॥
विन सोचे यह काम किया पीछे से भई लाचार ।

६. सेत्यंधर कुछ भी न विचारा ।
सोंपा राज काष्टागारा ॥
अपना शीश कटायो रानी पड़ी विपत मझधार ।

७. विना विचार राम बलधारी ।
सती सिया वन मांही निकारी ॥
लज्जावंत भये रघुवर जब दी परीक्षा सिया नार ।

८. पहुपाल राजा हट लाई ।
जा मैना कुष्टी से वियाही ॥
आखिर मुवाफी मांगी आकर मैना के दरबार ।

१०९

धनदेव का जवाव ॥ (शैर)

१. ज़रूरत कुछ नहीं इस माजरे में सोच करने की ।
कहो तो कौनसी है बात पछताने की डरने की ॥
२. खुशीमें तुम रहो पीहर लगा जी पीने खाने में ।
तो इस सूरत में क्या डर है तुम्हें पीहर के जाने में ॥
३. मैं अपने आप भोगूंगा नतीजा इसका पा करके ।
पराई क्या पड़ी तुझको नमेड़ अपनी तू जा करके ॥

११०

धनदेव का ऐसा सख्त जवाव सुन कर कमलश्री का हैरान होना और रोते हुये पति को जवाव देना और विरह के दुखों को जितलाना ॥

(चाल पंजावी) अड़गई अड़गई अड़गई हो जिंदरी नाल कृष्ण के ॥

विरह की रतियां प्यारे । किम काटूंगी गिन गिन तारे ॥
१. कौन सुनेगा पीर हमारी—कौन बंधावे धीर हमारी ।
भाई बहन पिता महतारी-वन जांगे दुश्मन सारे ॥
२. चमक कड़क विजली तड़पावें-गरज गरज हीया लरजावें ।
रैन अंधेरी में डरपावें-आ आ वदरवा कारे ॥
३. कर कर याद सुखोंकी वतियां-भरभर आवेंगी हम छतियां ।
दुख में वीतेंगी दिन रतियां-सीने पे चलेंगे आरे ॥
४. सखी सहेली पूछन आवें-मन माने सो वचन सुनावें ।
सुन सुन पार हिये हो जावें-वन वन शस्त्र दुधारे ॥

५. जाता रहे सुहाग हमारा—उतर जाय श्रृंगार हमारा।
व्यर्थ जाय सब जोवन प्यारा—बिगड़े जन्म हमारे ॥
६. सगरी लाज और पत जावे—यश बदले अपयश हो जावे।
जोवन रूप काम नहीं आवे—सब हो जांय नाकारे ॥
७. निशदिन चिन्ताशोक रहेगा—सोतनका दुख और दहेगा।
धर्म ध्यान सब दूर हटेगा— बंधेंगे पाप अपारे ॥

१११

धनदेव का सख्ती से जवाब देना ॥ (शेर)

१. कहना और सुनना तेरा अबतो मुझे भाता नहीं।
तेरे रोने पीटने पर रहम कुछ आता नहीं ॥
२. है यही लाजिम कि करके सब्र तू पीहर को जा।
बहतरी का और कोई चारा नजर आता नहीं ॥

११२

धनदेव और कमलश्री का नाराजगी में बातचीत करना ॥ (शेर)

क०—अगरयों जुल्म करके आज तुम मुझको सताओगे।
समझ लेना कि कल तुमभी तो कल हरगिज नपाओगे
ध०—भला यों तेरे कहने से अगर तुझको मैं चाहूँगा।
सरूपा पे जो दिल आया उसे कैसे हटाऊंगा ॥
क०—सरूपा से किसी सूरत में भी कब आपको हक है।
मेरी मौजूदगी में प्यार करने का तुम्हें हासिल ॥

ध०—किसीके भी नहीं काबू में दिलका आना हट जाना।
मैं हूँ लाचार मेरे कुछ नहीं काबू में दिल मेरा ॥
क०—हमारे जी जलाने का समर अच्छा नहीं होगा।
पिया नाहक सताने का असर अच्छा नहीं होगा ॥
ध०—मैं देखूंगा कि क्या इसका समर अच्छा नहीं होगा।
सहूंगा आप दुख इसका अगर अच्छा नहीं होगा ॥
क०—अगर घर से निकालोगे तो करलूंगी सबर मनमे।
चली जाऊंगी पीहर को मगर अच्छा नहीं होगा ॥
ध०—न कर तकरार बस इतनी मेरे से मान ले कहना।
बढ़ाया बात को तूने अगर अच्छा नहीं होगा ॥
क०—गजब करतेहो जो औरतका यों अपमान करतेहो।
समझलो इसका दुनियाँ में असर अच्छा नहीं होगा ॥
ध०—तुम्हारा कहना सुनना अवतो सारा सुन लिया मैंने।
जियादा और कहने का असर अच्छा नहीं होगा ॥
क०—धर्म प्रतिकूल है देखो रचाना दूसरी शादी।
बिगड़ जाएगा सब काज और घर अच्छा नहीं होगा ॥
ध०—इरादा कर लिया जोकुछ हटाना इसका मुशकिल है।
हमारे अब तो महलों में तुम्हारा रहना मुशकिल है ॥
क०—सरूपा के बराबर गर नहीं मुझको समझते हो।
तो बांदी ही समझ करके मुझे सेवा में रहने दो ॥
ध०—बस अब यहभी नहीं होगा योंही बातें बनाती हो।
नया किस्सा बना क्यों बात नाहक में बढ़ाती हो ॥

११३

कमलश्री का निराश होकर जवाब देना ॥

(चाल कवाली) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारां में हूं ॥

१. क्यों सितम करते हो मुझ पर वेखतावारों में हूँ।
आप खुदही मानते हो वेगुनहगारों में हूं ॥
२. फिर मैं कहती हूं नतीजा जुल्म का अच्छा नहीं।
मैं हूं शुभ चिंतक तुम्हारी और हितकारों में हूं ॥
३. आप के वसमें हूं मैं कुछ वस मेरा चलता नहीं।
फिर गई तकदीर मेरी आज लाचारों में हूँ ॥
४. गर निकालोगे निकल जाऊंगी मैं रोती हुइ।
लेकिन इसको याद रखना मैं फ़ादारों में हूँ ॥
५. में दिखादूंगी निभायेगी सरूपा कब तलक।
बस जियादा क्या कहूं मैं अब तो दुखियारों में हूं ॥

११४

धनदेव का नाराज होना और कमलश्री को दुहाग देना (शैर)

१. तुम्हारे रोने धोने पर दया आती नहीं मुझको।
नहीं परवाह नतीजा इसका गर अच्छा नहीं होगा ॥
२. यही है फैसला आखिर तुम्हें दुहाग देता हूँ।
तुम्हारा इसमें कुछ करना उज़र अच्छा नहीं होगा ॥
३. निकल महलों से पीहर को चलीजाओ चलीजाओ।
मेरी आज्ञा न मानी तो हशर अच्छा नहीं होगा ॥

१११

दुहाग को सुन कर कमलश्री का रोना और पती से धोका देने की शिकायत करना ॥

(चाल—मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ॥

कैसा धोका दिया है पति ने मुझे ।
नाहीं पहले जितायो किसी ने मुझे ॥ (टेक)

१. क्या खबर मेरा पती से बैर था किस जन्म का ।
या उदय में आगया कोई करम इस जन्म का ॥
जिसके बदले दिये हैं पती ने मुझे ॥

२. कौल और इकरार पर भी आज पानी फिर गया ।
भाव नीती धर्म का दुनिया से शायद टर गया ॥
ऐसे आते नजर हैं करीने मुझे ॥

३. मेरी माता ठीक कहती थी धनी नाकार हैं ।
बेवफा होते यह अकसर सेठ साहूकार हैं ॥
वह ही करके दिखाया पती ने मुझे ॥

४. उमर भर आराम पाऊंगी महल में आन कर ।
राज के भोगूंगी सुख रानी की पदवी मान कर ।
झूठी दी थी तसल्ली सखी ने मुझे ॥

५. है मेरे सुहाग की शोभा उतारी आपने ।
क्यारियां गुलशन की मेरी सब उजाड़ी आपने ॥
ऐसे सदमें न देवेंगे जीने मुझे ॥

६. मर्द में बूवे मुहोव्वत कुछ ज़रा होती नहीं ।
औरतों की कुछ इन्हें परवा ज़रा होती नहीं ॥
ऐसा निश्चय कराया पति ने मुझे ॥
७. दौर दुष्कर्मों का मेरे भी रहेगा कब तलक ।
मैं भी देखूंगी निभायेगी सरूपा कब तलक ॥
फुरसत दीनी अगर जिन्दगी ने मुझे ॥

११६

धनदेव का जवाब ॥ (शैर)

होना था सो हो गया रोने से अब होता है क्या ।
है यह सब सिकवा शिकायत बस तेरा बेफ़ायदा ॥

११७

कमलश्री का जवाब देना ॥ तन के आभूषण उतार कर फैंकना और रोते हुये अकेली पीहर को चली जाना और परदा गिरना ॥

(चाल विपत में सनम के संभाली कमलिया)

१. नहीं मुझको कुछ भी तुम्हारी शिकायत ।
अगर है तो अपने कर्म की शिकायत ॥
२. सुनाई थी अपने दुखों की हिकायत ।
न समझो तुम्हारी करी थी शिकायत ॥
३. पिया कर इनायत हमें मुआफ़ कीजे ।
जो निकली हो मूंह से कोई भी शिकायत ॥

४. जुल्म और सितम चाहे जितना दिखालो ।
कभी भी न मूंह से करूंगी शिकायत ॥
५. मुहोब्बत पिया आप की देखली सब ।
भला किस तरह हो तुम्हारी शिकायत ॥
६. खतम सारे शिकवे खतम सब कहानी ।
खतम हो चुकी सब हमारी शिकायत ॥
७. जो कहना हो कुछ और वह मूंह पे कहलो ।
न पीछे से करना हमारी शिकायत ॥
८. मुझे रंज है गर तो इस बात का है ।
ज़माना करेगा तुम्हारी शिकायत ॥
९. मुबारक हो तुमको सरूपा से शादी ।
हमें कुछ नहीं अब तुम्हारी शिकायत ॥
१०. सदा रंग बरसे महल में तुम्हारे ।
हमारी तरफ़ से न होगी शिकायत ॥
११. मगर एक दिन यह दिखादूंगी आख़िर ।
करोगे पशेमां हो अपनी शिकायत ॥
१२. सम्भालो महल और मेरे तन के जेवर ।
नहीं इनकी ख्वाहिश न कोई शिकायत ॥
१३. कभी फिर मिलूंगी जो जिन्दा रही आर ।
मिटी गर हमारे करम की शिकायत ॥
१४. मुरादें दिली अपनी पूरी करो तुम ।
रहे ऐश की कुछ न बाकी शिकायत ॥

१५. सबर कर लिया है पिया मैंने दिल में ।
जुबां पर न आएगी कोई शिकायत ॥

(महल से निकल कर चला जाना)

दृश्य ९
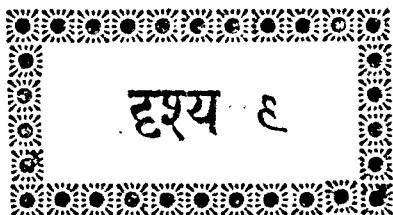
(लक्ष्मी देवी के महल का परदा)

११८

कमलश्री को आते हुये देखकर एक दासी का लक्ष्मी देवी को खबर करना और बात चीत करना (वार्तालाप)

दा०—माता जी आज तो कमलश्री अपने घरकी तरफ आ रही है ।

ल०—क्या सच कहती हो । भला बिना बुलाये उसके आने का क्या कारण है ।

दा०—हांजी बिलकुल सच—मैंने अपनी आँख से देखा है ।

ल०— (शैर)

वह कितनी बांदियां असवार चाकर संग लाई है ।
बता क्या क्या सवारी हैं वह जिसमें बैठ आई है ॥

दा०— (शैर)

अकेली आ रही है कुछ उदासी मुँह पे छाई है ।

सवारी है नहीं कोई वह नंगे पांव आई है ॥

ल०-(शैर)

अरी दासी यह तूने क्या खबर मुझको सुनाई है ।
जिसे सुनकर मेरे हृदय में व्याकुलताई आई है ॥

११९

कमलश्री का घर में आना और उदास होकर और कपोल पर हाथ रखकर
चुपचाप एक जगह बैठ जाना । माता का कमलश्री से हाल पूछना
कमलश्री का रोना और कुछ जवाब न देना ॥
(चाल) मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ॥

मेरी बेटी ज़रा तू बता तो मुझे ।
तेरी क्या है यह हालत सुना तो मुझे (टेक)

१. ना तो सर चूड़ामणी है ना गले में हार है ।
बाल हैं बिखरे हुवे कोई नहीं शृङ्गार है ॥
किसने तुझको सताया जिता तो मुझे ।
मेरी बेटी ज़रा तू बता तो मुझे ॥

२. किस लिये रोती है तू और किस लिये बेज़ार है ।
क्यों बता दिल में न तेरे सब्र और क़रार है ॥
अपनी सूरत ज़रा तू दिखा तो मुझे ।
मेरी बेटी ज़रा तू बता तो मुझे ॥

३. क्यों नहीं है आज कोई दास दासी संग में ।
पड़ गया है आज क्यों यह भंग तेरे रंग में ॥
बेटी दे तू ज़रा सा पता तो मुझे ॥

मेरी बेटी ज़रा तू बता तो मुझे ॥

४. कुछ तो मूंह से बोल मेरी प्यारी कमला गुलबदन ।
हिचकियां ले ले के क्यों खोती है अपनी जानोतन ॥
अपनी विपता की बात सुना तो मुझे ।
मेरी बेटी ज़रा तू बता तो मुझे ॥

१२०

हरिबल का आना और कमलश्री को रोते हुवे देखकर हैरान होना और उसका हाल पूछना और कमलश्री के अचानक रोते हुवे आने पर शुबा करना (शेर)

१. बेखबर कैसे कमल घर मेरे आई है तू ।
क्या मुसीबत कोई सर पे मेरे लाई है तू ॥
२. मातमी किस लिये सूरत है बनाई तूने ।
क्यों परेशान यह हालत है दिखाई तूने ॥
३. शील संजम पे लगाई क्या सिहाई तूने ।
क्या कहीं लाज मेरे कुलकी गंवाई तूने ॥
४. बात बतला तो सही मुझको कि झगड़ा क्या है ।
इस मुसीबत में तेरे आने का मंशा क्या है ॥

१२१

नोट :—

(१) जब कमलश्री ने अपने माता पिता को कोई जवाब न दिया तो सब परिवार को संदेह हो गया और कमलश्री ने खान पीना करना भी बन्द कर दिया। कमलश्री को अपने परिवार की बेकसी देख कर बड़ा रंज हुआ और उसने अन्न जल का भी त्याग कर दिया और

चुप चाप एक जगह बैठी रही और सबकी बातें सुनती रही और अपने कर्मों को रोती रही और भगवत का स्मर्ण करती रही।

(२) जब सेठ धनदेव को कमलश्री के रोने की और उसके माता पिता की बेरुखी की खबर मिली तो उसने चन्द्रावली बांदी की जुबानी अपनी सास लक्ष्मी देवी को कहला भेजा कि कमलश्री सर्वथा निर्दोष है। मैंने अपने आप इसको पीहर में भेज दिया है। इसको प्रेम से रक्खा जाय और इसके साथ अच्छा सलूक किया जाय क्योंकि इस में किसी प्रकार का भी दोष नहीं है।

१२२

चन्द्रावली का लक्ष्मी देवी के पास आना और धनदेव का संदेश पहुंचाना।

(चाल कवाली) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं।

१. कौन कहता है सती कमला गुनहगारों में है।
है सरासर बेगुनाह और बेखतावारों में है॥

२. सेठ जी ने है मुझे भेजा जिताने के लिये।
यह सती निर्दोष है और नेक अवतारों में है॥

३. अपनी मरजी से पती ने इसको भेजा है यहां।
भूल करके भी न कहना यह सियाहकारों में है॥

४. इसका सन्मान और आदर घर में होना चाहिये।
यह अवश्य धर्मात्मा और नेक किरदारों में है॥

५. है कोई दुष्कर्म इसका अब उदय में आ गया।
वरना यह निर्मल है बिलकुल बेगुनहगारों में है॥

१२३

हरिवल का चन्द्रावली से कमलश्री को दुहाग देने का
कारण पूछना ॥ (वार्तालाप)

ह०—चन्द्रावली भला यह तो बताओ कि कमलश्री को
दुहाग देने का असली कारण क्या है।
चं०—महाराज मैं क्या बताऊं। मैं खुद हैरान हूं-(शैर)
बस समझलो सेठ की तकदीर चक्कर खा गई।
यानी किश्ती उसकी किसमत की भंवरमें आ गई॥
ह०—आखर बात क्या है कुछ तो अता पता बतलाइये—

१२४

चन्द्रावली का कमलश्री के दुहाग का कारण बताना॥
(चाल क़व्वाली) मैं खुश हूं हौंसला अपना दिखाए जिसका जी चाहे॥

१. कुमत ऐसी यह धनवे सेठ के हृदय में छाई है।
जो यो बैठे बिठाए उसने यह आफ़त उठाई है॥
२. कहीं धनदत्त की पुत्री सरूपा पर नज़र एक दिन।
पड़ी उसकी तो बस इकदम मती चक्कर में आई है॥
३. इरादा है बहुत जल्दी सरूपा से करे शादी।
इसी कारण दुहागन कर कमल पीहर पठाई है॥
४. हुआ आसक्त उसका मन विषय में और भोगों में।
शरम और लाज सारी कुलकी आजउसने गंवाई है॥

१२५

हरिबल का कोप करना और धनदेव की निन्दा करना ॥
(चाल कवाली) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. मैं ना समझा था कि धनदेव बेवफादारों में है ।
ऐसा बे इनसाफ़ और ज़ालिम ज़फाकारों में है ॥
२. आगया धोके में मैं चन्द्रावली की बात पर ।
क्या खबर थी मुझको वह ऐसे सितमगारों में है ॥
३ मान में आकर दिखाया उसने अपना सेठपन ।
खुद ग़रज़ बेधर्म है और वह रियाकारों में है ॥
४. कौन कहता है कि वह हमदर्द है हितकार है ।
संगदिल है वह दगाबाज़ और दिलाजारों में है ॥
५. मैं तो यह समझा था धर्मी सेठ है वह शहर का ।
वहतो तोता चश्म और बेशक सियाहकारों में है ॥
६. दोष क्या देखा जो कमला को दिया उसने दुहाग ।
कौन कहदेगा वह धर्मी नेक अतवारों में है ॥
७. कौन से मूंह से दिया था क़ौल सबके सामने ।
वह बचन हारी बना है और दुराचारों में है ॥

१२६

लक्ष्मी देवी का अपने पती से कहना कि आपने पहले मेरे वचन न माने और जितलाना कि नीति के विरुद्ध बड़ों से नाता करने का नतीजा यही होता है—
(चाल क़वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ।

१. अमीरों को गरीबों से मुहब्बत हो तो क्योंकर हो।

वह नाज़ा अपनी दौलत पर रिफ़ाकत हो तो क्योंकर हो।
२. लगे रहते हैं वह हरदम विषय में और भोगों में।
उन्हें फिर धर्म की नीति की रग़वत हो तो क्योंकर हो॥
३. अमीरों को बिगड़ते देर कुछ लगती नहीं साहिब।
न दिलमें हो दया कुछ भी रियायत हो तो क्योंकर हो॥
४. धनी होते हैं अक्सर मायाचारी खुद ग़रज नटखट।
हमारी उनसे फिर साहब सलामत हो तो क्योंकर हो॥
५. बहुत था मैंने समझाया मगर तुमने नहीं माना।
भला अब दिलमें पछतानेसे राहत होतो क्योंकर हो॥
६. थे हामी आप धनवे के मगर मैं यह ही कहती थी।
मेरा दिल आपकी बातोंसे सहमत हो तो क्योंकर हो॥
७. गया इनसाफ दुनिया से सभी कहते हैं मूंह देखी।
कि धनवे के सितमकी फिर सदाक़तहो तो क्योंकर हो॥
८. हमारी कौन सुनता है ज़माना धन पे मरता है।
ग़रीबों को अमीरों से शिकायत हो तो क्योंकर हो॥
९. करे उसको मलामत कौन है ऐसा ज़माने में।
हमारी फिर किसीको अब हिमायत होतो क्योंकर हो॥
१०. खता बतलायगी दुनिया हमारी ही समझ लेना।
कि धनवेके सितम की कुछ इशायत हो तो क्योंकर हो॥
११. नहीं अब फ़ायदा शिकवे शिकायत में नवर कीजे।
कि ऐसे साहूकारों से अदावत हो तो क्योंकर हो।

१२७

हरिवए का खुद पशेमान होना और अपनी धर्मपत्नी से क्षमा मांगना और अपनी ग़लती को स्वीकार करना ॥

(चाल क़व्वाली) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. मैं नहीं कहता कि मैं दुनिया के होशियारों में हूँ ।
बेख़बर नादान हूं ना तजरुबेकारों में हूँ ॥
२. थी सरासर भूल जो कहना तेरा माना नहीं ।
अब तुम्हारे सामने मैं खुद शरमसारों में हूं ॥
३. मैंने ही डाला है आफ़त में मुसीबत में तुझे ।
मैं ही तो कमला सती के भी दिलाज़ारों में हूं ॥
४. मानता हूं अब तुम्हारी प्यारी नीति धर्म को ।
कर क्षमा मेरी खताएं मैं ख़तावारों में हूं ॥

१२८

लक्ष्मी देवी का हरिवल को जितलाना कि आपने तो अपनी ग़लती के नतीजे को देख लिया है अब धनदेव जो नीति के विरुद्ध दूसरी शादी करता है इसका परिणाम भी देख लेना ॥

(चाल क़व्वाली) दिल दे दिया है उनको देखें वह क्या करेंगे ।

१. देखेंगे आगे क्या क्या अपने करम करेंगे ।
ज़ालिम झुकेंगे या कि दूना सितम करेंगे ॥
२. होना था हो गया सो कुछ उसका ग़म न कीजे ।
संतोष करके अब हम किस्सा ख़तम करेंगे ॥

३. धनवे सरूपो को जो लाता है देख लेना ।
पैदा नतीजे इसके रंजो अलम करेंगे ॥
४. क्या डर है उसने घर से कमला को गर निकाला ।
सेवा सती की मिलकर तुम और हम करेंगे ॥
५. अब दीजिये तसल्ली बेटी को प्यार करके ॥
समता से उसके दिल का हम दूर ग़म करेंगे ।

१२६

हरिबल का अपनी बेटी कमलश्री से प्यार करना और धनदेव से नाता करने पर अफ़सोस करना और अपनी गलती को स्वीकार करना और कहना कि बेटी धनदेव ने जो तुझको दुहाग दिया है और दूसरी शादी करता है इसका फल उसको बुरा मिलेगा ॥ (शैर)

१. गर तू कहे तो तन से सर अपना उतार दूं ।
बेटी तेरे पे सारा यह घर बार वार दूं ॥
२. जो कुछ कहे अभी तेरा पूरा कहा करूं ।
जो कुछ है मुझ पे तेरे लिये अदा करूं ॥
३. कम्बख्त सेठ ने बड़ा धोका दिया मुझे ।
बेदोष जिसने महल से बाहर किया तुझे ॥
४. परवा मगर नहीं है जो उसने सितम किया ।
अपने किये की आप पाएगा वह सज़ा ॥
४. पीहर में अपने चैन से अब तुम रहा करो ।
मौजूद है भविष कि न चिन्ता ज़रा करो ॥

१३०

कमलश्री का पिता को तसल्ली देना कि यह सब कर्मों का दोष है। इसमें आपका क्या दोष है। दुनियां में ऐसा होता ही रहता है इसमें घबराने की क्या बात है।

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे ख़रीदारों में हूं ॥

१. क्या घटा आती है चमकीले सितारों पर नहीं ॥
क्या मुसीबत टूटती है धर्म प्यारों पर नहीं ॥
२. हे पिता जी आप इतने किस लिये बेज़ार हैं।
क्या ख़िज़ां आती है दुनियां में बहारों पर नहीं ॥
३. आप तुल जाएगा कांटे में करम का फ़ैसला।
फ़ैसला इसका किसी के भी विचारों पर नहीं ॥
४. एकही दममें बरस जाती है हसरत देखिये।
क्या ग़रीबों पर नहीं क्या साहूकारों पर नहीं ॥
५. आज जो हैं यार कल दुश्मन नजर आते नहीं।
कुछ भरोसा दोस्तों पर और यारों पर नहीं ॥
६. एक छिनमें कुछकी कुछ रंगत पलट जाती है यहां।
ताज भी रहता हमेशा ताजदारों पर नहीं ॥
७. क्या हुआ मुझको पतीने देदिया है गर दुहाग।
बिजलियाँ गिरती हैं क्या ऊंचे पहाड़ों पर नहीं ॥

१३१

लक्ष्मी देवी का कमलश्री को प्यार करना और दुहाग देने पर रंज करना ॥

(चाल नाटक) तुम जाओ ना कोई जा के संजीवन लाओ ना ॥

घबराये ना जरा मनमें उदासी लायना।

मेरी प्यारी दुलारी दुखारी न हो ॥ घवराय० टेक ॥
मुझको मालूम न था लोग हंसाई होगी ।
मेरी बेटी की यों महलों से जुदाई होगी ॥
अब सिवा सब्र नहीं कोई भी चारा इसका ।
सब्र संतोष में ही तेरी भलाई होगी ॥
दुख पायना । जी जलायना ।
ज़रा मन में उदासी लायना ॥ घवराय० ॥

१३२

कमलश्री का अपनी माता को तसल्ली देना ॥

(चाल क़व्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे

१. दिखाएंगे करम क्या क्या तमाशा मैं भी देखूंगी ।
है इस तक़दीर में लिक्खा हुआ क्या मैं भी देखूंगी ॥
२. निभाये इतने दिन मैंने तो अपने शील संजम से ।
निभाएंगे कहाँ तक ग़ैर अच्छा मैं भी देखूंगी ॥
३. लिया है देख मैंने सुख सुहागन रहके मुद्दत तक ।
दुहागन बनके अब दुख का नज़ारा मैं भी देखूंगी ॥
४. सज़ा दी किस लिये मुझको ख़ता जब कुछ नहीं मेरी ।
नतीजा इस सितमगारी का है क्या मैं भी देखूंगी ॥
५. नहीं महलों की ख्वाहिश है मबर बस करलिया मैंने ।
कोई अरमान क्योंकर मुझको होगा मैं भी देखूंगी ॥
६. समझ रक्खा है बालम ने है सब कुछ हाथ में उसके ।

पलट देगा मेरे कर्मों का पासा मैं भी देखूंगी ॥
७. हुआहै सुख में दुखतो दुखमें सुखभी एकदिनदेखूंगी ॥
असाता हट न कब तक होगा साता मैं भी देखूंगी ।
८. मेरी माता तू क्यों रोती है क्यों अफ़सोस करती है ।
करम क्या और के बस में है मेरा मैं भी देखूंगी ॥
९. नहीं क्या सब्र में मेरे असर इतना भी अय माता ।
झुकायेगा न कब तक सर वह अपना मैं भी देखूंगी ॥
१०. करम अनमिट हैं जब मेरे भला कैसे पति मेरा ।
बदल देगा मेरे कर्मों का नक्शा मैं भी देखूंगी ॥
११. धरूंगी ध्यान भगवतका कि समता मनमें धारूंगी ।
असर कब तक न होगा इस धरम का मैं भी देखूंगी ॥

१३३

चन्द्रावली सखी का कमलश्री के पास बैठना और कहना कि संसार की अद्भुत लीला है जो समझ में नहीं आती । चन्द्रावली का प्रश्न करना व कमलश्री का जवाब देना ॥

चं०–सती कमलश्री इस संसार की भी अद्भुत लीला है जो समझ में नहीं आती ॥
क०–भला सखी समझ में न आने की कौनसी बात है ।
चं०–देखो तो सही यह कैसा नाटक का सा खेल है भला बतला तो सही क्या यह सब खेल स्वयं हो रहा है या कोई तमाशा दिखला रहा है ॥
१. कहीं पर दिन कहीं पर रात फिर परभात होती है ।

कभी गरमी कभी सरदी कभी बरसात होती है ॥
२. कहीं सूरज कहीं चंदर कहीं तारे चमकते हैं ।
कहीं पर बाग में खुश रंग गुल गुंचे महकते हैं ॥
३. कहीं ऊंचे पहाड़ आकाश से जा बात करते हैं ।
कहीं उमड़े हुये दरिया ज़मीं पर से गुजरते हैं ॥
४. हज़ारों मुल्क हैं अदाएं सब की न्यारी हैं ।
समंदर की जरा देखो कि लहरें कैसी प्यारी हैं ॥

१३४

कमलश्री का चन्द्रावली को जबाब देना और समझाना कि यह जगतस्वयं सिद्ध है और अनादी है । न इसका कोई कर्ता है न कोई हरता है ॥

(चाल रसिया-भरतपुर रियासत व बृज का) अब आ गया कलयुग घोर पाप का जोर हुआ भारी ॥

है यह स्वयं सिद्ध संसार नहीं कोई इसका करतारा ।
इसका करतारा सखी नहीं कोई हरतारा है ॥ (टेक)
१. काल आकाश जीव और पुद्गल ।
धर्म अधर्म द्रव्य सब मिल जुल ॥
हैं यह ही षट द्रव्य इन्हीं का है खट पट सारा ।
२. छहयों द्रव्य अनादी प्यारी ।
जान अनादी दुनिया सारी ॥
आद अंत नहीं प्यारी इनका सब सत्य आधारा ॥
३. जीव और पुद्गल मिल जाई ।
नाना रूप धरें जग मांहीं ।

जूं नाटक में रूप धरें कोई नाना प्रकारा ॥
४. गिर सागर रवि चांद सितारे ।
षट ऋतु द्वीप समंदर सारे ।
मनुष्य पशु सब जड़ चेतन का है झगड़ा सारा ॥
५. रूप शकल पर्याय अरु मूरत ।
बिना शीक जानो सब सूरत ।
गुण और द्रव्य सदा स्थिर जानो भगवत उच्चारा ॥

१३५

चन्द्रावली का दूसरा प्रश्न करना । कि संसार में कोई सुखी कोई दुखी होने का क्या कारण है । (शैर)

१. स्वयं सिद्धी जगत की तो समझ में आगई मेरे ।
इक और संशय मिटा दीजे न भूलूंगी मैं गुण तेरे ॥
२. सुखी कोई दुखी कोई धनी कोई कोई निर्धन ।
कहीं है प्रेम आपस में कहीं पर हो रही अनबन ॥
३. हुआ है क्यों हरइक शैदा ज़मीं ज़र और नारी का ।
तमाशा यह है इन्दर जाल का या है मदारी का ॥

१३६

कमलश्री का जवाब देना और चन्द्रावली को पुन्य और पाप का निश्चय करना ॥

(चाल रसिया रियासत भरतपुर व बृज का) अब आ गया कलजुग घोर पाप का जोर हुआ भारी ॥

सारा पाप पुन्य का खेल जगत में देखो आँख पसार ।

देखो आंख पसार करम के वश में है संसार ॥ (टेक)

१. पुन्य उदय सीता जब आयो ।
अगन कुंड जल सार बनायो ।
पाप उदय रावण हर ले गया करती हा हा कार ॥

२. पुन्य उदय इन्द्रादिक देवा ।
भगवन ऋषभ करें सब सेवा ।
पाप उदय से बारह मास तक मिला नहीं आहार ॥

३. पुन्य उदय जदुकुल भारा ।
भोगे भोग अनेक प्रकारा ।
पाप उदय से सारी द्वारका हो गई जल कर छार ।

४. पाप उदय द्रोपद पटरानी ।
महल विराट भरा जा पानी ॥
चीर बढ़ा पुन्य उदय सभा में जा का वार न पार ॥

५. मैना सब विद्या पढ़ आई ।
पाप उदय कुष्टी संग व्याही ।
पुन्य उदय दुख गया बनी है कोटी भट पटनार ।

६. जैसी करनी वैसी भरनी ।
सखी बात यह हृदय धरनी ।
फल पाते हैं सभी शुभा शुभ कर्मों के अनुसार ॥

७. जीव करम का कर्ता जानो ।
आप ही इनका हर्ता मानो ।
इन कर्मों के फल का कोई और नहीं दातार ॥

१३७

चन्द्रावली का कमलश्री से कहना कि आपको दुख देने का कारण कुछ मैं भी हुई हूं क्योंकि मैंने ही आकर विवाह की वात चीत की थी ॥ (शैर)

१. सती हाय कैसा सितम हो गया।
बड़ा तुझको धनवे ने धोका दिया ॥
२. यह सम्बन्ध करने मैं ही आई थी।
संदेशा भी उसका मैं ही लाई थी।
३. मैं ही तेरे दुख की हूँ कारण सती ॥
कि गोया तेरे हक़ में दुश्मन वनी ॥
४. बिलाशक मैं तेरी गुनहगार हूं।
तेरे सामने मैं शरमसार हूं ॥

१३८

कमलश्री का जवाव ॥
(चाल हमीर—तीन ठुमरी) मेरे प्यारे पिया घर जाओ जी ॥

करम महा दुखदाई जी। तेरा दोष नहीं है। (टेक)
१. सुख में दुख दुख में सुख होवे।
अमृत विष हो जाई जी ॥ तेरा०
२. विन कारण सिया घरसे निकाली।
वन वन में दुख पाई जी ॥ तेरा०
३. मैना सती कुष्टी वर पायो।
कुछ नहीं पार वसाई जी ॥ तेरा०

४. दीना दुहाग सती अंजना को ।
पवन कुंवर कपिराई जी ॥ तेरा०
५. अपने करम जिया आप ही भोगे ।
किसको दोष लगाई जी ॥ तेरा०
६. तू बस बसियो महल पिया का ।
हम सब तज कर आई जी ॥ तेरा०

१३९

चन्द्रावली का कमलश्री से प्रश्न करना कि इस विरह में
तुम्हारे दिन कैसे कटेंगे ॥

हे सखी अभी तो आपकी उमर भी बाली है । भला इस विरह में तुम्हारे दिन कैसे कटेंगे ॥ (शेर)

विरह में काटना प्यारी दिनों का सख्त मुशकिल है ॥
बिताना उम्र का ग़म में नहीं आसान मंज़िल है ॥

१४०

कमलश्री का जवाब देना ॥
(चाल) माधो घनश्याम को मैं ढूंढन चली रे ॥

अपने चेतन का मैं ध्यान धरूंगी ।
ध्यान धरूंगी करम हरूंगी ॥ अपने० (टेक)
१. चाह विषय भोगों की प्यारी मनमें कभी न लाऊं ।
स्वारथ का संसार सखी चित्त क्यों अपना भरमाऊं ॥
मैं तो ममता की सारी पीर हरूंगी ॥

२. सच्चे देव गुरू शासन पर अपना निश्चय लाऊं ।
अर्थ सहित सातों तत्वों को समझ के मन समझाऊं ॥
मैं तो हृदय में सत्य शर्धान करूंगी ॥
३. किसके मात पिता सुत बालम किससे प्रीत बढ़ाऊं ।
हम न किसीके कोईना हमारा किस पर नेह लगाऊं ॥
मैं तो निज पर का भेद विज्ञान करूंगी ॥
४. घट अन्दर मिथ्यात अंधेरा ताका नाश कराऊं ।
करम करम फल द्वो चेतना छिनमें दूर भगाऊं ॥
मैं तो अपने में अपना ही ज्ञान करूंगी ॥
५. शुद्ध उपयोग जला दीपक निज आतम दर्शन पाऊं ।
ज्ञान चेतना जगेजब अन्दर अंतर लीन हो जाऊं ॥
मैं तो आतम के गुण गान करूंगी ॥
६. आतम अनुभव करूं आप में ज्ञान उपयोग लगाऊं ।
पर में निज उपयोग न जाने दूं यों यतन कराऊं ॥
मैं तो अपने में अपना ही ध्यान करूंगी ॥
७. सम्यक दर्शन ज्ञान चरण तीनों को एक बनाऊं ॥
सोहम सोहम जाप जपूं कर्मों का जोर हटाऊं ॥
मैं तो निज आनन्द रस पान करूंगी ॥

१४१

चन्द्रावली का पूछना कि अब मेरे लिये क्या आज्ञा है ॥

सती कमलश्री धन्य है आप का धर्म में ऐसा दृढ़

निश्चय है। अब मेरे लिये क्या आज्ञा है मैं आपकी सब प्रकार से सेवा करने को तय्यार हूं ॥ [शैर]

१. सखी हाजिर हूँ मैं सेवा तेरी करके दिखाऊंगी।
विपत में साथ दूंगी धर्म सखियों का निभाऊंगी ॥

२. नहीं परवाह मुझे धनके की चाहे सर कलम करदे।
तुझे तज कर मैं सेवा में सरूपा की न जाऊंगी ॥

१४२

कमलश्री का जवाब देना ॥

(चाल क़व्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे ॥

१. मै खुश हूँ हौंसला अपना दिखाले जिसका जी चाहे।
जो कुछ अर्मान बाकी हो निकाले जिसका जी चाहे ॥

२. तजा सब मोह महलों का सबर अब कर लिया मैंने।
मुझे कुछ भी नहीं परवा सताले जिसका जी चाहे ॥

३. सखी चन्द्रावली धन्य है विपत में साथ देती है।
रहूँगी साथ मैं भी आजमाले जिसका जी चाहे ॥

४. पती ने जो कहा मुझको गिला कुछ भी नहीं दिलमें।
अगर कुछ और कहना हो सुनाले जिसका जी चाहे ॥

५. बस अब भगवन के चर्णों की शरण लेती हूं मैं प्यारी।
न मन मेरा डिगेगा कुछ डिगाले जिसका जी चाहे ॥

१४३

सती कमलश्री का शरण लेना और स्तुति करना और परदा गिरना ॥

(चाल) लागी सीने में प्रेम कटारी, ज़ल्दी सूरत दिखादो प्यारी प्यारी ॥

स्वामी तू ही है जग हितकारी ।
तेरे चर्णों पे जाऊं वारी वारी ॥ टेक ॥

१. कौन आप बिन हे सुखकारी ।
बिगड़ी सुधारे हमारी ॥ स्वामी० ॥

२. तू दुखहारी पर उपकारी ।
सेवा करूंगी तिहारी ॥ स्वामी० ॥

३. सत्य दयामय वाणी तुम्हारी ।
है मैंने हृदय में धारी ॥ स्वामी० ॥

४. कर्मन बैरी भव बनमें घेरी ।
रखना जी लाज हमारी ॥ स्वामी० ॥

५. दुख सागर में नय्या हमारी ।
तू ही खिवय्या इस वारी ॥ स्वामी० ॥

६. स्वारथ की है दुनिया सारी ।
आई हूं शरण तिहारी ॥ स्वामी० ॥

७. आतम अनुभव सम्यक दर्शन ।
हो यही अरज हमारी ॥ स्वामी० ॥
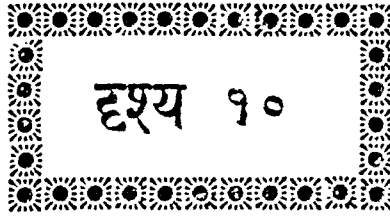
(कमलश्री के महल का पर्दा)

१४४

भविषदत्त का गुरुकुल से पढ़कर आना और खाली महल
देख कर हैरान होना ॥

हा आज यह क्या माजरा है तमाम महल सूना नज़र आता है। मैं हैरान हूँ दिल घबराता है। क्या सितम-क्या ग़जब क्या आफ़त क्या ग़जब ॥ (शेर)

१. महल था कि मातम सरा हो गया।
अभी क्या था इकदम में क्या हो गया ॥
२. आज क्यों ग़म की घटा दिल पे चढ़ी आती है।
दरोदीवार से रोने की सदा आती है ॥

१४५

भविषदत्त की फूफी का भविषदत्त को छाती से लगाना और रोते हुये
जवाब देना और उसको तसल्ली देना ॥

(चाल नाटक) दिल को संभालिये हो प्यारे पहरे खुदा ॥

धीरज को धारिये अय बेटा दिलमें ज़रा। (टेक)
मैं वारी जाऊं था। हृदय लगाऊं था।

टुक मन कोप निवारिये ॥ अय बेटा ॥
क्या धन वारे दीन बिचारे ।
करम जाल में हैं सारे ॥
इन कर्मों से कौन लड़ेगा ।
यह मन सोच विचारिये ॥ अय बेटा ॥

१४६

भविषदत्ता का जवाब ॥ (शैर)

हैं माता जी कैसी धीरज क्या मतलब !!! (शैर)
१, यह कैसे अश्क जारी हैं यह कैसी बेकरारी है ।
समझ में कुछ नहीं आता अजब हालत तुम्हारी है ॥
२. मैं गया गुरुकुल में और पीछे से यह क्या हो गया ।
है कहाँ माता मेरी यह जुलम कैसे हो गया ॥

१४७

चन्द्रावली बांदी और भविषत्ता का प्रश्नोत्तर ॥ (शैर)

चं०—पूछते क्या हमसे हो क्या हो गया ।
जो लिखा तक़दीर में था हो गया ॥
भ०—आख़िरिश क्योंकर हुआ किसने किया क्या हो गया ।
साफ़ बतलादो मुझे यह कैसा झगड़ा हो गया ॥
चं०—सेठ जी का नरम दिल इकदम ही पत्थर हो गया ।
आफ़ताब इक़बाल का मनहूस अख़्तर हो गया ॥

भ०—यह तो मैं समझा कि दिल है बाप का पत्थर हुआ।
यह भी बतलादो नतीजा क्या हुआ क्योंकर हुआ॥
चं०—आप की माता को है इकदम दिया घरसे निकाल।
वह गई रोती हुई पीहर को दिल में था मलाल॥

१४८

भविपदत्त का अफ़सोस करना और कोप करना॥

हा शोक! महा शोक!! जिस पुत्र के होते हुवे माता दुख पाए वह पुत्र नहीं केवल एक मिट्टी की तसवीर है दुनिया में बेइज्जत व बेतौक़ीर है॥ (शैर)

१. अगर उस वक्त मैं होता सितम ऐसा नहीं होता।
ज़मी आकाश हिल जाते जुलम ऐसा नहीं होता॥
२. भविपदत्त तेरे जीते जी हुआ अपमान माता का।
यह बेहतर था तू दुनिया में नहीं पैदा हुआ होता॥

१४९

भविपदत्त का विचार करना॥

मगर अब मैं क्या करूं सख्त लाचार हूं अजब हैरत में हूं निहायत बेज़ार हूं (शैर)

समझ में कुछ मेरे अब तक नहीं तदबीर आई है।
इधर देखूं कुंवां है और उधर देखूं तो खाई है॥

१५०

भविषदत्त का कोप करते हुये महल से निकल कर माता के पास चला जाना ॥
(चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. ग़ज़ब हो गया है सितम हो गया है ।
कि इक दम ही उलटा करम हो गया है ॥
२. निकाला पिता ने जो माता को घर से ।
क्या इतना पिता बेधरम हो गया है ॥
३. गुरुकुल में था मैं मुझे क्या खबर थी ।
कि माता पे ऐसा सितम हो गया है ॥
४. दिखाऊंगा बल मैं भी अपनी भुजा का ।
समझना ना हरगिज़ कि कम हो गया है ॥
५. मज़ा इस सितम का चखादूंगा इकदिन ।
न कहना मेरा दिल नरम हो गया है ॥
६. पिता गर क्षमा जा न माता से मांगें ।
समझना भविष भी अधम हो गया है ॥
७. दिखादूंगा इक दिन पिता जी के सर को ।
कि माता के चरणों में खम हो गया है ॥
८. न कहना कमल सुत न गर कर दिखादूं ।
वह जो दिलपे मेरे रक़म हो गया है ॥
९. मगर क्या है जल्दी कि कर सब्र दिल में ।
अभी क्या यह किस्सा खतम हो गया है ॥
१०. करूं पहिले माता की चल कर तसल्ली ।
कि आज उसपे नाहक जुलम हो गया है ॥

(चला जाना)

दृश्य ११
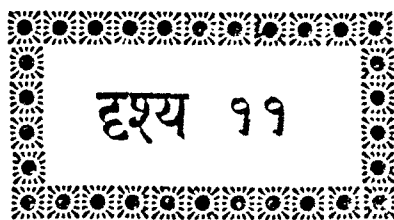
(लक्ष्मी देवी के महल का परदा)

१५१

कुमार भविषदत्त का अपने ननसाल में पहुंचना और अपनी नानी लक्ष्मी देवी को प्रणाम करना और लक्ष्मी देवी का भविषदत्त को अपनी छाती से लगाना और आशीर्वाद देना ॥

भ०—(चर्णों में प्रणाम करके) नानी जी आपके चर्णों में सविनय प्रणाम—

ल०—(छाती से लगा कर) आओ वेटा भविषदत्त चिरंजीव ॥ (शैर)

१. आ मेरे नयनों के तारे आ मेरे दिलके कंवल ।
है कमल डाली धरम की और तू उसका है फल ॥

२. गर तू है ननसाल का अपने चमकता माहताव ।
है विलाशक अपने कुलका भी तो रोशन आफ़ताव ॥

१५२

हरीवल का आना और भविषदत्त का अपने नाना को प्रणाम करना और हरीवल का आशीर्वाद देना और अपनी छाती से लगाना ॥

भ०—(चर्णों में प्रणाम करके) नाना जी आपके चर्णों में सविनय प्रणाम ।

ह०—(छाती से लगाकर) बेटा भविषदत्त चिरंजीव—(शैर)

१. है कमल रोशन सितारा और तू उसकी चमक।
गुल मेरे गुलशन का कमला और तू उसकी महक॥

२. हो तेरा बल रूप दूना चौगना इकबाल हो।
यश तेरा दुनिया में हो दुश्मन तेरा पामाल हो॥

१५३

भविषदत्त का अपनी माता कमलश्री के चर्णों में पड़ना और कहना कि दुहाग देने के वक्त मुझको क्यों न बुलाया॥

(चाल) मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे॥

मेरी माता न तूने बुलाया मुझे।
क्यों न यह सारा भेद बताया मुझे॥ (टेक)

१. थी भला किसकी यह ताकत और थी किसकी मजाल।
देख लेता मैं पिता को किस तरह देता निकाल॥
होता पहिले जो क़िस्सा सुनाया मुझे॥

२. वक्त पर आता अगर और देख लेता आंख से।
तो दिखाता बल भुजा अपनी को मैं माता तुझे॥
तूने मौक़ा नहीं वह दिखाया मुझे॥

३. आपके अपमान से है दिलमें जोश आया हुआ।
दीजिये आज्ञा पिता से जाके करदूं फैसला॥
तेरी विपता ने माता सताया मुझे॥

१५४

कमलश्री का भविष्यदत्त को शांत करना और कहना कि वह सब कर्मों की गती है जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिल जाता है। धनदेव को उसके विषय भोगों और ज़ुल्म करने का नतीजा आप मिल जायगा तुम अपने पिता जी से इतने बदज़न मत बनो ' और न उनकी अविनय करो बल्कि शांत होकर अपने नाना जी के पास रहो ॥

(चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. पिता से मुनासिब लड़ाई नहीं है।
मेरे लाल इसमें भलाई नहीं है ॥
२. जो होना था वह होगया बैठ जाओ ।
इसी में भला है बुराई नहीं है ॥
३. बुराई जो कुछ है वह है उनके सरपे।
हमारी तरफ़ से बुराई नहीं है ॥
४. करें किससे हम जाके शिकवा शिकायत।
किसी से भी अब तो रसाई नहीं है ॥
५. रहो घर में नाना के संतोष करके।
सिवा इसके ग़म से रिहाई नहीं है ॥
६. वह आयेंगे खुदही पशेमान होकर।
सज़ा कब सितमगर ने पाई नहीं है ॥

१५५

भविष्यदत्त का शांत होना और नाना की तसल्ली करना ॥

(चाल क़व्वाली) है बहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़ ॥

१. मेरा दिल गरचे बड़ा रंजूर है।

हुकम लेकिन आपका मंजूर है ।

२. खैर अब संतोष कर लेता हूं मैं ।
गम से गो दिल मेरा चकना चूर है ॥

३. पर दिखादूंगा कभी तुमसे क्षमा ।
मांगने को खुद पिता मजबूर है ॥

४. तेरे चर्णों में झुकाए आके सर ।
दिन नहीं कुछ वह भी माता दूर है ॥

५. जब भविष पा आपका फ़र्ज़ंद है ।
आपका दिल ग़म से क्यों मामूर है ॥

६. था इरादा और ही मेरा मगर ।
आपके आगे भविष मजबूर है ॥

७. मां की आज्ञा मानना सबका है धर्म ।
नीति शासन में यही मज़कूर है ॥
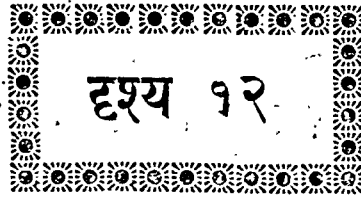
दृश्य १२

(बाजार का परदा)

१५६

नोट :—

(१) कमलश्री और भविषदत्त और चन्द्रावली अपने पीहर में रहने लगे ।

(२) धनदेव ने धनदत्त सेठ की लड़की सरूपा से शादी करली और खुशी से रहने लगा ।

(३) सरूपा के एक लड़का बंधुदत्त पैदा हुआ जो बड़ा शरीर था और शहर वाले अकसर उससे नाराज़ रहते थे ।

१५७

वधुदत्त का बाजार में खड़े हुये नजर आना। चम्पा व चंबेली दो औरतों का आना और बातचीत करना॥

चंपा०—अजी जरा रास्ता छोड़िये।

वधु०—क्यों तुम्हारे बाबा की सड़क है क्या। नहीं छोड़ते।

१५८

वधुदत्त और चम्पा व चंबेली की सख्त गुफ्तगू॥
(चाल चूरण वालों की चलत)

चंबे०—मूरख भंड वचन मतवाले, यूंही ज़ोर वदन में तोले
गलियों रुलता फिरता डोले, रस्ता छोड़ परेको होले
कैसा मूरख लुच्चा गुण्डा, लेकर करमें विरि डंडा
खाकर मुफ्ती हलवा मंडा, बनरहा जांभा जीका संडा

चंपा०—लिखने पढ़ने की नहीं सार, जाने एक नहीं दो चार
कैसा बनज और व्योपार, कोरा मूरख निपट गंवार
इतना बड़ा नैशका बैल, फिरता गलियों में अलवेल
वेचन जाने नहीं गुड़ तेल, यूंही बन रहा बाँका छैल

वधु०—धनवे सेठ जो साहूकार, उसका मैं हूं राजकुमार
नामी वधुदत्त सरदार, मूंह से बोलो वचन संभार

चंबे०—जो हैं सेठ पुत्र कहाते, कोठी छोड़ कहीं नहीं जाते
तुमसे फिरते धक्के खाते, निशदिन जूती को चटकाते
देखो भविषदत्त गुणवान, चौदह विद्या का निधान
बन रहा लाखों में प्रधान, जिसका राजा करते मान

चंपा० इक यह सरूपा का कपूत. बिलकुल बारा मुट्ठी ऊत
जाने कुछ भी नहीं करतूत, करता फिरता सूत कसूत
जो हैं सच्चे सेठ कंवार, करते लाखों का व्योपार
जाकर सात समंदर पार, जिनको जाने सब संसार

बधु० घरमें लाखों का सामान, करते काम मुनीम दीवान
हमको कौन ग़रज नादान, बैठें जो करके दूकान

चंबे० हांहां ठीक कहीं निखट्टू, अनपढ़ मूरख जाहिलभुट्टू
परके धनपर होरहा लट्टू, फिरता बिनलगामका टट्टू
जबसे तुझसे रह गए शेश, तब से उजड़ा भारत देश
करते फिरें डगर परवेश, जानें नहीं विद्या का लेश

१५६

चम्पा का जवाब ।

चंपा० (दोहा) पाय पिता की लक्ष्मी मनमें नहीं समात ।
फिरे निखट्टू घूमता दिवस गिने नहीं रात ॥
गुरू पिता की लक्ष्मी होती मात समान ।
जो भोगे घर बैठ कर बांधे पाप महान ॥
कला बहत्तर पुरुष की जिनमें दो सरदार ।
एक जीव का जीवका दूजे जीव उद्धार ॥

(चलत)

लिखना पढ़ना जाकर सीख, धन कमाना जाकर सीख ।
बनज बनाना जाकर सीख, दीपान्तर में जाना सीख ॥

चल हट जा कर अपना काम, खोता फिरे बापका नाम ।
छोड़ो रस्ता शारे आम, हमको जाने दे बदनाम ॥

(चंबेली व चम्पा का वधुदत्त को हटा कर चला जाना)

१६०

वधुदत्त का अफ़सोस करना और सफर का इरादा करना ॥ (वार्तालाप)

अफ़सोस मैंने अब तक एक पैसा नहीं कमाया सदा बाप का धन खाया और दोस्तों में लुटाया इन औरतों ने जो मुझे नसीहत की है अगरचे वह सख्त है मगर दरअसल ठीक और दुरुस्त है अब मैं अपने दिल में इरादा करता हूं कि परदेश को जाऊं और अपने हाथों से धन कमा कर लाऊं ॥ (शैर)

है बनज ब्योपार करना आदमी का मुख करम ।
और वैश्यों के लिये है खास कर वाजिब धरम ॥

(चला जाना)
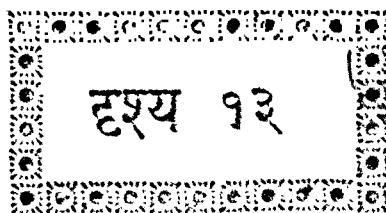
(वधुदत्त के मकान का पर्दा)

१६१

वधुदत्त का बैठे हुये नज़र आना और मदिरदत्त का आना और दोनों का खान पान करना ॥

बधु०-[उठ कर प्रणाम करके] आइये भाई साहिब जय जिनेन्द्र ।

भवि०-जय जिनेन्द्र भाई प्रसन्न हो ॥

बधु०-आपकी कृपा से सब आनन्द हैं आज आपके बहुत दिनों में दर्शन हुवे ॥

भवि०-हाँ भाई दूर का अन्तर है विना प्रयोजन कैसे मिलना हो सकता है ॥

बधु०-फ़रमाइये-आज आप का कैसे शुभागमन हुआ ॥

भवि०-भाई मैंने सुना है कि आप का परदेश जाने का विचार है क्या यह बात सच है ?"

बधु०-हां भाई व्योपार करने के लिये मेरा परदेश जाने का बिचार है और पिताजी ने भी स्वीकार कर लिया है ॥

भवि०-फिर किस तरफ़ और किस देश में जाने का बिचार है ।

बधु०-भाई मेरा तो यह विचार है कि अनेक द्वीप द्वीपांतर, नगर, पट्टन और सागर में खूब देशाटन करूं ।

भवि०-आपके ऐसे महान शंकल्प करने का आखिर क्या कारण हुआ ?

१६२

वधुदत्त का जवाब ॥

एक दिन मैं बाजार में खड़ा हुआ था एक तरफ से

दो स्त्रियाँ आईं और उन्होंने मुझे यह ताना दिया ॥ (दोहा)

गुरु पिता की लक्ष्मी होती मात समान ।
जो भोगे घर बैठ कर बांधे पाप महान ॥

यह बात सुनकर मेरे चित्त पर बड़ी चोट लगी--बस मैंने उसी दम शंकल्प कर लिया कि परदेश में जाकर अपने हाथों से द्रव्य कमा कर लाऊं ॥

१६३

भविषदत्त का जवाब ॥

बहुत ठीक--आपका बड़ा सुन्दर विचार है ॥ (शेर)

१. फ़र्ज़ है इनसान का करना जहाँ में कोई काम ।
ख़ास कर है वैश्य का तो काम ही से नेक नाम ॥
२. वह अधम है जो पड़ा रहता है घर में आलसी ।
ज़िन्दगी बेकार और निष्फल है उसकी लाकलाम ॥
३. हो मुबारक आपको भाई सफ़र परदेश का ।
हो सफलता इसमें तुमको है तुम्हारा नेक काम ॥

१६४

बधुदत्त और भविषदत्त का फिर वार्तालाप ॥

बधु०--क्या आपका भी कुछ इरादा है ।
भवि०--हां भाई--है तो कुछ मेरा भी विचार ॥
बधु०--अहो भाग्य-आप भी ज़रूर चलें ॥ (शेर)

एक से बेहतर हैं दो मिल कर करेंगे कारोबार।
ऐसा मौक़ा मिल नहीं सकता है फिर करलो बिचार॥

भवि०-(खड़ा होकर) अच्छा तो मैं जाकर माता जी की आज्ञा लेता हूं॥

बधु०-(खड़ा होकर और प्रणाम करके) बहुत अच्छा जय जिनेन्द्र॥

भवि०-जय जिनेन्द्र॥

(चला जाना)
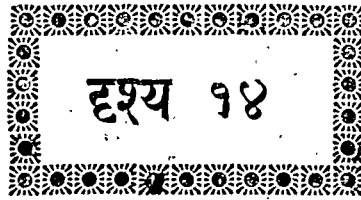
(सरूपा के महल का परदा)

१६५

वधुदत्त का अपने माता के पास जाना और बातचीत करना॥

बधु०-माता जी प्रणाम॥

सरू०-चिरंजीव रहो--कहो बेटा क्या विचार रहा॥

बधु०-बस माता जी अब तो परदेश जाने का विचार पक्का हो गया। पिता जी ने भी नगर में सब साहूकारों को इस बात की सूचना दे दी है। भाई भविषदत्त भी संग चलने को तय्यार है॥

सरू०-अच्छा बेटा तेरा काम सुफल हो-क्या भविपद्त्त अवश्य जायगा ?

वधु०-हां माता जी अवश्य जायगा अभी मुझसे बात चीत करके गया है ॥

सरू०-बेटा क्या मैं निश्चय करलूं कि तू दुनिया में मेरे लिये पूरा आराम का सामान बना देगा ॥

वधु०-क्यों नहीं क्या आपको इसमें कुछ शंका है । क्या मुझ में किसी काम के करने की शक्ति नहीं ॥

सरू०-नहीं नहीं यह कौन कहता है कि तुझ में शक्ति नहीं निःसन्देह तू हर एक काम कर सकता है । मगर करे जब ना ॥

वधु०-क्या मैंने कभी आपकी आज्ञा नहीं मानी ॥ (शैर)
तेरी आज्ञा बजा लाने को मैं हर वक्त हाज़िर हूं ।
अगर दुख हो कोई कहदो अभी दूर उसको मैं करदूं ॥

१६६

सरूपा का जवाब ॥

नहीं बेटा तेरे होते मुझे दुख क्या हो सकता है ॥ (शैर)

१. मगर मुद्दत से इक कांटा मेरे दिल में खटकता है ।
उसी के दर्द से सीने में दम हरदम अटकता है ॥

२. निकाला जायगा जब तक न वह कांटा मेरे दिलसे ।
क़दम सुखका मुझे रखना मिलेगा जगमें मुश्किलसे ॥

१६७

वधुदत्त और सरूपा की वार्तालाप ॥

बधु०—कांटा पलकों से निकालने को तय्यार हूँ ॥

सरू०--नहीं नहीं वह कांटा तलवार की नोक से निकल सकता है ॥

बधु०--क्या किसी का खून ?

सरू०--हां हां खून-खून भी उसका जो तेरा दाहना बाजू है बस वही तेरा दाहना बाजू सख्त कांटा बनकर मुद्दत से मेरे सीने में खटक रहा है ॥

बधु०--क्या मतलब मैं सख्त हैरान हूँ मेरी समझ में अभी तक कुछ नहीं आया ॥

सरू०—अरे मूरख तेरी मावसी कमलश्री का पुत्र भविषदत्त जब तक न मारा जायगा तब तक मैं क्या तू भी आराम से ज़िंदगी बसर न कर सकेगा अब समझा ॥

बधु०— हैं माता यह क्या-भाई का खून कभी अच्छा हो सकता है ? (शैर)

उठाऊं कैसे सरपे खून नाहक़ अपने भाई का ।
लगाऊं किस तरह मैं अपने मूंहपे दाग़ स्हाही का ॥

१६८

सरूपा का जवाब ॥

तू अभी नादान है—तू दुनिया और घरबार की बातों

को क्या जाने । देख भविपदत्त बड़ा गुणवान है सब साहू-
कार बल्कि राजा तक उसका मान करते हैं । उमर में भी
वह तुमसे बड़ा है बस तमाम घरबार का वही मालिक है ।
उसके जीते जी तेरा कोई भी हक़ नहीं हो सकता ॥ (शेर)

१. उसी के क़त्ल से तुझको मिलेगा मान दुनिया में ।
नहीं तो हम उठायेंगे बड़ा नुक्सान दुनिया में ॥

२. भविपदत्त गर रहा ज़िन्दा तो समझो एक दिन हमको ।
पड़ेगा हाथ धोना राज से नादान दुनि॰॥ में ॥

१६९

बंधुदत्त का जवाब ॥

अच्छा माता तेरी मरज़ी । अगर ऐसी ही मंशा है तो
मैं पहली ही मंज़िलमें उसका काम तमाम करदूंगा । और
तेरे दिल की मुराद पूरी कर दूंगा ॥ (शेर)

जुल्म की बिजली मैं चमका दूंगा जा दरिया में ।
और मक्कारी की छादूंगा घटा दरिया में ॥
अपना फ़ितरत का चलाऊंगा वह चक्कर उल्टा ॥
मां से मिलने नहीं पाएगा वह आकर उल्टा ॥

१७०

सरूपा का जवाब ॥

शाबाश बेटा ॥ (शेर)

१. मुझे अब हो गया निश्चय तू उसका खून बहाएगा।
मेरी आशा की कलियों को जरूर इकदिन खिलाएगा॥
२. असर दिखलायेंगी चालाकियां बेबाकियां तेरी।
तेरा जादू चलेगा वार यह ख़ाली न जाएगा॥
३. मुबारक हो सफ़र तुझको तेरी उम्मीद पूरी हो।
भरोसा है मुझे सब काम पूरा करके आएगा॥

(बधुदत्त का प्रणाम करके चला जाना)
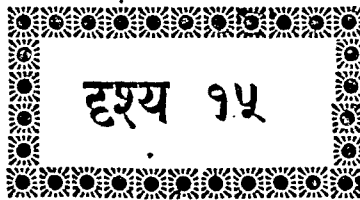
दृश्य १५

(कमलश्री के महल का परदा)

१७१

भविषदत्त का अपनी माता के पास जाना और बातचीत करना॥

माता जी प्रणाम॥ (शैर)

सुनी आज माता यह मैंने है बात।
है परदेश जाता बधुदत्त भ्रात॥
महाजन भी तय्यार हैं शहर के।
परोहन भरे हैं ज़रोमाल से॥
करूंगा सफ़र मैं भी भाई के लार।
सो आज्ञा मुझे दीजे करके विचार॥

१७२

कमलश्री का जवाब ॥

चाल इन्दर सभा—अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

१. कभी इस तरह का न कीजे ख्याल ।
मेरे घरके दीपक मेरे नौ निहाल ॥
२. वधुदत्त मक्कार अय्यार है ।
कुबुद्धी कुटिल दुष्ट बदकार है ॥
३. बदों से न होगा कभी नेक काम ।
न लेना सरूपा वधदत्त का नाम ॥
४. तेरा संग में जाना अच्छा नहीं ।
यह दिलमें ख्याल आना अच्छा नहीं ॥
५. अगर संग में उसके तू जायगा ।
समंदर में तुझको गिरा आयगा ॥

१७३

भविषदत्त का जवाब ॥

माता यह भविषदत्त तेरी पवित्र कूख से पैदा हुआ है किसकी ताकत है जो इसको नीचा दिखा सके किसकी मजाल है जो मेरी तरफ आंख उठा सके ॥ (शेर)

१. तेरे सम्यक्त में क्यों आज कमजोरी सी आई है ।
जो शंका करके तूने बात यह मुझको सुनाई है ॥

२. नहीं खतरा मुझे जब तक मेरा इक़बाल यावर है।
नहीं मालूम क्यों डरती है क्यों बनती तु कायर है ॥

१७४

कमलश्री का जवाब (वार्तालाप व शैर)

[१] बेटा माना तेरा इकबाल चढ़ा हुआ है मगर आज कल मेरा सितारा गर्दिश में आ रहा है क्या तू नहीं जानता तेरे पिता ने बिन कारण मुझे घरसे निकाला हम दोनों को मुसिबत में डाला ॥ [शैर]
मैं पहलेही बड़ी किसमत की मारी और दुखारी हूं।
दुहागन बन रही हूँ और मैं करमों से हारी हूँ ॥
[२] वधुदत्त के साथ तेरे परदेश जाने की बात सुन कर मन घबराता है कलेजा मूंह को आता है वदन थर्राता है दिल पास पास हुआ जाता है ॥ [शैर]

१. पीता है छाछ दूध जला फूंक फूंक कर।
डरता है काटा साँप का रस्सी से सर बसर ॥
२. इस वास्ते मुझे नहीं होता है हौंसला।
आज्ञा सफर की तुझको जो देदूं मैं अब जरा ॥
[३] आह अगर वधुदत्त ने रास्ते में तुझको धोका दिया और उसका वार चल गया तो बस मेरे लिये जमीन और आसमान के दोनों पाट मिल जाएंगे सख्त मसीबतों के दरवाजे खुल जाएंगे दिन से

रात हो जायगी मेरी तमाम उम्मीदें खाक में मिल जाएंगी ॥ (शैर)

१. पहलेही मुझको पती ने रखे हैं यह दिन दिखा ।
क्या रहे मेरा सहारा फिर जो तू भी चल दिया ॥

२. देख दुखियारी हूँ मैं मुझको नऔर दुखिया बना ।
मानले कहना मेरा और इस सफर से बाज आ ॥

१७५

भविषदत्त का जवाब ॥

[१] हे माता पिता की सख्तियों का कुछ भी ख्याल न कर । घर से निकाले जाने का हरगिज़ मलाल न कर ॥ [शैर]

भविष आज्ञा तुम्हारी जब बजा लाने को हाज़िर है ।
किसी का भी नहीं डर है तुम्हें यह रंज क्यों फिर है ॥

[२] तू मुझे मामूली बच्चा न समझ—मैं कमलश्री का वह शेर हूं कि अगर तेरे दिल की आजू की आंख का ज़रा सा इशारा पाकर मेरे दिल की बिजली एक बार कड़क जाय तो ॥ [शैर]

१. ज़मीं फटजाय और यह आसमाँ चक्कर में आ जाए ।
तेरा दुशमन जो हो डर कर ज़मीं अन्दर समा जाए ॥

२. पिता आकर झुके आगे तेरे यह बात ही क्या है ।
कि तज कर स्वर्ग को इन्दर तेरे चर्णों में आ जाए ॥

[३] माता दिल को तसल्ली दो। प्रसन्न हो कर मुझे परदेश जाने की आज्ञा सुना दो दिलमें निश्चय रक्खो—भविषदत्त किसी से डरने वाला नहीं। आसानी से किसी से मरने वाला नहीं॥ [शैर]

जरा रख हौंसला दिल में सफर से जल्द आऊंगा।
तुम्हारी आजू पूरी मैं सब करके दिखाऊंगा॥

१७६

कमलश्री का जवाव॥

[१] अच्छा कंवर मैं खुशीसे आज्ञा देती हूं मगर देखना रास्ते में होशियारी से रहना और चतुराई से काम करना।

[२] वधदत्त यद्यपि कपटी है, परन्तु तेरा छोटा भाई है उसकी बातों पे न जाना अगर कोई वदी भी करे तो उसको ख्याल में न लाना। अर्थात् उसको किसी प्रकार से दुख न होने देना॥ [दोहा]

१. सुत दारा सब मिलत हैं मिले कुटम परिवार।
पर भाई संसार में मिले न बारम्बार॥

२. भाई से प्यारा नहीं कोई जगत मंझार।
राज पोट धन संपदा तन मन दीजे वार॥

३. खड़े रहें माता पिता पुरजन सुत दस बीस।
इक अपने भाई बिना कौन कटावे शीस॥

१७७

भविषदत्त का जवाब ॥

माता ऐसा ही होगा ॥ मैं बधुदत्त को दिलोजान से रक्खूंगा चाहे वह हज़ार बुराई करे मैं हरगिज़ ख़याल में न लाऊंगा ॥

१७८

कमलश्री का जवाब ॥

बेटा परदेश में धर्म को न भूल जाना तन मन धनसे उसको पालन करते रहना ॥ (दोहा)
धर्म करत संसार सुख धर्म करत निर्वाण।
धर्म शील नहीं छोड़िये जब तक घट में प्राण ॥ (शेर)
बराबर उमर की छोटी बड़ी पर स्त्री सारी।
समझना सबको ऐसा जैसा तू मुझको समझता है।

१७९

भविषदत्त का जवाब ॥

माता धर्म मेरा प्राण है मैं इसे हरगिज़ न भूलूंगा।
(शेर)
१. जान अगर जाए तो जाए धर्म जा सकता नहीं।
और भविषके दिलमें हरगिज़ पाप आ सकता नहीं ॥
२. झूट चोरी दूत मद्य मांस सबका त्याग है।
ध्यान पर नारी का मेरे दिल में आ सकता नहीं ॥

१८०

कमलश्री और भविषदत्ता का फिर बात चीत करना और भविषदत्त का रवाना होना ॥

कम०--(मस्तक पर तिलक करके) धन्य हो कंवर तेरे पवित्र हृदय को ॥ (शैर)

१. कंवर जाओ मैं अपने दिलमें बस अब धीर धरती हूं।
सफ़र तुमको मुबारक हो यही आशा मैं करती हूँ ॥

२. तुझे सोंपा धरम को बस करे रक्षा धरम तेरी।
रहो तुम चैन से बेटा न करना फ़िक्र कुछ मेरी ॥

भवि०--(चर्णों में सर झुकाकर) माता जी आपके पवित्र चर्णों में प्रणाम है ॥

कम०--चिरंजीव बेटा ॥

(भविषदत्त का रवाना होना)
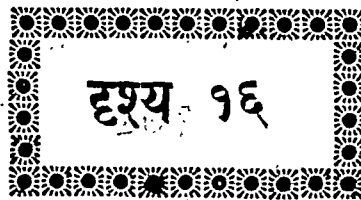
(जहाज़ का परदा)

१८१

सब महाजनों का आना और बंधुदत्त का आना, भविषदत्त का आना, सेठ धनवे का आना, दोनों लड़कों का पिता को प्रणाम करना, सेठ जी का दोनों लड़कों और महाजनों को उपदेश करना और सबका जहाज़ पर सवार होकर रतनद्वीप को रवाना होना ॥

(चाल क़वाली) कौन कहता है कि मैं तेरे ख़रीदारों में हूं ॥

१. मिल के रहना प्यार से तुम दोनों भाई देखना ।
भूल कर हरगिज न करना तुम जुदाई देखना ॥

२. काम वह करना तुम्हारा नाम हो परदेश में ।
वह नहीं करना कि हो जग में हंसाई देखना ॥

३. चोर पाखंडी जुवारी दुष्ट और पापी गंवार ।
भूल कर करना न इनसे आशनाई देखना ॥

४. वेश्वा परनार दासी से अलग रहना सदा ।
शील संयम में न हो पैदा बुराई देखना ॥

५. अय वनिक लोगो सुनों दिलमें यही रखना ख़याल ।
आपके परधान हैं यह दोनों भाई देखना ॥

६. सबके सब आपस में मिल व्योपार करना ध्यान से ।
दिल में रखना प्रेम प्रीति एकताई देखना ॥

७. बनज वह करना कि ज़िसमें फ़ायदा आए नज़र ।
लेन में और देन में रखना सफ़ाई देखना ॥

८. शास्त्र पूजा और सामायक सदा करना ज़रूर ।
धर्म ही है जीव का हरदम सहाई देखना ॥

(सबका धर्म की जय बोलना और जहाजों पर सवार होना
और जहाजों का रवाना होना)

दृश्य १७
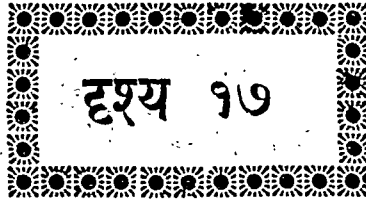
(मैनागिरि पहाड़ का परदा)

१८२

नोट :—

जहाजों का रास्ते में मैनागिर परवत पर पहुंचना। जहाजों से सबका उतर कर परवत की सैर करना। भविषदत्त का फूल तोड़ने जाना। वधुदत्त के दिल में वदी आना और जहाजों को रवाना करना और भविषदत्त को अकेला छोड़ना।

१८३

भविषदत्त का वापिस आना और जहाजों को न देख अफ़सोस
करना और कोप करना—(वार्तालाप व शैर)

क्या भाइयों में मुहब्बत और वफादारी।
क्या यारों में मुरव्वत और यारी॥

आज सब एक दम दुनिया से जाती रही—क्या शरारत मक्र—दग़ा—धोका—फ़ रेब—रिया—यकायक तमाम रूये ज़मीन पर छा गई—क्या दया, व धर्म का ज़माना पलट गया-रहम व इनसाफ़ का तख़्ता उलट गया—(शैर)

१. आसमां चक्कर में आ इक दम से तू फट जा ज़मीं।
कांप उठ पर्वत रहा अब धर्म दुनिया में नहीं॥
२. अय सितारों गिर पड़ो एक दम ज़मीं पर आन कर।

चल ग्र शमशो क़मर—ता कांप उठे सारी ज़मीं ॥

३. ग्रय फ़रिश्तों देवताग्रों इन्तजारी किस लिये ।
सारी दुनिया को करो ज़ेरो जवर इक दम यहीं ॥

४. ग्राग पानी ग्रौर हवा मिट्टी जुदा हो जाग्रो सब ।
फ़ायदा दुनिया से क्या जव धर्म दुनिया में नहीं ॥

१८४

भविपद्त्त का वधुदत्ता की शिकायत करना ॥

ग्रय वदकार वधुदत्त वादे शिकन—नापाक ख़ाक के पुतले किस मूंह से वफ़ादारी का इक़रार किया था—किस हौंसले पर भाई को ग्रपने साथ लिया था। तूने सख़्त धोका दिया हिन्दू जाती को वदनाम किया—वैश्य कुल को कलंकित वनाया जैन धर्म पर धव्वा लगाया ॥ [शेर]

१. नाग के मूंह में ज़हर था मुझे मालूम न था ।
संग चकमक में शरर था मुझे मालूम न था ॥

२. भाई होता है वफ़ादार सुना दुनिया में ।
भाई के दिलमें भी शर था मुझे मालूम न था ॥

१८५

भविपद्त्त का वधुदत्त को बुरा भला कहना ॥

ग्रच्छा दगावाज भाई जा—मगर याद रख जैसा तूने मुझको सुनसान वन में हैरान वनाया है ग्रौर मेरी उम्मीदों

को खाक में मिलाया है। उसी तरह तेरी उम्मीदों पर भी पानी फिरेगा—तेरे इकबाल का जहाज पापों के भंवर में घिरेगा ॥ [शैर]

१. किश्तिये उम्मीद तेरी ग़र्क होगी एक दिन।
ना उम्मीदी के समंदर में सरासर देखना ॥
२. पाप की लहरें मिलेंगी तेरे बहरे रंज में।
रोयेंगे तुझको तेरे मां बाप घर पर देखना ॥
३. तेरी पथराई हुई आंखें दिखायेंगी तुझे।
बस वफ़ा का मेरी हसरत नाक मंजर देखना ॥
४. यह बदी दिखलायगी नुकसां के फाटक पे तुझे।
वैलकम का बेगुमां झंडा बिरादर देखना ॥

१८६

भविषदत्त का कुछ देर दिल में सोचकर खुद पशेमान होना ॥

अब ऐसे शिकवा शिकायत से क्या फ़ायदा—बहतर है गुस्से को दूर करूं—दिलको शान्त करूं—जो कुछ होता है अपने ही कर्मों का नतीजा है। किसी को दोष देना बेजा है।

१८७

भविषदत्त का फिर अफसोस करना और मूर्छित होना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. है खता मेरी दिला मैं ही खतावारों में हूं।

दोष किसको दीजिये मैं ही गुनहगारों में हूँ ॥

२. है बड़ा अफ़सोस जो माना नहीं मां का कहा ।

अपनी ज़िद के कारणे मैं आज लाचारों में हूँ ॥

३. हा भविषदत्त क्यों गया था तोड़ने इस वन के फूल ।

सख्त नादानी करी मैं खुद शरमसारों में हूँ ॥

४. क्या समझ कर आया था तू संग में बदकार के ।

यूंही कहता था कि मैं दुनिया के हुशियारों में हूँ ॥

५. दोस्त दुश्मन इस जगह कोई नज़र आता नहीं ।

क्या करूं किससे कहूं मैं सख्त नाचारों में हूं ॥

६. अब ज़मी फटजा कि दुख मुझसे सहा जाता नहीं ।

टूट कर गिरजा फ़लक मैं आज दुखियारों में हूँ ॥

(मूर्छा खाकर गिरना)

१८८

भविषदत्त का मूर्छा से उठकर माता को याद करना (वार्तालाप)

हा माता—अब न तू मेरी सूरत देख सकती है—न मैं तेरी सेवा कर सकता हूँ—न तू मेरा रोना सुन सकती है—न मैं तेरी धीर बंधा सकता हूं--बस अब उधर तुझको अपने सीने पर पत्थर धरना है-इधर मुझको इन पहाड़ के पत्थरों से सर टकराकर मरना है ॥

१८६

भविपदत्त का विलाप करना ॥

(चाल भैरवीं) हाय मैं अनाथ नाथ किससे जा कहूं ॥

हाय क्या हुआ जुलम ग़ज़ब सितम हुआ ॥ (टेक)

१. को सुने गिरियोज़ारी—लखे बेक़रारी।
ज़रा मेरी आके यहां ॥
किया मुझे यूं बेनिशां।
नहीं पाएगा कोई पता ॥ हाय ॥

२. हाय मां मेरी प्यारी यह कर्मों की मारी।
सुनेगी जो मेरी व्यथा।
किया बधू न तूने ध्यान ॥
वह मर जायगी बेगुमां ॥ हाय ॥

३. नहीं मरने का ग़म मुझे अपना ज़रा।
मुझे ग़म है कि अब मेरी मां ॥
सितम गरा ओ बदगुमां।
वह किसपे टिकायेगी जां ॥ हाय ॥

४. मैं आया था कहकर के माता से !
पूरा करूंगा मैं तेरा कहा ॥
हुआ असत्य वचन मेरा।
यहां बेमौत आकर मरा ॥ हाय ॥

१९०

भविपदत्त का कर्मों की शिकायत करना ॥ (वार्तालाप)

अय कर्म तू बड़ा पापी ज़ालिम है तुझको किसी भी दुखिया बेकस पे रहम नहीं आता ॥

(गाना चाल —घरसे यां कौन खुदा के लिये लाया मुझको)

१. तू ने माता को मेरी घर से निकाला ज़ालिम ।
पत्थरों में कहां लाके मुझे डाला ज़ालिम ॥
२. राज और पाट ी सब तूने छुड़ाया मेरा ।
हाय दोनों को मुसीबत में फंसाया ज़ालिम ॥
३. कौन अरमान रहा था तेरे दिल में बाक़ी ।
कौन से पाप का बदला यह निकाला ज़ालिम ॥
४. ख़ैर जो कुछ कि हुआ अच्छा हुआ लेकिन अब ।
मेरी माता को इकबार दिखाला ज़ालिम ॥

१९१

भवपदत्त की कर्मों से फिर शिकायत ॥ (वार्तालाप व शेर)

ओ बेरहम सितमगर कर्म तूने हमारे पिता के दिल को हमारी तरफ़ से हटाया-हमको ज़लील और बेतोक़ीर बनाया क्या यह काफ़ी सज़ा न थी जो तूने भाई को भी ऐसा सख्त दुशमन बनाया ॥ (शेर)

१. चल दिया बन में जो भाई को अकेला छोड़कर ।

बात तक पूछी नहीं देखा नहीं मूंह मोड़ कर ॥
२. मेरा बिजली की तरह सीने में दिल बेचैन है।
देखले कम्बख़्त तू सीने के परदे तोड़कर ॥
३. हाय पापी कुछ नहीं तू ने किया दिल में ख़याल।
मां मेरी मर जायगी दीवार से सर फोड़कर ॥

(गुफ़ा का परदा)

१९२
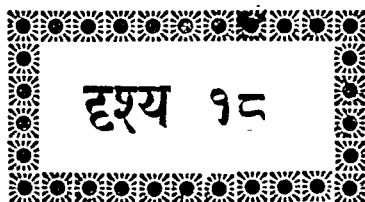
भविषदत्त को फिरते फिरते एक गुफ़ा नज़र आना और विचार करना और उसकी तरफ़ जाना ॥ (वार्तालाप व शैर)

यह सामने गुफ़ा नज़र आ रही है भविषदत्त चल उधर चल शायद कुछ बहतरी की सूरत निकले कहीं ठिकाने पर पहुँचने का पता चले ॥

१९३

भविषदत्त का गुफ़ा के करीब आकर सोचना और पीछे हटना ॥

हां यह कैसी भयानक गुफा है। अजगर की तरह अपना मूंह फाड़ा हुआ है। संभव है यह किसी तरफ़

निकल जाने का रास्ता है। मगर इसमें क़दम रखना गोया मौत के मूंह में जाना है ॥ (शैर)

१. शायद इसमें शेर चीता साँप बिच्छू न हो।
इसमें रखते ही क़दम जो मौत का लुक़मा बनूं ॥
२. दिल मेरा घबरा रहा है पीछे हटता है क़दम।
इसके अंदर अब मैं जाऊं या न जाऊं क्या करूं ॥

(पीछे हटना)

१६४

भविपदत्त का गुफ़ा में जाने की हिम्मत करना (वार्तालाप व शैर)

अय भविपदत्त परम धीर कमलश्री के बलवीर क्यों कायरता दिखाता है--किस लिये सम्यक्त और वैश्य कुलके लाज लगाता है जिनेन्द्र भगवान का ध्यान लगा-जिनवानी पे निश्चय ला --(शैर)

१. फ़ायदा क्या इस परेशानी व हैरानी में है।
पेश आनी है वही जो कुछ कि पेशानी में है ॥
२. कर भरोसा तू भविप अपनी भुजाओं पर ज़रा।
बस किसी भी बात का खौफो खतर दिलमें न ला ॥
३. बांध हिम्मत की कमर जो राज़ है खुल जायगा।
ख़ार भी होगा तो वह हिम्मत से बन गुल जायगा ॥
४. ज़रा कर हौंसला तू खौफ को दिल से हटा करके।
न डर इतना गुफ़ा में चल क़दम हिम्मत बढ़ा करके ॥

१६५

भविषदत्त का हिम्मत करके गुफ़ा में प्रवेश करना और परदा गिरना ॥

अय भविषदत्त इस गुफ़ा के अंधेरे से क्यों डरता है क्यों कदम पीछे धरता है। अय सम्यक दर्शन के सितारो मेरे हृदय में ज़रा प्रकाश करो-मिथ्यात और अंधेरे का एक दम नाश करो-हां भविषदत्त ज़रा आगे कदम बढ़ा-बुज़-दिली दूर कर-मरदानगी दिखला। शमशीरे हिम्मत हाथ में ले-अपनी बहादुरी का इमतहान दे ॥

(शैर)

१. अय भविषदत्त किस लिये डरता है तू इस ग़ार से।
तू तो अविनाशी है कट सकता नहीं तलवार से ॥
२. तू नहीं ख़ाकी न बादी आतशी आबी नहीं ॥
जल पिघल सकता नहीं पानी अगन की मार से।
३. मौत गर आही गई कोई बचा सकता नहीं।
गर नहीं आई तो बेआई मरे नहीं मार से ॥
४. सोच क्या करता है बस आगे बढ़ा अपना क़दम !
जो कुछ होना है सो होगा पार हो चल ग़ार से ॥

(गुफ़ा में प्रवेश करना)

इति न्यामत सिंह रचित कमलश्री नाटक का दूसरा अंक समाप्त ॥

❀ श्रीजिनेन्द्रायनमः ❀

सती

कमलश्री नाटक

—:-(❀)-:—

तीसरा अंक

दृश्य	विषय
१६	भविषदत्त का गुफा से बाहर निकलना
२०	भविषदत्त का तिलकपुर पट्टन में पहोंचना
२१	तिलकपुर पट्टन के सूने चौंक बाजार का नजारा
२२	भविषदत्त का मन्दिर में दर्शन करना
२३	भविषदत्त का तिलका सुन्दरी से मिलना
२४	बधुदत्त के जहाजों को चोरों का लूटना
२५	भविषदत्त का हस्तनागपुर जाने का विचार
२६	बधुदत्त का भविषदत्त से मिलना व फिर धोखा देना
२७	बधुदत्त का तिलका सुन्दरी पर आसक्त होना और देवियों का तिलका सुन्दरी के शील की रक्षा करना

श्रीजिनेन्द्रायनमः

(गुफा के दूसरी तरफ का परदा)

१९६
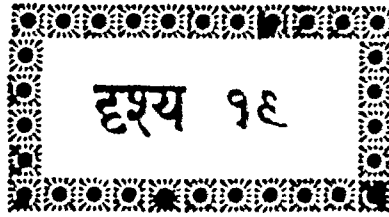
भविषदत्त का पहाड़ की गुफा से बाहर निकलना और भगवन का धन्यवाद गाना और आगे चलना ॥

(चाल नाटक—मेरे ग़म का तराना सुनिये फ़िसाना)

तेरा धनवाद गाऊं—सरको झुकाऊं—अय मेरे भगवान ।
तूहितकारी दुखपरहारी-सब सुखकारी-अय मेरे भगवान (टेक)
भाई मेरा अफ़सोस गया छोड़ के बनमें बेकरार ।
धर्म ने मुझको यां पहुंचाया—गुफा से करके पार ॥
हा मेरी माता रोती है उसे जा—धीर बंधाना—
अय मेरे भगवान—तेरा० ॥

(आगे चलना)

———

दृश्य २०
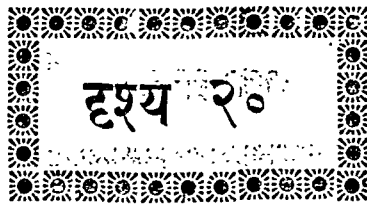
(तिलकपुर पट्टन का परदा)

१६७

तिलकपुर पट्टन शहर का नजर आना और सूने शहर को देख कर भविषदत्त का अफसोस करना ॥

यह कैसा खूबसूरत शहर बेमिसाल है—जरो जवाहरात से माला माल है—मगर अफ़सोस बिलकुल सुनसान है दिल परेशान अक्ल हैरान है ॥ (शैर)

१. मिठाई के चुने रक्खे कहीं थाल ।
   कहीं जरबफ्त मखमल शाल दोशाल ॥
२. भरे रक्खे कहीं डब्बे रतन के ।
   बने रक्खे हैं जेवर तन बदन के ॥
३. दुकानें सोने चांदी से भरी हैं ।
   कि लड़ियां मोतियों की भी धरी हैं ॥
४. मगर यह ख्वाब है या कुछ असर है ।
   नजर आता नहीं कोई बशर है ॥

जिन महलों में शमा काफ़ूरी रोशन थी । रात दिन रागो रंग होते थे । जहां लाखों आदमी अपनी सुख की नींद सोते थे । वह आज सब बेचिराग हैं । मसान भूमी

का नक़शा दिखला रहे हैं—दुनिया की नापायदारी को जितला रहे हैं ॥

१६८

भविपदत्त का सूने शहर को देख कर दुनिया की अनित्यता पर विचार करना और आगे चलना ॥

[गाना देश तीन ताल—नित फेरो माला हरकी रे]

मत जानों दुनिया घरकी रे ।

ना मेरी है ना तेरी है-दुनिया ना काहु बशर की रे (टेक)

१. राजा राणा इन्द्र सुरासुर हथियन के असवार रे ।
सदा नहीं रहने का कोई क्षण भंगुर संसार रे ॥

२. झूंटे दल बल माल ख़ज़ाने झूंटे सब परिवार रे ।
मात पिता दारा सुत भाई झूंटा सब घरबार रे ॥

३. दुखका सागर सुख की आगर देखो आंख पसार रे ।
मोहके जाल फंसी सब दुनिया करती नाहिं विचार रे ॥

४. सूने पड़े नगर हैं देखो महल मकान बज़ार रे ।
कहां गए नगरी के राजा परजा बिलसन हार रे ॥

(वार्तालाप) भविपदत्त ज़रा आगे चल शायद कोई आदमी नज़र पड़े—खाने पीने की सूरत बने ॥

[आगे चला]
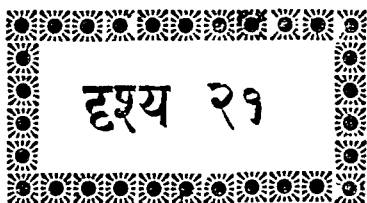
(चौक बाजार का परदा)

१६६

तिलकपुर पट्टन का सूना चौक बाजार नजर आना और भविष्यदत्त का बाजार में पहुंचना और अफसोस करना ॥

कैसे सुन्दर नाना प्रकार के पकवान थालों में चुने रक्खे हैं—मगर अफसोस यहाँ भी कोई नजर नहीं आता—तीन दिन से भूका हूँ—प्राण निकले जाते हैं—प्यास से होंट सूखे जाते हैं—अगरचे भोजन की सब सामग्री मौजूद है मगर कोई देने वाला नहीं—बिना दिये किसी चीज के लेने से चोरी का पाप लगता है—मेरी प्रतिज्ञा में भंग पड़ता है। चाहे प्राण जायें या रहें—मैं हरगिज हरगिज अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ूंगा—जब तक प्राण हैं धर्म से मूंह न मोडूंगा। (दोहा)

धन दे तनको राखिये तन दे रखिये लाज।
धन दे तन दे लाज दे एक धरम के काज॥

बहतर है आगे चल॥

(आगे जाना)

दृश्य २२
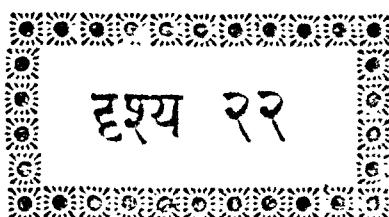
[श्री जैन मन्दिर का परदा]

२००

श्री जैन मन्दिर का नजर आना और भविषदत्त का मन्दिर में जाना और दर्शन करना ॥

(चाल) इन दिनों जोशे जनूं है तेरे दीवाने को ॥

१. अय महावीर ज़माने का हितंकर तू है ।
सारे दुखियों के लिये एक दयाकर तू है ॥
२. तू ही है निर्भय करन और तरन तारन भी ।
तू है निर्दोष सिदाकत का भी रहबर तू है ॥
३. बेख़कन तू है पहाड़ों का करम का बेशक ।
विश्वलोचन है तुही ज्ञान का सागर तू है ॥
४. पाक वाणी है तेरी रमज़े सिदाक़त से भरी ।
नय व प्रमाण की तकमील का दफ़्तर तू है ॥
५. तुझको नफ़रत है न रग़बत है किसी से हरगिज़ ।
सब चराचर को समझता जो बराबर तू है ॥
६. तूने पैग़ाम अहिंसा का सुनाया सबको ।
सब ज़माने का हितोपदेशी सरासर तू है ॥
७. तूने गुमराहों का रुख फेरा हक़ीक़त की तरफ़ ।

हाँ हक़ीक़त में हक़ीक़त का समंदर तू है ॥

८. तू निजानन्द में है लीन सरापा स्वामी ।
मोक्ष के राह का पुर नूर दिवाकर तू है ॥

९. दिलसे न्यामत के जहालत की हो ज़ुल्मत काफ़ूर ।
ज्ञान दर्शन का जहाँ में माहे अनवर तू है ॥

२०१

भविषदत्त का सामायक करने का विचार करना ॥

दोपहर हो गई सामायक का समय आ गया है। मुनासिब है कि अब मैं सामायक करूं-रंजोग़म को दिल से दूर करूं ॥ (शैर)

धर्म ही सार है जग में धरम दुख से बचाता है ।
बशर जो हो मुसीबत में उसे रस्ते लगाता है ॥

२०२

भविषदत्त का सामायक करना और सामायक करके विचार करना और सो जाना ॥

भविषदत्त तीन दिन से तूने न भोजन किया है न रात को सोया है-दिल परेशान है होशो हवास काफ़ूर हैं-फिरते फिरते पावों भी चकनाचूर हैं ॥ मगर इतनी हैरानी से क्या फ़ायदा-बहतर है कि सब रंजो मलाल दूर कर दिल में धीर धर-मन को शांत कर । आख़िर इस मुसीबत का कहीं तो अंजाम होगा-इस हैरानी का कुछ तो परिणाम होगा ।(शैर)

१. ऐसा दुनिया में कोई काम नहीं ।
एक दिन जिसका इख़्तताम नहीं ॥
२. विगड़ना दिलमें घबराना नहीं है काम मर्दों का ।
मुसीबत में रहे क़ायम तो फिर है नाम मर्दों का ॥

अब धर्म पर भरोसा कर—और कुछ देर यहां लेट कर आराम कर ॥ (शैर)

फिर जो कुछ होना है सो हो जायगा ।
जो लिखा तक़दीर में पेश आयगा ॥

(सो जाना)

२०३

इन्द्र का ऊपर से आना और भविषदत्त को सोते हुवे देख कर दीवार पर भविषदत्त की भलाई की तदबीर लिख कर चला जाना ॥

यह भविषदत्त मेरे पूर्व जनम का मित्र है । मैं इसकी सहायता करने को स्वर्ग से आया—मगर अफ़सोस इसको नींद में पाया—न मैं जियादह ठैर सकता हूं—और न इसको नींद से उठा सकता हूँ ॥ (शैर)

१. जीव के आराम में करना विघन का पाप है ।
ख्वाब से बेदार करना और ज़ियादा पाप है ॥
२. इस लिये कुछ बहतरी की इसकी मैं तदबीर अब ।
लिखता हूं दीवार पर ताकि इसे आए नज़र ॥
३. और यहां के मानभद्दर को भी समझा जाता हूं ।
ताकि वह भी कुछ करे इमदाद इसकी आन कर ॥

(इन्द्र का चला जाना)

२०४

भविषदत्त का वेदार होकर और तहरीर को देखकर विचार करना ॥

हैं यह कैसी तहरीर है (तहरीर को पढ़कर) लिखा है कि (यहांसे पांचवें घरमें तुझको अपूर्व वस्तु का लाभ होगा) अक़्ल हैरान दिल परेशान-यह मेरी बहतरी की तदबीर है- या मेरी फूटी तक़दीर की आख़री तहरीर है। मालूम होता है कोई शत्रु मेरे मारने के लिये यहां आया मगर मन्दिर के स्थान में अपना मतलब पूरा न कर पाया। इस लिये अब यह जाल बनाया है-मुझे क़त्ल करने को पांचवें घरमें बुलाया है। अगरचे वहां जाना अपने आपको मुसीबत में फंसाना है मगर दिल में डरना भी तो अपने धर्म और सम्यक्त में फ़र्क लाना है ॥ (शेर)

१. जिन्हें सम्यक्त है दिलमें वह डर लाते नहीं हरगिज़।
अगन से आब से ख़ंजर से घबराते नहीं हरगिज़ ॥

२. करम में क्या लिखा है और इसको आजमाऊंगा।
नज़र से देखकर दिल का शुबा अपना मिटाऊंगा ॥

३. किसी दिन तो अपूरब बल था इन मेरी भुजाओं में।
घटा है या बढ़ा है आज चलकर आजमाऊंगा ॥

४. करम से आज सन्मुख हो लडूंगा खोल दिल अपना।
नहीं कुछ रंजोग़म मरने का अपने दिल में लाऊंगा ॥

(चला जाना)

दृश्य २३
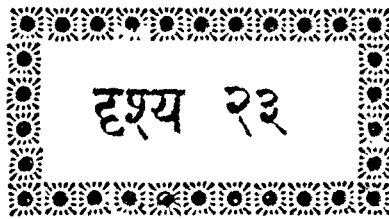
(तिलकासुन्दरी के महल का परदा)

२०५

भविषदत्त का तिलकासुन्दरी के महल में पहुंचना तिलकासुन्दरी का सिंहासन पर बैठे हुवे हाथ में दर्पण लिये हुवे और शृंगार करते हुवे नजर आना भविषदत्त को देख कर तिलकासुन्दरी का शरमा कर नीची नजर कर लेना और भविषदत्त का ताना देना और तिलकासुन्दरी का चुप रहना ॥

हे चन्द्रमुखी सुन्दर राजकुमारी यह क्या घर पर आए की कुछ भी आवभगत न करना—बल्कि आँखें चुराना ॥

२०६

भविषदत्त का फिर कुछ कहना और तिलकासुन्दरी का फिर भी चुप ही रहना ॥

हे शुद्ध हृदय वाली—राजदुलारी मैं दुखिया मुसीबत का मारा तीन दिन से इस मैनागिर परवत पर और तेरे सुनसान शहर में भूका प्यासा हैरान परेशान फिर रहा हूँ ॥

(शेर)

१. शुभ उदय से आज मुझको आपके दर्शन मिले ।
आस कर आराम की दर पर तेरे आया हूँ मैं ॥
२. महरबानी करके अपना हाल कुछ बतलाइये ।

कीजिये मुझ पर दया आफ़त से घबराया हूँ मैं ॥

२०७

भविषदत्त का तिलकासुन्दरी के बिलकुल चुप रहने पर बिगड़ कर फिर ताना देना ॥ (शैर)

१० मान की पुतली हो या शर्मों हया की पुतली ।
बेमुरव्वत की ग़ज़ब जोरो जफ़ा की पुतली ॥
२. बोलना मूंह से नहीं आँखें चुराकर बैठना ।
आपके कुल की यह पियारी खूब अच्छी रस्म है ॥

२०८

भविषदत्त का फिर जितलाना कि चूंकि इस सूने शहर में सिवाय आप के और कोई नजर नहीं आता इस लिये मैं आप के पास आया हूं और तिलकासुन्दरी का फिर भी चुप ही रहना ॥

(दोहा)

१. जहां सम्पति तहां पाहुनो जहां सावन तहां मेह ।
जहां सासू तहां सासरो जहां जोबन तहां नेह ॥
२. वस्त्र विभव विद्या वचन वपू सुन्दर आकार ।
मालव जहाँ तहां जाईये जहां होय पंच वकार ॥

(शैर)

१. आबेशीरीं जिस जगह दुनिया में होता है रवां ।
जमां होते हैं वहीं पक्षी पशु और मर्दुमाँ ॥
२. इसलिये मैं भी चला आया हूँ दर पर आपके ।
शहर सब सूना है बस रौनक है घर पर आपके ॥

२०९

भविषदत्त का नाराज होकर जाने को तय्यार होना ॥

अथ भविषदत्त जहां आदर और आवभगत तो दर-किनार-बल्कि बात का जवाब तक न मिले-वहां जाना अपना अपमान कराना है। बहतर है यहां से चलिये किसी और जगह जंगल या मकान में ठिकाना करिये ॥ (दोहा)

आव नहीं आदर नहीं और नैनों नहीं नेह ।
मालव वहां न जाइये चाहे कन्चन बरसो मेह ॥

२१०

भविषदत्त का आशीर्वाद देना और वहां से चलना ॥
(चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. मुबारक रहे यह तुम्हें घर तुम्हारा ।
कहीं तो बनेगा ठिकाना हमारा ॥
२. क्षमा करना मेरा कहा और सुना सब ।
समझ कर कोई है मुसीबत का मारा ॥
३. रहो खुश हमेशा तुम अपने महल में ।
कहीं हम भी करलेंगे आख़िर गुज़ारा ॥
४. तुम्हें हो मुबारक यह सामान शाही ।
हमें सूनी बस्ती भयानक नज़ारा ॥
५. समझ कर यहां आये थे कुछ ठिकाना ।
ख़बर क्या थी होगा तुम्हें नागवारा ॥

२११

तिलका सुन्दरी का विचार करना कि घर पर आए की आवभगत न करना नीति के विरुद्ध है और उठकर जवाब देना ॥ (वार्तालाप)

आइये विराजिये--मैं आपकी सेवा करने को तय्यार हूँ अपनी ख़ामोशी की आपसे क्षमा मांगती हूँ-- (शैर)

१. देख करके आपके चेहरे का जलवा और चमक !
बस गई आंखें मेरी एक बार नीचे को झपक ॥
२. मेरे चुप रहने के भी कारण बने शर्मो हया ।
दोष कहिये इसमें क्या मेर था मेरे कुल का था ॥

२१२

भविषदत्त और तिलकासुन्दरी की बात चीत ॥

भवि०--(सिंघासन पर बैठकर) हे चन्द्र बदनी आप का क्या नाम है ॥

तिल०--(एक कुर्सी पर बैठकर) हे राजकुमार मेरा नाम भौसान रूपा है और मुझको तिलका सुन्दरी भी कहते हैं ॥

भवि०--आप कौन हैं ॥

तिल०—महाराज भवदत्त सेठ की रानी चन्द्ररेखा की पुत्री और नाग श्री की छोटी बहन हूं । जिसकी शादी यहां के राजपुत्र से हुई थी ॥

भवि०—इस शहर का क्या नाम है ॥

तिल०—तिक्कपुर पट्टन ॥

भवि०—यहां का राजा कौन है ॥

तिल०—महाराजा यशोधर यहां राज करते थे ॥

भवि०—आपके परिवार में कौन हैं और कहां हैं ॥

तिल०—अबतो कोई भी नहीं सब मौत के हवाले होचुके॥

(शैर)

मैं ही एक कम्बख़्त हूं जो घर में बाकी रह गई ।
और समंदर में यहां की सारी परजा बह गई ॥

भवि०—यह तमाम शहर किस तरह बेचराग़ हो गया ॥

तिल०—(आंखों में आंसू लाकर) ॥ (शैर)

१. क्या कहूँ क्यों शहर सूना हो गया ।
जैसा कुछ होना था वैसा हो गया ॥

२. दिल भरा आता है मेरा दर्द से ।
मूंह से कह सकती नहीं क्या हो गया ॥

भवि०—(शैर)

१. आखरिश इस शहर का किस्सा है क्या ।
कुछ तो बतलाओ कि आई क्या बला ॥

२. धीर धरिये और न कायर होजिये ।
मत खयाल उसका करो जो हो गया ॥

३ कर्म गत टारे से टर सकती नहीं ।
हो गया तक़दीर में जो था लिखा ॥

तिल०—हे कुमार अगरचे इस शहर का हाल बताते हुवे

मेरा दिल भरा आता है—मगर आप ज़िद करते हैं इस लिये बतला दूंगी। पर पहिले आप तो बतलायें कि कौन हैं ॥

भवि०—हे सुलोचने--मैं हस्तनाग पुर के महाराज धनदेव सेठ की रानी कमलश्री का पुत्र हूं ॥

तिल०—आपका इस क़दर दूर दराज़ सफ़र करके इस सूने शहर में कैसे आना हुआ ॥

भवि०—(दोहा)

१. कित माता कित मावसी कहां पिता कहां बीर।
जूं जूं आ बिपता पड़े जूं जूं सहे शरीर ॥
२. जैसी तू दुखिया मिली वैसा जानो मोय।
सुख दुख अपने कर्म के दोष न दीजे कोय ॥
३. बिपत कथा मेरी बड़ी मोसे कही न जाय।
कर्म यहां लाया मुझे यूं समझो मन मांय ॥

तिल०--(शैर)

कर्म से तो होती है हर बात लेकिन यह कहो ॥
किस तरह सूने नगर में आपका आना हुवा ॥

भवि०--(शैर)

१. रहने दो क़िस्सा मेरा दुख रूप है ग़मनाक है।
आपका तो पहले ही सदमों से सीना चाक है ॥
२. फिर किसी मौक़े पे सुन लेना हमारी दास्तां।
अपनी कहिये ताकि हो तदबीर कुछ सुख की यहाँ ॥

२१३

तिलकासुन्दरी का रोकर हाल सुनाना ॥ [गाना देश]

तुम सुनो कंवर महाराज विथा दर्शादूंगी सारी ॥ टेक ॥

१. असन वेग एक दाना है बलवान अती भारी ।
है पहिले भव का दुशमन इस-नगरी-का दुखकारी ॥

२. पकड़ पकड़ सब राजा परजा क्या नर क्या नारी ।
इक दम ले जा गिरा दिया सागर के मंझधारी ॥

३. इक मुझ दुखिया को रक्खा सो करमन की मारी ।
रहूं अकेली नाथ रात दिन यह दुख है भारी ॥

४. तुम स्वामी गुणवंत बड़े बलवंत कलाधारी ।
मुझ दासी को संग ले चलो चरणन बलिहारी ॥

२१४

भविषदत्त का जवाब ॥

[गाना चाल क़वाली—कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारों में हूं]

१. है मुझे अफसोस मैं यह कार कर सकता नहीं ।
क्या करूं मैं हूं बड़ा लाचार कर सकता नहीं ॥

२. कैसी दुविधा में मुझे डाला है प्यारी आपने ।
हां भी कर सकता नहीं इनकार कर सकता नहीं ॥

३. जान भी मांगे अगर देने को मैं तय्यार हूं ।
पर तुम्हें ले जाने का इकरार कर सकता नहीं ॥

२१५

तिलकसुन्दरी का जवाब ॥

(गाना चाल कव्वाली—मैं नहीं पहनूं पिया प्यारे पुरानी चूड़ियां)

१. बातआखिर क्या है जो तुम ऐसा कर सकते नहीं।
दोष क्या मेरे में है जो आप बर सकते नहीं ॥
२. क्या हमारे बंश में जाती में फर्क आया नज़र।
किस सबब से दम मेरी उलफत का भर सकते नहीं ॥
३. एक दिन वह था कि थे तालिब हमारे सैकड़ों।
हाय किसमत आज तुम कहते हो बर सकते नहीं ॥

२१६

भविषदत्त का जवाब ॥

(चाल कव्वाली) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. तेरे सत और शील में प्यारी किसे इंकार है।
और ही कारण है जो इंकार में इसरार है ॥
२. मैं जो धारण कर चुका हूं जैन के अनुबृत पाँच।
छोड़ना उनका बड़ा मुशकिल कठिन दुशवार है ॥
३. यानी हिंसा झूट चोरी और शील और परिग्रह।
त्याग इनका कर चुका जो धर्म के अनुसार है ॥
४. इसलिए जब तक न हो शादी मेरे से आपकी।
साथ ले जाना तुम्हें मुझको नहीं स्वीकार है ॥

५. हो बराबर उमर में या आप से छोटी बड़ी ।
है बहिन माता सुता सम जो कोई पर नार है ॥
६. कर नहीं सकता हूँ मैं कुछ भी धरम के बरखिलाफ़ ।
बस भविषदत्त आप को लेजाने से लाचार है ॥

२१७

भविषदत्त और तिलका सुन्दरी की फिर बात चीत

तिल०—बेशक धर्म के विरुद्ध करने को मैं भी तय्यार नहीं मगर क्या शादी करना धर्म नहीं—अगर धर्म है तो फिर इंकार क्यों ?

भवि०—बेशक शादी करना धर्म है—मगर आप का कन्या-दान कौन करेगा ?

तिल०—क्या शास्त्र में गंधर्व विवाह करनेकी आज्ञा नहींहै ?

भवि०—हां है— मगर प्यारी मुझ को चोरी का भी तो नियम है—चोरी का लक्षण है—"अदत्ता दनं स्तेयं" यानी बिना दिये किसी चीज़ को लेना चोरी है—जब आपके देने वाला कोई नहीं तो मैं आपको कैसे ले सकता हूं ॥

२१८

(तिलकासुन्दरी का [illegible] करना ॥

(चाल नाटक [illegible] भैरवी—[illegible] उठी कलेजे पीर ॥ (दोहा)

मात नहीं साजन नहीं दिन चिंता में जाय ।

तारे गिन गिन काटती रैन अंधेरी हाय ॥
अकेली उठे कलेजे पीर—हमारी कौन बंधावे धीर ।
सूनी नगरिया—बाली उमरिया—चले दुधारी कटार ॥
अकेली उठे कलेजे पीर—हमारी कौन बंधावे धीर ।

२१६

भविषदत्त का जवाब [चाल नम्बर २१८] [दोहा]

विषय भोग संसार में दुखदाई सब जान ।
संजम शील उर धारिये जब लग घटमें प्राण ।
पियारी तजो विषय की पीर—तुम्हारी धर्म बंधावे धीर ।
झूटा झगड़िया—देश नगरिया—लखो तो नैन पसार ॥
पियारी० ॥

२२०

तिलकासुन्दरी का जवाब [वार्तालाप]

अय राजकुमार आप सच कहते हैं—मगर इस छोटी उमर में इतना दुख सहना और विषय भोगों को तज कर संसार में रहना कुछ आसान नहीं—ऐसे बहुत कम हैं जिन के दिलमें दुनिया का अरमान न हो ॥

२२१

भविषदत्त का जवाब ॥

बेशक यह काम आसान नहीं मगर जो आदमी धर्म से गिरता है वह पशु समान है इन्सान नहीं— (शैर)

दुख में रखना धरम को इन्सान ही का काम है ।
धीरज आफ़त में रखे हिम्मत इसी का नाम है ॥

२२२

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥ (शैर)

१. अब मुझे सुख की कोई सूरत नज़र आती नहीं ।
किस तरह धीरज धरूं राहत नज़र आती नहीं ॥
२. है मेरे चारों तरफ़ ग़म की घटा छाई हुई ।
जान भी जीने से अब तो तंग है आई हुई ॥

२२३

भविषदत्त का जवाब ॥ (शैर)

१. सुख अगर क़िस्मत में है तो एक दिन मिल जायगा ।
दुख का पर्वत भी कभी बुनियाद से हिल जायगा ॥
२. सुख के दिन पीछे गये और आ गई है दुख की रात ।
काट दो समता से इनको ता मिले सुख की प्रभात ॥

२२४

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥ (शैर)

किस तरह दिल को हो निश्चय दुख कभी टर जायगा ।
किस तरह मानूं बदल अपना मुक़द्दर जायगा ॥

२२५

भविषदत्त का जवाब ॥

(चाल क़व्वाली) कौन कहता है कि मैं तेरे ख़रीदारों में हूं ॥

१. राम और लछमण भी बन से आके सरवर बन गए।
हो गया सीधा मुक़द्दर सब में बरतर बन गए ॥
२. फिरते फिरते जंगलों में पांडवों का भी नसीब।
ऐसा जागा जो महाराजा युधिष्ठिर बन गए ॥
३. था बदन से कुष्ट जारी एक दिन श्रीपाल के।
देखिये आख़िर वह कोटीभट दिलावर बन गए ॥
४. बन पहाड़ों में फिरे थे ख्वार जीवन धन कुमार।
जब करम पल्टा तो वह राजा सरासर बन गए ॥
५. एक दिन पत्थर के नीचे प्रद्युमन बेहाल थे।
यादुवों की फ़ौज के आख़िर वह अफ़सर बन गये ॥
६. आदमी के दिन हमेशा एक से रहते नहीं।
थे जो बद अख़्तर वह इकदिन नेक अख़्तर बनगए ॥
७. इस तरह बिपता के दिन अपने भी पलटेंगे कभी।
धीर धरिये धीर से सरताज अक्सर बन गए ॥

२२६

तिलकासुन्दरी का धीरज धरना ॥

अच्छा आपके कहने पर निश्चय लाती हूँ। दिलको शांत बनाती हूँ ॥ (शैर)

हो गई हैं मेरे दिल से अब तो सब शंकाएं दूर ।
आपकी हिम्मत से देखूं गी भले दिन मैं ज़रूर ॥

२२७

भविष्यदत्त का फिर सवाल करना ॥

यह तो बतलाइये इस नगर में क्या कोई भी आपका रक्षक नहीं ?

२२८

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥ (शेर)

१. खबर उजड़े नगर में कौन मेरी लेने वाला है ।
मुसीबत में किसी को कौन धीरज देने वाला है ॥
२. सियाहबख़्ती में पास आता नहीं कोई भी इन्साँ के ।
अंधेरे में अलग साया भी हो जाता है इन्साँ से ॥
३. वही दाना मगर कुछ देर में अब आने वाला है ।
अगर वह आ गया समझो पड़ा आफ़त से पाला है ॥
४. यही बहतर है जां अपनी बचा लीजे कहीं जाकर ।
न हो ऐसा वह ज़ालिम मार डाले आपको आकर ॥

२२९

भविष्यदत्त का जवाब ॥ (शेर)

१. ताक़त नहीं दाने की मेरे बाण के आगे ।
लोहा भी पिघल जाता है इंसान के आगे ॥

२. हाथों में चूड़ियां नहीं जो आके फोड़ दे ।
कुछ खेल तो नहीं है जो सर मेरा तोड़ दे ॥
३. क्या होता है तू देख ज़रा दिलको थाम ले ।
घबरा न इस क़दर ज़रा हिम्मत से काम ले ॥
४. दिखाने तेग़ के जोहर हैं क़िसमत आज़मानी है ।
लड़ाई में हमें दाने से अपनी जाँ लड़ानी है ॥

२३०

तिलकासुन्दरी का भविपदत्त को समझाना ॥
(चाल नाटक—गुलरू जरीना ।)

मानो मानो ज़रा मोरा यह कहा, कलपा ना जिया । ज़ालिम बदज़न पत्थर का तन, है वह दाना भारी दुशमन । उससे लड़ना जाकर भिड़ना—नाहीं ज़ेबा ॥ मानो० ॥ टेक ॥ आ तुझको महलों में दूं मैं छुपा, मैं छुपा, मैं छुपा, मैं छुपा, मैं छुपा ॥ अय गुणवान, अय बुद्धिवान, कहना मान, कहना मान, अय अंजान, अय नादान, कहना मान ॥

हे हितकारी, मैं बलिहारी, वारी वारी, यह हैरानी, यह नादानी, हे अभिमानी ॥ मानो, मानो० ॥

२३१

भविपदत्त का जवाब । (गाना-नाटक)

देखो देखो अय प्यारी क्या डर है ।
तुम्हें काहे का इतना फ़िकर है ॥ (टेक)

ले धनुपवान जाऊंगा ॥ दाने को गिरा आऊंगा ॥
गम न कर, धीरज धर. बस कहने पर निश्चय कर ॥
दिल में न कोई खतर है ॥
तुझे काहे का इतना फ़िकर है ॥ देखो० देखो० ॥

२३२

(दाने का शोर करते हुवे आना और भविपदत्त का धनुपवान लेकर खड़ा होना और दाने का गुस्से से कहना)

अय नादान तू कौन है जो मेरे सामने धनुपवान लेकर आता है—अपने को मौत का निशाना बनाता है ॥ मैंने इस नगर के बड़े बड़े बहादुरों को समंदर में गिराया—तमाम शहर को वीरान बनाया—नहीं मालूम तू कहां बचा रह गया था जो आज मेरे मुक़ाबले को तय्यार होता है—नाहक़ अपनी जान खोता है ॥

२३३

भविपदत्त का जवाब ॥ (नाटक चाल)

१. आवे क़ातिल ज़ाहिल दाना पत्थर होकर बरस नहीं ।
तुझको पापी कम ना कस पर कुछ भी आता तरस नहीं
२. तूने इस नगरी को ज़ालिम क्यों नाहक़ बरबाद किया ।
दया धरम को छोड़ा तूने ग़ज़ब किया बेदाद किया ॥

२३४

दाने का जवाब ॥ (शैर)

१. मैं अगर चाहूँ उलट दूं सब ज़मीनो आसमां ।
मेरे बलसे वाक़िफ अय लड़के नहीं तू बेगुमां ॥
२. सामने मेरे कोई आये तो बच सकता नहीं ।
शेर हो-हाथी हो चीता हो कोई या पहलवां ॥

२३५

भविषदत्त का जवाब ॥ (शैर)

१. मान करना चाहिये हरगिज़ नहीं इन्सान को ।
सरके बल गिरता हुआ देखा है हमने बान को ॥
२. मान सूरज करता है आकाश में चलते हुवे ।
शाम को देखा उसी को सर झुका ढलते हुवे ॥
३. बात जो मानी नहीं रावण ने अपने मान से ।
देखले मारा गया वह इक लखन के बान से ॥
४. जब जरासिंध राय के कुछ मान दिल में आगया ।
कर दिया श्रीकृष्ण ने एक दम में सर उसका जुदा ॥
५. इस लिये तुमको न इतना मान करना चाहिये ।
कुछ क्षमा का और दया का ध्यान करना चाहिये ॥

२३६

दाने का जवाब ॥ (शैर)

१. तू अभी लड़का है तुझको क्या खबर पयकार की ।

ज्ञान को रख ताक़ पर और बात कर तलवार की ॥
२. मैं तेरी बेकार इन बातों में आ सकता नहीं ।
बिन उतारे सर तेरा मैं यहां से जा सकता नहीं ॥

२३७

भविषदत्त का जवाब ॥ (शैर)

१. गर है घमंड देख तू मैदां में आन के ।
खुल जायें भेद सब तेरे बल और मान के ॥
२. अब मांगले क्षमा—मेरी आज्ञा कबूल कर ।
या करले दो दो हाथ न बातें फ़िज़ूल कर ॥

२३८

दाने का जवाब ॥

(सोच कर) क्या कारण है जो मुझको इस राज-कुमार पर कोप नहीं आता है (फिर दिलमें ज़रा सोचकर और अवध ज्ञान से विचार कर) हां—अवध ज्ञान से मालूम होगया-यह तो वही भविषदत्त कुमार है जिसका हाल मुझ को इन्द्र ने बतलाया था ॥ (शैर)

१. अय राजकंवार आप से मैं लड़ नहीं सकता ।
अपने दिलों में फ़र्क कभी पड़ नहीं सकता ॥
२. तू पहिले जनम का है मेरा मित्र वफ़ादार ।
दिल देख तुझे शांत हुआ जाता है हरबार ॥

२३९

भविषदत्त का जवाब ॥ (शैर)

अय यक्षराज मैं भी हूँ अब मांगता क्षमा।
कर दीजिये मुआफ़ मेरा सब कहा सुना ॥

२४०

दाने का जवाब ॥ (शैर)

जुबां से मैं अदा अहसां तुम्हारा कर नहीं सकता।
तेरे कहनेका कुछभी दिलमें शिकवा कर नहीं सकता ॥

२४१

भविषदत्त का सवाल ॥

हे यक्षेन्द्र आपको अवध ज्ञान से पिछले जन्म का जो हाल मालूम हुआ है कृपा करके बतलाइये ॥

२४२

दाने का पिछले जन्म का हाल सुनाना

१. अय भविषदत्त हाल पिछले जन्म का सुन ध्यान कर।
मैं सुनाता हूं तुझे कुछ ज्ञान से पहिचान कर ॥
२. दुख नतीजा पाप का सुख फल धरम का देख ले।
जग में जो कुछ है नतीजा है करम का देख ले ॥
३. इस लिये हर एक को पापों से बचना चाहिये।

हो सके इन्सान से तो नेक बनना चाहिये ॥

४. आदमी को आदमी के काम आना चाहिये।
अपना तन मन धन किसी के काम लाना चाहिये

५. नेक से नेकी मिले बद से बदी की बात है।
खूब सौदा नक़्द है इस हाथ का उस हाथ है ॥

६. आपने तिलका ने पिछले जन्म में मुझसे वफ़ा।
की थीं मैं भी इस लिये दोनों का हूँ सेवक सदा ॥

२४३

भविषदत्त का फिर सवाल ॥

और वह कौन था जो श्री मंदर जी में दीवार पर तहरीर लिख कर गया था ॥

२४४

दानै का जवाब देना और तिलकासुन्दरी का भविषदत्त से शादी करना ॥

वह पहले जन्म का तुम्हारा मित्र था जो अब मरकर प्रथम स्वर्ग का इन्द्र हुआ है—वह ही तुम्हारे से श्री मंदिर जी में मिलने को आया था मगर आपको सोया हुवा देख कर दीवार पर लिख कर वापिस चला गया—और मुझको आज्ञा कर गया कि इस राजदुलारी तिलकासुन्दरी की तुम्हारे से शादी करदूं इस लिये अब मैं [तिलकासुन्दरी का हाथ भविषदत्त के हाथ में देकर] इस राजकुमारी की तुम्हारे साथ

शादी करता हूँ और यह तमाम शहर आपकी नज़र करता हूँ—आप इस जगह सुखसे रहें और आनन्द करें ॥ (शैर)

गर कोई तुमको जरूरत या मुसीबत आ पड़े।
याद कर लेना मुझे हाजिर हूं सेवा के लिये ॥

२४५

(परियों का ऊपर से आकर भविषदत्त और तिलकासुन्दरी की शादी की मुबारकबाद गाना ॥ चाल—कृश्न प्यारे हां)

प्यारा प्यारी हां, क्या प्यारी है न्यारी तोरी आन।
जोबन की क्यारी—क्या प्यारी—निराली हरयाली—
मदन की कान ॥ प्यारी प्यारी० ॥
तिलकासुन्दरी भविषदत्त भोगी विपत अपार।
धर्म न छोड़ा आपना धारा शील श्रृङ्गार ॥
दोनों मनके मोहन हार, सुख करतार, जाए बलिहार,
होवे दूनी शान ॥ प्यारा० ॥
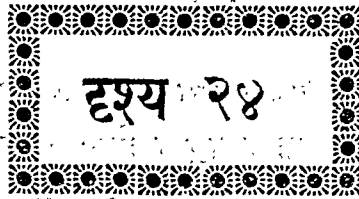
दृश्य २४

(जहाज का परदा)

२४६

समन्दर में चोरों का आना और बधुदत्त के जहाजों को लूटना और मल्लाहों व महाजनों का शोर मचाना ॥

सब मल्लाह—चोरों को जत्थो आवत है सब होशियार हो जाऊ ॥

सब महाजन-(रोते हुवे) हाय कौन मुसीबत आई
कहां भाग कर जाएं-वे मौत मरे कैसे
प्राण बचाएं ॥

सब मल्लाह -अरे कहा रोवत हो - कछु चोरन को तुरत
उपाव करहु- युहु तो मूवे सर पर आन ही
पहूचू ॥

२४७

(सब का अफ़सोस करना)

(गाना चाल—पनघट पर हो रही भीड़)

हम सब पर पड़ गई भीड़,
हाय हम कहा करें दुख भारी जी ॥ हम० (टेक)
१. क्यों धनके लालच आये, हम तज कर घर सुत नारीजी।
२. को धीर बंधावे हमारी, हाय इस सागर मंझधारी जी ॥

२४८

वधुदत्त व महाजनों व मल्लाहों की बातचीत

वधु०-टैरो मत घबराओ-मनमें धीरज लाओ -हाहाकार
न मचाओ ॥

सब मल्लाह-(चोरों को जहाज पर गिरते हुवे देख कर]
सेठ जी चोर आहाणिये लूटत हैं ॥

सब महाजन-[जोर से] हाय सेठ जी मर गये-

(चोरों का जहाज को लूटना और चला जाना)

सब मल्लाह–ग़ज़ब हो गयो–हाय दय्या कहा भयो–यो पापी बधुदत्त को माल भरो तोऊ हमरे प्रोहणाये लुटे ॥

२४६

(सब महाजनों का रोते हुवे गाना)

(चाल—अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजे दा)

कहा करें अब भाई सागर मंझधार ॥ टेक ॥

१. लुट गया माल धन सारा, है बधुदत्त हत्यारा ॥
करें हम किसपे पुकार ॥ कहा करें० ॥

२. कहां मात पिता सुत नारी, क्या बिगड़ी दशा हमारी ।
इस पापी के लार ॥ कहा करें० ॥

३. था भविषदत्त सुखकारी, दुखहारी पर उपकारी ॥
दिया पापी ने टार ॥ कहा करें० ॥
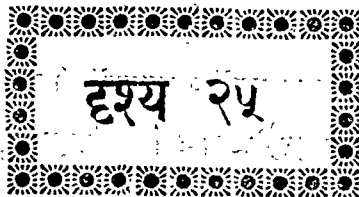
(तिलकासुन्दरी के महल का परदा)

२५०

तिलकासुन्दरी व भविषदत्त की बात चीत ॥

(चाल इन्द्र सभा —अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ)

तिल० मेरी अर्ज़ सुनिये जरा अय कुमार ।

मेरे मन में चिन्ता है दीजे निवार ॥
भवि०—कहो दिलमें अरमान क्या रह गया ।
मेरी प्यारी मुझको बताओ ज़रा ॥

२५१

तिलकासुन्दरी का अपने पति भविपदत्त से हाल पूछना ॥
(चाल रसिया रियासत भरतपुर विरज की) तूने किया नशे में क़रज
बलम याहे कौन चुकावेगो ॥

हो तुम किस नगरी के राजा बालम हमें बताओ जी ।
हमें बताओ जी ज़रा संदेह मिटाओजी ॥ हो तुम० (टेक)
१. कहाँ पिया है राज तुम्हारा, कौन पिता माता परिवारा ।
कौन वंश अवतार लिया है, हमें जिताओ जी ॥
२. क्योंकर छोड़ा राज पिताका, किस कारण घरबार तजा था
क्यों बन गये बन बासी, सारा हाल सुनाओ जी ॥
३. किम मैनागर पर भरमाये, क्योंकर गुफ़ा चीर यहां आये
क्योंकर धारी धीर, भेद सारा दरशावो जी ॥
४. क्यों छोड़े सब मित्र हितैषी, बन गये देश छोड़ प्रदेशी ।
मैं चरणन की दासी, संशय दूर हटाओ जी ॥

२५२

भविपदत्त का अपनी माता को याद करना और उदास होकर जवाब देना ॥
(चाल क़व्वाली) दिल में सनम के [illegible] ॥

१. न तुम हमसे पूछो हमारा ठिकाना ।

है पुर दर्द प्यारी हमारा फ़िसाना ॥
२. निशां और मकां क्या बताएं हम अपना ।
न भाई न बंधु न कोई यगाना ।
३. है दुश्मन फ़लक और ज़मी भी मुख़ालिफ़ ।
है गरदिश ने हमको बनाया दिवाना ॥
४. बगोले की सूरत फिरें मारे मारे ।
न मालूम दुश्मन हुवा क्यों ज़माना ॥
५. कहूँ क्या कि क्योंकर इधर आगया मैं ।
यहां मुझको लाया मेरा आबोदाना ॥

२५३

तिलकासुन्दरी का सवाल ॥

चाल—अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का ख़ौफ़ो ख़तर ही नहीं ॥

स्वामी यह तो मुझे समझादो भला ।
क्यों उदास भये हो बतादो ज़रा ॥
क्यों यह मुखपे मलाल है छाया हुवा ।
बात क्या है मुझे भी जिता तो सही ॥

२५४

भविपदत्त का जवाब ॥ (चाल नम्बर २५३)

मुझसे पूछ नहीं मेरे ग़मकी कथा ।
मूंह से कह नहीं सकता मैं अपनी बिथा ॥

मुझको छेड़ नहीं है इसी में भला ।
क्यों बढ़ाती है झगड़ा बता तो सही ॥

२५५

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर २५३)

तेरे ग़मसे भर आया है मेरा जिया ।
नहीं छेड़ हंसी इसको समझो पिया ॥
मैं भी सुनलूं वह क्या है फ़िसाना तेरा ।
मुझे अपनी कहानी सुना तो सही ॥

२५६

भविषदत्त का जवाब ॥ (चाल नम्बर २५३)

मेरी विपत कहानी को सुनके यहीं ।
तेरे हृदय को चोट न लगजा कहीं ॥
ऐसा करना सो मंजूर मुझको नहीं ।
इसमें क्या फ़ायदा है बता तो सही ॥

२५७

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर २५३)

सदा सुख दुख में साथ पति के रहे ।
है सती का धरम यह बताया मुझे ॥
यदी इसके विरुद्ध कोई रीति भी है ।
टुक मुझे भी वह नीति दिखा तो सही ॥

२५८

भविपदत्त का हाल बताना ॥

(चाल) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१. सती सुन किस लिये तू दिलको यों बेज़ार करती है।
तू सुनले हाल गर तू इस क़दर इसरार करती है ॥
२. है हिन्दुस्तां वतन अपना जहां गजपुर नगर अपना।
कि दुनिया जिसकी अज़मत का सदा इक़रार करती है ॥
३. पिता धनदेव और माता कमलश्री जानियो मेरी।
दुहागन बन के जो पीहर में अपना कार करती है ॥
४. बधुदत्त भाई सौतेले सुतेली मां सरूपा है।
उसी भाई की मुझको बेवफ़ाई ख्वार करती है ॥

२५९

तिलकासुन्दरी का फिर सवाल करना ॥ (चाल नम्बर २५८)

१. पिया यह भी तो बतलादो दुहागन क्यों बनी माता।
है क्या कारण जो पीहर में वह कारोबार करती है ॥
२. करी है बेवफ़ाई क्या तुम्हारे भाई ने तुमसे।
शरारत कौनसी उसकी तुम्हें बेज़ार करती है ॥

२६०

भविपदत्त का अपना हाल बताना ॥

(चाल नाटक — बूटी लाने का कैसा बहाना हुवा)

हाय कर्मों का ज़ाहिर में आना हुवा—

थी यगाना मेरा सो बिगाना हुवा-हाय० ॥ टेक ॥

१. पिता होके विप्रीत, तजी माता से प्रीत।
करी ऐसी अनीत, करे कोई न मीत ॥
हाय माता को पीहर में जाना हुवा ॥

२. पिता करके अन्याय, घर सरूपा को लाय।
हमें दिन वह दिखाय, कहा मुख से न जाय ॥
अपना दिल तीरे ग़म का निशाना हुवा ॥

३. मैं वधुदत्त के लार, चला करने व्योपार।
आया सागर के पार, वह वदी मनमें धार ॥
मुझको यहां छोड़ आगे रवाना हुवा ॥

४. फिरा वन वन अधीर, फेर धर दिल में धीर।
मैना परवत को चीर, आया नगरी के तीर ॥
तेरे घर मेरा प्यारी ठिकाना हुवा ॥

५. मेरी माता वरवाद, फिरती होगी नाशाद।
आगई मुझको याद, करूं किससे फ़रयाद ॥
मेरा दिल हाय ग़म से दीवाना हुवा ॥

२६१

तिलकासुंदरी का जवाब देना और पति को धीरज बंधाना ॥

१. हे प्राणनाथ आप अब इतना न ग़म करें।
निश्चय धरम पे करके यह क़िस्सा ख़ातम करें ॥

२. जाते रहें गो राज पाट माल ख़ज़ाने।

सत्य की जो बांधी लक्ष्मी इक दिन को आ मिले ॥
३. यह शहर मालोज़र से है सारा भरा हुवा ।
शादी की नज़र में है तुम्हें सब मिला हुवा ॥
४. मंजूर आपको हो तो घर अपने हम चलें ।
धन माल लेके संग में परिवार से मिलें ॥

२६२

भविषदत्त का तिलकासुन्दरी को धन्यवाद देना ॥
(चाल) सखी सावन वहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१. तुम्हें धन्यवाद है दुख में मेरी धीरज बंधाई है ।
तुम्हारी बात से कुछ शांतीसी दिल में आई है ॥
२ वतन चलने की भी तदबीर मेरे मनको भाई है ।
जो तुमने इस घड़ी मुझको मुहब्बत से बताई है ॥

२६३

तिलकासुदंरी का भविषदत्त को चलने के लिये तय्यार करना और
सामान लेकर समंदर के किनारे जाना—(शैर)

१. सामान पहिले आओ तो घरका जमा करें ।
सागर के तीर कोई बनाऐ ठिकाना हम ॥
२. फिर लेके सारा माल किनारे पे जा रहें ।
आऐंगे जव जहाज़ तो होंगे रवाना हम ॥

(दोनों का रवाना होना)

दृश्य २६
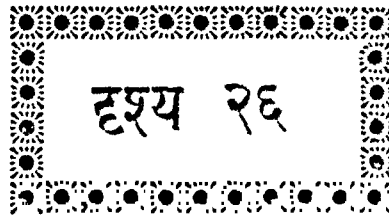
(समन्दर के किनारे का परदा)

२६४

नोट—

भविषदत्त और तिलकासुन्दरी अपने घर जाने के लिये समन्दर के किनारे पर आ रहे और सब सामान जमा करके जहाज की इन्तजारी करने लगे ॥

२६५

एक दिन एक जहाज को आते हुये देख कर तिलकासुदंरी व भविषदत्त का बात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

तिल०—(उङ्गली का इशारा करके) वह देखिये शायद कोई जहाज़ आ रहा है ॥

भवि०—हां बेशक जहाज़ ही है ॥

२६६

जहाज का आना और महाजनों का जहाज से उतरना और अपना हाल भविषदत्त को सुनाना (वार्तालाप)

हे राजकुमार धन्य है—आज आप के दर्शन मिले—मानो हमारे मुरझाए हुवे हृदय के कंवल खिले पापी बंधुदत्त आपको अकेला छोड़ कर आगे गया—पाप कर्म से रास्ते में चोरों ने सब धन माल लूट लिया ।

२६७

महाजनों का रोते हुवे गाना ॥

(चाल) तूने फ़लक यह क्या किया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥

१. हाय करम उलट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ।
धनमाल सारा लुट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥

२. तुमको अकेला छोड़ कर पापी गया मूंह मोड़ कर ।
जैसा किया वैसा मिला हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥

३. अब कीजिये हम पर दया आके शरण तेरा लिया ।
अब अख़तियार है तेरा हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥

(पाओं में गिरना)

२६८

भविषदत्त का जवाब और तसल्ली देना (-वार्तालाप)

मेरे प्यारे महाजनो घबराओ नहीं—गए मालका शोक न करो—दिलमें धीरज धरो—आपकी कृपा से मेरे पास बहुत माल है—मैं अपने माल में से कुछ तुम्हें दे देता हूँ—तुम्हारा टोटा पूरा कर देता हूँ।

[सबको माल देना]

२६९

वधुदत्त का जहाज से उतर कर आना और भविषदत्त से क्षमा मांगना ॥

भाई मेरा अपराध क्षमा करें—मैंने जैसा किया वैसा पाया ।

२७०

भविषदत्त का वधुदत्त के सर पर हाथ रखना और तसल्ली देना ॥
(गाना चाल—मैं नहीं पहनूं पिया प्यारे पुरानी चूड़ियां)

१. कौन कहता है वधुदत्त तू ख़तावारों में है ।
तू तो सरदारों में है और नेक किरदारों में है ॥
२. अय मेरी दाहनी भुजा हम सब में तू गुणवान है ।
कौन गुण तुझमें नहीं जो नेक अतवारों में है ॥
३. है मुझे अफ़सोस मैं सेवा न तेरी कर सका ।
मैं बड़ा नादान हूँ तू सबसे होशियारों में है ॥
४. छोड़ तू जाता नहीं तो किस तरह पाता मैं धन ।
तू मेरा हितकर है मेरे वफ़ादारों में है ॥
५. दूर करदो रंजोग़म यह माल है सब आपका ।
यह भविषदत्त तो तुम्हारे ख़ास हितकारों में है ॥
६. मेरे गुलशन का समर गर काम आये आपके ।
इससे बहत्तर काम क्या संसार के कारों में है ॥
७. जो तुम्हें दरकार हो सब लेलो और घरको चलो ।
तू मेरा छोटा है भाई और मेरे प्यारों में है ॥

२७१

सबका जहाज़ पर सामान रखना—और जहाज़ पर सवार होना—तिलका-सुंदरी का भी जहाज़ पर सवार होना—तिलकासुन्दरी का अपनी उङ्गली में नाग मुद्रिका न देखकर उदास होना और गाना ॥
(चाल काफ़ी—गाना) गागर सारी रात गयो कौने रंग पी ॥

मुंदरी हाय कांहिं गिरी मोरे अंग की ।

कैसी बौरी भई, क्या दीवानी भई ।
मैंने डारी किधर ॥ हाय काँहिं गिरी मोरे अंग की ॥
मुदरि हाय कांहिं गिरी मोरे अंग की ॥ टेक ॥
सेजों पे भूली हूँ रंग महल में ।
जाए कहां थी होगी वहीं ॥ हाय कांहिं गिरी मोरे० ॥
मुदरि हाय कांहिं गिरी मोरे अंग की ॥

२७२

भविषदत्त का तिलकासुन्दरी को तसल्ली देना और मुद्रिका लेने के लिये जहाज़ पर से कूदना और तिलकपुर पट्टन को चला जाना ॥ (शैर)

१. अंगूठी का प्यारी न कर ग़म ज़री ॥
मैं जाता हूं तिलका नगर में अभी ॥
२. मैं सीधा महल में चला जाऊंगा ॥
अंगूठी अभी लेके आ जाऊंगा ॥

(चला जाना)

२७३

वधुदत्त के दिलमें बदी आना और जहाज की रवानगी का हुकम देना और मंत्री का बात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

वधु०—खेवय्या जल्दी बाद बान उठाओ—फ़ौरन प्रोहण को चलाओ ॥

मंत्री—महाराज भविषदत्त सती तिलकासुन्दरी की मुद्रिका लेने गये हैं ऐसी जल्दी न कीजिये—ज़रा उनको आजाने दीजिये ॥

वधु०—नहीं हम नहीं ठैर सकते ॥

मंत्री०—महाराज क्यों नहीं ठैर सकते ॥

वधु०— मंत्री जी--इसमें भी कुछ भेद है जिसको तुम नहीं जानते ॥

मंत्री०---महाराज आख़िर वह क्या बात है जिसके लिये आप अपने वफ़ादार और महरबान भाई को छोड़ने के लिये एकदम तय्यार हो गये ॥

वधु०--- हमने उसके साथ सख्त बदी की है अगर वह गज़पुर पहुंच गया तो सब क़लई खुल जायगी ॥ और सबकी जान आफ़त में पड़ जायगी ॥

मंत्री०--- (शैर)

१. यह है बदगुमानी तुम्हारी फ़ज़ूल ।
तबीयत नहीं करती इसको क़बूल ॥

२. भविषदत्त बड़ा नेक इन्सान है ।
ज़माने में वह एक इन्सान है ॥

४. नहीं उससे होती कभी भी बदी ।
भलाई ही होगी जो होगी कभी ॥

२७४

वधुदत्त का मंत्री से नाराज़ होना और जल्लाद को फ़ौरन बुलाने का हुक्म देना ॥ (शैर)

१. नहीं तुझको दुनिया की कुछ भी ख़बर ।

ठहरने में नुकसान है सर बसर ॥
२. न अब हम सुनेंगे किसी की कही ।
चलादो जहाज़ों को फ़ौरन अभी ॥

२७५

जहाजों के चलने का हुकम सुन कर तिलकासुन्दरी का घबराना और वधुदत्त से अर्दास करना ॥

(चाल—बिंदी लेदे लेदे लेदे मेरे माथे का शृङ्गार)

ज़रा ठैरो ठैरो ठैरो नहीं आए भरतार ।
नहीं आए भरतार, मेरे जोबन के सिंगार ॥ टेक ॥
१. मत जुलम करे देवरिया मत सतियों से कर बिगार ।
मत भाई को छोड़े परबत में पापी दुराचार ॥
२. कर जोड़ करूं अरदास ज़रा सुन मेरी तू पुकार ।
मेरे बालम को आ जानेदे टुक दिल में दया धार ॥

२७६

वधुदत्त का गुस्से से मल्लाह को जहाज चलाने का फिर हुकम देना ॥

खेवय्या बस अब किसी की मत सुनो जहाज़ को फ़ौरन चला दो ॥

(जहाज का रवाना होना)

दृश्य २७
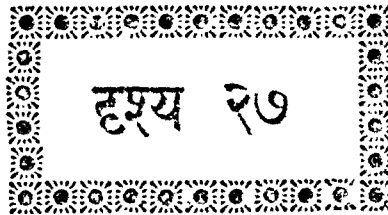
(जहाज़ में तिलकासुन्दरी के कमरे का परदा)

२७७

वधुदत्त का बदनीयती से तिलकासुन्दरी के कमरे में आना और तिलकासुन्दरी का अपने शील की रक्षा करना और दोनों का सवाल व जवाब करना ॥ (वार्तालाप)

तिल०—(हैरान होकर) हैं तुम कौन जो मेरे कमरे में आते हो ॥

वधु०—क्या तुम नहीं जानती मैं तुम्हारा प्यारा हूं ॥

तिल०—देवर वधुदत्त ॥

वधु०—हां ॥

तिल०—तुम यहां कैसे आए ॥

वधु०—आपको प्यार करने ॥

तिल०—हाय और नई मुसीबत आई ॥

वधु०—नहीं—यूं कहिये कि राहत आई ॥

तिल०—मेरे प्यारे देवर—मैं पहले ही कर्मों की सताई जाने से तंग आई—मुझे और न सताओ ॥

वधु०—मैं तुम्हारी भोली भाली बातों में नहीं आ सकता मेरा दिल तुम पर आ गया—हट नहीं सकता ॥

तिल०—नाहक़ अपने आपको आफ़त में फंसाते हो—मेरे दुखते हुवे दिलको और दुखाते हो-जाने दो-नाहक़ दरिया में लहू की नदियां बह निकलेंगी ॥

बधु०—अब कौन है जो मेरा मुक़ाबला करे ॥

तिल०—मेरा सत्य शील और हस्तनागपुर का भविषदत्त राजकुमार ॥

बधु०—भविषदत्त अकेला पहाड़ों में सर टकराकर मर जाएगा। क्या वह दुबारा ज़िन्दा होकर मुझसे लड़ने आएगा।

२७८

अपने पति की निगबत मरने का शब्द सुनकर तिलकासुन्दरी का रोते हुवे गाना ॥
(चाल) मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे ॥

पापी ऐसी न वाणी सुना तू मुझे ।
अपनी सूरत न पापी दिखा तू मुझे ॥ टेक ॥

१. स्त्री हूँ तेरे भाई की समझ माता समान ।
शास्त्र में क्या लिखा है देख तो तू बदगुमान ॥
मूरख अपनी न नारी बना तू मुझे ॥

२. की थी रावण ने जो सीता पर ज़रा खोटी नज़र ।
होगई बरबाद लंका कट गया ज़ालिम का सर ॥
मैं हूँ बेकस न नाहक़ सता तू मुझे ॥

३. पाप की बातें न ला अपनी ज़ुबां पे बार बार ।
उड़ न जाए यह ज़मीं भूचाल से बनकर गुबार ॥
मैं सतवंती न हाथ लगा तू मुझे ॥

४. माँ वहन बेटी समझना चाहिये परनार को ।
ध्यान में भी तो न लाना चाहिये परनार को ॥
अपनी माता समझ सर झुका तू मुझे ॥

५. इस समन्दर में न लगजा आग मेरी आह से ।
सब तेरा टाँडा न जल जाए हमारी आहसे ॥
नाहीं जलती को और जला तू मुझे ॥

२७९

दोनों का जरा नरमी से सवाल व जवाब करना ।

वधु०—अब भविपदत्त का बचकर आना और तुमसे मिलना सर्वथा असंभव है ॥ (शैर)

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ।
मरा लौट कर मूंह दिखाता नहीं ॥

तिल०— (शैर)

१. पती मेरा अरे बेमौत हरगिज़ मर नहीं सकता ।
ज़रूर आएगा लाखों में वह हरगिज़ टर नहीं सकता ॥

२. तेरी बातों से मन मेरू हमारा चल नहीं सकता ।
जो निश्चय शील संजम होगया सो टल नहीं सकता ॥

वधु०—(शैर)

१. जो होना था वह हो गया जाने दो ॥
चमन की करो सैर खाओ पिओ ॥

२. नहीं आता जा करके जोवन कभी ॥
न खो इसको यूं ही तू पछतायगी ॥

२८०

तिलकासुन्दरी का नाराज़गी से जवाब ॥

(चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. न छेड़ो मुझे मैं सताई हुई हूं ।
विरह की अगन में जलाई हुई हूं ॥
२. तुम्हें सूझती हैं चमन की बहारें ।
मैं दुख दर्द ग़म की मिटाई हुई हूँ ॥
३. हंसी दिल्लगी मुझसे अच्छी नहीं है ।
करम की बहुत मैं रुलाई हुई हूँ ॥
४. समंदर में गिरकर अभी जान दूंगी ।
जुदाई में मरने पे आई हुई हूँ ॥
५. सती को सताना मुनासिब नहीं है ।
मैं सतके लिये ही बनाई हुई हूं ॥

२८१

दोनों का उपदेशरूप सवाल व जवाब करना ॥ (शैर)

हिन्दूस्तां के हम हैं हिन्दूस्तां हमारा ॥

वधु०—जाने दे प्यारी ग़मको इतना न तन जला तू ।
बस याद अब पती की दिलसे ज़रा भुला तू ॥
तिल०—जाने दे पापी ज़िद को पापों की पोट सर धर ।
तय्यार अब नरक में जाने को क्यों हुवा है ॥
वधु०—घर पर मेरे भरे हैं ज़र माल के खज़ाने ।
सुख भोगती नहीं फिर किस वास्ते भला तू ॥

तिल०—इस ज़रकी दोस्ती से मिलती है रूसियाही ।
टकसाल की दीवारें जा देख तो ज़रा तू ।

२८२

दोनों का हटरूप सवाल व जवाब करना—[शेर]

वधु०—
१. किस लिये करती है प्यारी बार बार इंकार तू ।
हो रज़ामंद और न कर दिलको मेरे बेज़ार तू ॥
२. तिरिया हटको छोड़ दे और मानले कहना मेरा ।
दे तसल्ली का जवाब अब और न कर तकरार तू ॥

तिल०—[शेर]
१. है जवाब अपना वही जो दे चुकी पहिले जवाब ।
सब सवालों का जवाब और था जवाबे ला जवाब ॥
२. एक क्या सौ सौ जवाबों के लिये तय्यार हूँ ।
है मगर काफ़ी वही जो कर चुकी इज़हार हूँ ॥

वधु०—क्या मैं रूप में धन में विद्या में बल में भविषदत्त
से कम हूँ जो तू मुझे स्वीकार नहीं करती ॥

तिल०—हैं—तू भविषदत्त का मुक़ाबला करता है—वह चम-
कता हुआ सूरज और तू टिमटिमाता हुआ चराग़ ॥

[शेर]
१. विष हलाहल और है और सार अमृत और है ।
तिमिर मिथ्यात और है ज्योति समकित और है ॥

२. असलियत दोनों की हो जाएगी रोशन आप पर।
चमक जुगनू और है प्रकाश दिन पति और है॥

२८३

दोनों का ज़रा गुस्से में सवाल व जवाब करना॥

बधु०—दुख पाएगी मरजाएगी आख़िर को पछताना होगा।
तिल०—एकदिन है सबको मरना इस दुनियासे जाना होगा।
बधु०—(तलवार दिखाकर) फिर वही उज़र॥
तिल०—लीजिये यह सर है आपकी नज़र॥
बधु०—(हाथ पकड़ कर) यहतो सच है तू मौत से नहीं डरती लेकिन मैं तुम्हें क़त्ल करने के लिये दिल किसका लाऊं॥
तिल०—(चीं बजबीं होकर और हाथ छुड़ा कर) बस मेरे तनको हाथ न लगाओ—वरना अभी अपघात करके मर जाऊंगी॥
बधु०—[शैर] यही अपने दिल में समझले तू प्यारी॥
मेरे हाथ से अब रिहाई न होगी॥
तिल०—[शैर] शरारत करेगा तो होगी नदामत॥
बुराई में हरगिज़ भलाई न होगी॥
बधु०—(मिसरा) फ़ायदा क्या है जो तू करती है यह नादानी
तिल०—(मिसरा) पेश आनी है वही जोकि है बस पेशआनी

वधु०-(मिसरा) किस लिये हाथसे तू जान अवस खोती है
तिल०-(मिसरा) क्या करूं बस नहीं तकदीर मेरी सोती है
वधु०-[शेर] जब मुसीबत जान पर प्यारी तेरी बन आएगी
यहतो बतला किसतरह असमततेरी रहजाएगी

२८४

तिलकासुन्दरी का गुस्से से जवाब देना ॥

(चाल रसिया राज भरतपुर व बृज का) अब आ गया कलयुग घोर पाप का जोर हुवा भारी ।

जगमें नहीं किसी को ताब हमारे शील डिगाने की ।
शील डिगाने की नज़र खोटी दिखलानेको ॥ जग०[टेक]

१. पापी क्या तू मुझे डरावे । क्या मरने का भय दरशावे ॥
नहीं हमारे दिल में कुछ परवा मरजाने की ॥

२. ना मुझ तनको हाथ लगाना । नाएसी धमकी दिखलाना ।
कहीं सागर में आग न लगजा सती सताने की ॥

३. इन्द्र खगेन्द्र सभी मिलआवें । व्यंतर सुरनर बल दिखलावें
क्या मजाल है किसको मेरे शील घटाने की ॥

४. चाहे शाम दाम दिखलाए । भय और भेद सभी दरसाए
नहीं किसी को ताब मेरा मन मेरू हिलाने की ॥

५. सिवा भविपपति और न मानूं । पुत्र पिता भाई सम जानूं
पुरुषों की संख्या है जितनी सारे ज़माने की ॥

२८५

दोनों का जरा जियादा गुस्से में सवाल व जवाब करना ॥

बधु०–कमबख़्त हट न कर इन्कार छोड़ ॥

तिल०-बदबख़्त ज़िद न कर तकरार छोड़ ॥

बधु०–मान ले ॥

तिल०--जान ले ॥

बध०–देखो प्यारी अब हद हो चुकी ज़रा सोच समझकर जवाब दो ॥

तिल०--हद हो या बेहद–मैंने तो पहले ही जवाब सोच रक्खा है ॥

बधु०–तुमने क्या सोच रक्खा है ॥

तिल०–मैं अपने शील पर प्राण दूंगी ॥

बधु०–देखो तिलकासुन्दरी राज पाट में भंग पड़ जाएगा

तिल०– [शैर] राजतो क्या चाहे पड़जाय नक्यों दुनियामें भंग
मैं न पड़ने दूंगी अपने शील और किरियामें भंग

बधु०–अगर मैं तुम्हें ज़बरदस्ती राज़ी करलूं ॥

तिल०--गो मैं औरत हूँ मगर तुम जानते हो कि मैं सती हूं

[शैर]

है भरा रग रग में मेरे धर्म का संयम का जोश।
दूर करदे यह खयाल और बात कर टुक करके होश ॥

बधु०–दुनिया में शील असमत कोई चीज़ नहीं–धर्म अधर्म सब बराबर हैं ॥

तिल०—तुम्हारे लिये ॥

वधु०—तो फिर तुम नहीं मानोगी ? किसी तरह नहीं मानोगी ?

तिल०—(शेर)

देख मानूंगी कभी यह बात मैं हरगिज नहीं ।
बस समझ हरगिज नहीं हरगिज नहीं, हरगिज़ नहीं ॥

वधु०—देखो सोच लो, फिर पछताओगी ॥

तिल०—(शेर) १. वहही पचताता है जोकि पापके बदले मरे ।
क्यों वह पचताए निछावर धर्मपर जो मरकरे
२. जानदूंगी शीलपर और स्वर्गमें जाऊंगी मैं
नाम सतियों में हमेशा के लिये पाऊंगी मैं
३. सर मेरा चाहोतो लो हरगिज नहीं इंकार है
पर न बदले धर्मके दुनिया मुझे दरकार है

वधु०—(जरा आगे बढ़कर गुस्से से) तिलकासुन्दरी देखो मान जाओ ॥

तिल०—[हाथ से हटा कर] बस हटो—नाहक मुझे पापी न बनाओ—शरारत से बाज़ आओ ॥

वधु०—मैं अभी मना लूंगा पकड़ कर ॥

तिल०—मैं पहिले ही मर जाऊंगी समंदर में पड़ कर ॥

वधु०—(हाथ पकड़ कर) देखूं तू कहां तक अपना शील बचाएगी ।

२८६

(तिलकासुन्दरी का घबरा कर कांपना और शील रक्षा के लिये प्राण त्याग करने का विचार करना और वधुदत्त को धमकाना और अपने तन को हाथ लगाने से रोकना)

(चाल नाटक—तुम जाओ ना ज़रा जाके सजीवन लाओ ना)

हट जाएना–मेरे तन को हाथ बस लाएना।
क्या जमाने में कोई हितू ना रहा ॥ हट० ॥ (टेक)

१. (शैर) मैं न जानूं थी कि देवर मेरा दुश्मन होगा।
हाथ पापी के मेरे शील का दामन होगा ॥
मत समझियो कि समंदरमें मेरा कोई नहीं।
मुझे निश्चय है धरम से तेरा खंडन होगा ॥
बस सताएना, दुख दिखाएना ।
मेरे तन को हाथ बस लाएना ॥

२. [शैर] धर्म ने दीना सुदर्शन को सहारा देखो।
और श्रीपाल को सागर से निकारा देखो ॥
चीर द्रोपद का वढ़ाया था सभा में इकदम ।
जल बना आग से सीता को उभारा देखो ॥
कलपाएना, जी जलाएना ।
मेरे तनको हाथ बस लाएना ॥

३. (शैर) वहाँ पहाड़ों में तड़पता है अकेला बालम।
सास कमला मेरी रोती होगी ग़ममें हरदम ॥
आग भड़की चली आती है मेरे सीने में।

आह करदेगी मेरी तुझको भी दरहम बरहम ॥
तड़पाएना-बस जलाएना ॥
मेरे तनको हाथ बस लाएना ॥

(जमीन पर गिरना और बेहोश हो जाना)

२८७

जलदेवी और चक्रेश्वरी देवी का आना और सर्व जहाजों को डुबोने के लिए घुमाना और सब महाजनों का घबराना और बंधुदत्त को धमकाना व उसका मुख काला करना ॥

(चाल राग बनजारा) टुक हिर्सोहवा को छोड़ मियां मत देश विदेश फिरे मारा ॥

ठैर ठैर पापी क्या करता है (गाना)

१. ओ बेगैरत पापी मूरत सती पे हाथ चलाता है ।
यह सती सतोगुणी शीलश्रोमणी खौफ़ जरा नहीं खाताहै ॥
२. तेरी सारी बदकारी का तुझको मजा चखावेंगे ।
काला मूंह करके तुझको सागर में अभी गिरावेंगे ॥

(काला मूंह करना और बांधना)

२८८

जहाजों को डगमगाते हुये देख कर और उनके डूबने का अंदेशा करते हुये सब महाजनों का सती तिलकासुन्दरी की शरण में आना और अरदास करना ॥

(चाल) शिक्षा दे रही है हमको रामायण अति प्यारी ॥

करुणा कीजिये जी हमतो आए शर्णा तुम्हारी ॥टेर॥

१. बधुदत्त के संग में डूबी जाती नाव हमारी ।
बिन कारण पापी के कारण हम भी बने दुखारी ॥
२. सच्चा है सती धर्म तुम्हारा सो हम निश्चय धारी ।
हमरा बेड़ा पार करेगी सतकी बात तुम्हारी ॥
३. अधम बधुदत्त महा अधरमी—अघकारी बिभचारी ।
सब सुख कारज बना हुवा था-इसने बात बिगारी ॥
४. इसीने छोड़ा भविषदत्त पुनवान अरु करुणा धारी ।
पर संकट में पड़नेवाला दानी पर उपकारी ॥
५. इस संकट से हमें बचाओ हे सतवंती नारी ।
पापी का संग तजें जान गर अबके बचे हमारी ॥

२८६

तिलकासुन्दरी को सब पर दया आना और देवियों से उनके छोड़ने के लिये अरदास करना ॥

(चाल क़वाली) मैं नहीं पहनूं पिया प्यारे पुरानी चूड़ियां ॥

१. छोड़दो अय देवियों सारे महाजन छोड़दो ।
यह तो सब निर्दोष हैं इन सबको फौरन छोड़दो ॥
२. इस बधुदत्त को भी तुम कहने से मेरे छोड़दो ।
गो खतावारों में है पापी है दुर्जन छोड़दो ॥
३. मेरा देवर है मेरे बालम का छोटा भाई है ।
बस दया आती है मुझको इसका दामन छोड़दो ॥
४. यह पशेमां आप हो जाएगा अपने पाप से ।
पा चुका काफी सजा अब इससे अन बन छोड़दो ॥

५. जोड़कर मैं हाथ तुमसे अर्ज़ करती हूं यही।
छोड़दो यह सबके सब सारे परोहण छोड़दो ॥

२६०

देवियों का वधुदत्त को हर एक मिसरे पे जूते मारना और लानत
मलामत करके छोड़ देना ॥

(चाल) घर से यां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

चक्रेश्वरी—अय वधुदत्त तेरी ज़ात पे लानत लानत।
वेशरम इन तेरी हरकात पे लानत लानत ॥

जलदेवी—कम असल है तेरे मां वाप पे लानत लाखों।
अय कमीने तेरी इस वात पे लानत लानत ॥

चक्रेश्वरी—देख करती है दया तुझपे सती तो फिर भी।
तू सताए तेरी औकात पे लानत लानत ॥

जलदेवी—यां समन्दर में डुवाते पय सती आज्ञा से।
छोड़ती हूँ जा तेरी मात पे लानत लानत ॥

२६१

दोनों देवियों का सती तिलका सुन्दरी को धीरज बंधाकर चला जाना
और ड्रापसीन गिरना ॥

(गाना चाल नाटक) पहिले से दिलको संभालिये हो प्यारी करें कुछ ॥

धीरज को दिलसे न हारिये हो प्यारी चिन्ता हटा।
जो दुख आयेंगे—सगरे टर जायेंगे ॥

संजम ध्यान लगाइये हो प्यारी--चिंता हटा ॥
धीरज को दिलसे न हारिये हो प्यारी चिंता हटा ॥
कलमल हारी-सब हितकारी ।
सत्य शील है सुखकारी ॥

तेरा संकट दूर करेगा—
मन श्रद्धान लगाइये हो प्यारी चिंता हटा ॥
धीरज को दिलसे न हारिये हो प्यारी चिंता हटा ॥

(देवियों का चला जाना)

इति न्यामत सिंह रचित कमलश्री नाटक
का तीसरा अंक समाप्त ॥

❀ श्रीजिनेन्द्रायनमः ❀

सती

कमलश्री नाटक

—:—(❀)—:—

चौथा अंक

दृश्य	विषय
२८	वधुदत्त का हस्तनागपुर में पहोंचना
२९	वधुदत्त के ब्याह की तय्यारी
३०	भविषदत्त का अंगूठी लेकर आना और जहाज न देखकर हैरान होना
३१	भविषदत्त की याद में कमलश्री की बे क़रारी और भविषदत्त का हस्तनागपुर में आना
३२	रास्ते में धनदेव का कमलश्री से मिलाप
३३	कमलश्री का तिलका सुन्दरी से मिलाप
३४	भविषदत्त का हस्तनागपुर आना व राजा से मिलना
३५	राजा का वधुदत्त की शरारतों की छानबीन करना
३६	राजा का वधुदत्त व नकुला को सज़ा देना व तिलका सुन्दरी का भविषदत्त से मिलना और धनदेव का कमलश्री से क्षमा मांगना—

श्रीजिनेन्द्रायनमः

(सरूपा के महल का परदा)

२६२
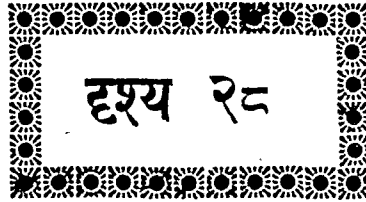
वधुदत्त का अपने घर पहुंचना और अपनी माता सरूपा से वातचीत करना और तिलकसुन्दरी का रोना और चुप रहना (वार्तालाप)

स०—बेटा बधुदत्त यह स्त्री जो तुम लाये हो रोती क्यों है?

ब०—माता यह अपने घरको याद करती है।

स०—यह बोलती क्यों नहीं ?

ब०—एक तो यह हमारी बोली नहीं समझती दूसरे उस देश में कंवारी कन्या किसी पर मनुष्य से नहीं बोला करती उस देश में कान और शरम बहुत है।

स०—यह जब से आयी है न कुछ खाती है न पीती आखिर कारण क्या है ?

ब०—अभी छोटी उमर है अपने मां बाप को याद करती है।

(शैर)

बहलते बहलते बहल जायगी।
जो मन में शरम है निकल जायगी॥

स०—बेटा यह किसकी लड़की है ?

व०—यह रत्नद्वीप की राजदुलारी है।

स०—इसका क्या नाम है ?

व०—तिलका सुन्दरी ।

स०—तुमको यह किस तरह मिली ?

व०—राजा ने मेरी होशियारी और चतुराई देखकर मुझे दी है।

स०—इसका पाणिग्रहण (विवाह) वहां ही क्यों नहीं हुआ ?

व०—मुझे घर आने की जल्दी थी।

स०—अब क्या करना है ?

व०—बस जल्दी विवाह की त्यारी करनी चाहिये विवाह होते ही सब काम ठीक हो जायगा (शेर)

हो जायगी शरम सभी दो चार दिन में दूर।
मां बापको भी भूल यह जायगी फिर जरूर॥

स०—अच्छा बेटा लो आज ही तेल बान किये देती हूं-सातवें दिन विवाह भी हो जायगा।

दृश्य २९

(विवाह के मंडप का परदा)

२९३

तिलकासुन्दरी के तेल बान की तय्यारी होना और [illegible] की स्त्रियों का
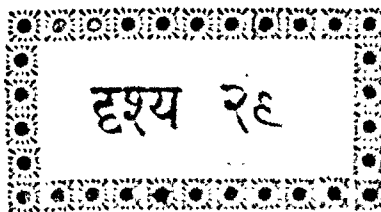
जमा होना और आपस में बातचीत करना और सरूपा का लज्जित होना ॥

१ स्त्री–(दूसरी स्त्री से तिलकासुन्दरी के सर की तरफ़ इशारा करके) (दोहा)

सखी देख या नार के लगा शीश में तेल ।
सो ऐसा होता नहीं बिन साजन के मेल ॥

२ स्त्री– (दोहा)

हाथों मैंहदी रच रही नैनों रंग बिशेख ।
बिलसी भुगती बालमा यामें मीन न मेख ॥

३ स्त्री– (दोहा)

पोरी पोरी सज रहे छल्ले सखी अनेक ।
अंगुरी में मुद्री सजे दर्शावे पती टेक ॥

४ स्त्री– (दोहा)

मोतियन माँग भरी हुई नकमें बेसर सार ।
गुंधी हुई चोटी लखो ब्याही का शृङ्गार ॥

५ स्त्री– (दोहा)

सखियो निःसंदेह है यह ब्याही हुई नार ।
न जाने क्या भेद है तेल बान दो बार ॥

(सबका आश्चर्य करना)

स०–(लज्जित होकर और तिलका सुन्दरीके सर पर जल्दी से पानी का भरा हुआ कलश डालकर)

(दोहा) सखियो है उस देश में कुछ ऐसी ही रीत ।
न्यारे न्यारे देश में न्यारी न्यारी रीत ॥

६ स्त्री—(दोहा)

चलो सखी घर आपने दीखे सब विपरीत ।
हमें पराई क्या पड़ी रीत होय या कुरीत ॥

(सबका चला जाना)

दृश्य ३०
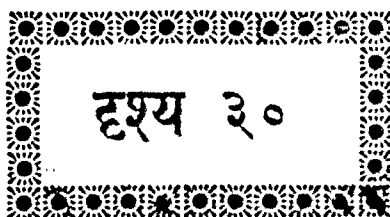
(समुद्र के किनारे का परदा)

२६४

भविष्यदत्त का अंगूठी लेकर वापिस आना जहाजों को किनारे पर न देखकर घबराना और हैरान होना (वार्तालाप व शैर)

हा बदकार बधुदत्त फिर धोका दिया (शैर)

१. भले आखिर भले हैं कुछ बुराई हो नहीं सकती ।
बदों से पर कभी हरगिज भलाई हो नहीं सकती ॥

२. भलाई करता जाता हूँ बुराई होती जाती है ।
इधर नेकी उधर से बेवफाई होती जाती है ॥

२६५

भविष्यदत्त का अफसोस करना (वार्तालाप व शैर)

बधुदत्त पहिले तूने मुझको अकेला छोड़ा भाई ने मूंह

मोड़ा मैंने तुझको धन दौलत देकर तेरा सम्मान किया क्या इसका यही बदला है तू मुझको पहाड़ों में छोड़कर चला गया- शोक महा शोक (शैर)

१. समझता था कि अब देखूंगा कुछ आराम दुनिया में।
मगर अब होगया मालूम था झूटा गुमां अपना ॥
२. उधर तिलका तड़पती है इधर व्याकुल है मेरा दिल।
मेरी माता नहीं अब पा सकेगी कुछ निशां अपना ॥

२९६

भविषदत्त का रोते हुवे कर्मों की शिकायत करना ॥
चाल—अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का खौफ़ो खतर ही नहीं।

१. अय कर्म तेरे दिल में न अर्मां रहै।
जितना जी चाहे तेरा रुला ले मुझे ॥
तुझे है जिस क़दर और सताना मुझे।
खोलकर अपना दिल तू सताले मुझे ॥
२. होगी वहांपे तड़पती वह तिलका सती।
वह काश अपनी हालत सुनाले मुझे ॥
प्राण दे देगी माता मेरी एक दम।
ऐसे दुख से तो ज़ालिम बचाले मुझे ॥
३. मैंने समझा था अब सुखमें बीतेंगे दिन।
ढंग आते नज़र और निराले मुझे ॥
संगदिल तुझसा भी और न होगा कोई।
कहो किसके किया है हवाले मुझे ॥

२६७

भविषदत्त का अपने दिलको शान्त करना (वार्तालाप व शेर)

खैर भविषदत्त जो होता है अपने कर्मों का फल है किसी को दोष देना लाहासिल है—(शेर)

१. लिखा तकदीर का काटे से हरगिज़ कट नहीं सकता।
 जो कुछ होना है होता है हटाये हट नहीं सकता।
२. किसी को राज मिलता है कोई महलों में सोता है।
 कोई बेहाल जंगल में पड़ा बेज़ार रोता है।
३. कहावत है कि जैसा जो कोई करता है भरता है।
 तो फिर शिकवःशिकायत अय भविषदत्त किसकी करता है।

२६८

भविषदत्त का जिनेन्द्र भगवान का ध्यान लगाना और स्तुति करना ॥
(चाल कव्वाली) विपत में मनस के संभाली कमलिया ॥

१. प्रभु वीतरागी हितंकर तुही है।
 तुहि कृपासिंधु दयाकर तुही है ॥
२. चराचर का हामी तुही सबका स्वामी।
 प्रोपकारता का समन्दर तुही है।
३. अहिंसा का पैग़ाम तूने सुनाया।
 विलाशक जगत का जिनेश्वर तुही है।
४. न रागी न द्वेषी तुझे सब बराबर।
 हितैषी जहां में सरासर तुही है ॥

५. तु है सच्चिदानन्द कल्याण रूपी ।
अवश्य सतगुणों का हां सागर तुही है ॥
६. अपूरब दया मय है बांणी तुम्हारी ।
मुक्त जानेवालों का रहबर तुही है ॥
७. अंधेरा जहालत का तूने हटाया ।
सिदाकृत का बेशक दिवाकर तुही है ॥
८. धरम का धुरंधर है शिव मग का नेता ।
तुही सार है सबसे बेहतर तुही है ॥
९. लगा मुझको रस्ते कि भूला फिरू हूं ॥
शरण हूं मैं तेरी कि बरतर तुही है ॥

२९९

इन्द्र का भेजा हुआ मानभद्र-(इन्द्र का सेवक) का ऊपर से आना
और भविषदत्त की तसल्ली करना—(वार्तालाप व शैर)

भविषदत धीरज धर ग़म न कर मैं तुम्हारी सेवा को हाजिर हूं (शैर)

१. तख्त इन्दर का हिलाया है तेरे रोने ने ।
तेरी इमदाद को उसने यहां भेजा है मुझे ।
२. तू अगर चाहे तो तिलका से मिला दूं तुझको ।
गर मिले मांसे तो चल घर पे पहुंचा दूं तुझको ॥

२००

भविष्यदत्त का इन्द्र और मानभद्र को धन्यवाद देना और मानभद्र का चलने के लिये विमान तय्यार करना और दोनों का गजपुर की तरफ़ रवाना होना ॥ (शेर)

भ० इन्द्र का ममनून हूँ और आपका मशकूर हूं ।
घर मुझे पहुँचाइये घर से पड़ा मैं दूर हूं ॥
मान० लीजिये तय्यार है यह आप की ख़ातिर विमान ।
बैठिये इसपर कि पहुंचा दूं तुम्हें घर महरबान ॥

(कमलाश्री के महल का परदा)

२०१

कमलाश्री का भविष्यदत्त की याद में अपनी सखी चन्द्रावली के सामने रोते हुये नज़र आना ॥

(चाल पंजाबी जंगला नाज़ नखरा) [illegible] ॥

सखी री मेरा प्यारा कुंवांर नहीं आया ॥
कुंवांर नहीं आया—कुंवांर नहीं आया ॥सखी०(टेक)
१. दिल का सहारा आंखों का तारा ।
सखी री मेरा प्यारा—भविष्यदत्त प्यारा ॥सखी०

२. सब जन आये-मन हरषाये ।
सखी री बधु आया—भविष नहीं आया ॥सखी०
३. ना जानूं किस देश मंझारा—
ना जानूं मेरा प्यारा-भंवर बिच डारा ॥ सखी०

३०२

चन्द्रावली का कमलश्री को धीरज बंधाना और मुनि का वचन याद दिलाना ॥
(चाल रसिया—रियासत भरतपुर बृज का)

देखो सखी मुनि का बचन ज़रा तुम करलो मन में याद ।
करलो मनमें याद शोक तज रख धीरज दिलशाद ॥देखो०-टेक
१. बधुदत्त जिस दिन आया था ।
बहुत दरब संग में लाया था ।
देखा नहीं भविषदत्त तुमरे मनमें हुआ बिषाद ॥
२. सुविनेय अर्जिका धीरज देके ।
गई मुनि पे तुमको लेके ।
पूछा था आने की भविष की कितनी है मर्य्याद ॥
३. अवध धार ऋषि ने दरशाया ।
एक मास अन्तर बतलाया ॥
शुकल पंच वैसाख भविष आवेगा करलो याद ॥
४. तुमने करी प्रतिज्ञा मन में ।
जो सुत नहीं आवे उस दिन में ॥
दिक्षा में हो होर तजूं घरबार तजूं परमाद ॥

५. श्रुत पंचमी का वृत धारा।
जो तुमने सो करा सहारा॥
अवश्य मिले वृतका फल होता कभी नहीं वरबाद॥

६. आ पहुँचा है आज वही दिन।
शुक्ल पंचमी धार धरो मन॥
वचन न झूटे होंय मिले सुत आधी रात के बाद॥

३०३

कमलश्री का भविषदत्त को फिर याद करना॥
(चाल बहरेतवील) अरे रावण तू धमकी दिखाना किसे,
मुझे मरने का धोका खतर ही नहीं॥

१. अय भविषदत्त बता तू कहां रह गया।
मुझे सूरत तू अपनी दिखा तो सही॥
तुझे बेटा बधुदत्त ने छोड़ा कहां।
ज़रा इतना तु आकर बता तो सही॥

२. मुनि राज ने मुझको बताया था जो।
वह भी आज का आ गया दिन है मगर॥
क्या हुआ अब तलक जो तू आया नहीं।
कैसी विपता में है तू जिता तो सही।

३. बधुदत्त के संग में जाना नहीं।
उसकी भूल के बातों में आना नहीं॥
मैंने तुझसे कही थी यही या नहीं।
ज़रा बेटा तू मुझको सुना तो सही॥

४. मैंने अब तक तो मनको ठैराये रखा।
इसको धीरज दिखा समझाये रखा ॥
पर जो सब आगये एक तू ही रहा ॥
किस तरह दिल रखूं तू सुझा तो सही ॥

५. तूने माना नहीं हाय मेरा कहा ॥
करके ज़िद तू वधुदत्त के संग में गया ॥
आख़रिश माजरा तुझपे गुज़रा है क्या ।
हाय इतना तु मुझको बता तो सही ॥

६. तू तो कहती है सच सखी चन्द्रावली ।
हों न झूठे मुनी के बचन भी कभी ॥
पर मेरा दिल जो अब मेरे वश में नहीं ।
क्या करूं अच्छा तूही बता तो सही ॥

३०४

भविषदत्त के विमान का आकाश में नज़र आना । चन्द्रावली और कमलश्री का वात चीत करना । विमान का नीचे उतरना और भविषदत्त का विमान से उतर कर माता के चरणों में प्रणाम करना ॥ (वार्तालाप व शेर)

चं०—कमलश्री देखो आकाश में कैसा प्रकाश हो रहा है ।

क०—हां हां यह तो इधर को ही आ रहा है ।

भ०—(विमान से उतर कर) (दोहा)

हे माता तुम देखकर मिला स्वर्ग का राज ।
चरण स्पर्श आपके जनम सफल भयो आज ॥

३०५

कमलश्री का भविषदत्त को छाती मे लगाना और प्यार करना और रोना ॥
(चाल नाटक) पिहरवा उठी कलेजे पीर ॥

प्यारा कहां लगाई देर । सितारा कहां लगाई देर ।
नैनों का तारा–घरका उजारा ।
तड़पूं थी बाट निहार ॥प्यारा०(टेक)

(दोहा)

तड़पूं थी तुझ दरश को जैसे जल बिन मीन ।
अब हृदय में कल पड़ी सब कल मल भई छीन ॥
अरे लाला कहां लगाई देर ।
मैं वारी कहां लगाई देर ॥
प्राणों से प्यारा–मेरा सहारा–
देखूं थी आँख पसार ॥ प्यारा०

३०६

भविषदत्त का माता को तसल्ली करना ॥
(चाल कव्वाली) [illegible] ॥

१. विपत के भंवर में थी नय्या हमारी ।
खबर कैसे लेता मैं माता तुम्हारी ॥
२. न माना जो मैंने था कहना तुम्हारा ।
मुसीबत पड़ी इस लिये मुझ पै भारी ॥
३. मगर इसमें अब रंज की बात क्या है ।

जो आफ़त पड़ी टल गई सरसे सारी ॥
४. न घबराओ माता न कुछ ग़म करो तुम ।
करूंगा मैं पूरी मुरादें तुम्हारी ॥
४ प्रतिज्ञा बवक़्ते सफ़र की जो मैंने ।
दिखादूंगा माता निभा करके सारी ॥
६. भविषदत्त के होते तुम्हें फिकर क्या है ।
करूंगा दिलोजां से ख़िदमत गुज़ारी ॥

३०७

कमलश्री और भविषदत्त की बात चीत ॥ (वार्तालाप-शेर)

क०-हुई सारी पूरी उम्मीदें हमारी
लखी मैंने बेटा जो सूरत तुम्हारी ॥
पड़ी क्या थी आफ़त बताओ तो मुझको !
मुझे हो रही है बड़ी बेकरारी ॥
भ०-सुनाता हूं माता हक़ीक़त मैं सारी ।
मगर पहिले इक बात सुनलो हमारी ॥
बधुदत्त यहां आ गया या नहीं है ॥
अगर आ गया है तो क्या वह यहीं है ?
क०-हां बेटा उसको तो आये कई रोज़ हुये और यहाँ ही है ।
भ०-आपने उसकी क्या क्या बातें सुनी हैं ?
क०-सुना है बधुदत्त और सब महाजन बहुतसा धन कमा कर लाए हैं ।

भ—क्या और भी कोई बात सुनी है ?

क—यह भी सुना है कि बधुदत्त एक राजकुमारी लाया है जिसकी बधुदत्त के साथ सातवें दिन शादी होगी पर वह लड़की रात दिन रोती रहती है। न जाने इसका क्या कारण है।

भ—माता बधुदत्त बड़ा धोके बाज़ है।

क—बेटा उसने क्या धोका किया।

भ—क्या कोई एक धोका किया।

क—मैं तुझे इसी लिये उसके साथ जाने से रोकती थी।

(शेर)

भला बेटा मुझको बता तो ज़रा।
बधुदत्त ने क्या तुझको धोका दिया॥

भ—बस माता ! रहने भी दो। कोई बताने की बात हो तो बताऊं—

क—भविष मेरा तो दिल अधीर हुआ जाता है जल्दी अपना सारा हाल सुना।

भ—अच्छा माता सुनिये।

३०८

भविषदत्त का अपने सफर का हाल सुनाना॥
(चाल कव्वाली) कौन कहता है कि मैं भी [illegible] में हूँ॥

१. पहुँचे मैनागिर पे जो हम आपसे होकर जुदा।

छोड़कर मुझको बधुदत्त वहां अकेला चल दिया ॥
२. मैं पहाड़ों में फिरा हैरां परीशां हर तरफ़ ।
भूका प्यासा पत्थरों में सरको टकराता हुआ ॥
३. और फिर भयानक गुफा पहुँचा तिलकपुर शहर में ।
जो भरा ज़र माल से था और पड़ा सुनसान था ॥
४. यक बयक तक़दीर जागी और लड़ी क़िस्मत मेरी
मिलगई वहां तिलकासुन्दर इक महाजन की सुता ॥
५. जीत इक दाने को मैंने फिर वह ब्याही सुन्दरी ।
था न उजड़े शहर में हरदम कोई जिसके सिवा ॥
६. सब महाजन और बधुदत्त आगे जाकर लुट गये ।
लुट लुटाकर लोटकर आए हर इक मुझसे मिला ॥
७. धन बहुतसा देके फिर मैंने तसल्ली उनकी की ।
फिर इरादा सबने अपने घरके आनेका किया ॥
८. मुझको तिलकाने कहा जब सब परोहण पर चढ़े ।
रहगई मेरी अंगूठी शहर में लाओ ज़रा ॥
९. मैं गया लेने अंगूठी चल दिया पीछे बधु ।
इस तरह से फिर अकेला मैं वहीं पर रह गया ॥
१०. मैं जो रोया हिल गया इन्दर का आसन यक बयक ।
हुक्म से इन्दरके इक सुर आके मेरे से मिला ॥
११. बस वही सुर अब विमां अपने में बिठला कर मुझे ।
चैन से लाया यहां और यूं मिला दरशन तेरा ॥

३०९

कमलश्रीका पुत्र के सफर का हाल सुनकर हैरान और परेशान होना और भविषदत्त को समझाना ॥

(चाल) मेरे मौला बुला लो मदीने मुझे।

तूने कैसी कहानी सुनाई मुझे।
जिसको सुनकरके हैरत सी आई मुझे ॥(टेक)
१. तू पहाड़ों में फिरा भूका पियासा रात दिन ॥
मैं यहां घर में तड़पती थी हमेशा तेरे बिन ॥
तूने नाहक यह विपता दिखाई मुझे ।
२. क्यों गुफामें तू गया था डालकर जोखों में जान ।
दुख पहुँच जाता तुझे मेरे निकल जाते प्राण ॥
जीने देती न तेरी जुदाई मुझे।
३. क्यों बधुदत्त पर किया तूने भरोसा ऐतबार।
तू तो कहता था मुझे मैं हूं बड़ा ही होशियार ॥
तुझमें बुद्धि नज़र कुछ न आई मुझे।
४. खै़र अबके तो जो कुछ होना था वह सब हो चुका।
फिर न करना भूलकर भी चूक ऐसी देखना ॥
बस है दरकार तेरी भलाई मुझे ।

३१०

भविषदत्त का अपनी माता को तसल्ली देना ॥

(चाल) मुझसे क्या पूछो हां यह क्या हो गया।

१. ग़म न कर माता कि क्या क्या हो गया।
कर्म में जैसा लिखा था होगया॥
२. क्या हुआ मुझ पर मुसीबत गर पड़ी।
आख़री अंजाम अच्छा हो गया॥
३. मैंने तो की थी बधु से नेकियाँ।
उलटा वह बदख़्वाह मेरा हो गया॥
४. धीर धर माता भुलादे रंजोग़म।
अब मेरा सीधा सितारा हो गया॥
५. देखलेगी तू कोई दिनमें अभी।
सब तेरा मनका विचारा होगया॥

३११

कमलश्री का भविषदत्त से तिलकासुन्दरी के बाबत
बात चीत करना (वार्तालाप व शैर)

क–बेटा वह तिलका सुन्दरी कहां है?
भ–माता कहां बताऊं–
क–आख़िर कहां छोड़ा–
भ–(शेर) है कहां पर वह सती तुमको बता सकता नहीं।
क्या हुआ क्योंकर हुआ कुछभी सुना सकता नहीं॥
क–तेरे घबराये हुये बचन से दिल बेचैन हुआ जाता है–
धीरज छूटा जाता है–जो माजरा है जल्दी बतला!

भ–माता वधुदत्त बड़ा अधर्मी और बेवफ़ा है–(शेर)

वह यही तिलका है जिसके साथ शादी कर वधु ।
कर रहा है अपना मुंह काला मिटा कर आबरू ॥

क–हा ! वधु तू ऐसा पापी-(शेर)

धर्मपत्नी भाईकी तिलका तेरी माता समान ।
किस तरह तू कर रहाहै इससे शादी बदगुमान ॥
क्या धरम जाता रहा और आगई परलय अभी ।
ज़ात पर बट्टा लगाया और खोई लाज भी ॥

३१२

सरूपा की बांदी का आना और कमलश्री को वधुदत्त की रसमें शादी में शामिल होने के लिये संदेशा देना और कमलश्री और भविषदत्त का बात चीत करना ॥

बां–(कमलश्री से (शेर)

है वधू की रसमें शादी और बुलाया है तुम्हें ।
यह सरूपा ने संदेशा देके भेजा है मुझे ॥

क– (शेर)

सखी सुन लिया है संदेशा तेरा ।
मैं आऊंगी गर वक्त मुझको मिला ।

(बांदी का चला जाना)

भ–माता यह कौन थी और क्यों आई थी ।

क–तुम्हारी मावसी सरूपा की बांदी--वधुदत्त के विवाह का बुलावा देने आई थी ॥

क–माता तुम कल सुबह ज़रूर जाना–(वस्त्र और आभूषण देकर) (शैर)—

१. तिलकपुर के बस्तर आभूषण यह लो।
पहन करके तिलका से जाकर मिलो॥

२. यहलो नाग मुद्री भी पहनो ज़रा।
इसे तुम दिखा देना तिलका को जा॥

३. सिवा तिलकासुन्दरी के मेरी खबर।
किसी को न होवे सरूपा के घर॥

४. इशारों में तुम करना तिलका से बात।
अंगूठी दिखाना दिखा अपना हाथ॥

क–अच्छा बेटा ऐसा ही करूंगी। अब बहुत रात होगई तू परदेश से आया है ज़रा आराम कर।

(दोनों का चला जाना)

दृश्य ३२

(सरूपा के महल के रास्ते का परदा)

३१३

कमलश्रीका शृंगार करके सरूपा के महल की तरफ़ जाना॥ रास्ते में धनदेव सेठ का कमलश्री को शृंगार किये हुए देखकर मोहित

हो जाना और कमलश्री से प्रेम रूप बातचीत करना।

ध--(शैर)

१. बनी सत धर्मकी पुतली वदन सांचे में है ढाला।
गले मुतियन की है माला कि है तारों का उजियाला॥
२. तेरा श्रृंगार प्यारी सारी नगरी से निराला है।
तुम्हारी छब निराली है तेरा जोबन है मतवाला॥

क- (शैर)

१. सरूपा तेरी प्यारी है तू उसका चाहने वाला॥
मेरी क़िसमत है सोती कौन मेरा चाहने वाला॥
२. तुम्हें ग़ैरों से उलफत थी मेरी सूरत से नफरत थी।
तू क्योंकर बन गया है आज ऐसा चाहने वाला॥

ध- शैर)

तेरी मन मोहनी सूरत तेरी बांकी अदा प्यारी।
खड़े हैं इंतज़ारी में तेरा दीदार देखेंगे॥

क--(शैर)

अगर बांकी अदा होती मेरा अपमान क्यों होता।
निभायेंगे कहाँ तक ग़ैर अच्छा हम भी देखेंगे॥

ध--(दोहा)

१. तन मन धन धर संपदा डारूं तुम पे वार।
नेक प्रेम कर देखिये दीजे रास निवार॥
२. गजगामनी मृग लोचनी काम लता गुणधाम।
चंदन चोकी लीजिये करो नेक आराम॥

(चौकी देना)

कं.—(दोहा)

१. चोकी उनको दीजिये जापर तुमरी मेर।
हम बिर्हन पीहर बसें करें सदा दिन टेर॥
२. टूटा दर्पण ना मिले मिले न टूटा मन।
आग लगे तेरे महलको जरो तिहारो धन॥
३. मान घटे आदर घटे जहां न अपना सीर।
मालव वहां न बैठिये चाहे कंचन बरसो नीर॥

(चौकी के ठोकर मार कर आगे चलना)

ध—(हाथ पकड़कर) हे प्राण प्यारी! अब मेरा दोष क्षमा करो अपने हृदय में ज़रा प्रेम का भाव धरों॥

३१४

कमलश्री का हाथ छुड़ाकर और नाराज़ होकर पती को जवाब देना॥
(चाल नाटक) काहे रुठ रहे हो सांवरिया॥

काहे हाथ गहो हो साजनवा।
जाओ वहां ही जहां मोहरी सोतनवा॥काहे (टेक)

१.—(दोहा)

बिन कारण अपमान कर दीनो हमें दुहाग।
लाए सरूपा ब्याह के धरकर मनमें राग॥
२. कंच शिला मोती रतन चीनी अरू मन क्षीर।
सातों टूटे ना मिलें करो लाख तदबीर॥
छोड़ो हाथ हमारो साजनवा।

सारो म्हारो विरह में खोयो जोबनवा । काहे

(हाथ छुड़ाकर चला जाना)

(सरूपा के महल का परदा)

३१५

कमलश्री का सरूपा के पास पहुंचना । आपस में बातचीत करना तिलकासुन्दरी से मिलना और इशारों में बात करना और हाथ में पहनी हुई नागमुद्री दिखाना ॥ (वार्तालाप)

स–आओ बहिन कमलश्री प्रसन्न तो हो–

क–हां बहिन जो दिन गुज़रें सो अच्छे हैं–बहिन आप तो प्रसन्न हैं ।

स–हां बहिन आपकी कृपा है । धन्य है आज तुमने दर्शन तो दिये तुम्हारा तो मिलना ही दुर्लभ होगया ।

क–बहिन कहां मिलना हो । आठ पहर घर में पड़ा रहना न कहीं आना न जाना आज तुमने बुलाया तो मिलना हो गया ॥

स–बहिन यह तिलकासुन्दरी एक राजकुमारी है जो वसुदत्त रतनद्वीप से लाया है–अब इनका विवाह है पर

यह तो किसी से न बोलती है न चालती न खाती है न पीती रात दिन मैले भेष बिखरे केश रोती रहती है।

क-(तिलकासुन्दरी से) क्यों बहू क्या बात है-

ति-(कमलश्री को अपनी असली सास समझ कर और उसको प्रणाम करके) माता कुछ भी नहीं—(शैर)

लीला जगत की देख रही हूं मैं रात दिन।
करमों को रो रही हूं नहीं चैन एक छिन॥

क-बेटी इतना रंज न करो जरा मनमें धीर धरो--धीरे धीरे सब काम ठीक हो जायगा (भविष्यदत्त की तरफ इशारा करके) अब तो तुम्हारे पुन्य का सूर्य अपने शुभ घर में आ गया है॥

ति-(इशारा करके) आ गया?

क-हां बेटा आगया। (उंगरी में पहने हुये नागमुद्री दिखा कर) (शैर)

देखो यह शोभा महल की तेरे लिए बनी।
दौलत से घर भरा हुआ है कुछ कमी नहीं॥

ति-(इशारा करके) अच्छा जी आपको मुबारक हो आप के होते मुझे क्या रंज है— शैर)

सरताज सूर्य मेरा शुभ घरमें आ गया।
सब कुछ है घर में फिर मुझे खतरा रहा है क्या॥

स-बहिन कमलश्री धन्य है आपका शुभ आगमन आज यह बोली तो सही-इसको यहां आए इतने दिन हो

गए बोलना तो अलग आंख उठा कर भी नहीं देखा ।

क—बहिन यह अभी बच्चा है धीरे धीरे सब बोलने लगेगा ऐसी जल्दी भी क्या है (शेर)

आज कल में देखना इसका बहल दिल जायगा ।
कुछका कुछ दोचार ही बस दिनमें गुल खिल जायगा ॥

(तिलकासुन्दरी का गुल खिल जाने का शब्द सुन कर हंसना)

स—बहिन तुम हररोज़ एक बार आजाया करो तुम्हारे कारण बहू का भी दिल लगा रहेगा ।

क—अच्छा बहिन अब तो मैं जाती हूं बहुत देर होगई—

(चला जाना)
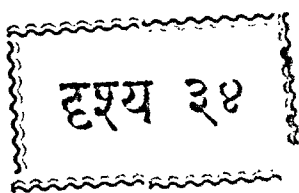
दृश्य ३४

(राजा के खास दरबार का परदा)

३१६

भविषदत्त का राजा से स्वयं पर खास दरबार में मिलना और बन्धुदत्त की धोकेबाजी का जिकर करना राजा का बन्धुदत्त से नाराज हो जाना और इस बात की छानबीन करने का इकरार करना ॥

भ—(राजा को प्रणाम करके और रत्नों का थाल आगे रख कर) महाजन को प्रणाम ॥

राजा--आइये कुमार भविषदत्त कंवर जा प्रसन्न हो ?

भ--महाराज की कृपा से सब प्रकार आनन्द हैं।

राजा--कहिये कंवरजी आज कैसे आना हुआ।

भ--(हाथ जोड़ कर) महाराज के हजूर में आज कुछ निवेदन करने को आया हूं। यदि आज्ञा हो तो निवेदन करूं--

राजा--हां आज्ञा है कहिये।

भ--महाराज आप के नगर में एक बहुत बड़ा अन्याय हुआ है हजूर इसका न्याय फरमावें।

राजा--अवश्य ऐसा ही होगा (गुस्से से) हैं। मेरी नगरी में अन्याय किसने क्या किया। कहिये।

भ--महाराज आप के नगर में श्री धनदेव सेठ का जो बधुदत्त पुत्र है वह प्रदेश में व्यापार करने गया था--

राजा--हां हां हमको मालूम है ॥

भ--वह बहुत सा धन और एक स्त्री अपने साथ लाया है उसे बुला कर पूछा जाये कि किस देश में और किस व्योपार में उसने धन कमाया और क्यों बिना व्याहे उस स्त्री को लाया जिसके साथ वह अब शादी करना चाहता है--इसमें कुछ महाजन भी उसके साथ हैं ॥

राजा--अच्छा हम आज ही उन सबको दरबार में बुलाते हैं और छान बीन करते हैं। जो दोषी होगा उसको तीव्र दंड दिया जायगा।

भ—महाराज दरबार के समय मुझे दूसरे कमरे में छिप जाने की आज्ञा दी जाये।

राजा—अच्छा आज्ञा है।

(राजा व भविषदत्त का चला जाना)

दृश्य ३५

(राजा के आम दरबार का परदा)

३१७

राजा का आम दरबार करना और धनदेव सेठ, बधुदत्त और सब महाजनों को दरबार में बुलाना भविषदत्त का एक कमरे में छुप जाना और राजा का छान बीन करना ॥

राजा—(दूत से) जाओ धनदेव सेठ व बधुदत्त और सब महाजनों को जो बधुदत्त के साथ प्रदेश में गये थे-बुला लाओ—

[दूत का चला जाना]

दूत—(वापिस आकर) महाराज धनदेव सेठ कहता है कि मैंने दरबार से एक महीने की आज्ञा ले रक्खी है। बधुदत्त का विवाह होजाने के बाद हाजिर हूंगा।

राजा—(कोतवाल से) कोतवाल साहिब देखो आज

हमको एक आवश्यकीय बात का फ़ैसला करना है आप सबको फ़ौरन हाज़िर दरबार करें और शहर के पंचों को भी बुलाया जाये ।

(कोतवाल का चला जाना)

कोतवाल–(वापिस आकर और सबको पेश करके) हजूर यह हाज़िर हैं ।

राजा–बधुदत्त हमको कुछ संदेह हुआ है–तुम साफ़ साफ़ बतलाओ कि तुमने प्रदेश में धन किस तरह कमाया । और उस स्त्री को जिसके साथ तुम अब शादी करना चाहते हो क्यों कर बिना विवाहे लाये हो

ब–महाराज हम सबने अपना माल रतनद्वीप में बेचा और बहुतसा धन कमाया। यह स्त्री भी वहीं से लाया हूं घर आने की जल्दी थी इस कारण वहाँ शादी न कर सका। हमारी लक्ष्मी को देखकर और जल कर किसी ने हजूर से झूठी शिकायत की होगी इसकी छान बीन कर लीजिये ।

३१८

भविपदत्त का सामने आकर खड़ा होना और उसको देख कर बधुदत्त और उसके साथी महाजनों का घबराना और सबका सर नीचा हो जाना और राजा का उनसे हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

क्या बात है जो तुम सबके सब घबरा रहे हो और

तुम्हारे सर नीचे हो रहे हैं--मालूम होता है तुमने प्रदेश में जरूर कोई धोकाबाज़ी की है--बहतर है साफ़ साफ़ बयान करदो और किसी से मत डरो--वरना सबको तीव्र दंड दिया जायगा ॥

३१६

एक मारवाड़ी सेठ का बयान ॥

महाराज म्हे तो शाप शाप कहुंला--म्हारे कांई बांतरो डर तो छै नाई--सांच बोलवा में डरको के काम म्हे सारा सागे मैनागिर पर पहोंचिया-(बेट) फूल तोड़वा सहजना गया छा- ए बधुदत्तरे पेटरी बात कुण जाणे-या पापी ने म्हारे वास्ते तो बुला लियो और परोहण चला दियो-भविषदत्त लाई वठे एकलो रंडरोई (जंगल) मांई छोड़ दियो-आगे म्हारो सारो माल चोरां लूट लियो-पाछे नुकसान सह कर म्हे उल्टे बाहुड़े- लेको वठे मैनागिर पर भविषदत्त मिल गयो म्हे लोगानु धीरज बंधायो और म्हांको बहुतसो माल दियो पाछे लाई (बिचारा) भविषदत्त तो अपनी बहुरी संग्री लेबा गयो-अठे बधुदत्तरे मन मांई फेर पाप जाग्यो मोहणा चलो दियो और वैकी बहु भी सागे ले आयो-म्हे तो घणो रोलो मिचयो-रे पापी कैद तरो बेड़ो पार उतरसी-पण या पापी ने कोणी मान्यो--यो बधुदत्त पाप आत्मा है--म्हे तो साथे रह कर सारी बात आन्खों तरां देख लीनी--यो तो

डंड देवारो योग छै—आगे सर्कार री मर्जी—पर दूधरो दूध पाणीरो पाणी न्याओं करनो चहिये जी—

३२०

एक पंजाबी महाजन का बयान ॥

हां हजूर जो कुछ शाहने आख्या एह सब सच्ची गल है, महाराज बधुदित्ता ने भविषदित्तापे बड्डा जुलम कीता— एधी तीमी धोके नाल ले आया, इसदा सतर डिगाना चाहा असां एहनूं बहोता आख्या ते हिक्क ना सुनी तिलकासुन्दरी बड्डी सतर दी बंदी है; इह भविषदत्तादी असली बहुटी है, ओहनूं मिलनी चाहीदी है, बधुदित्ता बड्डा पापी है एहनूं बड्डी सजा मिलनी चाहे दी है; आगे हजूर दी मर्जी । पै एहदा न साफ़ होना चाहिदा है—

३२१

एक देसी महाजन का बयान ॥

सरकार सेठजी ने जो कुछ बयान किया है सब सच है बधुदत्त काबिले सजा है तिलकासुन्दरी भविषदत्त की ब्याही स्त्री है । रास्ते में बधुदत्त ने सती का शील डिगाना चाहा । सत्य के प्रभाव से जल देवियां आ गई उन्होंने बधुदत्त का काला मुंह किया और सब जहाज डूबने को तय्यार हो गये हम सबने सती से बीनती करी । सती ने हम सबको बचाया वरना वहीं समन्दर में खेत रहते ।

३२२

राजा का शहर के पंचों से सम्मति लेना।

अब नगर के पंच साहिबान आपने सेठ मुआमले को सुन लिया है। इसमें आपकी क्या राय है ॥

३२३

पंचों की सम्मति ॥

महाराज हमारी राय में बधुदत्त निःसंदेह दंड के योग्य है परन्तु इसने जो कुछ शरारत की है वह अपनी माता की सलाह से की है इस लिये उसको भी दंड होना चाहिये। इसमें धनदेव सेठ का कोई अपराध नहीं मालूम होता परन्तु सेठजी ने जो अपनी सेठानी कमलश्री को पीहर में निकाल रक्खा है यह अयोगय और धर्म विरुद्ध कार्य है इस बात का भी जरूर फैसला होना चाहिये। तिलकासुन्दरी सती है और भविषदत्त की ब्याहता स्त्री है यह भविषदत्त को मिलनी चाहिये। भविषदत्त अवश्य धर्मात्मा और गुणवान पुरुष है इसको सेठ की पदवी मिलनी चाहिये ॥

३२४

लिये भेजी थी उनका दरबार में आकर हाल सुनाना ॥

राजा०—मंत्रीजी सरूपा को भी दरबार में बुलाया जाय।

(एक दूत का रवाना होना)

म०—महाराज सरूपा भी हाज़िर है।

(सरूपा का आना)

चन्द्ररेखा०—(दरबार में आकर) महाराज आपके हुक्म से हमने तिलकासुन्दरी के शील की खूब परीक्षा की वह सब प्रकार से अपने शील पर दृढ़ है और भविषदत्त को ही अपना पती मानती है और इसी के प्रेम में रत है।

लच्छी०—(शैर)

सती वह है शुबा इसमें जरासा हो नहीं सकता।
डिगाये शील उसका कोई ऐसा हो नहीं सकता ॥

३२५

नोट:—राजा ने जो दो दूतियां तिलकासुन्दरी के शील की परीक्षा लेने के लिये भेजी थीं उन्होंने परीक्षा के तौर पर सती तिलकासुन्दरी से कहा था कि तुमको राजा ने बधुदत्त को दे दिया है और भविषदत्त को निकाल दिया है इस बात को सुन कर तिलकासुन्दरी को बड़ा कोप हुआ और मनमें विचार किया कि अब शरम करना नीति के विरूद्ध है और वह स्वमेव राजा के दरबार में कुछ निवेदन करने को चली गई और दिलमें प्रतिज्ञा की। कि यातो मुझे भविषदत्त मिल जायगा वरना दीक्षा ले जाऊंगी। जब तिलकासुन्दरी दरबार में पहुंची तो राजा ने उसका बड़ा सन्मान किया और फ़िर उसको रानियों ने महल में बुला लिया।

३२६

तिलकासुन्दरी का दरबार में पहुंचना और उसको दरबार में आते देख कर राजा का सती का सन्मान करना और आसन देना ॥

आओ बेटी तिलकासुन्दरी आसन पर बैठिये ।

(तिलकासुन्दरी का प्रणाम कर बैठ जाना)

३२७

तिलकासुन्दरी का राजा से निवेदन करना ॥

हे राजन ! मेरे धर्म पिता—मैंने चन्द्ररेखा व लच्छी की जुबानी सुना है कि आज आपने बधुदत्त के मुआमले का फैसला किया है और मुझको बधुदत्त पापी के हवाले किया है और भविषदत्त को निकाल दिया है यदि यह सच है तो बड़ा अन्याय हुआ और धर्म दुनिया से जाता रहा । परन्तु मैं महाराज की सेवा में इतना अवश्य निवेदन करूंगी—

(शेर)

१. दिल सोम का नहीं है जो चुटकी से तोड़ दे ।
   दुनिया में कौन है जो मेरे दिल को मोड़ दे ॥
२. हमारे शील पर गर आंख कोई भी उठावेगा ।
   ज़मी फट जायगी और आसमां चक्कर में आवेगा ॥
३. अगरचे दुखमें हूं और मेरा गरदिश में सितारा है ।
   मगर हूं सारे सतियों में कि संयम शील प्यारा है ॥

३२८

राजा का परीक्षा के तौर पर तिलकासुन्दरी से पूछना ।

तिलकासुन्दरी ज़रा शांत चित्त होकर यह बतलाओ कि क्या तुम बधुदत्त के साथ शादी करना चाहती हो ?

३२९

तिलकासुन्दरी का ज़रा गुस्से में जवाब देना ॥
(चाल नाटक) तुम कौन—तुम कौन हो साहिब आये कहां से,
किससे है पहिचान ॥

है कौन–है कौन जहाँ में,
देखे ज़रा भी, मेरी तरफ़ को आन ।
यह बातें यह बातें जब से,
सुनी हैं मैंने हो रहा दिल परीशान ॥ (टेक)

(दोहा)

जानूं हूं सरका ताज मैं इक भविषदत गुनवान को ।
समझूं पिता सुत भ्रात बराबर और सारे ज़हान को ॥
हां हां वह शौकतवाला–हां हां सत जिन बृतवाला ।
वहही मन मोहन वाला,
मेरे मन और नहीं कोई आन, अय जी शान । है कौन०

३३०

राजा का तिलकासुन्दरी की तसल्ली करना ॥

बेटी तिलकासुन्दरी हमने इस बात पर खूब गौर कर

लिया है। जो कुछ होगा न्याय होगा। घबराओ नहीं दिल में तसल्ली रक्खो।

३३१

तिलकासुन्दरी का जवाब॥

हे पिता! आप धर्मात्मा हैं–इस पृथ्वी के राजा हैं।

(शेर)

धर्म राजा का है करना न्याय इस संसार में।
न्याय की है आस मुझको आपके दरबार में॥

३३२

राजा का इस मुआमले पर इज़हारे नफ़रत करना और दरबार को दूसरे दिन पर फ़ैसला सुनाने के लिए मुलतवी करना और दरबार का बरख़ास्त होना॥

इस मामले पर हम इज़हारे नफ़रत करते हैं हमारे शहर में ऐसे अन्याय रूप कार्य का होना बड़ी शरमनाक बात है। (शेर)

बड़ा अफ़सोस है जो वैश भी यह काम करते हैं।
नगर को, राज को और क़ौम को बदनाम करते हैं॥

मंत्री जी अब दरबार बरख़ास्त किया जाय। कल फिर सबको दरबार में हाज़िर किया जाय कमलश्री को भी बुलाया जाय। हम आख़री हुक्म सुनायेंगे॥

दृश्य ३६

(राजा के आम दरबार का परदा)

३३३

दूसरे रोज दरबार होना । सब दरबारियों का बैठे हुवे नजार आना । राजा साहिब का तशरीफ लाना । धनदेव सेठ, कमलश्री, बधुदत्त सरूपा, भविषदत्त, तिलकासुन्दरी और सब महाजनों और नगर के पंचों का दरबार में हाजिर होना और राजा साहिब का हुक्म सुनाना ॥

हमने इस झगड़े को आदि से अन्त तक सुना शहर के पचों की भी राय ली और खुफ़िया तौर पर भी (गुप्तरीति से) छान बीन करली है। अब अलग अलग हर एक व्यक्ति को पेश किया जाय ताकि उसको आखरी हुक्म सुना दिया जाए और हमारे हुक्म की हमारे सामने दरबार में ही तामील की जाये।

३३४

तिलकासुंदरी का मामला॥

मंत्री—यह तिलकासुन्दरी हाज़िर है।

राजा—तिलकासुन्दरी—तुम परीक्षा करने पर शीलवन्ती भविषदत्त की पतिव्रता स्त्री साबित हुई हो इस लिए

तुम भविष्यदत्त को दी जाती हो और तुमको सती का पद और दरबारी कुरसी भी दी जाती है ।

(कुरसी पर बैठना)

३३५

भविष्यदत्त का मामला ॥

मंत्री—यह भविष्यदत्त हाज़िर है ।

राजा—भविष्यदत्त—आप बड़े धर्मात्मा, बहादुर और गुणवान हैं इस लिये हम आपको अपना प्रधान बनाते हैं और दरबारी कुरसी देते हैं । और अपनी राजकुमारी सुमता का तुम्हारे से सम्बन्ध करते हैं ॥

(कुरसी पर बैठना)

३३६

कमलश्री का मामला ॥

मंत्री—यह कमलश्री हाज़िर है ।

राजा—कमलश्री—हम तुम्हारे चरित्र और धार्मिक बर्ताव से अत्यन्त प्रसन्न हैं । इस लिये आपको माता का पद और दरबारी कुरसी देते हैं ।

(कुरसी पर बैठना)

३३७

धनदेव का मामला ॥

मंत्री—यह धनदेव सेठ हाज़िर है ।

राजा– धनदेव–आपने जो अपनी धर्मपत्नी कमलश्री को बिना दोष जो पीहर में निकाल रक्खा है यह कार्य सर्वथा धर्म के विरुद्ध है। इस लिये आप सरे दरबार कमलश्री से क्षमा मांगें और उसको मनाएं यद्यपि हमारी राय तुम्हारी निसबत चन्दा अच्छी नहीं है परन्तु पंच साहिबान की सिफ़ारिश पर हम तुमको इस बात पर क्षमा करते हैं। और तुम्हारा सेठ पद और दरबारी कुरसी कायम रखते हैं मगर आगे के लिये अपना चरित्र ठीक रक्खो ॥

(कुरसी पर बैठना)

३३८

वधुदत्त का मामला ॥

मंत्री—यह वधुदत्त हाज़िर है।

राजा–वधुदत्त– तुम बड़े शरीर दग़ाबाज़ और अधर्मी हो इस लिये हम तुमको काला मुंह करके अपने राजसे निकालते हैं। कोतवाल साहिब फ़ौरन तामील करें।

(कोतवाल का वधुदत्त को गिरफ्तार कर लेना)

३३९

सरूपा का मामला ॥

मंत्री–यह सरूपा हाज़िर है।

राजा–सरूपा–इस सारे झगड़े की तुम्हीं जड़ हो। बस हम तुमको भी काला मुंह करके अपने राजसे निकालते हैं कोतवाल साहिब फ़ौरन तामील करें।

(कोतवाल का सरूपा को भी गिरफ्तार करना)

३४०

कोतवाल का सरूपा और वसुदत्त का काला मुंह पेश करना और राज से बाहर निकाल देना।

हजूर इन दोनों सरूपा और वसुदत्त का काला मुंह कर के पेश करता हूं अब इनको राजसे बाहर निकाला जाता है।

(दोनों को निकाल देना)

३४१

धनदेव सेठ का कमलश्री से सरे दरबार मुआफ़ी मांगना और दोनों की आपस में गुफ्तगू होना॥(शेर)

धन०–१. हे सती! तू बेख़ता है मैं ख़तावारों में हूं।
बख़्शदे मेरी ख़ता मैंतो शरमसारों में हूं॥
२. मैंने बेशक दुख दिया देकर तुझे नाहक दुहाग।
मैं गुनहगारों में हूं बल्कि सितमगारों में हूं॥
कमल०–१. क्या क्षमा मांगोहो मुझसे मैंतो दुखियारों में हूं।
मैं दुहागन दिलजली किस्मतसे लाचारोंमें हूं॥
२. मैं जो कुछ होती तो क्यों होती मेरी [illegible]।
क्यों निकाली जाती महलों से मैं बेज़ारों में हूं॥
धन०–सर झुकाता हूं तेरे चरणों में मुझको बख़्शदे!

जो सज़ा चाहे तू दे बेशक खताकारों में हूं ॥

कमल०—१. मत झुकाओ सर हमारे शीलमें लगता है दाग़ ।
आप हैं परधान मैं नाचीज़ नाकारों में हूं ॥
२. आपने जो कुछ कहा मैंनेसबर से सब सहा ।
मैं नहीं करती शिकायत ना उज़रदारों में हूं ॥

धनं०—गर नहीं तुमको शिकायत है इनायत आपकी ।
मैं मगर इकरारी खुद हूं अपनी इस तक़सीर का ॥

कमल०—कौन करता है गुमां तेरी खता तक़सीर का ॥
दोष जो कुछ है सरासर है मेरी तक़दीर का ॥

धन०—जोड़ करके हाथ तुमसे मांगता हूं अब क्षमा ।
होके खुश ग़म दूर करदो छोड़दो सारा गिला ॥

कमल०—

१. ज़ुबां को रोक सकती हूं शिकायत और शिकवे से ।
पय समझनो दिले मुज़तिरका अबतो सख्त मुशकिल है ॥
२. सरूपा की मुहव्बत की शिला पर तुमने देमारा ।
हमारा शीशए दिलको कि चकनाचूर बस दिल है ॥
३. नहीं जोड़े से जुड़ सकते हैं अब टुकड़े मेरे दिलके ।
अब इनका जोड़ना आसां नहीं है सख्त मुशकिल है ॥

३४२

धनदेव का निराश होकर कमलश्री के चरणों में गिरना और क्षमा मांगना ॥ (शैर)

१. दुख दिया सब कुछ किया पर कर क्षमा मेरी खता ।

मानता हूं मैं कि है मेरी ख़ता, मेरी ख़ता ॥
२. सर तेरे चर्णों में रखता हूं क्षमा कर दीजिए ।
लाज मेरी भी ज़रा दरबार में रख लीजिए ॥

३४३

धनदेव का सरूपा की बुराई करना व कमलश्री से क्षमा मांगना ॥
(चाल बहरे तवील)

१. बदज़ात सरूपा ने खोया मुझे ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
वसुदत्त ने तो ऐसा डबोया मुझे ।
कि इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
२. मेरी लाज सती अब है हाथ तेरे ।
चाहे रख या न रख अख़तियार तुझे ॥
मैं तो दोनों जहान से जाता रहा ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥

३४४

कमलश्री का पती को अपने चर्णों से उठाना और क्षमा मांगना ॥
(चाल) दिल में लगन है संभालो कमलिया ॥

१. पति की खुशी में खुशी है हमारी ।
न काजे मेरे सामने इंकसारी ॥
२. मेरे दिलमें गो दर्द लाखों हैं लेकिन ।

न लाऊंगी मूंह पर शिकायत तुम्हारी ॥

३. जो मंजूर तुमको है मंजूर हमको ।
जो मरज़ी तुम्हारी वह मरज़ी हमारी ॥

४. दुहागन रखो या सुहागन बनाओ ।
बहर हाल खुश हूं जो मंशा तुम्हारी ॥

५. न करना ख़्याल और क्षमा करना साहिब ।
अगर हो गई हो ख़ता कुछ हमारी ॥

३४५

राजा का कमलश्री व तिलकासुन्दरी व भविषदत्त की प्रशंसा करना और दरबार बरखास्त करना ॥

हमारे राज में कमलश्री जैसी पतीव्रता देवी और तिलकासुन्दरी जैसी सती और भविषदत्त जैसे धर्मात्मा और बहादुर का होना सबके लिये सौभाग्य की बात है । अब दरबार बरख़ास्त किया जाय और सुमता राजदुलारी व भविषदत्त शादी के लिये मंत्री साहिब ख़ास दरबार का जल्दी प्रबन्ध करें ।

(दरबार बरखास्त होना और सबका अपने अपने घर चला जाना—और ड्रापसीन गिरना)

इति न्यामत सिंह रचित सती कमलश्री नाटक का चौथा अंक समाप्तम् ॥

श्री जिनेन्द्रायनमः

सती.

कमलश्री नाटक ।

पांचवा अंक

दृश्य	विषय
३७	कमलश्री व भविषदत्त व तिलकासुन्दरी का तिलका सुन्दरी के महल में प्रवेश ।
३८	तिलकासुन्दरी और भविषदत्त की बात चीत ।
३९	कमलश्री का अपने पीहर को जाना ।
४०	महाजनों का भविषदत्त के दरबार में आना ।
४१	धनदेव का भविषदत्त को अपने पास बुलाना ।
४२	कमलश्री का अपने पीहर में पहुँचना और धनदेव व भविषदत्त व कनकमाला का कमलश्री के पास जाना और कमलश्री को मनाकर लाना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

दृश्य ३७

(भविषदत्त के महल का परदा)

३४६

नोट— राजा का दरबार बर्खास्त होने पर सब अपने अपने घरको चले गये—
कमलश्री, तिलकासुन्दरी व भविषदत्त भी भविषदत्त के महल में आ गये और धनदेव सेठ अपने महल में चला गया ॥

३४७

कमलश्री, तिलकासुन्दरी व भविषदत्त का तिलकासुन्दरी के महल में प्रवेश करना और सबका सिंहासन पर बैठना और परियों का मुबारकबाद गाना ॥

चाल नाटक— महाराज गावें अब हम ।

१. धन्यवाद गावें अब हम—महाराज नाचें छम छम ।
शुभ बादर बरसें रिम झिम--यश बिजली चमके चम चम ॥
२. यह कमलश्री सुखदानी—पाया जिसने पद रानी ।
रहे शील धरम नित क़ायम--महाराज गावें अब हम ॥
३. यह भविष और तिलका नारी--यानी पियारा प्यारी ।
आपस में खुश रहें हरदम—महाराज गावें अब हम ॥

३४८

कमलश्री व भविषदत्त व तिलका सुन्दरी का आपस में बात चीत करना ॥

क०—जिनेन्द्र भगवान का धन्यवाद है जो आज हम सभों का आपस में मिलना हुवा—हम तीनों पर अशुभ कर्म के उदय से जो कष्ट आया था वह सब धर्म के प्रभाव से दूर हो गया ॥ (शेर)

धर्म ही तो बस जहां में एक सुख कर्तार है ।
धर्मही दुक्खो का विघनो का सदा हर्तार है ॥

भ०—माताजी, यह सब आपके ही धर्म रूप भावों का फल है—आपके ही चरणों का प्रताप है ॥ (शेर)

आप की कृपा से मैंने यक्ष को भी सर किया ।
चीर कर भयानक गुफा को एक दम बाहर गया ॥

क०—नहीं बेटा यह सब कुछ तिलकासुन्दरी महा सती के शील का चमत्कार है ॥ (शेर)

१. जिसने सूने शहर में सन्मान धन तुमको दिया ।
जिसके सतके बलसे देवी मिल गई सागर में आ ॥
२. यह नहीं मिलती तो फिर तेरा पता मिलना नहीं ।
तू नहीं मिलता तो फिर मिलना मेरा दुश्वार था ॥

भ०—हां ! बेशक माता जी तिलकासुन्दरी सतियों में सार है सब इसी के शील का चमत्कार है ॥ (शेर)

१. हो गये इसही सती के शील से धनवान हम ।

बन गए इसही की नेकी से परधान हम ॥
२. मालिक इस घरबार की हां बेगुमां यह ही तो है।
इस मेरे रणवास की रोनक़स्तां यह ही तो है ॥

३४९

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥
चाल—विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. पड़ी थी तिलकपुर तो सूनी नगरिया।
भला कौन लेता हमारी खबरिया ॥
२. निकाला मुझे तुमने सूने नगर से।
मुसीबत से लाए हमारी मुदरिया ॥
३. भला थी कहां ऐसी क़िसमत हमारी।
कमल की हो सेवा में तिलका सुंदरियां ॥
४. पती चढ़ रहा है सितारा तुम्हारा।
है महिमा तुम्हारी नगरिया नगरिया ॥
५. प्रशंसा न कीजेगा इतनी हमारी।
समझ मुझको चरणों की दासी संवरिया ॥
६. अभागी हूं दोनों की बेशक हां मैं तो।
जो की मुझपे तुमने महर की नज़रिया ॥

कमलश्री व भविषदत्त का सरूपा और बधुदत्त के निकाले जाने पर अफ़सोस करना ॥ (वार्तालाप)

क०—देखो बेटा भविषदत्त—सरूपा और बधुदत्त के इस

प्रकार निकाले जाने से हमारे घरकी बड़ी बदनामी हुई ॥(शेर)

लग गया है कुलको ऐसा दोष कट सकता नहीं ।
यह कलंक अब तो हटाए से भी हट सकता नहीं ॥

भ०—माता जी कलंक लगने का तोअफ़सोस मुझको भी है परन्तु इसमें कोई कर भी क्या सकता था— राज नीति से राजा और प्रजा सबको ही लाचार होना पड़ता है ॥ (शेर)

१. कि दी जाती है पापी को सज़ा बस पाप के बदले ।
अगर ऐसा न हो धर्मी जगत में रह नहीं सकते ॥
२. बदों के साथ में जो भूल कर करते भलाई हैं ।
तो गोया संग में नेकों के वे करते बुराई हैं ॥

३५१

तिलकासुन्दरी का धनश्री को तसल्ली देना ॥
चाल— विपत में मनवा के सँभाली कमलिया ॥

१. ख़बर क्या ज़माने में क्या हो रहा है ।
कि क्या क्या बुरा और भला हो रहा है ॥
२. न दिल में करो तुम ख़याल इसका माता ।
यूँहीं होरहा है सदा हो रहा है ॥
३. हैं धर्मी विधर्मी सभी इस जगत में ।
कोई बद कोई पासी हो रहा है ॥

४. बदलना है मुशकिल पड़ी आदतों का ।
हर इक वहम में मुबतला हो रहा है ॥
५. हर इक आदमी के करम का नतीजा ।
ज़रा देखलो बरमला हो रहा है ॥
६. करे है जो जैसी वह वैसी भरे है ।
जो कुछ हो रहा है बजा हो रहा है ॥
७. किये कि सज़ह कंस रावण ने पाई ।
कि पेश उनके उनका किया हो रहा है ॥
८. सरूपा बधु के थी दिल में बुराई ।
इसी का तो फल यह बुरा हो रहा है ॥
९. भविष ने सबों से जो की थी भलाई ।
यह परधाने सबमें बड़ा हो रहा है ॥

३५२

कमलश्री व भविषदत्त व तिलकासुन्दरी का फिर आपस में बात चीत करना ॥

क०–बेटा भविष अब जाओ बहुत देर हो गई है तिलका-
सुन्दरी के महल में जाकर आराम करो ॥

भ०–(माता को सिर झुका कर) माता जी के चरणो में
प्रणाम ॥

०क–सिर पर हाथ रख कर) चिर जीव रहो ॥

(भविषदत्त का चला जाना)

क०–बेटी तिलका ॥

ति०-(खड़ी होकर प्रणाम करके) हां माताजी ॥

क०-(सिर पर हाथ रख कर) ॥ (दोहा)

सुखी रहो तिलका सती बढ़े पति का प्रेम ।
सदा सुहागन हुजियो पालो धर्म और नेम ॥

देखो बेटी बहुत रात व्यतीत हो चुकी है अब तुम भी अपने चित्त को शान्त करो—यह सब मैले कुचेले वस्त्र उतार दो—स्नान करके नूतन वस्त्र पहनलो और सब प्रकार के आभूषण अपने तन पर सजाओ—सिंगार करके और प्रसन्न चित्त होकर अपने महल में चली जाओ और आराम करो ॥

ति०-अच्छा माता जी जैसी आपकी आज्ञा ॥

(चला जाना)

दृश्य ३८
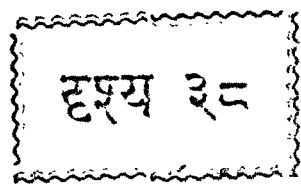
(तिलकासुन्दरी के रतिमहल का परदा)

३५३

तिलकासुन्दरी के महल में [illegible] का बैठे हुये नजर आना और तिलकासुन्दरी का शृंगार किये हुये महल में प्रवेश करना और अपने पति के चरणों में प्रणाम करना और आंखों से आंसू [illegible] कर पति से कहना और दोनों का बात चीत करना ॥

चाल—([illegible]) अरे आज [illegible] ॥

ति०-दिवस आज का धन जो दर्शन मिले ।

कंवल रह गये पर खिले के खिले ॥

भ०— बुरे दिन जो थे अपने वह टल गये ।
कंवल कौनसा रह गया बिन खिले ॥

ति०—लखा दोष मेरे में क्या आपने ।
जो सुमन को लाये हो ऊपर मेरे ॥

भ०—न बेज़ार हो मेरी प्यारी ज़रा ।
रहूंगा मैं कहने में तेरे सदा ॥
तु सुमता के लाने का कुछ ग़म न कर ।
हमारी मोहब्बत पे रखिये नजर ॥

३५४

तिलकासुन्दरी का गुस्से में मर्दों की बेवफाइ जितलाना ॥
चाल — है बहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़ ॥

१. मर्द में बूए वफ़ा होती नहीं ।
लाज़ ग़ैरत और दया होती नहीं ॥
२. इनकी बातों का भरोसा कुछ नहीं ।
इनमें उल्फ़त भी ज़रा होती नहीं ॥
३. दिल में रखते हैं दग़ाबाज़ी कपट ।
एकसी नीयत सदा होती नहीं ॥
४. बेमुरव्वत और बड़े हैं संगदिल ।
कुछ मोहब्बत की हवा होती नहीं ॥
५. दिल दुखाना इनकी मामूली सी बात ।

धर्म से रग़बत ज़रा होती नहीं ॥
६. आपकी इन ज़ाहिरी बातों से बस ।
दर्द की मेरे दवा होती नहीं ॥
७. मैंने घर छोड़ा तुम्हारे वास्ते ।
उम्र भर तुमसे जुदा होती नहीं ।
८. फिर कहो क्यों दूसरी लाते हो नार ॥
मुझसे क्या सेवा भला होती नहीं ॥
९. बस तुम्हारा भी नहीं कुछ इस जगह ।
मर्द में बूए वफ़ा होती नहीं ॥

३५५

भविषदत्त का जवाब

धाल क़व्वाली—कौन कहता है कि मैं तेरे ख़रीदारों में हूँ ॥

१. कौनसी तुमने हमारी बेवफ़ाई देखली ।
अबसे पहले क्या हमारी बेरुख़ाई देखली ॥
२. रह गया पीछे अगर यह न थी मेरी ख़ता ।
थी मेरे कर्मों की सख़्ती जैसी आई देखली ॥
३. मेरे पीछे गर समन्दर में हुवा है तुमको दुख ।
यह तो थी सारी बधू की बेहयाई देखली ॥
४. तेरी ख़ातिर उस जगह तेरी जुदाई में सनी ।
क्या कहूँ दिलने मेरे क्या क्या बुराई देखली ॥
५. अब ख़ुशी हो करके मिल शिकवह शिकायत छोड़ दे ।

कैसी मुशकिल से हुई तुझ तक रसाई देखली ॥

६. तुझको पटरानी बनाऊंगा सती इक दिन ज़रूर।
अब तलक तो मेरी क़िस्मत आज़माई देखली ॥

७. तू कहे तो जान तक देने को मैं तय्यार हूं।
किस तरह कहती हो मेरी बेवफ़ाई देखली ॥

३५६

तिलकासुन्दरी का जवाब

चाल नाटक—जाओ जी जाओ बड़े दान के दिखाने वाले ॥

देखी जी देखी हमने आपकी ईमानदारी।
मतलब की थी सब यारी—ऊपर की थी दिलदारी ॥
निकली बातें तिहारी—झूठी सारी की सारी।
ऊंची दुकान पर पकवान कैसा फीका, खारी। देखी०टेक

(शैर)

१. पांचों पापों में शामिल कहिये क्या यह हिंसा नहीं है।
नारी पे नारी लाना कहिये क्या यह हिंसा नहीं है ॥
सोतन को ला बिठलाना कहिये क्या यह हिंसा नहीं है।
जी को नाहक़ जलाना कहिये क्या यह हिंसा नहीं है ॥
तुमतो व्रिती कहलावो-पूरी धर्मी कहलावो।
दया मर्मी कहलावो-सबके प्रेमी कहलावो ॥
यह बेदादी--यह जल्लादी--यह नाशादी--यह बरबादी।
अय बालम दया के धारी ॥देखी०॥

२. देखी जी देखी हमने खूब वफ़ादारी देखी ।
देखी जी देखी तेरी यह ईमानदारी देखी ॥
ऊपर से नीचे तक खाक छान सारी देखी ।
वफ़ा न देखी बल्के सारी मायाचारी देखी ॥
जगमें है ख्वारी देखी–सारे लाचारी देखी ॥
कुछ ना सुखकारी देखी–दुनिया दुखकारी देखी ॥
कपटी भारी–सियाहकारी–अनाचारी–दूराचारी ।
है दुनिया छलरूपी सारी ॥देखी०॥

३. देखी जी देखी हमने मर्दों की शैतानी देखी ।
सागर में वधु की भी साफ़ बेईमानी देखी ॥
राजा की सुमता देने में न बुद्धिमानी देखी ।
लालच बेदर्दी की भी आपमें निशानी देखी ॥
दूजा विवाह ठैराया--झगड़े का पेड़ लगाया ।
अमृत में विष घुलवाया--इतना मनमें नहीं आया ॥
तिलकानारी--है दुखियारी--पीहर हारी-किस्मत मारी
है बेचारी शर्ण तुम्हारी ॥ देखी ० ॥

२५७

भविषदत्त का जवाब ॥

चाल – [illegible] ॥

न भूलूंगा हरगिज़ मोहब्बत तुम्हारी ।
रखूंगा तुम्हें जान से भी मैं प्यारी ॥

२. न था कुछ हमारी तरफ़ से इशारा ।
महाराज की थी वह तजवीज़ सारी ॥
३. हुकम मानना राव का था मुनासिब ।
यही मसलहत हमने इसमें बिचारी ॥
४. करूंगा हमेशा तेरा मान सब में ।
करेगी सुमत तेरी ख़िदमत गुज़ारी ॥
५. मुझे आन है जैन शासन की सुनलो ।
बनाऊंगा परधान तुमको मैं प्यारी ॥
६. ख़ता गर है मेरी तो इतनी है बेशक ।
कि पूछी नहीं पहले मर्ज़ी तुम्हारी ॥
७. न आगे को होगी कभी भूल ऐसी ।
क्षमा कीजे अबतो ख़ता यह हमारी ॥

३५८

तिलकासुन्दरी का जवाब देना और क्षमा करना और खुश होना और दोनों का आपस में मिलना ॥

चाल — विपत में सनम के संभाली कमलियां ॥

१. बहुत अच्छा जैसी हो मर्ज़ी तुम्हारी ।
वह मर्ज़ी हमारी जो मर्ज़ी तुम्हारी ॥
२. मेरी क्या है ताक़त करूं उसका शिकवा ।
हो जिस काम करने को मर्ज़ी तुम्हारी ॥
३. दिया पहले सुख अब दरद भी तुम्हीं ने ।
दवा तुमहीं दो ना दो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

४. दिखादी है दर्शार में तो मोहव्वत ।
दिखा देना आगे जो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

५. सुहागन बनाओ दुहागन बनावो ।
करो जैसा तुम चाहा मर्ज़ी तुम्हारी ॥

६. पिया यहां पे अपना तो कोई नहीं है ।
हमें जिस तरह रक्खो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

७. पिया की खुशी में खुशी है हमारी ।
चलेगी यहां पे तो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

८. क्षमा तो करे वह कि जिसकी चले कुछ ।
सरासर है यहां पे तो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

९. नहीं मुझको कोई रही अब शिकायत ।
करूंगी वही जो हो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

१० हमारे से कोई खता गर हुई हो ।
तो करना क्षमा गर हो मर्ज़ी तुम्हारी ॥

(दोनों का मिलना)
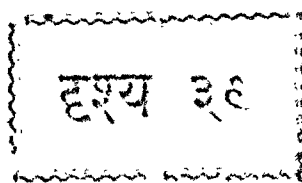
दृश्य ३९

([illegible])

३५९

[illegible]

चाल — अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे ॥

१. कैसे कोई किसी पर भरोसा करे ।
जब पिया होके यूं दुख दिखाने लगा ॥
धर्म इन्साफ़ दुनिया से जाता रहा ।
जब सती का पति दिल सताने लगा ॥

२. क्यों बधु भाई से बेवफ़ाई करी ।
क्यों शरारत यह थी अपने दिल में धरी ॥
कैसे होती रिहाई बता तो तेरी ।
जब सती पे तू हाथ चलाने लगा ॥

३. क्यों सरूपा था तूने धरम को तजा ।
तूने क्यों अपने मनमें कुभाव धरा ॥
काहे खोटा बधु को दिया मशवरा ।
जब भविषदत्त सफ़र को था जाने लगा ॥

४. रे बधु तूने दुनिया में सुख तो चहा ।
बुरे कर्मों से लेकिन ज़रा न डरा ॥
कैसे सुख तुझको मिलता बता तो ज़रा ।
जब धरम कोही दिल से हटाने लगा ॥
अय पती तूने भोगों की इच्छा करी ।
दे दुहाग मुझे जा सरूपा वरी ॥
अब ना कमला रही ना सरूपा रही ।
रहती कैसे जो मुझको जलाने लगा ॥

३६०

भविषदत्त का तिलकासुन्दरी सहित महल में आना और कमलश्री के चरणों में प्रणाम करना और तीनोंका बातचीत करना (वार्तालाप)

ति० भ०—(प्रणाम करके) माता जी के चरणों में प्रणाम

क०—(दोनों के सर पर हाथ रख कर) (दोहा)

बनी रहे जोड़ी जुगल सुख विलसो संसार ।
धरम करम में थिर रहो बढ़े राज व्यवहार ॥

क०—बेटा भविषदत्त अब मैं अपने पीहर जाती हूं तुम दोनों प्रेम से रहना और नीति पूर्वक गृहस्थ धर्म का पालन करते रहना । (दोहा)

गृहस्थ धरम सब से बड़ा ज्यूं तारों में चन्द ।
तीन वरग की साधना जामें कहीं जिनन्द ॥

भ०—माता जी ! आप यहां ही रहें या अपने महल में चलें—अब आप का पीहर में जाना योग्य नहीं है ।

(दोहा)

पति निकट नारी रहे या रहे सुतके पास ।
यदि विधि कुछ ना बने पीर करे निवास ॥

क०—बेटा अब तो मैं न यहां रहूंगी न तुम्हारे पिता के महल में जाऊंगी—मैं अपने पीहर में ही जाकर रहूंगी—बस इस बात में मुझसे विशेष आग्रह न करो ।

भ०—माता जी क्या इसमें मेरी और तुम्हारी दोनों की लोग हंसाई नहीं होगी ॥

क०—नहीं, कदापि नहीं—मैं कभी कभी तुम्हारे यहां भी जरूर आती रहुंगी। तुम किसी प्रकार का खयाल न करो।

भ०—माता जी! आखिर तुम्हारे जाने का कारण क्या है?

३६१

कमलश्री का नाराज़ होकर भविषदत्त को जवाब देना॥

चाल—विपत में सनम के संभाली कमलिया॥

१. नहीं जिसको इज्जत की अपनी खबर है।
न समझो कि दुनिया में वह कुछ बशर है॥
२. पशु में और उसमें नहीं कुछ फ़रक़ है।
नहीं जिसमें अभिमान्ता का असर है॥
३. निकाला महल से कहो कैसे जाऊं।
न जाने का मूंह है न अपना जिगर है॥
४. दुहागन बना के खबर भी न लीनी।
कभी भी न पूछा कहां है, किधर है॥
५. दुहागन बनी थी तो मैं ही बनी थी।
भला क्यों न ली उसने तेरी खबर है॥
६. तुझे तो बुलाता कभी प्यार करता।
वली अ:हद तू उसका पहिला पिसर है॥
७. सरूप वधु को तो धन के परोहण।
तुझे क्या दिया था बता गर खबर है॥
८. न जाऊंगी अब मैं पती के महल में।

न वह अपना दर है न वह अपना घर है ॥

९. न परवा मुझे उसकी उसके महल की ।
नहीं उसको परवा हमारी अगर है ॥

१०. न जाना कभी बिन बुलाए पिता पे ।
भविषदत्त असल जो तू मेरा पिसर है ॥

११. तू किस मुंह से भेजे है उसके महल में ।
तू किस मुंह से करता उधर को नज़र है ॥

३६२

भविषदत्त का जवाब देना ॥

अच्छा माताजी जैसी आपकी आज्ञा है वैसाही करूंगा

३६३

एक बांदी का आना और भविषदत्त से अपने दरबार में नगर के ले जाने के लिये अर्दास करना ॥ (पटाक्षेप)

बां०—(हाथ जोड़ कर) महाराज नगर के बहुत से महाजन आपकी सेवा में उपस्थित हुवे हैं और आप से कुछ निवेदन करना चाहते हैं दर्बार में तशरीफ़ ले चलिये ॥

भ०—माता जी यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अपने दरबार में जाऊं ॥

क०—हां बेटा जाओ राज्य का कार्य करना तुम्हारा मुख्य धर्म है ॥

३६४

कमलश्री का पीहर जाने को तय्यार होना और अपनी सास को पीहर में जाते हुये देखकर तिलकासुन्दरी का बातचीत करना (वार्तालाप)

ति०—माता जी यदि आप पीहर जा रही हैं तो मैं भी आपके साथ चलूंगी ॥

क०—किस लिये ?

ति०—मैं तो आपकी ही सेवा में रहूंगी ।

क०—तिलका तुम कैसी भोली बातें करती हो तुमको अपने महल में रहना चाहिये—घर का प्रबन्ध करना चाहिये तुम्हारा घर छोड़कर मेरे पास रहना ठीक नहीं ॥

ति०—नहीं, माता जी मैं अकेली इस घरमें कदापि नहीं रहूंगी ।

क०—बेटी तुम अकेली कैसे हो तुम्हारी सेवा में अनेक बांदियां उपस्थित हैं ।

ति०—माता जी बांदियां तो आपके महल में भी बहुत हैं आप अपने महल में क्यों नहीं जाती ।

क०—देखो तिलकासुन्दरी मेरे न जाने का विशेष कारण है।

ति०—यह क्या ?

क०—(शैर) सेठ जी लाए सरूपा और दिया मुझको दुहाग ।
हो गया अपमान मेरा जाऊं किस मुंह से भला ।

ति०— माता जी इसकी तो ससुर जी ने दर्बार में आप से

क्षमा मांग ली थी और आपने क्षमा भी करदी थी और अब तो सखुपा भी नहीं रही ॥

क०—(शेर) क्या हुवा गर सौत महलों में नहीं इस वार है ।
दिल तो मेरा फट गया जुड़ना बड़ा दुशवार है ॥

ति०—(शेर) जबकि हो निकली हुई भी मात से बेज़ार तुम ।
और महल में जाना भी करती नहीं स्वीकार तुम ॥
तो भला क्योंकर रहूं मैं जबकि सिर पर सौत है ।
सौत के आगे रहूं इससे बेहतर मौत है ॥

(दोहा) १. सोकन मूंडों चून की आधा मांगे पीव ।
सोकन से शूली भली तुरत निकाले जीव ॥
२. सुमता राजा की सुता मैं परदेशन नार ।
आय पड़ी वश आप के चलूं तुम्हारे लार ॥
३. माता दुखतो है घना वर्णत अन्त न होय ।
जैसा दुख है सौत का वैसा और न कोय ॥
४. पीयापरदेशी भला जो घर सौत न होय ।
घर में हो जो शरीकिनी निशदिन दुखिया होय ॥

क०—अच्छा बेटी तुम्हारी मर्जी— मैं भी इस बात में तुम्हें विशेष नहीं दबा सकती ।

क०—(बांदियों से) देखो तुम सब तिलकासुन्दरी के साथ चलना और एक बांदी जाकर मेरे और तिलकासुन्दरी के आने की खबर मेरी माताजी को कर आओ ।

(एक बांदी का जाना और पीछे से कमलश्री और तिलकसुन्दरी का भी बांदियों सहित जाना)

दृश्य ४०

(भविषदत्त के दर्बार का परदा)

३६५

दर्बार में दर्बारियों का बैठे हुवे नज़र आना और भविषदत्त का प्रवेश करना और महाजनों का जो बधुदत्त के साथ परदेश में गए थे हाजिर होना और अर्ज़ करना ॥

चाल—हिन्दोस्तां के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा ॥

१. तू अय भविष जहां में है धर्म का सितारा ।
सरदार है हमारा परधान है हमारा ॥
२. पापी बधु सरूपा पहुँचे सज़ा को अपने ।
राजा ने दंड देकर है राज से निकारा ॥
३. ज़ालिम बधु के कारण सागर में हम लुटे सब ।
धनमाल हमको देकर तूने दिया सहारा ॥
४. हमने तो बेवफ़ाई कुछ आप से नहीं की ।
सब है ख़ता बधु की तुम पर है आशकारा ॥
५. ग़र दोष कुछ हमारा भी हो क्षमा करो तुम ।
तू है बड़ा दयामय जग जानता है सारा ॥

३६६

भविषदत्त का क्षमा करना ॥

चाल—पहलू में मेरे यार है उसकी खबर नहीं ॥

१. मुझको किसी तरह का किसी से नहीं मलाल
दुशमन की भी बदी का मैं करता नहीं खयाल ॥
२. और आप साहेबान तो मेरे हैं महरबान ।
निर्दोष तुम हो मुझको भी मालूम सब है हाल ॥
३. सेवा तुम्हारी करने को हाज़िर हूं रात दिन ।
पूरा करूं तुम्हारा अगर हो कोई सवाल ॥
४. करना दया दुखी पे है इन्सान का धरम ।
वह मेरा धरम था जो दिया मैंने तुमको माल ॥
५. अपने घरों को जाओ सुख और चैन से रहो ।
दिलमें मगर धरम का भी रखना ज़रा खयाल ॥

३६७

सब महाजनों का धन्यवाद देकर चला जाना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. अय भविषदत्त तू धरम अवतार है और वीर है ।
दूसरा रघुवीर है गंभीर है और धीर है ॥
२. हम खतावारों पे भी की महर की तूने नज़र ।
रहम की तसवीर है तू धरम की तसवीर है ॥
३. दिलमें है नरमी तेरे सख्ती तेरी तलवार में ।
दिल तेरा बादल है और बिजली तेरी इक तीर है ॥

४. ज़ेर काबुल को किया राजा बना गजपुर का तू ।
तू बिलाशक वैश्य कुलमें साहिबे तक़दीर है ॥
६. याद रक्खेंगे तेरी हम यह दयामय वीरता ।
हम न भूलेंगे तेरा अहसान दामनगीर है ॥

३६८

नोट—

कमलश्री व तिलकासुन्दरी के चले जाने का हाल सुन कर धनदेव को बहुत रंज हुवा और अपने मंत्री को भविषदत्त को बुलाने के लिये भेज दिया ॥

३६९

धनदेव के मंत्री का भविषदत्त के दरबार में आना और बात चीत करना॥

मं०—कंवर जी प्रणाम ॥
भ०—आइये मंत्री जी—कैसे आना हुवा ?
मं०—आप को सेठ जी ने याद फ़रमाया है ॥
भ०—किस लिये ?
मं०—हजूर यह तो मालूम नहीं परन्तु सेठ जी ने शीघ्र ही आपको महल में बुलाया है ॥
भ०—अच्छा चलिये ॥

(दोनों का चला जाना)

———

दृश्य ४१

(धनदेव सेठ के महल का पर्दा)

३७०

धनदेव सेठ का अपने महल में बैठे हुये नज़र आना और भविषदत्त का पहोंचना और धनदेव का भविषदत्त को छाती से लगाना और उससे कमलश्री के चले जाने की शिकायत करना और भविषदत्त का लज्जित होकर कुछ उत्तर न देना ॥

बेटा भविषदत्त–देखो आपकी माता ने कैसा अयोग्य कार्य किया है जो पीहर को चली गई और बहू को भी साथ ले गई ॥ (शे'र)

१. हो चुका था फ़ैसला राजा की जब सरकार में ।
   और क्षमा मैंने भी उससे मांग ली दर्बार में ॥
२. फिर भला शिकवा शिकायत कौन सी बाकी रही ।
   जो गई पीहर न ठैरी अपने वह घरबार में ॥

३७१

चाल—विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. ठहर कर जुबां को संभालो ज़रा तुम ।
न मुंह से निकालो यह शिकवा गिला तुम ॥
२. कमल की तो करते हो नाहक़ शकायत ।
नहीं याद करते हो अपनी ख़ता तुम ॥
३ दुहागी कमल क्यों सरूपा को लाए ।
न थे क्या पति उसके इसके पिता तुम ॥
४. रहा वास्ता आपका उनसे क्या फिर ।
रहो अब अकेले महल में सदा तुम ॥
५. भविष से अबस है यह ताने की बातें
करो सामने मेरे शिकवा ज़रा तुम ॥

३७२

धनदेव का आंखों में आंसू भर लाना और कनकमाला से क्षमा मांगना और कमलश्री को मना कर बुला लाने के लिये कनकमाला से अर्दास करना और कनकमाला का बुलाने के लिये जाना ॥ (शैर)

१. कमल की तरफ़दार बन कर ज़रा ।
न गुस्सा करो मेरी बख्शो ख़ता ॥
२. वह है बेख़ता मैं ख़तावार हूं ।
और अपने किये पर शरमसार हूं ॥
३. भविष अब मेरे घरका मुख्तार है ।
कमल मेरे महलों की सिंगार है ॥
४. कनकमाला तुम हो कमल की सखी ।

बुला लाओ उसको मना कर ज़रा ॥

५. ज़रा तुम चलो पीछे आते हैं हम ।
गरज़ आज करदो यह किस्सा ख़तम ॥

६. भविष को भी लाऊंगा अपने मैं साथ ।
न बाकी रहे ताके कोई भी बात ॥

(धनश्रीमाला का चला जाना)

३७३

धनदेव और भविषदत्त की बात चीत ॥

ध०—बेटा मैंने बेशक तुम्हारी माता और तुम्हारे साथ अच्छा सलूक नहीं किया जिसकी मुझे अब काफ़ी सज़ा मिल चुकी है—अब तुम मेरी तरफ़ से अपने दिलको साफ़ करो और मेरे साथ चलो ताकि तुम्हारी माता और तिलकासुन्दरी को मनाकर ले आवें और सिरे से अपने घर का प्रबन्ध करें और जो बदनामी हो चुकी है उसको दूर करें ॥

भ०—अच्छा पिता जी जैसी आपकी आज्ञा हो—मैं आप के साथ ज़रूर चलता हूं परन्तु मैं माता जी से इस बात का कुछ जिकर नहीं करूंगा—मैंने पहले ही उन से पीहर न जाने को कहा था वह सुनते ही एकदम मुझसे बिगड़ गईं और जो जो बातें उन्होंने कहीं मैं एक का भी उत्तर न दे सका ॥

ध० बेटा तुम चलो तो सही मैं आपही कह सुन लूंगा तुम अपने नाना और नानी जी से भी मिल लेना ॥

भ० बहुत अच्छा चलिये ॥

(दोनों का जाना)

दृश्य ४२

३७४

कमलश्री की बांदी का लक्ष्मी देवी को कमलश्री व तिलकासुन्दरी के आने की खबर देना ॥

बां० सेठानी जी कमलश्री और तिलकासुन्दरी आपकी सेवा में आती हैं ॥

ल० धन्य भय ॥

३७५

नोट—कमलश्री तिलकासुन्दरी सहित बहुत सी बांदियां संग लिये हुवे अपने पीहर में आई और लक्ष्मीदेवी व हरीबल ने उनके आने का बड़ा उत्साह किया और बहुत सी नगर की स्त्रियां उनको देखने को आई ॥

३७६

कमलश्री का तिलकासुन्दरी सहित पीहर में पहोंचना और माता व पिता को प्रणाम करना ॥

ति० (चरणों में गिर कर) नानी जी आप के चरणों में प्रणाम ॥

लक्ष्मी- (शेर)

रहे तेरा दुनिया में क़ायम सुहाग ।
बढ़े चौगुणा नित नया तेरा भाग ॥

क०(पावों में पड़कर) माता जी प्रणाम ॥

लक्ष्मी- (शेर)

मेरी बेटी धन हो तू फूले फले ।
कि हैं दोनों कुल तूने रोशन करे ॥

क०ति०-(हरीबल को आते हुवे देख कर और हाथ जोड़ कर) पिता जी प्रणाम ॥

हरी०-(दोनों के सिर पर हाथ रख कर) बेटी तिलका-सुन्दरी-बेटी कमलश्री जीती रहो ॥

३७७

लक्ष्मी देवी का अपने पति व कुटुम्ब सहित तिलकासुन्दरी का [illegible] करना ॥

चाल—वारी जाऊं रे सांवरिया तुम पर वारना रे ॥

वारी जाऊं तिलकासुन्दरी तुम पर वारना री ॥ टेक ॥

१. भविषदत्त को साहस दीनो ।
धन वह कूख जनम तुम लीनो ॥
दोउ कुल मुख उज्जल कीनो ।
जनम सुधारना री ॥वारी० ॥

२. तुमने निश्चय धरम विचारा ।
जल देवी कीना निस्तारा ॥

शील रखा सागर मंझधारा ।
कष्ट निवारना री ॥वारी०॥
३. तुमने सती की पदवी पाई ।
अपने पति की लाज बढ़ाई ॥
जैन धरम शक्ति दिखलाई ।
शुभ पद धारना री ॥ वारी० ॥

३७८

लक्ष्मी देवी व हरीबल व कुटुम्बियों का चला जाना और कमलश्री की सखी कनकमाला का आना और बात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

कमल०—आओ सखी कनकमाला आज कैसे आना हुवा।

कनक०—सखी तुम्हारे ही पास आई हूं॥

कमल०—कहिये क्या काम है ?

कनक०—मेरा तो कुछ भी काम नहीं—आज कल तो सब जगह तेरा ही चर्चा सुनने में आता है ॥

कमल०—वह क्या ?

कनक०—आज आपका पति—भविषदत्त से आपके पीहर में आने की शिकायत कर रहा था—मैं भी वहां जा निकली भविषदत्त तो बिचारा शर्म से कुछ भी न बोला—मगर मैंने सेठजी को वह मूंहतोड़ जवाब दिया कि उनकी जुबान बन्द हो गई और आंखों में आंसू भर लाकर मुझसे क्षमा मांगने लगे ॥

कमल०—धन्य है तुझे सखी—तुम भी हो बड़ी चतुर—समय पर नहीं चूकती ॥

कनक०— भला सखी मैं तुम्हारी बुराई कैसे सुन सकती हूं।

कमल०—हां सखी ठीक है ॥ (शेर)

सखी होकर सखी की कुछ बुराई सुन नहीं सकती ।
कि हमझोली की हरगिज़ जग हंसाई सुन नहीं सकती ॥

कनक०—कहो फिर अब क्या मंशा है ॥

कमल०—किस बात का ?

कनक०—यही अपनी सुसराल में जाने का ॥

कमल०—बस सखी इस बात का ज़िकर न करो ॥

३७९

कनकमाला का जवाब (शेर)

१. सखी अब ज़रा बात लो मेरी मान !
मैं जो कुछ कहूं सुन उसे देके कान ॥
२. भविपदत्त को तेरे मिल चुका मान अब ।
किया उसको राजा ने परधान अब ॥
३. मिली उसको तिलका भी दरबार में ।
बढ़ा है तेरा मान संसार में ॥
४. क्षमा तुझसे धनदेव ने मांगली ।
मिली तुझको रानी की पदवी बड़ी ॥

४. कहो बात अब रह गई कौनसी ।
कि जिसके लिये तू यहां आ गई ॥
६. तुझे ऐसा करना तो लाज़िम न था ।
तू चल अब महल में मेरे साथ आ ॥
७. मुझे सेठ जी ने है भेजा यहां ।
कि ले जाऊं तुझको यहां से वहां ॥
८. मुनासिब यही है कि अब घर चलो ।
कि नाहक़ न कुछ और झगड़ा करो ।

३८०

कमलश्री का नाराज़ होना और झुंझलाकर कनकमाला को जवाब देना ॥

चाल—दिल छीना निगाहें चुराकर चले ॥

क्यों सखी फेर मनको जलाने लगी ।
काहे सूते करम तू जगाने लगी ॥ टेक ॥
१. पीर मनकी तो मेरे कुछ भी न जानी तूने ।
मर्म की बात मेरी कोई न जानी तूने ॥
यूंही आ करके बातें बनाने लगी ॥ क्यों०॥
२. बे खता तजके मुझे घरमें सरूपा लाए ।
रात दिन उसके रहे पास न मुझतक आए ॥
यह सितमगारी मुझको सताने लगी ॥ क्यों० ॥
३. मेघ गरजें थे व कड़कें थी बिजिलियां घनमें ।
मैं अकेली पड़ी तड़पा करी डर डर मनमें ॥

मैं तो नैनों से नीर बहाने लगा ॥ क्यों० ॥

४. मुझ दुहागन की तरफ़ भी नहीं देखा उसने ।
आ भविष को मेरे इक दिन भी न पूछा उसने ॥
अब तू आके शिफ़ारिश जिताने लगी ॥क्यों०॥

५. नित नई सौत की बतियां मुझे लाला करके ।
ताने देने लगी सखियां मुझे आ आ करके ॥
उनके वचनों की चोट तड़पाने लगी ॥क्यों०॥

६. क्यों नहीं लेते वह अब अपनी सरूपा को बुला ।
हमको जब छोड़ दिया वास्ता हमसे फिर क्या ॥
मेरी चाह अब क्यों तरसाने लगी ॥क्यों०॥

३८१

कमलश्री की बात सुनकर कमलमाला का हंसना और फिर जोर देकर कमलश्री को जवाब देना ॥ (शेर)

१. इतना तो दिलमें सोच सखी अब कमलश्री ।
राजा ने सेठ का किया सन्मान आखरी ॥

२. है नाथ तेरा सेठ की आज्ञा न मेट तू ।
पति आज्ञा में रहती है सतवंती स्त्री ॥

३. राजा ने जब मिला दिया दरबार में तुम्हें ।
पीहर में आ रही है तू क्यों छोड़ कर पति ॥

३८२

चाल—खूने जिगर हम पीते हैं बस गममें तेरे यार ।

कनका सखी तू कहती है क्या मुझको बार बार ।
नादाने धमकी देती है क्या मुझको बार बार ॥टेक॥
१ राजा ने हुकम दिया है—सब अपने आप किया है ।
राजा को कहिये क्या है—मेरे दिल का अख्तियार ॥
२. मेरा भाग सुहाग हर लीना—मुझको दुहागन कीना ।
मेरा दूभर कर दिया जीनाजी—क्या जाने दरबार ॥
३. बालम ने नेहा छोड़ा—अपने बचन को तोड़ा ।
मुंह पहिले उसने मोड़ाजी—फिर कहो करे क्या नार ॥
४. अब क्यों है चाह हमारी—वह लाए सरूपा नारी ।
जो थी उनकी मनहारी जी—करते थे जिसे प्यार ॥

३८३

धनदेव का भविषदत्त को लेकर अपनी सुसराल में पहोंचना और हरीवज ॥
व लक्षमी देवी का आना और सबका बात चीत करना ॥

ध०—(सास को प्रणाम करके) माता जी प्रणाम ।

ल०—आओ बेटा चिरंजीव रहो ।

भ०—(पाओं छूकर) नानीजी आपके चरणों में प्रणाम ।

ल०—(छाती से लगा कर) बेटा भविषदत्त जीते रहो ।

(शैर)

आ मेरी कमलश्री के लाल प्यारे नोनिहाल ।
धर्म वीर अय मेरी आंखों के तारे नोनिहाल ॥

३८४

धनदेव का अपनी सास लक्ष्मीदेवी से कमलश्री के भेजने की प्रार्थना करना और सास का जवाब देना ॥ (शेर)

ध० आपके चरणों में माता अर्ज़ मेरी है यही ।
करके कृपा भेज दीजे अब मेरी कमलाश्री ॥ १ ॥
हो गया अपराध जो मुझसे क्षमा कर दीजिये ।
हाल पर मेरे दया और महरबानी कीजिये ॥

ल० गो किया तुमने सितम पर अब नहीं मुझको ख़याल ।
भेजने में भी नहीं कमला के मुझको तो मलाल ॥१॥
पर मैं क्या कह सकती हूं यह है तुम्हारे घरकी बात ।
आपही खुद करलो इसका फैसला कमला के साथ ॥२॥
है कनकमाला भी कमलाभी यहां मौजूद सब ।
मैं तो जाती हूं तुमही जानो तुम्हारी बात अब ॥३॥

(लक्ष्मीदेवी का चला जाना)

३८५

कनकमाला का धनदेव से कहना ॥ (शेर)

१. आपकी खातिर बहुत सा परयत्न मैं कर चुकी ।
इसके आगे हर तरह अपना फ़र्ज़ मैं कर चुकी ॥
२. लेकिन इसको ऐसे दुख में आपने उलझा दिया ।
जिसका आसानीसे अब सम्भलना मुश्किल होगया ॥

३८६

धनदेव का कमलश्री को बैठे हुये देखकर मोहित होना और उसको मनाना और घर चलने के लिये कहना ॥ (शैर)

१. सती अब जरा कर दया की नजर ।
खताओं पे मेरे न कुछ ध्यान कर ॥
२. हंसी उड़ रही है नगर में मेरी ।
महल में उदासी है छाई हुई ॥
३. न वह मेरी इज्जत ने वह आन कान ।
है घर सूना और मेरी बिगड़ी है शान ॥
४ सती अब मेरी लाज है तेरे हाथ ।
चलो महरबानी से घर मेरे साथ ॥
५. मेरे घरको आबाद चल कर करो ।
मुझे सुर्खरू शाद चल कर करो ॥
६. तुमही मेरे घरकी हो मुख्तार अब ।
भविषदत्त का है मेरा घरबार सब ॥

३८७

कमलश्री का बरुखी से जवाब देना ॥
चाल पंजाबी—छटी बड़ी सय्यां वे जालीदा मोरा काढ़ना ॥

कैसे बने मेरा जी महलों में तेरे जावना ।
आसान नहीं भूलना जी महलों से मोरा काढ़ना ॥टेक॥
१. एक दुख पायो मैंने तेरे राज में ।

हाँ पिया तेरे राज में–हाँ पिया तेरे राज में ॥
दुहाग मुझे देकर के सरूपा को लावना ॥ कैसे० ॥
२. दूजे दुख खोई लाज सखियों के सामने ।
हां सखियों के सामने हां सखियों के सामने ॥
करके निरादर जी पीहर में मोरा भेजना ॥कैसे०॥
३. तीजे दुख रांच रहे सौतन के संग में ॥
हां सौतान के संग में–हां सौतन के संग में ॥
कई कई वर्षों जी बातें ना मोरी पूछना ॥कैसे०॥

३८८

धनदेव का ला जवाब होकर और शर्मिंदा होकर कमलश्री को फिर मनाना ॥ (तर्ज)

१. यह सब कर्मों की बातें हैं न बस तेरा न बस मेरा ।
मेरी होनी बुराई थी तुझे दुख दर्द मिलना था ॥
२. सरूपा दुष्ट ने आकर मेरी सुध बुध भुलाई सब ।
हुआ हाथों से जो मेरे समझ किस्मत में था लिखा ॥
३. सती सतवंती बड़ भागन नहीं तुझसी कोई नारी ।
किया मैंने नहीं आदर तेरा यह दोष था मेरा ॥
४. तेरे चरणों में पड़ता हूं सती करदो क्षमा मुझको ।
बुरा हूं या भला हूं फिर हूं आखिर तो पति तेरा ॥

३८९

अब इनका तुम रखो मान तुमहो सतवंती नारी ॥

२. मिन्नत करके क्षमा मांगली आए शरण तिहारी ।
हाथ जोड़कर सर भी रख दिया तुमरे चरण मंझारी ॥

३ आए सेठ भविष को लेकर जिसकी तुम महतारी ।
पति पुत्र की लज्जा रखलो मानो बात हमारी ॥

४. भविष बना परधान बनी है महा सती सुतनारी ।
नगर सेठ है पति तुम्हारा तुम राणी हो प्यारी ॥

५. अज्ञा गले के थण और पर्भाति के बादल प्यारी ।
पति और नारी का झगड़ा व्यर्थ यह बातें सारी ॥

६. आओ मिलाऊं दोनों को यह पति तुम इसकी नारी ।
जाय महल में रहो खुशी से शोभा बढ़े तुम्हारी ॥

३९४

कमलश्री व तिलकासुन्दरी, धनदेव, भविषदत्त व चन्द्रावली आदि
सब को लक्ष्मी देवी का अपने घर से उत्साह पूर्वक बिदा करना
और हरीवल आदि सब का मुबारक बाद गाना—और पांचों
का चांदी आदि सहित जलूस के साथ हाथी पर आरूढ़
होकर रवाना होना और अपने अपने महल में
चला जाना ॥

चाल—विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. तुम्हारा मेरे घर पे आना मुबारक ।
मेरे घर से घर अपने जाना मुबारक ॥

२. भविष को हो तिलका का पाना मुबारक ।
हो तिलका को घर जा बसाना मुबारक ॥

३. कनक का यूं बाहम मिलाना मुबारक ।
यूं मनना मुबारक मनाना मुबारक ।
४. कमल संग धनवे का जाना मुबारक ॥
हो चन्द्रावली का निभाना मुबारक ॥
५. यह हंसना मुबारक हंसाना मुबारक ॥
यह मिलना मुबारक मिलाना मुबारक ॥
६. यह दिन है मुबारक ज़माना मुबारक ॥
यह धन्यवाद सुनना सुनाना मुबारक ॥

(ड्रापसीन)

इति न्यामत सिंह जैन रचित "सती कमलश्री"
नाटक का पांचवां अंक समाप्तम् ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

दृश्य ४३

पोदनपुर के राजा युवराज के दरबार का परदा

३९५

नोट:—

यहां गजपुर में सुमता राजदुलारी व श्री भविषदत्त की शादी की तय्यारियां हो रहीं थीं। उधर वह बधुदत्त जिसको राजा भूपाल ने काला मुंह करके अपने राज से निकाल दिया था नाराज होकर पोदनपुर के राजा युवराज के दरबार में गया और राजा भूपाल व भविषदत्त की शिकायत की कि राजा ने अपनी लड़की सुमता भविषदत्त को देनी की है जो सर्वथा अयोग्य है। राजा की लड़की राजा को ही मिलनी चाहिये। किसी बनिये महाजन को नहीं देनी चाहिये और राजा युवराज को यह भी बितलाया कि वह सुमता लड़की निहायत रूपवान है और आपके ही योग्य है॥

३९६

बधुदत्त का युवराज के दरबार में पहुंचना और राजा भूपाल और भविषदत्त की शिकायत करना॥

(शैर) (वजन) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूँ॥

१. अय महाराजा तेरे दरबार में आया हूं मैं।
एक अचरज की सुनाने को खबर लाया हूं मैं॥
२. है कुरू जंगल में गजपुर यानी हथनापुर नगर।
राय भूपाल उस जगह का है जो राजा नामवर॥

३. सेठ धनवे मंत्री उस राज में है आज कल।
जिसका बेटा है भविषदत्त वीरता में बेबदल ॥
४. वह भविष परदेश में व्योपार करने को गया।
तिलकपुर पट्टन से इक कन्या को लाया है उड़ा ॥
५. नाम तिलकासुन्दरी है रूप की देवी है वह।
रोहनी रम्भा सची से भी कहीं अच्छी है वह ॥
६. जब भविष हीरों का भर कर थाल राजा से मिला।
होके खुश राजा ने देनी की उसे सुमता सुता ॥
७. राजकन्या वैश्य को जो दी यह है राजा की भूल।
बात यह है राज नीति के बराबर प्रतिकूल ॥
८. राजकन्या सोहती है बेगुमाँ राजा के घर।
किस तरह ले सकता है उसको महाजन का पिसर ॥
९. आप को वह राजकन्या जल्द लेनी चाहिये।
और राजा को सज़ा गलती की देनी चाहिये ॥

३१७

पोदनपुर के राजा का यह बात सुन कर क्रोध करना
और मंत्री से मंत्रणा (सलाह) करना ॥

राजा—मंत्री जी यह बात सर्वथा अयोग्य मालूम होती है
आप का क्या ख़याल है।

मंत्री—हां महाराज ! यह कार्य राजनीति के बराबर प्रतिकूल है।

राजा—यह तिलकासुन्दरी कौन है।

मंत्री—महाराज यह वही तिलकासुन्दरी है जो हजूर की मांग है।

राजा—गज़ब हो गया हमारी मांग और एक वैश्य पुत्र ले जाए। निःसंदेह भविषदत्त ने हमारा बड़ा अपराध किया है। उसको सज़ा मिलनी चाहिये और राजा भूपाल ने भी यह कार्य अयोग्य किया है। अब इन दोनों कन्याओं के बारे में क्या होना चाहिये।

मंत्री—महाराज मेरी राय में तो प्रथम एक दूत राजा भूपाल के दरबार में भेजा जाए और उसको समझाया जाए कि वह इन दोनों कन्याओं को लेकर यहाँ हाज़िर हो जाए।

राजा—यदि वह न माने ?

मंत्री—यदि वह न माने तो युद्ध करके उनको सज़ा देनी चाहिये। और कन्याओं को ले लेना चाहिये।

राजा—हां! चित्रांग दूत को फौरन भेजा जाए और युद्ध के लिये सेना की तैय्यारी का भी प्रबन्ध किया जाए।

मंत्री—(चित्रांग दूत से) देखो चित्रांग जी तुम शीघ्र राजा भूपाल के पास जाओ और उसको हमारे महाराज की तरफ़ से पैग़ाम पहुँचा दो कि वह दोनों कन्याओं को लेकर हाज़िर दरबार हो जाए वरना युद्ध के लिये तैयार रहे।

(दूत का प्रणाम करके चला जाना)
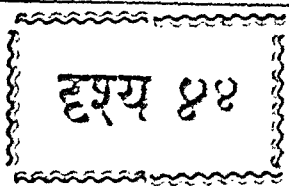
दृश्य ४४

भूपाल राजा के दरबार का परदा ॥

३९८

राजा भूपाल का दरबार में बैठे हुये नज़र आना और सुमता राजकुमारी और भविषदत्ता की शादी के बारे में मंत्री आदि से बात चीत करना ॥

राजा—मंत्री जी सुमता राजदुलारी की शादी का क्या प्रबन्ध हो रहा है।

मंत्री—महाराज विवाह मण्डप तैयार हो चुका है और आवश्यक भोजन आदि का प्रबन्ध हो रहा है।

राजा—देखो हर बात का प्रबन्ध भले प्रकार से होना चाहिये किसी बात की त्रुटि न हो।

मंत्री—महाराज सब बातों का भले प्रकार प्रबन्ध कर दिया गया है।

राजा—सेठ जी आपके यहां क्या कारवाई हो रही है।

धनदेव—महाराज सब प्रकार का उचित प्रबन्ध कर दिया गया है।

३९९

चित्रांग दूत का गजपुर पहुंचना और द्वारपाल का राजा को खबर देना ॥

द्वार०(प्रणाम करके) महाराज पोदनपुर के राजा का चित्रांग दूत आया है ॥

राजा० अच्छा आने दो ।

चित्रांग० (प्रणाम करके) महाराज भूपाल गजपुर नरेश की सेवा में प्रणाम ॥

राजा० आओ चित्रांग जी । अच्छे तो हो ॥

चित्रांग० महाराज की कृपा से सब प्रकार कुशल है ॥

राजा० कहिये कैसे आना हुआ ॥

४००

चित्रांग दूत का अपने राजा का पैगाम सुनाना ।
(शैर) (इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. महाराज भूपाल गजपुर नरेश ।
हो आनन्द में आपका सर्व देश ॥
२. अरज एक सेवा में महाराज की ।
करूं हूं उसे आप सुनलें ज़री ॥
३. महाराज युवराज जी ताजवर ।
पोदनपुर का राजा जो है नामवर ॥
४. वह राजों में नामी है परधान है ।
बहादुर बड़ा और ज़ीशान है ॥
५. किया उसने सब दुश्मनों को है ज़ेर ।
लगा देता है रण में लाशों के ढेर ॥
६. बजाए जो भेरी वह संग्राम की ।
तो मैदां में शत्रू न ठैरे कभी ॥

७. महाराज ने यह सुनी है खबर ।
भविष वैश्य धनवे का है जो पिसर ॥
८. तिलकपुर से लाया है तिलका सती ।
हमारे जो महाराज की मांग थी ॥
९. है यह भी सुना तुमने अपनी सुता ।
भविषदत्त को देनी करी वरमला ॥
१०. यह सुनते ही राजा हुवे पुर गज़ब ।
यह पैग़ाम दे मुझको भेजा है अब ॥
११. मुनासिब नहीं यह बुरी बात है ।
वनिक राजकन्या का क्या साथ है ॥
१२. है बेहतर कि लेकर यह दो लड़कियां ।
चलो एकदम और पहुंचो वहां ॥
१३. वगरना लड़ाई का सामां करो ।
कि तय्यार सब फ़ौज लेकर रहो ॥
१४. उधर की तो सब फ़ौज तय्यार है ।
जवाब आपका सिर्फ़ दरकार है ॥
१५. नहीं आता कोई नज़र यां मुझे ।
जो कंधार दलको ज़रा रोक ले ॥

४०१

पैग़ाम सुनकर राजा का दिल से नाराज़ होना और आख़िर लड़ाई का हुक्म दिया।

राजा०—त्रिग्रांग हमने आपके राजाका पैग़ाम सुन लिया

आप कुछ देर आराम करें हम मशवरा करके जवाब देंगे ॥

चित्रांग० जो हजूर का हुक्म ॥

(प्रणाम करके चला जाना)

राजा० मंत्री जी यह क्या मुआमला है—इसकी तह में क्या राज़ है ॥

मंत्री० महाराज इतनी दूर यह बातें आपसे आप नहीं पहुंच सकतीं ॥

राजा० तो फिर कैसे पहुंचीं ॥

मंत्री० ऐसा प्रतीत होता है कि शायद वह बधुदत्त जो राज से निकाल दिया गया था । नाराज़ होकर युवराज से जा मिला ॥

राजा० कुछ भी हो यह बड़ा पेचदार मुआमला है । इस के फैसले के लिये फ़ौरन ख़ास दरबार किया जाए और उसमें सबकी राय लेकर पैग़ाम का जवाब दिया जाए ॥

मंत्री० अभी महाराज की आज्ञानुसार प्रबन्ध हो जाता है ।

(चला जाना)

दृश्य ४५

राजा के खास दरबार का परदा ॥

४०२

भविषदत्त प्रधान व धनदेव मंत्री व लोहजंग (इसको अनंग पाल भी कहते हैं) सेनापति व अन्य दरबारियों का दरबार में बैठे हुवे नज़र आना। महाराज व निपुनसुन्दरी महारानी का दरबार में पधारना और सबका खड़े होकर विनय करना और महाराजा व महारानी का सिंहासन पर विराजमान होना और मशवरा करना ॥

राजा० अय मेरे वज़ीरो और सरदारो ! तुमने पोदनपुर के राजा का पैग़ाम सुन लिया है। मुआमला बड़ा नाज़ुक और पेचदार है। आप ग़ौर करके अपनी अपनी सम्मति प्रगट करें ताकि सबकी राय से चितरांग दूत को जवाब दिया जाए ॥

महारानी० महाराज सुमता के बारे में जो वचन आप पहिले दे चुके हैं अब उनका पलटना सर्वथा अनुचित है। जो हो चुका सो हो चुका। अब आपका दरबार करके राय लेना व्यर्थ है ॥

(शेर)

१. वचन जो भविष को हो तुम दे चुके।
मुनासिब नहीं है पलटना उसे ॥

२. अवस अब है दरबार और राय सब ।
सुमत और को कैसे दी जाय अब ॥

४०३

धनदेव की राय ॥

महाराज मेरी बुद्धि में भी यही आता है कि आप जो प्रथम विचार कर चुके हैं अब उसके विरुद्ध नहीं होना चाहिये। यदि पोदनपुर की तरफ़ से आक्रमण हो तो हमें साहस पूर्वक उसका मुकाबला करना चाहिये ॥

४०४

लोहजंग का (शीस धुन कर) राय देना ॥
(शैर) (चाल इन्द्र सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. ग़लत राय धनदे (दी आपने ।
न की बहतरी राज की आपने ॥
२. फबे राजकन्या तो राजा के घर ।
दो राजा को सुमता नहीं फिर ख़तर ॥
३. न बे फ़ायदा कुछ करो छेड़ छाड़ ।
कि तिनके का बन जाता है फिर पहाड़ ॥

४०५

लोहजंग की राय से राजा का नाराज़ होना और लोहजंग को जवाब देना ॥

(शैर) (चाल इन्द्रसभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जद आ।

१. ज़रा होश कर दिलमें तू लोहजंग ।
जो करता है बात यूं बेदरंग ॥
२. भला क्या करें शिकवा चित्रांग का ।
जो उसने कहा यह तो पैग़ाम था ॥
३. मगर तू नमकख्वार होकर मेरा ।
निरादर का कहता वचन है खड़ा ॥
४. कोई ऐसी गुफ़तार करता है कब ।
तेरी बातों से लाज जाती है सब ॥

४०६

लोहजंग का जवाब गुस्से से ॥ (शैर)

१. न मानोगे कहना मेरा गर हेज़ूर ।
तो पछताएंगे आप इक दिन ज़रूर ॥
२. इधर आ रहा है वह कंधार दल ।
मचाएगा हल चल करेगा विकल ॥

४०७

राजा का गुस्से से लोहजंग को जवाब देना। (शैर)
(चाल इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जद आ।

१. भविष हीको हम देंगे अपनी सुना ।
कि जो काल में कर चुका कर चुका ॥

२. तुम्हारी बुरी बात हैं लोहजंग ।
जिसे सुनते सुनते हुआ हूं मैं तंग ॥
३. वस अब बैठ कर सोचिये इन्तज़ाम ।
कि हो काम बैरी का जिससे तमाम ।
४. लड़ो इस तरह आज पैकार में ।
कि यश जिससे बढ़ जाय संसार में ॥

४०८

धनदेव का लोहजंग की बातों पर कोप करना और अपनी राय देना ॥
(शैर) (चाल इन्द्र सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. है लोहजंग की गुफ्तगू सब फ़ूजूल ।
चलो डालो अब इसकी बातों पे धूल ॥
२. लिखो पत्र कछ के महाराज को ।
कि बैरी की सैना को तुम रोकलो ॥

४०९

लोहजंग का सख्त गुस्से से धनदेव को जवाब देना ॥
(शैर) (चाल इन्द्र सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. दिया है तुझे धनवे राजा ने मान ।
यह माना कि तू है बड़ा बुद्धिवान ॥
२. मगर युद्ध करने की है बात और ।
यहां बैठ कर करना है बात और ॥

३. वनिक होके बोलो न ऐसे वचन ।
करेगा तू क्या जाके दुशमन से रण ॥
४. अगर है यही जोश दिल में तेरे ।
तो रण में लड़ो सेनापट बांध के ।

४१०

लोहजंग का जवाब सुनकर भविपदत्त का गुस्सा करना
और लोहजंग को गुस्से से जवाब देना ॥

(शेर) (चाल इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. खबरदार अपनी ज़बां तू संभाल ।
अभी शहर से मैं तुझे दूं निकाल ॥
२. अगरचे वनिक पुत्र हूं वेगुमान ।
मगर सुन तू अय लोहजंग बदज़ुबान ॥
३. ले सर सेनापट बांधता हूं अभी ।
लड़ूंगा मैं बन करके सेनापती ॥
४. तू क्या सेनापत का है करता ग़रूर ।
हमें तेरी हाजत नहीं बेशऊर ॥
५. मिला दूंगा कंधार दल खाक में ।
कि कर दूंगा दुश्मने का दम नाक में ॥

४११

भविपदत्त के वीरता के वचन सुनकर राजा का खुश होना
और भविपदत्त की प्रशंसा करना ॥

(शैर) (चाल इन्दर सभा) अरे लाल देव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. भविषदत्त तुझे आज धनवाद है।
दलेरी तेरी क़ाबिलेदाद है॥
२. तू अब अपनी सेना को तय्यार कर।
निडर होके दुश्मन से पयकार कर॥
३. विजय तूने दुश्मन पे पाई अगर।
तो आधा तुझे राज दूंगा पिसर॥

४१२

भविषदत्त का सर झुका कर राजा से अरज करना और पान का बीड़ा उठाना और सबों का जय जयकार करना॥ (शैर)

१. मेरी अर्ज़ मंजूर यह कीजिये।
लड़ाई की आज्ञा मुझे दीजिये॥
२. (बीड़ा उठा कर) खुशी से यह बीड़ा उठाता हूं मैं॥
हथेली पे सर धरके जाता हूँ मैं॥

४१३

राजा का भविषदत्त को कंधारी सेना की विकरालता जितलाना॥
(शैर) (चाल इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ॥

१. सुनो वीर इक बात मेरी ज़रा।
करम का किसी को नहीं है पता॥
२. कि कंधार दल की बुरी झाल है।
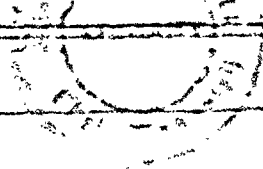
भयानक है भारी है विकराल है ॥

३. खबर कौन दिखलाय वां पीठ को ।
खबर क्या है रण में विजय किसकी हो ॥

४. अगर फ़ौज पीछे तेरी हट गई ।
तो मिट जायगा लाज मेरी सभी ॥

४१४

भविष्यदत्त का राजा को तसल्ली देना ॥

(शेर) (चाल इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ अइद आ ॥

१. यह निश्चय करो और तसल्ली रखो ।
न हरगिज दिखाऊंगा मैं पीठ को ॥

२. करूंगा मैं संग्राम इस तौर से ।
कि जग में मुझे और तुम्हें यश मिले ॥

३. मैं पर चक्री को लाऊंगा बांध कर ।
गिराऊंगा लाकर तेरे पांव पर ॥

४१५

नोटः—

(१) भविष्यदत्त के वचन सुन कर राजा खुश हो गया और [illegible] तैय्यार होने का [illegible] दिया और [illegible]

(२) जब कोतवाल ने यह देखा तो [illegible] और उसको सब हाल सुनाया और [illegible] लड़ाई के लिये [illegible] फौरन पोदनपुर [illegible] राजा को [illegible]

(३) लोहजंग ने चित्रांग को यह भी जितला दिया कि भविषदत्त को राजा भूपाल ने अपनी सुमता सुता और आधा राज देने का इकरार किया है और भविषदत्त ने सेनापति बनकर लड़ाई का बीड़ा उठा लिया है और मुझको दरबार से निकाल दिया है। इसलिये अब मैं तुम्हारा ही तरफ़दार हूं ॥

(४) यह बात सुन कर चित्रांग ने लोहजंग से कहा कि तुम यहां पर ठहरो मैं भी जरा एक बार राय भूपाल से तो मिल आऊं। देखूं वह पैग़ाम का क्या जवाब देते हैं। यह कहकर चित्रांग राजा से मिलने को चला गया ॥

४१६

चित्रांग दूत का राजा भूपाल के दरबार में पहुंचना और बात चीत करना ॥

चित्रांग०—हे नरेन्द्र हमारे महाराज के पैग़ाम का क्या जवाब है ॥

राजा०—चित्रांग, आपके राजा बड़े धर्मात्मा, बुद्धिमान और न्यायकारी हैं। (पत्र देकर) लो यह पैग़ाम का जवाब लेजाओ। हमारी तरफ़ से आपके राजा साहिब को यह भी जितला देना कि हमारे और उनके बीच में बिना कारण कोई द्वेष-भाव नहीं होना चाहिये। आपके राजा ने जो सुमता राजकुमारी मांगी है उसका तिलक हम पहिले ही कंवर भविषदत्त को कर चुके हैं। अब अपने वचन से फिरना धर्म के विरुद्ध है और तिलकासुन्दरी की शादी तो मुद्दत हुई भविषदत्त के साथ हो चुकी है। अब उसका मांगना महापाप है। चित्रांग

तुम खुद बुद्धिमान हो और विचार सकते हो कि अब दोनों बातों में कोई विशेष कारवाई नहीं हो सकती ॥

४१७

राजा का जवाब सुन कर चित्रांग दूत का नाराज़ होना और फिर राजा ने कहना ॥

(चाल) अरे रावण तू घरकी दिवाना फिरे, तुझे मरने का डर हो नहीं ॥

१. अहो राजा न ऐसा विचार करो ।
नज़र आती है इसमें भलाई नहीं ॥
जो सुता के लिये तुम बिगाड़ो हो घर ।
यह तो कुछ आपकी चतुराई नहीं ॥
२. क्यों न देकर के सुमता तू राज करे ।
क्यों न आपस में मेल का काज करे ॥
करेगा जो तू कल क्यों न आज करे ।
क्यों न तेरी समझ में यह आई नहीं ॥

४१८

दूत के वचन सुनकर राजा का गुस्सा होना ॥ (चाल नम्बर ४१७)

१. अहो दूत यह पापी निशंक बड़ा ।
इसको लाज ज़रा भी भी आई नहीं ॥
इसने नाम सुमत जो ज़बां से कहा ।
मेरे दरबार क्या बेहयाई नहीं ॥

२. कान नक छेद कर इसकी काटो ज़बां ।
वह सज़ा दो कभी भी जो पाई नहीं ॥
इसका कर मुंह सियाह दो गधे पर चढ़ा ।
होगी हरगिज़ भी इसकी रिहाई नहीं ॥

४१९

धनदेव का राजा को शांत करना और दूत को दरबार से निकाल देना
(चाल नम्बर ४१८)

१. महाराज न दूत पे कोप करो ।
इसमें आपकी होगी बड़ाई नहीं ॥
किसी राजा ने दूत को दी हो सज़ा ।
ऐसी बात तो सुनने में आई नहीं ॥

२. इसे दरबार से अभी देते निकाल ।
इसकी सूरत भी देगी दिखाई नहीं ॥
इसकी बातों पे राजन न कीजे ख़याल ।
यह मूरख है सोची भलाई नहीं ॥

४२०

नोट–

चित्रांग दूत दरबार से निकाले जाने पर लज्जित होकर अपने डेरे पर आया
और लोहजंग से मिलकर उसको दरबार का सब हाल सुनाया
और दोनों मिल कर पोदनपुर चले गये ॥

दृश्य ४६

पोदनपुर के राजा के दरबार का परदा

४२१

चित्रांग दूत का पोदनपुर के राजा के दरबार में पहुंचना और पैगाम का जवाब सुनाना ॥

(शेर) कौन कहता है कि मैं तेरे तरफदारों में हूं ॥

१. अय महाराजा बड़ा मग़रूर है गजपुर नरेश ।
आपका पैगाम सुन कर आया गुस्सा में वह पेश ॥
२. बात उसने आपकी मानी नहीं मानी नहीं ।
आपके पैगाम की कुछ भी क़दर जानी नहीं ॥
३. लोहजंग को भी निकाला जो खड़ा है सामने ।
मुझको बाहर कर दिया दरबार में ताने दिये ॥
४. बनके सेनापत भविषदत्त लड़ने को तय्यार है ।
उस तरफ़ को अब तुम्हें लशकरकशी दरकार है ॥
५. तोड़दो उसका गुरूर और लूटलो गजपुर नगर ।
और भविष धनवे का बनियापन मिटादो सर बसर ॥

०००

(चाल) पहलू मे मेरे यार है उसकी खबर नहीं ॥

१. अय लोहजंग तू है बहादुर जहान में ।
क्या राजपूती शान है इस तेरी शान में ॥
२. सेनापति बनाता हूं तुझको मैं फौज का ।
हलचल मिचादे जाके तू हिन्दोस्थान में ॥
३. धनवे भविष को बांध के ला मेरे सामने ।
छक्के छुड़ादे दुश्मनों के एक आने में ॥
४. भूपाल को भी बांध ला करके असीर तू ।
तिलका सुमत को ला बिठा मेरे मकान में ॥

४२३

लोहजंग का राजा को जवाब देकर लड़ाई के लिये रवाना होना ॥
(चाल) पहलू में मेरे यार है उसकी खबर नहीं ॥

१. मंजूर हुक्म है मुझे दिल से हजूर का ।
तोड़ूंगा सर मैं जाके भविष के ग़रूर का ॥
२. मंशा जो है हजूर का सब कर दिखाऊंगा ।
नक्शा मिटाके आऊंगा मैं हथनापूर का ॥
३. तिलका सुमत को तेरी बना दूंगा बांदियां ।
सबको मज़ा चखा दूंगा उनके क़सूर का ॥

(लोहजंग का रवाना होना)

४२४

नोट—

लोहजंग पोदनपुर के राजा की सेना को लेकर और सेनापति बनकर हरगपुर की तरफ़ लड़ाई के लिये रवाना हो गया। इसको कूच के समय अनेक बदशगुन हुये। मगर इसने कुछ ख़्याल न किया और आगे बढ़ता चला गया॥

दृश्य ४७
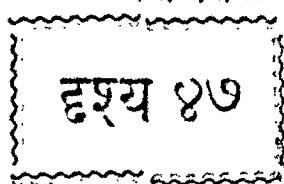
भूपाल राजा के दरबार का पर्दा।

४२५

राजा भूपाल का दरबार में बैठे हुये और दान शील करते हुये नज़र आना और भविषदत्त के सर पर सेना पट बांधना॥

राजा० (सेनापट बांध कर) अय बहादुर भविषदत्त मैं आज आपके सर पर बड़ी ख़ुशी से अपने हाथ से सेनापट बांधता हूं और अपनी चतुरंग सेना आपको देता हूं और बैरी से युद्ध करने की आज्ञा देता हूं॥

मंत्री० (दूत को पत्र देकर) अय दूत यह पत्र महाराज कन्ह की सेवा में फ़ौरन ले जाओ॥

दूत० (राजा को प्रणाम करके) बहुत अच्छा हज़ूर जो आज्ञा।

४२६

नोट—

(१) दूत कच्छ जा पहुँचा और कच्छ नरेश को राजा भूपाल का पत्र दिया। राजा कच्छ पत्र को पढ़ कर फौरन अपनी सेना को लेकर पोदनपुर की सेना को रोकने के लिये रवाना हो गया ॥

(२) दोनों सेनाओं में युद्ध होने लगा और कच्छ नरेश ने लोहजंग को पराजय करके भगा दिया ॥

(३) सवारों ने महाराजा भूपाल को कच्छ नरेश के विजय पाने और लोहजंग के हार कर भाग जाने की खुशखबरी सुनाई राजा ने प्रसन्न होकर शहर में जीत की आनन्द भेरी बजवा दी ॥

(४) उधर भी सेना के आदमियों ने पोदनपुर के राजा युवराज को लोहजंग के हारने की और कच्छ नरेश के विजय पाने की खबर दी। यह खबर सुन कर युवराज बड़ा हैरान हुआ और मंत्रियों से मशवरा करके उसने चित्रांग दूत को दोबारा भूपाल राजा के दरबार में रवाना किया ॥

(५) दूत ने आकर राजा भूपाल को फिर पैग़ाम दिया कि या तो सुमता लड़की देकर संधि करलें वरना महा संग्राम होगा। राजा ने पैग़ाम सुनकर जवाब दिया कि जब युद्ध प्रारम्भ होगया और तुम हार कर भाग गए तो अब संधि का कौनसा मौका बाकी रह गया है। क्या आप के राजा को ऐसी बात कहते हुये लज्जा नहीं आती ॥

(६) यह जवाब सुन कर दूत वापिस पोदनपुर आया और पैगाम का जवाब सुना दिया। युवराज यह जवाब सुन कर आग बबूला हो गया और खुद बहुत बड़ी सेना लेकर गजपुर की तरफ चढ़ गया और समुन्द्र के रास्ते से कच्छ जा धमका ॥

(७) सवारों ने आकर राजा भूपाल को युवराज के आक्रमण की खबर दी और राजा ने फौरन शहर में युद्धभेरी दिलवा दी और सेना लड़ाई के लिये तय्यार होने लगी ॥

दृश्य ४८

कमलश्री के महल का परदा ॥

४२७

भविष्यदत्त का युद्ध भेरी को सुन कर और हथियार सजा कर अपनी माता कमलश्री के महल में आज्ञा लेने के लिये आना और आज्ञा मांगना ॥
(चाल) विपत में सजन के संभालो कमलिनी ॥

१. चला हूं मैं रन को हो तय्यार माता !
फ़क़त तेरी आज्ञा है दरकार माता ॥
२. विजय करके आऊंगा दुशमन को जल्दी ।
न करना मेरा रंज ज़िनहार माता ॥
३. वनिक कुलकी इज्जत का कर दूंगा रोशन ।
धरम पे हूं मरने को तय्यार माता ॥
४. करूंगा वह जंग आज लोहजंग से मैं ।
कि मानेगी मेरी वह तलवार माता ॥
५. दिये ताने निश्चंग लोहजंग ने हैं ।
करूंगा उन्हें आज लाचार माता ॥
६. सुमत देखूं युवराज बना है क्योंकर ।
मेरे सामने करके पयकार माता ॥
७. खुशी से मुझे दीजिये रण की आज्ञा ।
यही अर्ज मेरी है इस बार माता ॥

४२८

कमलश्री का भविषदत्त को युद्ध में जाने को आज्ञा देना और कहना कि तुम अपनी रानी तिलकासुन्दरी से भी आज्ञा लेते जाना ॥

(चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. तुझे देखकर रण को तय्यार बेटा ।
खुशी मेरे दिल में है इस बार बेटा ॥

२. मेरे दूध की लाज रख लीजियो तू ।
कि खाली न जाए मेरी धार बेटा ॥

३. बनिक कुल को ग़ैरों ने ताने दिये जो ।
मिटाना उन्हें करके पयकार बेटा ॥

४. न मरने से डरना कि मरना है आख़िर ।
धरम पे मरे जो वही सार बेटा ॥

५. मचे खलबली फ़ौज में दुश्मनों की ।
चले इस तरह तेरी तलवार बेटा ॥

६. निडर होके शत्रु से इस तौर लड़ना ।
कि खाली न जाए कोई वार बेटा ॥

७. खुशी से मैं आज्ञा सुनाती हूं तुझको ।
ख़याल आए मेरा न जिनहार बेटा ॥

८. ज़रा अपनी तिलका से भी मिलते जाओ ।
अगरचे तू है रण को तय्यार बेटा ॥

९. बिजय करके जल्दी मुझे मुंह दिखाना ।
तेरे ही सहारे है घर बार बेटा ॥

(कमलश्री का भविष को छाती से लगाना और भविषदत्त का प्रणाम करके चला जाना)

दृश्य ४९

(तिलकासुन्दरी के महल का परदा)

४२९

भविषदत्त का तिलकासुन्दरी के महल में आना और युद्ध में जाने के लिये आज्ञा मांगना ॥

(चाल) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१. मेरी प्यारी मैं आया हूं तुम्हें मिलने मिलाने को ।
चला गजपुर पे आई है मैं जाता हूं हटाने को ॥
२. अधम युवराज ने सुमता को और तुमको भी मांगा है।
महा पापी है वह जाता हूं मैं उसके मिटाने को ॥
३. वनिक कुल पर मेरे दरबार धब्बे दुशमनों ने जो ।
लगाए हैं सती जाता हूं मैं उनके हटाने को ॥
४. धरम और लाज और इज्जत पे मरना धर्म है मेरा ।
हैं तीनों आज खतरे में चला उनके बचाने को ॥
५. न घबराना मैं आऊंगा बहुत जल्दी विजय करके ।
खुशी से दीजिये आज्ञा इसी दम रण में जाने को ॥

४३०

(चाल) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे

१. खुशी से जाइये बालम धरम इज्जत बचाने को ।
मुसीबत जो पड़ी है राज पर उसके मिटाने को ॥
२. हमारी तरफ़ का लाना न कुछ दिलमें खयाल अपने ।
समझना धर्म जान अपनी लड़ाई में लड़ाने को ॥
३. हमारी नाग मुद्री लो यह उंगली में पहिन लीजे ।
करेगी यह असर ज़ाहिर बिजय रण में दिलाने को ॥
४. तुम्हारा धर्म रक्षक हो कि जल्द आओ फ़तेह पाकर ।
करो युवराज को पामाल यश जगमें बढ़ाने को ॥
५. मैं देती हूं तुम्हें आज्ञा नहीं मन में मेरे चिन्ता ।
मुबारक मैं समझती हूं तुम्हारे रण में जाने को ॥

(भविपदत्त का प्यार करके युद्ध को चला जाना)

४३१

नोट:–

(१) दूसरी बार रण भेरी बजी और सब योधा अपने अपने घर से आज्ञा लेकर सेना में ऐकत्र हो गए। भविषदत्त भी अपने महल से बिदा होकर और हाथी पर सवार होकर सेना में आगए। जाते समय भविषदत्त को बहुत से शुभ शगुन हुये ॥

(२) कच्छ नरेश भी अपनी सेना लेकर भविपदत्त के साथ आ मिले। और राजा भूपाल भी अपनी सेना का नीरीक्षण करने को युद्ध स्थल में आगए ॥

(३) कच्छ नरेश ने राजा भूपाल और कंवर भविपदत्त से लोहजंग का दोष क्षमा करने की सिफ़ारिश की। भविपदत्त लोहजंग को देख कर बिगड़ गए

और कहने लगे कि इस कम्बख्त ने फिर आकर मुंह दिखाया है । यह बड़ा दुष्ट आत्मा है। अगर यह हमारी सेना में आयेगा तो इसका सर कलम कर दिया जायगा । कच्छ नरेश ने यह वचन सुन कर फौरन लोहजंग को राजा के चरणों में डाल दिया और कहा कि इस बार तो इसका दोष क्षमा कर दिया जाय आगे को यह आप की इच्छा अनुसार काम करेगा ॥

(४) राजा ने लोहजंग से पूछा कि अब इस युद्ध के बारे में तुम्हारी क्या राय है । लोहजंग ने फिर यही कहा कि फौरन युवराज से सन्धि कर लेनी चाहिये । यह सुन कर भविषदत्त आग बबूला हो गया और कच्छ नरेश से कहा कि आप तो कहते थे कि लोहजंग अब सीधा हो गया है मगर आपने देखा कि इसका वही पहिले वाला प्रपंच है दर असल यह बड़ा दगाबाज और नमकहराम है । अब सब सेना तय्यार हो चुकी है मैं एक बार युद्ध जरूर करूंगा और युवराज व चित्रांग व लोहजंग को उनकी शरारत का मजा चखाऊंगा। अब सन्धि कदापि नहीं हो सकती ॥

(५) भविषदत्त का जवाब सुन कर लोहजंग उलटा पोदनपुर के राजा के पास चला गया और कहने लगा कि भविषदत्त वनिक पुत्र सन्धि करना नहीं चाहता। युवराज ने यह जवाब सुनते ही रण भेरी बजवादी और युद्ध होने लगा ॥

(६) युद्ध ने देखते देखते बड़ा भयानक रूप धारण कर लिया और कच्छ नरेश भी युद्ध में चले गये । कुछ देर बाद भूपाल की सेना पीछे हट गई और सेना में हलचल मच गई। राज महल में भी घबराहट फैल गई और ख्याल होने लगा कि परचक्री प्रबल है । न जाने क्या परिणाम होगा ॥

दृश्य ५०

(रणभूमि में राजा भूपाल के कैम्प का परदा।)

४३२

भविषदत्त का हथियार बांध कर राजा भूपाल के कैम्प में आना और (तलवार खैंच कर सलामी देकर) राजा से कहना कि मैं खुद युद्ध को जा रहा हूँ। आप तसल्ली रक्खें आपकी अवश्य विजय होगी॥ (शैर)

है परणाम मेरा महाराज को।
मैं जाता हूं लड़ने को आज्ञा करो॥

४३३

राजा का भविषदत्त को युद्ध में जाने की आज्ञा देना और आशीर्वाद देना॥
(चाल) (इन्द्र सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ॥

१. भविष तुमको शाबाश धनबाद है।
दलेरी तेरी क़ाबले दाद है॥
२. मैं खुश होके देता हूं आज्ञा तुझे।
है निश्चय तू पाएगा रण में विजय॥
३. सुना है कि सेना अपनी पीछे हटी।
है युवराज की सेना आगे बढ़ी॥
४. अगर तू विजय पाय दुशमन पे आज।

तभी तो रहेगी मेरी जग में लाज ॥
५. जो युवराज लोहजंग चित्रांग को ।
पकड़ कर तू लाए तो दिलशाद हो ॥
६. मैं राज आधा गजपुर का दूंगा तुझे ।
तुम्हारी विजय में है मेरी विजय ॥

४३४

भविषदत्त का जवाब देकर युद्ध को रवाना होना ॥

(शेर) (इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. महाराज बेफ़िक्र बैठ रहो ।
मैं जाता हूं दिल में तसल्ली रखो ॥
२. है क्या फ़िक्र सेना जो अपनी हटी ।
बदल दूंगा नक़शा मैं जाकर अभी ॥
३. विजय आपकी होगी मैदान में ।
न फ़र्क़ आने दूंगा ज़रा शान में ॥
४. अभी दुशमनों को पकड़ लाऊंगा ।
चरण पर तेरे उनको दूंगा गिरा ॥

(भविषदत्त का युद्ध क्षेत्र की तरफ़ तलवार निकाले हुए जाना)

दृश्य ५१

(रणभूमि का परदा)

४३५

राजा से बिदा होकर भविषदत्त का रणभूमि में पहुंचना और मानभद्र का उसकी सहायता के लिये यकायक जाहिर होना और भविषदत्त के साथ हमदर्दी करना॥

(चाल) पहलू में मेरे यार है उसकी खबर नहीं ॥

१. आया हूं मैं मदद के लिये कारज़ार में ।
दुशमन को मैं करूंगा फ़ना एक वार में ॥
२. ठैरें यहां पे आप मैं जाता हूं जंग को ।
रखिये तसल्ली अपने दिले बेक़रार में ॥
३. क्यों मेरे होते आप लड़ें दुशमनों के साथ।
मैं ही उन्हें मिला दूंगा गरदो गुबार में ॥
४. भूला नहीं हूं आपके लुतफ़ो करम को मैं ।
मैं भी वफ़ा दिखाऊं कुछ इस कारज़ार में ॥
५. क़ौमो वतन की रक्षा का है जोश आपको ।
फिर क्यों न बन्दा हिस्सा ले इस नेक कार में ॥

४३६

भविषदत्त का मानभद्र को धन्यवाद देना और कहना कि मैं अपने ही भुजाओं के बल से शत्रु को परास्त कर लूंगा ।

(चाल) पहलू में मेरे यार है उसकी ख़बर नहीं ॥

१. शाबाश आफ़रीं है तेरे इस ख़याल पर ।
की महरबानी आपने जो मेरे हाल पर ॥
२. अहसान याद रखना है इन्सान का धरम ।
नेकी का बदला फ़र्ज़ है अहले कमाल पर ॥
३. तकलीफ़ आप लड़ने की लेकिन न कीजिये ।
मुझको भरोसा है मेरे ज़ोरो जलाल पर ॥
४. युवराज की दग़ा में सज़ा वह जो बद नज़र ।
रखता है दूसरों के ज़नो मुल्को माल पर ॥
५. परवा नहीं जो सर भी कटे धर्म युद्ध में ।
लाखों ने जान दी है धरम के ख़याल पर ॥

४३७

मानभद्र का भविषदत्त की वीरता की प्रशंसा करना तथा विजय का आशीर्वाद देना और युद्ध भूमि में चले जाने कहना ॥

(चाल) है बहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़ ॥

१. बाँके शेरे दिलावर आप हैं ।
वैश्य कुलके माहे अनवर आप हैं ॥
२. तुम विलासक धर्म के ग्रोनार हो ।
महरबाँ दुखियों पे यकसर आप हैं ॥
३. जय धर्म की जग में होती है सदा ।
धर्म पर शैदा सरासर आप हैं ॥

४. हो लड़ाई में विजय आज आपकी ।
देश रक्षक आए बनकर आप हैं ॥
५. नाश हो शत्रु का और तेरी विजय !
पाप पर दुशमन धरम पर आप है ॥

४३८

भविषदत्त का कंधार दल पर आक्रमण करना और उसकी वीरता और मार धाड़ को देख कर दुशमन की फौज में हलचल मच जाना और युवराज का भविषदत्त के सामने आना और ताना देना ॥

(शैर) (चाल इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

१. बनिक पुत्र करता है तू क्या ग़रूर ।
मिला दूंगा मिट्टी में तुझको ज़रूर ॥
२. लड़ाई से तुझको सरोकार क्या ।
बनिक होके तू क्या लड़ेगा भला ॥
३. हुवा क्या तुझे बेटी राजा ने दी ।
बनाया है परधान सेनापती ॥
४. यह की भूल भूपाल ने सर बसर ।
बनिक को जो भेजा है लड़ने इधर ॥
५. है बहतर यही रण से तू भाग जा ।
बचा अपनी जां मेरे आगे न आ ॥
६. उड़ा दूंगा सर तेरा इकवार में ।
है तेज़ी बड़ी मेरी तलवार में ॥

४३९

भविषदत्त का युवराज को जवाब देना ॥

(शैर) (इन्दर सभा) प्यारे लालदेव इस तरफ़ उतर आ ॥

१, वनिक हूं मगर शेर हूं, मर्द हूं ।
जो चाहूं तेरा सर अभी काट लूं ॥
२. मगर तुझको बांधूंगा जिन्दा मैं आज ।
न छोड़ूंगा बाक़ी तेरा तख्तो ताज ॥
३. मेरे आगे कंधार दल कुछ नहीं ।
मेरे हाथ तू देख लेना यहीं ॥
४. तुझे लाई शामत तेरी इस तरफ़ ।
तू अब भाग कर जायगा किस तरफ़ ॥
५. ले आता हूं अब तू खबरदार हो ।
मेरे वार को रोक होशियार हो ॥

४४०

नोट–

भविषदत्त का युवराज को जवाब देना और गुस्से से तलवार [illegible] युवराज पर आक्रमण करना और दोनों का युद्ध करना और [illegible] पर युवराज के हाथों पर झपटना और उसको बांध लेना और [illegible] खड़ा करना। युवराज की सेना का तितर बितर हो जाना और [illegible] लोहलंग व [illegible] [illegible] विजय की भेरी बजाते हुए [illegible] रवाना होना ॥

दृश्य ५२

(राजा भूपाल के कैम्प का परदा ।।)

४४१

भविषदत्त का युवराज, लोहजंग, चित्रांग और अन्य कंधारी अफ़सरों को कैद करके राजा भूपाल के सामने लाना और प्रणाम करना तथा सबको राजा के चरणों में डालना और कहना ।।

(शैर) (इन्दर सभा) अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ।।

१. विजय हो मुबारक महाराज को ।
तरक्की सदा हो तेरे राज को ।।
२. विजय होगई तेरे इक़बाल से
डरा मैं न कंधार की झाल से ।।
३. लड़ा इस तरह जाके मैदान में ।
लिया जीत रण आनकी आने में ।।
४. तेरा झंडा रण में खड़ा कर दिया ।
कि लाशों से मैदान को भर दिया ।।
५. महाराज हाज़िर यह युवराज है ।
यह क़ैदी तेरे सामने आज है ।
६. इसे हाथी पर से उठा लाया हूं ।
विजय भेरी रण में बजा आया हूं ।।

७. यह बदज़ात लोहजंग भी है खड़ा ।
जो बाग़ी हो दुशमन से था मिल गया ॥
८. है हाज़िर यह चित्रांग भी गलची ।
हतक जिसने दरबार में की बड़ी ॥
९. यह तीनों हैं हाज़िर निगाह कीजिये ।
इन्हें चाहो जो कुछ सज़ा दीजिये ॥

४५२

राजा का भविषदत्त की वीरता की प्रशंसा करना और मस्तक चूमना और आधा राज देना और अर्द्ध सिंहासन पर बैठाना

(शेर) (इन्दर सभा) प्यारे लालदेव इस तरफ़ आना ज़रा ॥

१. भविषदत्त मेरी लाज तूने रखी ।
बड़ी आज मरदानगी तूने की ॥
२. विलाशक बहादुर है तू शूर वीर ॥
ज़माने में तेरी नहीं है नज़ीर ॥
३. वनिक होके कंधार दलसे लड़ा ।
विजय का किया तूने झंडा खड़ा ॥
४. था कंधार दल का बड़ा शोर शार ।
हर इक वीर के दिल में था उसका डर ॥
५. मगर तूने छिन भिन्न उसे कर दिया ।
कि मैदान लाशों से भर भर दिया ॥
६. तुझे आज सौ बार धन्यवाद है ।

तेरी वीरताई से दिलशाद है ॥
७. मैं गजपुर में जश्न इक दिन मना ।
तुझे राज आधा करूंगा अता ॥
८. तेरी अब मैं सुमता से शादी करूं ।
तेरे सरपे फिर ताज शाही धरूं ॥
९. है इन कैदियों का तुझे अख़तियार ।
इन्हें छोड़ या भेज दे कारागार ॥

(परदा गिरना)

४४२

नोट–

(१) रण में विजय पाकर महाराज भूपाल व कंवर भविषदत्त ने सब अफसरों और कैदियों सहित जलूस शाहाना के साथ गजपुर में प्रवेश किया और शहर में जीत की आनन्द भेरी बजवा दी । नगर में चारों तरफ़ घर घर में मंगलाचार होने लगे ॥

(२) भविषदत्त ने अपनी उदारता से युवराज और उसके साथ लोहजंग व चित्रांग आदि सब सरदारों ने छोड़ दिया और हुक्म दे दिया कि गजपुर में आनन्द से शाही मेहमान होकर रहेंगें ॥

(३) राजा ने भविषदत्त को दरबार में बुलवाया और उसको सिंहासन पर बिठलाकर सबके सामने प्यार किया और उसकी सुमता से शादी करने के लिए विवाह मंडप की तय्यारी का हुक्म दे दिया ॥

———

विवाह मंडप का परदा ॥

४४४

मंडप में राजा भूपाल व कुंवर भविष्यदत्त व सेठ धनदेव व कमलश्री व [illegible] और रानी निपुणसुन्दरी का बैठे हुये नज़र आना और सुरूपा का भविष्य-दत्त के गले में वरमाला डालना और राजा का खड़े होकर दोनों की शादी करना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. अय भविष्यदत्त सूरमा गुणवान और वीरों में वीर ।
अय सती कमला के लाल अय शेरनर गम्भीर धीर ॥
२. है सुमत आंखों का तारा शीलवंती और सती ।
मैं वचन अनुसार इससे करता हूं शादी तेरी ॥

४४५

सखियों का सुरूपा [illegible] मुबारकबाद [illegible] ॥
(चाल नाटक) मुबारकबादी [illegible] ॥

मुबारकबादी गाओ शादी सुमना प्यारी की ।
है भविष्य महा बड़भागी ।
रणभूमि संग्राम-शान [illegible]

सुमता प्यारी–राज दुलारी–बनी भविष की रानी है।
खुश रहें बाहम प्यारा प्यारी ॥
हरियां भरियां कलियां खिलियां खुशियां मचियां।
सुमता प्यारी की ॥ मुबारकबादी ॥
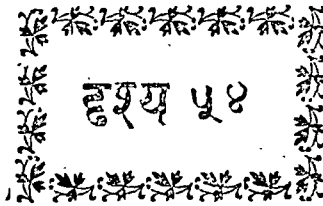
(भविषदत्त के महल का परदा ॥)

४४६

एक दिन तिलकासुन्दरी का चुपचाप महल में बैठे हुवे नजर आना और सुमता का आना और दोनों का आपस में बात चीत करना ॥

सु० (प्रणाम करके) बहिन तिलका आज चुपचाप कैसे हो।
ति० क्यों ! खुश होने की कौनसी बात है ॥

४४७

सुमता का हंसते हुवे जवाब देना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूँ ॥

१. आज कल तो हर तरफ से है बहार आई हुई।
है खुशी भी फिर रही घर घर में इतराई हुई ॥
२. है महल में भी खुशी के शादियाने बज रहे।

दिल में सबके देख है या क्या क्या उमंग आई हुई ॥

३. राज में दरबार में सन्मान सबका हो रहा ।
है गरज़ चारों तरफ़ शुभ की घटा छाई हुई ॥

४. रंजोग़म का कोई भी कारण नज़र आता नहीं ।
क्यों कली दिल की तेरी फिर आज मुरझाई हुई ॥

४४८

तिलकासुन्दरी का जवाब देना ॥

(चाल) दिल छीना, निगाहें चुरा कर चले । कहां जाते हो जादू सा करके चले ॥

इतनी काहे पे तू इतराई हुई ॥
हे सुमत किसपे तू मचलाई हुई ॥ टेक ॥

१. कोई दुनिया में नहीं यार यगाना देखा ।
छान कर देखा तो मतलब का ज़माना देखा ॥
क्या लखा जिसपे है ललचाई हुई ॥इतनी०

२. पुरुष के दिल में नहीं कुछ भी दया होती है ।
मर्द में नेक नहीं बूए वफ़ा होती है ॥
है हमारी तो यह आज़माई हुई ॥ इतनी०

३. दोष क्या मेरे में था यह न बता तो मुझको ।
किस लिये मुझपे तुझे लाया बुला तो मुझको ॥
क्या भविष को नहीं बेवफ़ाई हुई ॥इतनी०॥

४. तुझपे लाए न कोई प्यार यह क्या जान लिया ।
किस तरह निश्चय हुआ और कैसे यह मान लिया ॥
इस दोषारोपण में किसने सिखाई हुई ॥इतनी०

४४९

यह बात सुन कर सुमता का उदास होकर पड़ रहना और तिलकासुन्दरी का भी उदास होना। भविषदत्त व कमलश्री का महल में आना और दोनों को उदास देखकर हैरान होना और बात चीत करना ॥

(शैर) विपत में सनम के संभाली कमलिया

भ० कहो प्यारी तिलका यह क्या हो गया है ॥
सुमत क्यों पड़ी इसको क्या हो गया है ॥
ति० १. भला क्या ख़बर मुझको क्या हो गया है।
मेरे से क्या पूछो हो क्या हो गया है।
२. तुम्हीं ने किया होगा कुछ काम ऐसा।
कि जिसका नतीजा यह क्या होगया है ॥
३. इसी को उठा करके पूछो इसी से।
कि क्या बात है और क्या होगया है ॥

४५०

भविषदत्त का सुमता से प्यार करके हाल पूछना ॥

(शैर वज़न) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूँ ॥

१. हे सती सुमता तुम्हारे रंज का कारण है क्या।
बात जो कुछ दिल में है यह दे ज़रा मुझको बता ॥
२. क्यों पड़ी है तू कहो यूं मुख पे अंचल डाल के।
किस लिये चेहरे पे हैं आसार रंजो मलाल के ॥

४५१

सुमता का जवाब देना ॥

(चाल) खूने जिगर हम पीते हैं बस गम में तेरे यार ॥

बालम तुम्हारा होता है ना मुझको एतबार ।
क्यों कर हो सकता है मरदों का किसका एतबार ॥टेक

१. थी घरमें तिलका प्यारी । ब्याह लाए सुमत कुमारी ।
ना लाओ तीसरी नारी । हो क्या मुझको एतबार ॥

२. मरदों में दया नहीं होती । कुछ शर्म हया नहीं होती ।
बूवे वफ़ा नहीं होती । हो क्या मुझको एतबार ॥

३. ऊपर का प्रेम दिखावें । बातों में हो भरमावें ।
नहीं करके वचन निभावें । हो क्या मुझको एतबार ॥

४५२

[illegible] का तीसरी शादी न करने का नियम लेना

और सुमता को राजी करना ॥

(चाल) पर मैं नहीं पीता हूं [illegible] मुझको ।

१. और शादी का रचाना मुझे दरकार नहीं ।
जिसमें तू राजी हो राजी हूं मैं इनकार नहीं ॥

२. साखी देता हूं माता के चरणों की प्यारी ।
तीसरी शादी करूंगा कभी जिनहार नहीं ॥

३. नेम लेता हूं मुझे ध्यान है जिन आगम को ।
चाहे मेरु भी चले हटे यह इकरार नहीं ॥

४. कर दिया कहना तेरा पूरा सुमत तू भी तो ।
कह दे खुश होके कि अब दिल में कोई खार नहीं ॥
५. हो गई अबतो तसल्ली तेरे दिल की प्यारी ।
फिर ने कहना कि मुझे मर्द का एतबार नहीं ॥

४५३

सुमत का खुश होकर जवाब देना ॥

(चाल) मादरे हिंद की आँखों का सितारा गांधी ॥

१. अय पति धर्म के अवतार सरासर तुम हो ।
अब मैं समझी कि गृह नीति के सागर तुम हो ॥
२. थे बड़े पहले तो संदेश हमारे दिल में ।
आपने छिन में किये दूर हितंकर तुम हो ॥
३. अब बहन तिलका को भी आप मनालें साहब ।
गर पति मेरे हो इसके भी तो शौहर तुम हो ॥
४. काम चलता है प्रेम और सुमत से घर का ।
क्या कहूं और समझदार सरासर तुम हो ॥
५. है खुशी मेरी तो तिलका की खुशी में बालम ।
जी में जो आए करो दोनों के अफसर तुम हो ॥

४५४

तिलकासुन्दरी को चुप चाप और नाराज देख कर भविषदत्त
का उससे हाल पूछना ॥

(चाल) (शेर) कौन कहता है कि मैं तेरे ख्वाहाँ में हूं ॥

१. अय तिलक इस वक्त तेरे रंज का कारण है क्या ।
बात जो दिल में है तू भी दे जरा मुझको बता ॥
२. तूने की मेरी मदद धन माल सब कुछ दे दिया ।
मेहरबानी से तेरी ही मैं तवंगर बन गया ॥
३ मैं अभारी हूं तेरा हर वक्त ताबेदार हूं ।
तू जो कुछ चाहे वही करने को मैं तय्यार हूं ॥

४५५

तिलकासुन्दरी का जवाब ॥

(चाल – शे) कौन कहता है कि मैं तेरे ख्वाहाँ में हूं ॥

१. मैं नहीं कहती कि मैं इस घर में कुछ हकदार हूं ।
मैं तो दुखियारी हूं और किस्मत में भी लाचार हूं ॥
२. यह सुमत राजा की बेटी है बड़ी गुणवान है ।
मैं तो इक परदेसनी गुमनाम हूं नाकार हूं ॥
३. छोड़ कर घरबार सब मैं आ गई परदेस में ।
कौन पूछेगा हमारी इस बिगाने देश में ॥

४५६

भविष्यदत्त और माता का [illegible]

(शेर — [illegible])

भ० १. सुमत्ता को तो माता जो है गाली क्या दिया ।

जो उसने कहा मान कर उसको मना लिया ॥
२. पर यह समझ में मेरे नहीं आई अब तलक ।
किस बात पे नाराज़ हो गई है यह तिलक ॥
क० १. बेटा जो बात है वह नहीं कौन जानता ।
मैं भी उसे जानूं हूं और तू भी जानता ॥
२. हक़ उसका उसे दीजे जो हक़दार है बेटा ।
बस घर के चलाने का यही सार है बेटा ॥
भ० १. माता समझ में मेरे तो कुछ भी नहीं आता ।
हैरां हूं परीशान कहा कुछ नहीं जाता ॥
२. करती नहीं है अक्ल मेरी काम इस जगह ।
सब मेरी नीति रीति है नाकाम इस जगह ॥
३. किस तरह दूर इसका यह रंजो महन करूं ।
जो आप बतावें मुझे वह ही यतन करूं ॥

४५७

कमलश्री का भविषदत्त को समझाना ॥

(चाल) दिल छीना निगाहें चुराकर चले । खुदा जाने वह जादू सा क्या कर चले ॥

कभी पानी से दीपक जलेगा नहीं ।
खाली बातों से काम चलेगा नहीं ॥ टेक ॥
१. सम्पदा सुख है जहां दिल में कोई खार नहीं ।
आपदा आती है जिस घर में सुमत प्यार नहीं ॥
कभी अनबन में यह घर चलेगा नहीं ॥

२. चाहे जो करना पड़े तिलका को मसरूर करो ।
दिल में इसके जो ख़याल है उसे तुम दूर करो ॥
इस बिना बेटा झगड़ा मिटेगा नहीं ॥
३. गर सुमत राजी हो तो तिलका को पटनार करो ।
हक़ इसी का है इसे देके खतम रार करो ॥
इस बिना फूल दिल का खिलेगा नहीं ॥
४. प्यार दोनों को तुम्हें करना बराबर होगा ॥
फ़र्क रखना न कहीं बाल बराबर होगा ।
इस बिना इनका मेल निभेगा नहीं ॥

४५८

भविष्यदत्त का तिलकासुन्दरी को पटरानी बनाना और उनके कर पर उसके हाथ से पट बांधना और दोनों से प्रार्थना करना कि तुम दोनों मिलकर खुश रहो और मिलकर घर का प्रबंध करो ॥

(चाल ग़ज़ल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूँ ॥

१. अय मेरी तिलका तेरा मुझ पर बड़ा एहसान है ।
तू सती है शीलवंती है बड़ी गुणवान है ॥
२. कौन था हमदम मेरा तेरे सिवा परदेश में ।
उस भयानक शहर में जो घर बना सुनसान है ॥
३. गो बंधुदत्त ने सताया पर न छोड़ा शील को ।
देवियाँ कहते कभी सतियों में तू परधान है ॥
४. राजा के दरबार में भी पर नहीं तुझको मिला ।
मेरा भी संसार में तेरी बदौलत मान है ॥

५. ताज पहिनाता हूं पटरानी का तुझको आज मैं ।
क्योंकि तू हक़दार है सब में तेरा सनमान है ॥
६. है यही माता की मरज़ी और राज़ी है सुमत ।
तू बने पटरानी बस सबका यही अरमान है ॥
७. मिलके दोनों रानियां रहना खुशी रनवास में ।
है यही मंशा मेरी घर की इसी में शान है ॥

४५९

दोनों रानियों का खुश होना और मिलकर भविषदत्त को जवाब देना ॥

(चाल, माधुबन शाम को मैं ढूंढन चलीरे ॥

दोनों रनवास में हम मिलके रहेंगी ।
मिलके रहेंगी रिस ना करेंगी ॥ दोनों० ॥ टेक ॥
१. कमलश्री माता के चर्णन नित नित शीस निवावें ।
निश दिन पति आज्ञा में रहकर घर को स्वर्ग बनावें ॥
हम तो आपस में प्रेम रस पान करेंगी ॥
२. सौतपने का निज हृदय में भाव कभी नहीं लावें ।
मां जाई बहनों की भांति हंस हंस प्रीति बढ़ावें ॥
हम तो ईर्षा की अगनी को शांत करेंगी ॥
३. गृहस्थ धरम के षट करमों का हर दम पालन करके ।
यानी पूजा, दान, शील, तप, संयम साधन करके ॥
हमतो आगम पढ़ेंगी तम अज्ञान हरेंगी ॥
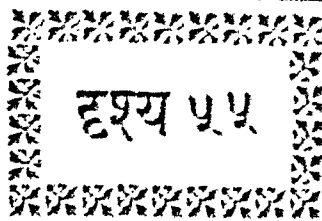
दृश्य ५५

राजा के दरबार का परदा

४६०

दरबार में मंत्री, सेनापति, कोतवाल व अन्य दरबारियों का बैठे हुये नज़र आना। राजा का श्री भविष्यदत्त को अर्ध राज का तिलक करने के लिये तशरीफ़ लाना। कमलश्री व सुमना का दरबार में आना। भविष्यदत्त और तिलकासुन्दरी का पधारना और समस्त अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठना और प्रथम कमलश्री का एक मजमून पेश करना॥

(शेर चाल) कौन कहता है कि मैं मेरे खरीदारों में हूं॥

१. अय मेरे फरज़न्द है इसको भी कुछ तुमको ख्याल।
जो तू कैदी लाया है क्या शहर में है उनका हाल॥
२. लोहजंग चित्रांग और कंधार के सरदार सब।
साथ में युवराज के फिरते हैं कर उनकी संभाल॥

४६१

भविष्यदत्त का सेनापति को हुक्म देना कि पोदनपुर के युवराज, [illegible] कुल, लोहजंघ व पोदनपुर के सब सरदारों को दरबार में [illegible] किया जाना॥
(शेर चाल) परन्तु मैं मेरे [illegible]
१. सेनापति जी आप अभी जल्दी से जाईये।
कंधारी कुँ[?] हियों[?] को बुला करके लाईये॥

[illegible]

४६२

सेनापती का वापिस आना और युवराज आदि सब को पेश करना ॥

(शैर चाल) पहलू में मेरे यार है उसकी खबर नहीं ॥

यह सारे क़ैदी सामने हाज़िर हजूर हैं ।
जो चाहे हुक्म दीजिये सब पुर क़सूर हैं ॥

४६३

भविषदत्त का युवराज आदि को हुक्म सुनाना ॥

(शैर चाल) पहलू में मेरे यार हैं उसकी खबर नहीं ॥

१. युवराज तुमने काम सरासर बुरा किया ।
नाहक किसी के कहने से झगड़ा बयां किया ॥
२. वदों का खून तुमने वहाया है बे सबब ।
अमनों अमां में तुमने ख़लल जा बजा किया ॥
३. चित्रांग लोहजंग हो तुम भी क़सूर वार ।
बानी फसाद के हो कि फितना बड़ा किया ॥
४. अपने किये की पाई सज़ा तुमने सर बसर ।
बे सोचे समझे जंग का झंडा खड़ा किया ॥
५. खैर अब मुआफ करता हूं सबका क़सूर मैं ।
आइन्दा अहतियात हो अब जो किया किया ॥
६. गर यहां रहो तो दूं तुम्हें फौजों में अफ़सरी ।
गर जाओ तुम वतन को तो मैंने रिहा किया ॥

७. जो मरज़ी हो तुम्हारी वह हमसे बयां करो ।
मंजूर मैंने सबका हर इक मुद्दआ किया ॥

४६४

युवराज का भविपदत्त की प्रशंसा करना और अपने घर
जाने की आज्ञा के लिये प्रार्थना करना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

१. अय भविपदत्त तू बहादुर और बड़ा जरदार है ।
तू तिलाशक वैश्य कुल में क़ौम का सरदार है ॥
२. हमने की तेरी ख़ता और तूने की हम पर अता ।
हम तेरे शाकर हैं तू धर्म का औतार है ॥
३. वैश्य कुल को तूने रोशन कर दिया संसार में ।
मानता तलवार तेरी लश्करे कंधार है ॥
४. तूने हमपर फ़तह पाकर बख़्श दी सबकी ख़ता ।
दिल तेरा बादल है और बिजली तेरी तलवार है ॥
५. तू शुजाअत का धनी है और दया का रूप है ।
जिसका तू हामी बने बस उसका बेड़ा पार है ॥
६. याद आता है वतन अपना हमें आज्ञा दीजिये ।
हमसे इक मुद्दत हुई छूटा हुआ घरबार है ॥
७. हम रहेंगे आपके आधीन सारी उमर भर ।
फिर न होंगे आपसे बाग़ी यही इक़रार है ॥

४६५

भविषदत्त का सबको घर जाने की आज्ञा देना और सब को पारितोषक देना और दरबार में इज्जत से बिठलाना

(शैर चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया ॥

१. है मंजूर मुझको तमन्ना तुम्हारी ।
वतन जाने की है इजाज़त हमारी ॥
२. यह लो पारितोषक हमारी तरफ़ से ।
महाराज की है इनायत यह सारी ॥
३. तसल्ली से दरबार में बैठ जाओ ।
है मंजूर इज्जत हमें अब तुम्हारी ॥

(सबका दरबार में कुरसियों पर बैठ जाना)

४६६

राजा का भविषदत्त की प्रशंसा करना और गजपुर का आधा राज देना और भविषदत्त के मस्तक पर राज तिलक करना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूँ ॥

१. अय भविषदत्त तू बड़ा गुणवान है और मनचला ।
तू तिलकपुर में गया इक चीर कर भयानक गुफा ॥
२. तीन दिन का भूका रहा छोड़ा न अपने नेम को ।
गरचे सब सामान भोजन का वहां मौजूद था ॥
३. जीत कर दाने को तूने ब्याही तिलकासुन्दरी ।
जिसको पद दरबार में हमने सती का है दिया ॥

४. स्वर्ग से इंदर भी आया तेरे मिलने के लिये ।
है धरम औतार तू इंदर ने खुद आकर कहा ॥

५. और न वदियों पर वधू की तूने की कुछ भी नज़र ।
वल्कि तूने कर दया सब ही को तूने धन दिया ॥

६. वद वधु ने तो अकेला छोड़ा परवत पर तुझे ।
लाया तुझको देवता कैसा तेरा इकबाल था ॥

७. आफतें क्या क्या पड़ीं पर तू रहा साबित क़दम ।
इससे ज़ाहिर है तेरी गम्भीरता और धीरता ॥

८. क्यों न हो तू वीर ऐसा उस कमल का लाल है ॥
जिसको पद रानी का है दरबार में मेरे मिला ॥

९. तू बना परधान और सेनापति इस राज में ।
था बड़ा कंधार दल पर तूने छिन भिन कर दिया ॥

१०. बांध कर युवराज को चित्रांग को लोहजंग को ।
लाया तू और मेरे क़दमों पर दिया उनको गिरा ॥

११. तुमको सुमता भी मिली जो राज कन्या है मेरी ।
आज आधा राज भी देता हूं जो इक़रार था ॥

१२. हो तिलक तुझको मुबारक और यह गजपुर का राज ।
तू बड़ा धरमात्मा है धर्म से राजा बना ॥

[illegible]

(चाल) मेरे मौला! बुला लो मदीने मुझे ॥

मेरे स्वामी बुला लो दुबारा मुझे ।
तेरे बिन नहीं कोई सहारा मुझे ॥

१. सख्त शरमिन्दा हुवा हूं आपको मैं छोड़ कर ।
मेरा मुंह काला हुवा है आपसे मुंह मोड़ कर ॥
मेरी करनी ने बेशक है मारा मुझे ।

२. थी सरासर भूल मेरी आपसे बाग़ी बना ॥
थी ख़ता पे यह ख़ता दुशमन से जो जाकर मिला ।
मेरी नखवत ने यहां से निकाला मुझे ॥

३. मैं नमकख्वार आप का और ग़ैर के दर पर गया ॥
छोड़ कर घरबार अपना और के घर पर गया ॥
अब ना ग़ैरों का संग ग़वारा मुझे ॥

४. जैसी की मैंने खता वैसी मिली मुझको सज़ा ।
आप हैं कैसे दयामय बख्शदी मेरी ख़ता ॥
तेरे गुण गाऊं कब है यह यारा मुझे ॥

५. आपका निसबत ग़लत था सर बसर मेरा ख़याल ।
आप बेशक वैश्य जाती में हैं इक साहिब कमाल ॥
आया तेरा नज़र है नज़ारा मुझे ॥

४६८

भविषदत्त का लोहजंग को माफ़ करना ॥

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ।

१. जो हुवा सो हो चुका मुझको जरा परवा नहीं ।
तेरी जानिब से मेरे दिल में जरा शिकवा नहीं ॥
२. छोटी छोटी बातों का होता नहीं मुझको ख्याल ।
दूसरों के ऐब देखूं तर्ज यह मेरा नहीं ॥
३. बख्शना और भूल जाना है यही आदत मेरी ।
और की रक्खूं खता मैं याद यह शेवा नहीं ॥
४. फौज में जो पद तेरा था जा वही बख्शा तुझे ।
मेरे दिल में कुछ किसी से बुग्ज़ और कीना नहीं ॥
५. देखो आइन्दा न फिरना अपने आक़ा से कभी ।
बेवफाई का चलन अच्छा नहीं, अच्छा नहीं ॥

४६९

परियों का मुबारकबाद गाना ॥

(चाल नाटक—गुल की) चलो देखो बसंती बहार ॥

चलो देखो है कैसी बहार-बहार प्यारी गजपुर में ।
विजय पाई भविष्यदत्तकुमार-कुमार प्यारी गजपुर में ॥टेक॥
१. कमलश्री व्रत पूरा कीना-दूर हुवे सब दुख भारी ।
महलन में सुहाग मनाओ-गाओ मिल कुल नारी । बहार०
२. रण दुश्मन का छिन्नभिन्न कीना-बाँधि लिये [illegible]
काबुल दल में शोर मचाया-भागी [illegible] सेना [illegible]
३. तिलकापुर में जाना जीना-सुन्दर [illegible] ॥

तिलकासुन्दरी ब्याह रचायो—आनंद घर घर छाए। बहार०
४ राज दुलारी सुमता ब्याहीं—शान बढ़ी जग में भारी ॥
देश क़ौम का मान बढ़ाओ—बोलो जय जयकारी बहार०

४७०

नोटः—महाराज भविषदत्त के राज व गृहस्थाश्रम व वैराग्य व मोक्ष गमन आदि का कथन और सती कमलश्री व सुमता व तिलकासुन्दरी आदि के भवांतर (तथा सब के पूर्व व भविष्यत जन्मों का) का संपूर्ण वर्णन अगले नोट नंबर ४७१ से ४८२ तक में दर्ज है। सो इस नोट को अवश्य पढ़ें ॥

———

इति न्यामत सिंह जैन रचित 'सती कमलश्री' नाटक का छटा अंक समाप्तम् । शुभम् ॥

श्री जिनेन्द्रायनमः ।

भूमिका (तमहीद)

४७१

(रुबाई)

१. अय महावीर रहेगस्त के कामिल रहबर ।
जग में दुखियों के लिये रहम दया के सागर ॥
२. तूने बतलाया कि सुख मिलता है शुभ कर्मों से ।
और अशुभ कर्मों से दुख होता है नाज़िल यकसर ॥

४७२

(क़ता)

३. शुद्ध शुभाशुभ तीन हालत जीव की संसार में ।
एक से मुक्ति मिले दो से रहे इस दार में ॥
४. सात जीवों का सुनाते हैं तुम्हें दिलचस्प हाल ।
सुनते इबरत जिससे हो इस वादिए पुरख़ार में ॥
५. तीन करके शुद्ध अवस्था बन गए परमात्मा ।
नेकियों से दो रहे खुश स्वर्ग में घरबार में ॥
६. दो फिरे बदियों से दुनियां में दुखी हो दर बदर ।
खुद फंसे दुख में फंसाया और को आज़ार में ॥
७. जैसा बतलाया अवधज्ञानी समाधी गुप्त ने ।
वैसा करता है बयां न्यामत उसे अशआर में ॥

(नोट नम्बर १)

आगाज दास्तान ।

(चरित्र प्रारम्भ)

४७३

कृत सेना का जन्म । उसकी तिलमत से शादी । तिलकमत की मृत्यु । दोनों तापसी की सेवा । धन्नमित्र पर आसक्त होना और फिर धर्म भाई बनाना ॥

(चाल मसनवी पद्मावत) अलाउद्दीन ने मैं शाहर कहूँगो ॥

८. अरीपुर नाम इक सुन्दर नगर था ।
इरावत क्षेत्र में जो सब्ज़ तर था ।

९. अमर वेग उस जगह पर हुक्मरां था ।
कि जिसके राज में अमनो अमां था ॥

१०. वजीयर मंत्री था उसका नामी ।
कमलरेखा थी पत्नी मंत्री की ।

११. कृत सेना थी उसकी एक लड़की ।
बड़ी गुणवान सुन्दर शीलवंती ॥

१२. हुई तिलमत से उस कन्या की शादी ।
जो था चोरी जुवे मदरा का आदी ॥

१३. भरा था अवगुणों से वह सरापा ।
फिरा करता था आवारा हमेशा ।

१४. चलन यह देख कर अपने पति का ।

झुरा करती थी दिल मेंकृत सैना ॥
११. मरा तिलमत तो वह कौरत अभागन ।
हुई बेवा न लगता था कहीं मन ॥
१६. इसी नगरी के बन में एक तपसी ।
तपा करता था हरदम पंच अग्नि ॥
१७. कि कासी नाम था उस तापसी का ।
कृतसैना थी करती उसकी सेवा ॥
१८. था धनदत्त इक महाजन भी वहां पर ।
कि धनलच्छी थी जिसकी नार सुन्दर ॥
१९. था उसका पुत्र इक धनमित्र नामी ।
न जिसका रूप में कोई था सानी ॥
२०. था वह भी दास कोसी तापसी का ।
किया करता था निश दिन उसकी सेवा ॥
२१. कृतसैना ने जब देखा नजर भर ।
हुई आशक्त वह धनमित्र के ऊपर ॥
२२. मुहब्बत में थी ऐसी बेक़रारी ।
कि जैसे जल बिना मछली बिचारी ॥
२३. प्रेम और चाह में बेचैन होकर ।
गई धनमित्र के इक रोज़ घर पर ॥
२४. जो गुणमाला कंवर की स्त्री थी ।
कृतसैना का आदर करके बोली ॥
२५. सखी आवो तुम्हारे देख दर्शन ।

हुवा आनन्द मेरा आज तन मन ॥
२६. नज़र कीरत की फिर धनमित्र पे चक्कर ।
पड़ा लेटा था जो अपने पलंग पर ॥
२७. हुई सूरत पे उसकी ऐसी माइल ।
कि इकदम बेक़रार उसका हुवा दिल ॥
२८. थी गुणमाला बड़ी होशियार औरत ।
गई वह तोड़ उसकी सारी हरकत ॥
२९. कहा हंस कर सखी क्या माजरा है ।
बहिन तू किस बला में मुबतला है ॥
३०. कहा कीरत ने बहना बात सुनले ।
छुपाऊंगी नहीं कुछ भेद तुझसे ॥
३१. मेरा दिल आ गया तेरे पत पर ।
है जिसकी मोहनी सूरत सरासर ॥
३२. कहा यह सुनके गुणमाला ने हंस कर ।
अगर शैदा है तू मेरे पती पर ॥
३३. तो दी मैंने इजाज़त अपने जी से ।
तो खुशकर अपना दिल मेरे पती से ॥
३४. कृतसैना वचन यह सुनके चमकी ।
इरादे से वहीं वह अपने पल्टी ॥
३५. खफ़ा होकर कहा धिक्कार तुझको ।
सुनाई पाप की क्या बात मुझको ॥
३६. मैं लेती थी तेरा दिल आजमा कर ।

ने थी कुछ और ख्वाहिश दिल के अन्दर ॥
३७. अगर गुणमाला हो पापी मेरा मन ।
न क्यों अगनी में जल जाए मेरा तन ॥
३८. पती पे तेरे गरचे दिल है मेरा ।
समझती हूं मगर भाई धरम का ॥
३९. हुवा शक दूर गुणमाला का सुन कर ।
हुई इस बात से वह खुश सेरासर ॥
४०. कृतसैना फिर अपने घरपे आई ।
पिता से करके धनमित्र की बड़ाई ॥
४१. उसे बनवा दिया परधान आखिर ।
कि की राजा ने भी धनमित्र की खातिर ॥
४२. सुनों उस तापसी का भी ज़रा हाल ।
रचा पाखंड का था जिसने इक जाल ॥
४३. मगर धनमित्र और कीरत बराबर ।
किया करते थे सेवा उसकी जाकर ॥
४४. नगर के लोग भी करते थे सेवा ।
अगरचे था ग़लत तपसी का सेवा ॥

४७४

श्री समाधीगुप्त मुनी का आगमन और धर्म उपदेश। राजा और मंत्री का लोगों को तापसी की सेवा करने से रोकना। कोसी का सबको दुख देने का निदान करना। कीरतसैना और धनमित्र का बराबर उसकी सेवा करते रहना॥

४५. अरीपुर के विपन इक दिन दया कर ।

समाधी गुप्त मुनि आये दिगम्बर ॥

४६. वज़ीयर और राजा और परजा ।
गए सारे मुनि दरशन को उमजा ॥

४७. मुनि जी ने दिया उपदेश ऐसा ।
कि है संसार इंदर जाल जैसा ॥

४८. हविस दुनियां की झूठी है सरासर ।
अवस फंसती है दुनियां इसमें आकर ॥

४९. नहीं है सुख विषय भोगों में कोई ।
ग़लत सुख जीव ने माना है यों ही ॥

५०. करम के जाल में चेतन फंसा है ।
कषायों में वह खुद जकड़ा हुआ है ॥

५१. कुगुरु संसार में मिलते हैं अकसर ।
वह कम मिलते हैं जो सादिक़ हैं रहबर ॥

५२. मुनासिब है नहीं धोके में आना ।
है लाज़िम रहबरे सादिक़ बनाना ॥

५३. मुनासिब है कषायों को हटाना ।
है लाज़िम कर्म के झगड़े मिटाना ॥

५४. मुनासिब ग़ैर से है दिल हटाना ।
कि अपने ही में दिल अपना लगाना ॥

५५. मुनि ने यूं धरम उपदेश देकर ।
हक़ीक़त खोल कर सब पर सरासर ॥

५६. दिलों से सबके मिथ्या तम हटाया ।

उन्हें जल्वा सिदाक़त का दिखाया ॥

५७. वचन सुन कर श्री मुनिराज जी के ।
हुवे सब खुश और अपने घर पे आए ॥

५८. कहा राजा ने फिर सबको बुला कर ।
है कोसी तापशी अज्ञान यकसर ॥

५९. वह पंच अगनी जो तपता है बुरा है ।
कि इसमें जीव हिंसा बरमला है ॥

६०. जहां में इसकी जो सेवा करेगा ।
नरक में वह पड़ेगा दुख भरेगा ॥

६१. नहीं हिंसा से मिलता सुख किसी को ।
दया से सुख मयस्सर होगा जी को ॥

६२. फिरे कोसी से सब यह बात सुनकर ॥
बुरा कहने लगे उसको सरासर ॥

६३. किरतसेना व धनमित दोनों लेकिन ।
रहे कोसी की सेवा करते निश दिन ॥

६४. बिजोयर बन गया कोसी का दुशमन ।
हमेशा उससे वह रहता था बदज़न ॥

६५. लगी आग इससे बस कोसी के तन में ।
हुई पैदा कषाय तपशी के मनमें ॥

६६. निदान उसने किया तप का यह फल हो ।
कि मेरे हाथ से इनकी अजल हो ॥

६७. कुतप करता रहा यूंहीं वह कोसी ।
बुरा कहते रहे लोग उसको योंही ॥

२७५.

धनमित्र व गुणमाला व कीर्तिसेना आदि को पंडित नन्दीमित्र का निशि भोजन का त्याग कराना और सबको जैनी बनाना और उपदेश देना ॥

६८. सुनों अब हाल नंदीमित्र का भी ।
अरिपुर में जो था इक नेक जैनी ॥
६९. बड़ा धर्मात्मा गुणवान था वह ।
बड़ा पुन्यवान और जीशान था वह ॥
७०. वह पूरा जैन शासन का था माहिर ।
था यकसां उसका बातिन और ज़ाहिर ॥
७१. भलाई चाहता था हर किसी की ।
वह था धनमित्र का सच्चा हितैषी ॥
७२. गया इक रोज़ वह धनमित्र के घर ।
कहा धनमित्र ने उससे यह हंस कर ॥
७३. मेरे घर रात को रहती है महफ़िल ।
नहीं क्यों आप होते उसमें शामिल ॥
७४. यह सुन कर बात नन्दीमित्र बोला ।
न आने का मेरे कारण है ऐसा ॥
७५. कि भोजन रात को घर पर तुम्हारे ।
किया करते हैं मिल जुल करके सारे ॥

७६. नियम है रात के खाने का मुझको ।
न खाऊंगा तो होगा रंज तुमको ॥
७७. मैं प्रतिज्ञा कभी अपनी न तोड़ूं ।
नियम जो ले लिया हरगिज़ न छोड़ूं ॥
७८. अगर सर भी मेरा तन से क़लम हो ।
नहीं मुमकिन जुदा मुझ से धरम हो ॥
७९. धर्म के बदले दुनियां का ख़रीदार ।
नहीं दिल मेरा हो सकता है ज़िनहार ॥
८० कहा धनमित्र ने मुझको जतावो ।
है निश भोजन में क्या अवगुण बतावो ॥
८१. यह सुन कर बात नन्दीमित्र बोला ।
सुनो तुम ग़ौर से हैं दोष क्या क्या ॥
८२. पतंगे चींवटी झींगुर गंडारे ।
कि मकड़ी मक्खियां कीड़े मकोड़े ॥
८३. ततैये कनसलाई भिड़ व पिस्सू ।
छिपकली कनखजूरे सांप बिच्छू ॥
८४. यह सारे रात को फिरते हैं यकसर ।
है अंदेशा पड़ें भोजन में आकर ॥
८५. है मुमकिन बाल भी पड़ जाए कोई ।
नहीं जो रात को देता दिखाई ॥
८६. अवश्य मच्छर तो पड़ जाते हैं अकसर ।
कि उड़कर रात को खाने के अन्दर ॥

८७. ग़रज यह सबके सब नुकसां रसां हैं ।
छुपी इनमें बहुत बीमारियां हैं ॥

८८. सुनी धनमित्र ने जब बात सारी ।
तो निशि भोजन किया तर्क एकबारी ॥

८९. कृतसेना व गुणमाला ने सुन कर ।
सकल परिवार ने भी हो मोय्यसर ॥

९०. उसी दम रात के भोजन को छोड़ा ।
कि मुंह मिथ्यात की बातों से मोड़ा ॥

९१. बने जिन धरम के पैरो वह सारे ।
तजे सातों व्यसन—अनुवृत धारे ॥

९२. मगर उस तापसी की भी दया कर ।
ख़बर लेते रहे दोनों बराबर ॥

१७६

९३. ग़रज सब अपने अपने वक्त पर मर ।
हुवे पैदा कहीं के वह कहीं पर ॥

९४. सुनो अब माजरा अगले जनम का ।
नतीजा जो हुवा सबके करम का ॥

९५. करम जिस जिस ने जो जैसा किया था ।
उसी अनुसार वह उस गत को पहोंचा ॥

९६. अरिपुर की जो प्रजा थी वह मर कर ।
तिलकपुर की बनी प्रजा सरासर ॥

९७. बिजोयर मंत्री कुंधार जाकर।
लड़ाई में मरा इक तीर खाकर॥
९८. तिलकपुर का बना राजा वह मर कर॥
जशोधर नाम पाया उस जगह पर॥
९९. जो नन्दीमित्र था नेक और गुणवान।
रखा करता था हरदम धर्म का ध्यान॥
१००. मुनि होकर महाबृत उसने धारे।
किया तप होके दुनिया से कनारे॥
१०१. समाधी मरन कर तन अपना छोड़ा।
हुवा इन्दर स्वर्ग सब सोलहवें का॥
१०२. स्वर्ग में नाम पाया मान भद्दर।
मिला फल नेक कर्मों का सरासर॥
१०३. वह धनलच्छी जो थी धनमित्र की मां।
मुनि को उसने देखा एक दिन वां॥
१०४. समाधि गुप्त था मुनिराज का नाम।
था जिसका खाक में आलूदा अंदाम॥
१०५. हंसी वह देख कर मुनि की यह हालत।
लगी करने वह निन्दा और मज़म्मत॥
१०६. मुनि ने धर्म का उपदेश देकर।
लगाया उसको सीधे रास्ते पर॥
१०७. कहा बेटी बृत श्रुत पंचमी का।
करो धारण मिटे सब दोष तेरा॥

१०८. वृत लच्छी ने काया मन वचन से ।
किया उपजा बड़ा पुन्य इस यतन से ॥

१०९. कृतसेना ने दिल में इस वृत की ।
करी अनुमोदना और शुभ गति ली ॥

११०. वह धनलच्छी भी मर गजपुर में पैदा ।
हरीबल सेठ के घर में हुई जा ॥

१११. कमलश्री नाम रखा उसका वां पर ।
बड़ी गुणवान थी और नेक अख्तर ॥

११२. मरा धनदत्त जो लच्छी का पति था ।
हुवा गजपुर में पैदा सेठ के जा ॥

११३. नगर में वह हुवा धनदेव नामी ।
हुई उसकी कमल के साथ शादी ॥

११४. पड़ी धनमित्र के बिजली जो सर पर ।
कमल के घर हुवा पैदा वह मर कर ॥

११५. रखा उसका भविषदत्त बाप ने नाम ।
यह था धर्मातमा वीर और गुन धाम ॥

११६. मरा धनमित्र जब बिजली से जलकर ।
तो गुणमाला हुई व्याकुल सरासर ॥

११७. सुनी जिस दम कृतसेना ने यह बात ।
तो मूर्छित हो पड़ी धरती पे हैरान ॥

११८. गई रोती हुई गुणमाला के पास ।
कहा अपनी सखी अब मन गई आस ॥

४७७

इन सबके इस जन्म के विस्तार रूप हालात और इनके कारनामे सती कमलश्री नाटक में लिखे हैं ॥

१४१. जनम मोजूदा आइन्दा तो सारे ।
बयां हम कर चुके हैं न्यारे न्यारे ॥
१४२. मुफ़स्सिल इनके नादिर कारनामे ।
धरम के और करम के सब नज़ारे ॥
१४३. हुई किस तौर से कमला सुहागन ।
बनी फिर किस तरह से वह दुहागन ॥
१४४. बनी क्योंकर सरूपा सौत उसकी ।
बधू ने भाई से क्योंकर बदी की ॥
१४५. भविष ने किस तरह घर बार छोड़ा ।
दिनों को किस तरह कमला ने तोड़ा ॥
१४६. भविष ने किस तरह चीरा गुफ़ा को ।
लिखी तहरीर क्यों इन्दर ने खुश हो ॥
१४७. भविष ने किस तरह जीता असन को ।
लिया किस तौर तिलका गुलबदन को ॥
१४८. बधु के हाथ से तिलका ने क्योंकर ।
बचाया शील को सागर के अन्दर ॥
१४९. वहां जल देवियों ने सुनके फ़र्याद ।
बधु को दी सज़ा—तिलका को इमदाद ॥

१५०. भविष को कैसे छोड़ा मेनागिर पर ।
मनोवेग उसको लाया किस तरह घर ॥
१५१. सरूपा और वधु दोनों का काला ।
नगर से करके मुंह कैसे निकाला ॥
१५२. भविष ने किस तरह कंधार दल को ।
विजय करके दिखाया अपने बल को ॥
१५३. अदू युवराज को नीचा दिखाया ।
कि लोह चित्रांग को कैदी बनाया ॥
१५४. लिया गजपुर का उसने राज कैसे ।
किये कब्ज़े में तख्तो ताज कैसे ॥
१५५. हुई क्योंकर सुमत के साथ शादी ।
कमल की किस तरह इज्जत बढ़ा दी ॥
१५६. क्षमा धनदेव ने कमला से क्योंकर ।
सरे दरबार मांगी सर झुका कर ॥
१५७. यह सब हालात अफसाने बराबर ।
लिखे कमलाश्री नाटक के अन्दर ॥
१५८. उसे पढ़ देख लो सबको सुनाओ ।
धरम में शुभ करम में दिल लगाओ ॥
१५९. तू न्यामत खतम कर यह दास्तां अब ।
बनाना मसनवी मौका मिले जब ॥
१६०. मगर कुछ हाल इतना तो सुना दे ।
भविष के राज का नक्शा दिखा दे ॥

१७४. गरभ जब से तिलका सती के रहा ।
तो पैदा हुवा दिल में यह दोहला ॥
१७५. तिलकपुर में मंदिर के दर्शन करूं ।
श्रीचन्द्र प्रभू का अर्चन करूं ॥
१७६. सुना जब भविषदत्त ने तिलका से हाल ।
तो करने लगा दोहले का खयाल ॥
१७७. यकायक मनोवेग ज़ाहिर हुवा ।
भविषदत्त से आकर यह कहने लगा ॥
१७८. मैं हूं मित्र पिछले जनम का तेरा ।
है बैताड़ पर्वत वतन अब मेरा ॥
१७९. मुनि ने बताया है यह माजरा ।
मेरी मां जनम लेगी तिलका के आ ॥
१८०. बिवाण अथवा ले करके मैं आया हूं ।
कि तिलका के दोहले को पूरा करूं ॥
१८१. सवार इसपे हो जाइयेगा सभी ।
तिलकपुर में पहोंचा दूं इकदम अभी ॥
१८२. भविषदत्त ने ली संग तिलका सती ।
लिया साथ सब अपना परिवार भी ॥
१८३. चढ़ा और फ़लक पर उड़ा वह बिवाड़ ।
तिलकपुर में पहोंचा हवा की समान ॥
१८४. श्रीचन्द्र प्रभू का पूजन किया ।
कि पूरा सती का किया दोहला ॥

१८५. तिलकपुर में बैठे थे इकजा मुनि ।
भविप ने भी जा धर्म वाणी सुनी ॥
१८६. किया फिर भविप ने मुनि से सवाल ।
महाराज बतलाइये इसका हाल ॥
१८७. असनवेग क्यों मुझसे करता है प्यार ॥
सबब इसका क्या है करो आशकार ॥
१८८. मुनिराज ने कर दिया सब अयां ।
है पिछले जनम का तेरा महरबां ॥
१८९. असनवेग की जो है पिछली कथा ।
बयां नोट अव्वल में हूं कर चुका ॥
१९०. उसे तो पढ़ा आपने है वहां ।
भविप का सुनो हाल बाकी यहां ॥
१९१ मुनि को नमस्कार कर सब उठे ।
तिलकपुर नगर देखने को गए ॥
१९२. भविप ने दिखाया उन्हें वह मकां ।
थी की साथ तिलका के शादी जहां ॥
१९३. गुफा भी वह दिखलाई तार्षिक नर ।
जिसे वह गया था कभी चीर कर ॥
१९४. दिखाया वह जा गैनागिर भी यहां ।
बधूदत्त ने छोड़ा था उसको जहां ॥
१९५. तिलकपुर से लेकर यहां तालो जर ।
वह सब सैर करते हुये आए घर ॥

४८०

श्री भविषदत्त महाराज के परिवार का बयान ॥

१९६. तिलकसुन्दरी से हुवे पुत्र चार ।
बली बीर गुणवान और नामदार ॥
१९७ बड़ा सनपहू दूसरा कनपहू ।
लघु चंदकीरत सोयम सुरपहू ॥
१९८. हुईं लड़कियां भी दो फिर नेक गाम[1] ।
कि तारा सितारा थे दोनों के नाम ॥
१९९. सुमत से हुवा पुत्र एक धरणीधर ।
नवासा[2] जो राजा का था नामवर ॥
२००. वसुन्धरा हुई उससे कन्या भी एक ।
कि चेहरे पे थे जिसके आसार नेक ॥
२०१ भविष को मिला धर्म से राज भी ॥
सुख औलाद भी तख्त भी ताज भी ॥

४८१

श्री बिमलबुद्धि मुनि महाराज का आगमन और भविषदत्त का अपने पिछले जन्म का हाल पूछना और इस जन्म में राज पाट मिलने का कारण पूछना और हाल सुनकर वैराग्य होना और माता से संजम की आज्ञा मांगना ॥

२०२. विमल बुद्धि मुनिराज इक दिन वहां ।
पधारे थे गजपुर का जंगल जहां ॥

(१—गाम=क़दम) (२—नवासा=दोहता)

२०३. अवध ज्ञानी थे वह हितैषी मुनि ।
न रागी न द्वेषी किसी के कभी ॥

२०४. भविष सारे रणवास को साथ ले ।
मुनिराज के दर्शनों को गए ॥

२०५. वचन धर्म उपदेश के जब सुने ।
भविषदत्त वैराग में आ गए ॥

२०६. असर यह हुवा उनके उपदेश का ।
महोब्बत से दुनिया की दिल हट गया ॥

२०७. भविष ने मुनि से किया फिर सवाल ।
मुझे इस क़दर क्यों मिला मुल्कोमाल ॥

२०८. किया क्या था पिछले जनम में धरम ।
यह फल जिसका मुझको मिला इस जनम ॥

२०९. कमल मात तिलका सुमत मेरी नार ।
मेरे साथ करती हैं क्यों इतना प्यार ॥

२१०. वधु किस लिये मेरा दुशमन बना ।
दिल उसका तिलक पर हुआ क्यों फिदा ॥

२११. मदद मानभद्र ने क्यों मेरी की ।
थी तहरीर दीवार पर क्यों लिखी ॥

२१२. यह सुन कर मुनिराज जीने सभी ।
अयां रूप करदी हकीकत जो थी ॥

२१३. भवान्तर का जो नोट उसने लिखा ।
बयां इसका है उसमें सब था हुआ ॥

२१४. गुज़िश्ता जनम का सुना जब यह हाल ।
तो संजम का आया भविष को ख़याल ॥

२१५. कमल और तिलका भी यह देख कर ।
हुई लीन बैराग में सर बसर ॥

२१६. मुनिराज को फिर नमस्कार कर ।
उठे सब वहां से गए अपने घर ॥

२१७. भविष ने बुला अहले दरबार को ।
किया जमा सब अपने परिवार को ॥

२१८. महाराज भूपाल को भी बुला ।
जो था मुद्दआ सब अयाँ कर दिया ॥

२१९. कमल से कहा यह करम कीजिये ।
कि संजम की आज्ञा मुझे दीजिये ॥

२२०. कमल ने कहा मुझको मंजूर है ।
कि दुनिया से दिल मेरा भी दूर है ॥

४८२

श्री भविषदत्त महाराज का पुत्र को राज पाट सौंपना और संजम के लिये तय्यार होना ॥

२२१. भविषदत्त ने सनपहू से फिर यह कहा ।
कि मालिक तू बन अब मेरे राज का ॥

२२२. तिलक से कहा हमतो जाते हैं आज ।
खुशी से तू भोग अपने बेटे का राज ॥

२२३. वह बोली अकेली करूंगी न राज ।
कि लूंगी मैं संजम तेरे साथ आज ॥

२२४. यह सनपहु भी कहने लगा बाप से ।
कि हरगिज़ न लूंगा मैं राज आप से ॥

२२५. हकूमत के लायक़ तो है धरणीधर ।
नवासा यह राजा का है नामवर ॥

२२६. सुमत राजकन्या जो है इसकी मां ।
मदद राज में देगी वह बेगुमां ॥

२२७. यह सुन कर सुमत बोली होकर उदास ।
रहो पास दो भव न कीजे निरास ॥

२२८. तिलक ने कहा राज के योग आज ।
यही धरणीधर है इसे दीजे राज ॥

२२९. सुमत तुम महल में रहो चैन से ।
है यह राज और पाट ज़ेबा तुझे ॥

२३० कहा धरणीधर ने यह ज़ेबा नहीं ।
है सनपहु बड़ा मेरे से बिलयक़ीं ॥

२३१. क़दम मैं बड़े भाई के तख़्त पर ।
रखूं यह मुनासिब नहीं सरबसर ॥

२३२. यह सनपहु ने तब यूं किया फ़ैसला ।
तिलक राज का अपने करवा लिया ॥

२३३. फिर अपनी तरफ़ से बिठा तख़्त पर ।
धरा ताज धरनन्द के सीस पर ॥

२३४. खुशी का नक़ारा बजाने लगे ।
सभी अपना आ सर झुकाने लगे ॥
२३५. निछावर किया सब अमीरों ने ज़र।
सलामी दी कुल फ़ौज ने आन कर ॥

४८३

श्री भविषदत्त महाराज व सती कमलश्री व सती तिलकासुन्दरी का राज भवन को त्याग कर वन में जाना और संजम लेना और तप करना ॥

२३६. भविषदत्त कमल और तिलकासुन्दरी ।
ज़माने के झगड़ों से होकर बरी ॥
२३७. बस इस राज दुनियां से मूंह मोड़ कर ।
चले तीनों घरबार को छोड़कर ॥
२३८. नगर से वह गजपुर के वन में गए ।
मुनि के वह चर्णों में जाकर झुके ॥
२३९. मुनिराज से जाके अर्दास की ।
कि दिक्षा हमें दीजिये इस घड़ी ॥
२४०. मुनिराज ने उनको संजम दिया ।
कि तीनों ने कर जोड़ कर लेलिया ॥
२४१. उतारा भविषदत्त ने शाही लिबास ।
न रक्खी कोई चीज़ भी अपने पास ॥
२४२. कमल और तिलक ने भी ज़ेवर उतार ।
दिया फैंक जंगल में सब एक बार ॥

२४३. वर्नी अर्जिका दोनों संजम को धार ।
फ़क़त एक साड़ी रखी तनपे डार ॥

४८४

सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी व मुनि महाराज भविषदत्त का तप करके दसवें स्वर्ग में जन्म लेना—और फिर गजपुर व तिलकपुर की सैर करना ॥

२४४. वह तीनों ही मोह और ममता हटा ।
लगे करने जंगल में तप बरमला ॥
२४५. बने तप से वह देवता सर बसर ।
गए स्वर्ग दसवें में देह छोड़ कर ॥
२४६. वह इक रोज़ फिर सैर करते हुवे ।
पहुंच करके गजपुर में सबसे मिले ॥
२४७. हुवे देख अपनों को वह शादमां ।
उन्हें देख सब खुश हुवे बेगुमां ॥
२४८. तिलकपुर भी गजपुर से तीनों गए ।
वहां मानभद्दर असन से मिले ॥
२४९. यूं ही सैर करते वह आनन्द से ।
पलट करके फिर स्वर्ग में जा बसे ॥
२५०. वह सब बाद अर्से के फिर एक बार ।
गए सैर करने को गजपुर मंझार ॥
२५१. कोई वां मगर उनका वाक़िफ़ न था ।
किसी ने नहीं जाना उनका पता ॥

२५२. वह उलटे फिरे वां से होकर निराश ।
थे दुनिया की नैंरगियों से उदास ॥
२५३. अजब है यह दुनिया यह कहते हुवे ।
वह फिर लौट कर स्वर्ग में आ गए ॥

४८५

तीनों देवताओं का स्वर्ग से आकर फिर मनुष्य जन्म लेना और तप करके और कर्मों का नाश करके केवल ज्ञान पाना और मोक्ष जाना और परमात्मा बनना ॥

२५४. कमल का जो बैकुण्ठ में जीव था ।
वह गंधर्व चकवे का बेटा हुवा ॥
२५५. धरा नाम उसका बसुन्धर कुमार ।
कि राजा हुवा वह बड़ा नामदार ॥
२५६. भविष और तिलक के भी जो जीव थे ।
वह दोनों ही मर करके सुरलोक से ॥
२५७. बसुन्धर के घर आके पैदा हुवे ।
बटन और श्रीबट्न नाम उनके थे ॥
२५८. बसुन्धर बहादुर था और नेक था ।
बड़ी देर तक राज उसने किया ॥
२५९. किया उसने तप छोड़ कर अपना राज ।
दिया अपने बेटों को तख्त और ताज ॥
२६०. श्रीधर मुनि पे जा दिक्षा धरी ।
जो ज़ंजीर कर्मों की थी काट दी ॥

२६१. चले काट कर कर्म परमात्मा ।
हुवे सच्चिदानन्द सिद्धात्मा ॥

२६२. वटन और श्रीवटन फिर राज पा ।
रहे राज करते वह सुखसे सदा ॥

२६३. गए सैर करने वह वन में कभी ।
नज़र एक सुन्दर हरन पर पड़ी ॥

२६४. वह साथ अपने बच्चों के था खेलता ।
अकायक शिकारी का तीर आ लगा ॥

२६५. वह ज़ख़मी तड़पने लगा ख़ाक पर ।
हुवा देख दोनों के दिल पर असर ॥

२६६. न देखा गया उनसे जुलमो सितम ।
तड़पना हरन का व बच्चों का ग़म ॥

२६७. घटा दिलपे वैराग की छा गई ।
कि दुनिया से नफ़रत उन्हें आगई ॥

२६८. उसी वक्त राज अपना वह छोड़ कर ।
कि घरबार दुनिया से मूंह मोड़ कर ॥

२६९. मुनि पास जाकर नमस्कार की ।
झुके उनके चर्णों में दिक्षा धरी ॥

२७०. बड़ा तप किया नाश कर मोह को ।
लगे करने उपदेश सर्वज्ञ हो ॥

२७१. ज़माने के दोनों वह रहबर बने ।
उन्हें लाए रस्ते पे जो गुमराह थे ॥

२७२. दुखी जो थे संसार में जा बजा ।
कि बतलाया सुख का उन्हें रास्ता ॥
२७३. गए मोक्ष में वह करम काट कर ।
हुवे लीन आनन्द में सर बसर ॥
२७४. बने आत्मा से वह परमात्मा ।
जनम और मरण का किया ख़ातमा ॥
२७५. सुनी आपने यह कथा सर बसर ।
मुनासिब है पापों से कीजे हज़र ॥
२७६. बधु और कोसी का करके बिचार ।
करो दिल में इबरत बनो नेक कार ॥
२७७. सुमत मित्र नन्दी के आचार पर ।
ज़रा ध्यान दे और करके नज़र ॥
२७८. करो शुभ करम धर्म में चित लगा ।
मिले राज और स्वर्ग की सम्पदा ॥
२७९. कमल और तिलक का सुना माजरा ।
कि कर्मों का कैसे किया ख़ातमा ॥
२८०. भविषदत्त का भी सुन लिया तुमने हाल ।
कि किस तौर से तोड़ा दुनिया का जाल ॥
२८१. मुनासिब है सुन करके सबकी कथा ।
बनैं आप भी नेक धर्मात्मा ॥
२८२. धरम देश जाती की सेवा करो ।
कि धन मन बदन इनपे सब वार दो ॥

२८३. परोपकारता हो हर इक कार में ।
तुम्हें भी मिले सुख जो संसार में ॥

२८४. बदी और मिथ्यात को छोड़ कर ।
विषय और कषायों से मूंह मोड़ कर ॥

२८५. ज़रा जैन वाणी पे निश्चय करो ।
ज़रा अपनी हिम्मत से भी काम लो ॥

२८६. न खाली करम के भरोसे रहो ॥
भरोसे न ईश्वर के बैठे रहो ॥

२८७. बनो अपने पुरुषार्थ से नेक नाम ।
चलेगा तुम्हारी ही कोशिश से काम ॥

२८८. यही वीर भगवान का था मुद्दआ ।
यही उनके उपदेश में है भरा ॥

२८९. करो काम अपनी ही इमदाद से ।
न हरगिज़ बनो सुस्त परमाद से ॥

२९०. है बलवान हर चीज़ से आत्मा ।
यह है शक्तियों का समन्दर बड़ा ॥

२९१. अगर अपनी शक्ति को पहिचान ले ।
तो सब कर्म इक छिनमें यह काट दे ॥

२९२. बने आत्मा से यह परमात्मा ।
नहीं कोई इसको जो रोके ज़रा ॥

२९३. नहीं इसकी कुछ इब्तदा इन्तहा ।
अनादि स्वयं सिद्ध है आत्मा ॥

२९४. न करता की कुछ भी जरूरत इसे ।
न ख़ालिक़ न राज़िक की हाजत इसे ॥
२९५. यह क़ायम है खुद आप मुख्तार है ।
नहीं इसका कोई भी करतार है ॥
२९६. करम खुद बखुद जीव करता सदा ॥
करम योग से आप फल भोगता ॥
२९७. दे सुख दुख सदा अपनी नेकी बदी ।
न इसमें सहारा किसी को कोई ॥
२९८. मदद क्या करेगा मुनि या ऋषि ।
सिफ़ारिश करे क्या वली या नबी ॥
२९९. करे कोई जैसा वह वैसा भरे ।
जो कर्मों का फल है न हरगिज़ टरे ॥
३००. न फल देने वाला कोई दूसरा ।
हर इक कर्म फल खुद बखुद भोगता ॥
३०१. तू न्यामत यह अब दास्तां बन्द कर ।
कि हालात सब लिख चुका सर बसर ॥

इति श्री कमलश्री नाटक का अन्तिम नोट तथा सात जीवों का शिक्षाप्रद चरित्र समाप्तम् । शुभम ॥